विषय—सूची

आमुख

ढाई दशक पूर्व प्रताप शोध प्रतिष्ठान की स्थापना के समय जो सपना ठा रत्नसिंहजी व गुमानसिंहजी ने संजोया था वह अब साकार हो रहा है। यह विशेष हर्ष का विषय है कि इस वर्ष प्रतिष्ठान के तत्वावधान में इतिहास साहित्य व संस्कृति से जुड़ी हुई निम्नलिखित आठ योजनाएं क्रियान्वित हो रही है --

1- मेवाड़ के राजस्थानी ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण
2- मेवाड़ के पट्टे - परवानों का प्रकाशन
3- पाण्डुलिपियों का परिरक्षण
4- पाडुलिपियों की खरीद
5- दुर्लभ पाण्डुलिपियों का जरावस
6- प्रताप शोध प्रतिष्ठान के ग्रन्थों का सूचीकरण
7- मेवाड़ के अभिलेखों का सम्पादन
8- महाराणा भीमसिंह जागीरदारां रे गांव पट्टां री हकीकत बही का सम्पादन

इसके लिये भारतीय इतिहास अनुसन्धान परिषद नई दिल्ली और भारत सरकार राष्ट्रीय अभिलेखागार दिल्ली की ओर से 1 35,000/- रु का अनुदान मिला है। इन योजनाओं के माध्यम से प्रतिष्ठान में मेवाड़ा मूल पट्टे पर वानों व महत्वपूर्ण दस्तावेजों के अतिरिक्त भींडर, गोगूदा और अगराणा आदि ठिकानों की प्राचीन बहियों, चौपनियों का संग्रह हो चुका है और ग्रन्थों के सम्पादन व प्रकाशन का कार्य प्रगति के पथ पर है। यह विशेष सन्तोष का विषय है कि प्रतिष्ठान के निदेशक डॉ हुकमसिंह भाटी निष्ठापूर्ण इस कार्य में संलग्न है। भूपाल नोबल्स संस्थान, अनुसन्धान के इस केन्द्र को विराट स्वरूप देने के लिये कृत सकल्प है।

इस पुस्तक में इतिहासकार जेम्स टाड के व्यक्तित्व एवं कृतित्व सम्बन्धी विद्वानों के आलेख संजोये गये हैं। इससे शोधार्थियों को अनिवार्य आवश्यक मार्गदर्शन व प्रेरणा मिलेगी ऐसा मेरा विश्वास है। प्रतिष्ठान की प्रवृत्तियों से जुड़े सभी विद्वानों व संस्थाओं का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

कु मनोहरसिंह कृष्णावत
प्रबन्ध निदेशक
भूपाल नोबल्स संस्थान उदयपुर

सम्पादकीय

गौरवमय इतिहास और उज्ज्वल संस्कृति के बेजोड़ संगम वाले हमारे राजस्थान के कई विद्वानों को इतिहास अनुसन्धान व लेखन की ओर प्रेरित किया जिससे इस वीर-वसुन्धरा पर राजस्थानी गद्य पद्य में इतिहास लेखन की प्रवाहमयी धारा स्फुटित हुई। इस वाङ्मय धारा ने एक विदेशी विद्वान जेम्स टाड को इतिहासकारों की कड़ी में जोड़कर इतिहास के शोध खोज कार्य में सर्वथा क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि यहां ख्यात बात वंशावली हाल हकीकत पीढ़ियां याददाश्त वचनिका रासो झमाल झूलना दवावैत सबद रचनाओं में विशिष्ट योद्धाओं और रजवाड़ों का इतिहास कलमबद्ध करने की पुख्ता परम्परा रही और इसी परम्परा ने हमारे राजस्थान के इतिहास को जिलाए रखा। जेम्स टाड ने इस परम्परागत इतिहास लेखन का आधुनिक स्वरूप दिया और सर्वप्रथम वैज्ञानिक रूप में इतिहास लिखकर उसने इतिहास आयाम के मनके पार खोल दिए।

व्यक्ति जो पुरुषार्थी होते हैं और जिनमें कुछ कर दिखाने की भावना प्रबल होती है ऐसे पुरुष बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी कहलाने के भागीदार हो जाते हैं। टाड इसका एक अनुपम उदाहरण है। उसने एक ओर जहां राजनैतिक प्रतिनिधि के रूप में कुशल प्रशासक की भूमिका निभाई तो दूसरी ओर राजपूताना के भूगोल व इतिहास का गहराई से अध्ययन कर इतिहासवेत्ता के रूप में अपना परिचय दिया।

टाड ने राजस्थान का इतिहास क्यों लिखा ? इस बिन्दु पर विचार करें और यहां के इतिहास लेखन की परम्परा पर अपनी दृष्टि डालें तो मुख्यतः तीन बातें हमारे सामने आती हैं —

1– टाड की इतिहास के प्रति अभिरुचि
2– राजस्थान का गौरवमय इतिहास
3– इतिहास सामग्री की विपुलता

टाड जन्मजात इतिहासज्ञ था। बचपन से ही इतिहास के प्रति उसकी गहरी रुचि था। उसने अठारह वर्ष की आयु में ही यूरोप के इतिहास का ज्ञान अर्जित कर लिया था। भारत में पांव रखते ही उसने यह विचार किया कि राजपूत जाति के सम्बन्ध में जिसका ज्ञान यूरोप के लोगों को नहीं है उसे उजागर किया जाना समूचे मानव समाज के लिए हितकर होगा। वह जब मेवाड़ में आया और राजस्थान के इतिहास की गौरव गाथाओं से उसका परिचय हुआ तो उसके हृदय में इतिहास जानने की जिज्ञासा और प्रबल हो गई। सही अर्थों में देखा जाय तो यहां के

गौरवमय इतिहास ने टॉड को अपनी ओर आकृष्ट किया । टाड को यहा की ख्यातें बातें व वंशावलियें और प्रशस्तियें इतिहास की घटनाओं से रंगी हुई मिली जिसमे उसके मन मे इतिहास लेखन की धारणा और गहरी हो गई । इतिहास सामग्री की विपुलता ने उसके काय को सुगम बना दिया ।

इतिहास लेखन का प्रथम चरण है सामग्री सकलन । टाड इसके महत्व को भलीभांति पहचानता था । उसने राजस्थान के रजवाडो म घूम कर और चारण व भाटो से सम्पर्क साध कर पाडुलिपिया व प्रकाशित ग्रंथों के अलावा शिलालेख ताम्रपत्र ताडपत्र सिक्के आदि इतिहास - विषयक विपुल सामग्री सग्रहीत की । उसने यह सिद्ध कर दिया कि यहा इति-हास लेखन के साधनो का अभाव नही है क्योकि चाल्स ग्राट और जम्स मिल जसे इतिहासकारों की यह मान्यता रही थी कि यहा न तो कोई इतिहास ग्रंथ है और न ही लोगो म बौद्धिक परिपक्वता । टाड ने अथक परिश्रम कर इन पूर्ववर्ती विद्वानो की धारणा का खण्डन कर दिया । टाड ये सामग्री लदन ले गया और एनल्ज रचना के बाद रायल एशियाटिक सोसायटी को भेंट कर अपनी सूझ - बूझ व उदारता का परिचय दिया

टाड ने अपने गुरू यती ज्ञानचद से प्राचीन शिलालेख ताम्रपत्र आदि समझने म सहायता ली । इसके अलावा उसने पण्डितों व चारण विद्वानो से यहा के परम्परागत रीति रिवाजो सास्कृतिक पहलुओ और इति हास घटनाओ की जानकारी अर्जित कर बारीकि से इतिहास के मम को पहचानने का प्रयास किया । जिससे उसका एनल्ज केवल घटनाओ का लेखा जोखा ही नही बल्कि राजस्थान के अतीत का एक कोश बन गया । उसने हर घटना पर चिंतन करते हुए अपने विचार दिए हैं इतिहास सम्बन्धित कई जटिल प्रश्नो के उत्तर दिये है, प्रत्येक युद्ध के कारणो और परिणामो पर टिप्पणी की है तथा घटनाओ के मोड के साथ अपनी लेखनी को भी मोड दिया है जिससे वृतात सजीव व मौलिक बन पडा है ।

इतिहास के प्रति उसका दष्टिकोण व्यापक रहा है । उसने अतीत मे गोते लगाकर युद्ध अभियानों के अलावा राजा महाराजाओ के क्रिया-कलापो उनके जीवन आदर्शों, यहां कि सास्कृतिक सोपानों धार्मिक विचारों, सामाजिक मान्यताओ, प्राकृतिक प्रकोपो भौगोलिक तथ्यो और आर्थिक पहलुओ आदि मानव जीवन से जुडे हर पहलू का सूक्ष्म अध्ययन कर इति-हास रचना - प्रक्रिया को एक नयी दृष्टि दी । यहां की ख्यातो व बातो में केवल घटनाओ का विवरण मिलता है टॉड ने अपने विवेक से न केवल घटनाओं का विश्लेषण कर उसे इतिहास का स्वरूप दिया बल्कि इतिहास लेखन मे यह के स्थानीय स्रोत किस प्रकार उपयोगी सिद्ध हो सकते है इस ओर

हमारा ध्यान आकृष्ट कराया । इतिहासकार नैणसी के बाद इतिहास लेखन के क्षेत्र जो भारी रिक्तता आ गई थी टॉड ने उसको भरने का प्रयास किया ।

उसने इतिहास रचना के आयाम म चित्र भवन को स्थान दिया । कप्टीन वाग और घासी नाम के दशी चित्रकारो से दुर्ग महल व मन्दिर आदि भवनो के चित्र बनवाने का काय सम्पादित करवाया । इस पहलू ने उसके ग्रन्थो म सजीवता ला दी ।

टाड ने राजनतिक इतिहास के परिप्रेक्ष्य म सामाजिक व सांस्कृतिक पहलूओं को मजान का सफल प्रयास किया। इसके लिए उसने स्थानीय समाज रचना का बारिकी म अध्ययन किया और विशेषत राजपूत जाति और जागीरदारी प्रथा के बारे मे अपने मत दिये और लोगो के सस्कारो, विश्वासो धार्मिक और सामाजिक रीति-रिवाजो की स्पष्ट व्याख्या करते हुए समाज एव सस्कृति की निरंतरता को उद्घाटित करने का प्रयास किया जिससे उसका एनल्स राजपूत जाति व समाज का कोश बन गया । यहां की सस्कृति से वह कितना प्रभावित था इसका प्रतिबिम्ब उसके व्यक्तिगत-वृतात (Personal Narrative) [1] म देखा जा सकता है ।

वह इतिहासकार होने के साथ कुशल प्रशासक भी था 1888 ई म जब मेवाड म उसकी नियुक्ति राजनतिक प्रतिनिधि के रूप मे की गई उस समय मेवाड की स्थिति बडी शोचनीय थी। पिंडारियों व लूटेरो की लूटमार के कारण कृषि, उद्योग धधे और व्यापार चौपट हो गये थे और मेवाड राज्य आर्थिक सकट से गुजर रहा था । मेवाड के जागीरदार न केवल महाराणा की आज्ञाओ की अवहेलना करने लग गए थ बल्कि इन्होंने खालसा गावों पर अधिकार जमा लिया था । ऐसी विकट परिस्थिति म सुधार लाने हेतु उसने महत्वपूर्ण कदम उठाए । लूटेरों का दमन किया, व्यापारियो को निर्भय पत्र जारी किये और मेवाड जागीरदारों के साथ कौलनामा कर महाराणा व उमरावों के बीच मेल स्थापित करने का प्रयास किया । इसके लिए उसने अपने सम्बन्ध यहा के जागीरदारो से बनाए और उनको अपने विश्वास म लिया । जागीर पट्टों की जाच पड़ताल कर उनका नवानीकरण किया । एक बात यह विचारणीय है कि दूसरे अग्रेज अधिकारियों की भाति उसने नियमों को लागू करने म कभी बल का प्रयोग नही किया और अल्प समय म ही एक कुशल व श्रेष्ठ प्रशासक के रूप म ख्याति प्राप्त कर ली । व्यक्ति के लिए अधिक प्रसिद्ध होना भी अभिशाप है । राजपूताना का रेजि

1 टॉड एनल्स भाग 1 प 519 621 भाग 2 प 477-613 टु वाल्यूम इन वन 1950 ई

इंट' भाउटर लोगों उसस ईर्ष्या करने लगा और उसने टाड पर शिकायतों की झडी लगा दी परन्तु टाड ने हौसला नहीं खोया और वह अपने कर्तव्य का पालन करता रहा। अन्तत जाच पडताल करने के बाद लोगो द्वारा लगाए गए सारे आरोप मिथ्या प्रमाणित हुए।

उसने एक अच्छे प्रशासक होने के साथ भूगोलवेत्ता के रूप म अपनी पहचान दी। अग्रेजी सरकार को राजस्थान और उसके क्षेत्र म सैनिक कार्यवाहियों के लिए विभिन्न मार्गों पहाडो, घाटियो और कस्बों की स्थिति का ज्ञान होना जरूरी था। इस जटिल काय के सम्पादन का बीडा टाड ने उठाया और कई भौगोलिक गुत्थियों को सुलझा कर उसने सवप्रथम राजस्थान का मानचित्र तयार करने का श्रेय प्राप्त किया। पहले बने नक्शा म चित्तौड का उदयपुर के उत्तर-पूव के बजाय दक्षिण पूव म बताया गया था। टॉड ने अपने विवेक से इस प्रकार की अशुद्धियो का निराकरण किया। इतिहास लेखन म भी उसका यह श्रम उपयोगी प्रमाणित हुआ।

समाज सुधारक के रूप मे टाड का योगदान कम महत्व का नहीं है। समाज मे व्याप्त कुरीतियों की ओर न केवल यहा के जागीरदारो व शासकों का ध्यान आकृष्ट कराया बल्कि जनता म सामाजिक जागति लाने का अनुकरणीय कार्य किया। इसके लिए उसने बेगार प्रथा और दासप्रथा उन्मूलन करने के आवश्यक कदम उठाए। आदिवासी जातियो के साथ अच्छा आचरण करने के लिए यहा के राजा महाराजाओं को सुझाव दिये।

जहा तक टाड की भाषा व शैली का प्रश्न है उसकी भाषा प्रभावमयी होने के साथ बडी चटकीली है। उसकी लेखनी म ऐतिहासिक तथ्यो का सहजता के साथ अभिव्यक्त करने की क्षमता है। इसके अतिरिक्त यहा की स्थानीय भाषा स उसे बडा लगाव था। राजा महाराजाओ व जागीरदारो स वह राजस्थानी भाषा म पत्राचार करता था। उसकी पत्रावली म परम्परागत शैली के दशन होते है। जबकि आज के प्रशासनिक अधिकारी हिन्दी म पत्र लिखने स कतराते है और अग्रेजी म पत्र व्यवहार करना व अपनी शान समझते हैं।

यह भी उल्लेखनीय है कि टाड विदेशी था और विदेशी होते हुए उसने राजस्थान के इतिहास-लेखन का भारी श्रम किया। उसे न ता इतिहास लिखने हेतु कोई आदेश मिला था न ही निर्देश। उसे न तो पी एच डी की उपाधि लेनी थी और न इस इतिहास-रचना स राजा महाराजाओं को खुश करके मान सम्मान अजित करने की उसकी लालसा थी। मूल म कोई तत्व

था तो वह था इतिहास के प्रति रुचि और राजपूत जाति के प्रति अगाध श्रद्धा । इस निस्वार्थ भावना ने उसे इतिहासकारों की विशिष्ट श्रेणी में आसीन कर दिया ।

आज के शोधार्थी परिश्रम करने से कतराते हैं । मूल स्रोतों का अध्ययन करना दूर रहा उनके दर्शन करने की तकलीफ नहीं करते । वे प्रकाशित पुस्तकों में से अपने विषय से संबंधित सन्दर्भ बड़ी चतुराई के साथ चुराने में दक्ष होने का प्रमाण दे रहे हैं । खेद का विषय है कि कतिपय निर्देशक इसकी अनदेखी कर रहे हैं । यही कारण कि अनुसंधान के क्षेत्र में ठोस व मौलिक कार्य कम हो रहा है और शोध का स्तर घटता जा रहा है । इस में आज शोधार्थियों को टॉड से प्रेरणा लेने की महती आवश्यकता है ।

आज पी एच डी की उपाधि प्राप्त कर अथवा एक दो किताबें छपवा कर शोधार्थी इतिहासकारों की कड़ी में जुड़ने का प्रयास कर रहे हैं । कतिपय लेखक जो कुछ पहले कार्य हुआ है और लिखा गया है आज उसी का हेर-फेर के साथ दुबारा प्रस्तुत कर यश अर्जित करने की लालसा में लिप्त हैं ।

सही अर्थों में देखा जाए तो राजस्थान के वृहद् इतिहास का बीड़ा टॉड के बाद गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने उठाया था । परन्तु समग्र राजस्थान का शोधपूर्ण इतिहास लिखना अकेले उनके बस की बात नहीं थी । आज शोध खोज कार्य से इतिहास विषयक विपुल सामग्री प्रकाश में आयी है और इतिहास लेखन में विविध पक्षों का समावेश होने लगा है अर्थात् राजस्थान के इतिहास को प्रकाश में लाने हेतु गावों अथवा ठिकानों व परगनों और वहां रहने वाली जातियों का इतिहास जानने के अलावा प्रत्येक राज्य का राजनैतिक सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक पहलुओं की बारीकी से अध्ययन करना अपेक्षित है । ऐसा करने से लगभग सौ भागों में समूचे राजस्थान का शोधपूर्ण इतिहास तैयार होगा । इसके लिए अनुसन्धान केन्द्रों शोधार्थियों व इतिहासकारों को मिलकर कार्य करना होगा । ऐसा करने पर ही हम टॉड के कार्य को आगे बढ़ा पाएंगे और उसको सच्ची श्रद्धांजलि देने के पात्र बनेंगे ।

टॉड ने राजस्थान का इतिहास उजागर कर राजस्थानवासियों का बड़ा भारी उपकार किया परन्तु आज दिन तक उस महान इतिहासकार के व्यक्तित्व व कृतित्व सम्बन्धी समग्र पहलुओं पर गहराई से चिन्तन नहीं किया गया और न ही उसकी उपलब्धियों के बारे में स्वतंत्र पुस्तक लिखी गई । इसकी पूर्ति हेतु प्रताप शोध प्रतिष्ठान में एक विचार गोष्ठी

का आयोजन किया गया । उसमें विद्वानों ने टॉड के व्यक्तित्व व कृतित्व सम्बन्धी लेख पढ़े और उन पर विचार विमर्श हुआ । विद्वानों से कुछ आलेख गोष्ठी के बाद में प्राप्त हुए । इस पुस्तक में उन सभी आलेखों का समावेश कर टॉड के व्यक्तित्व व कृतित्व को भलीभांति प्रकाश में लाने का प्रयास किया है ।

प्रताप शोध प्रतिष्ठान के अनुरोध पर जिन विद्वानों ने आलेख तैयार कर अपना सहयोग दिया उनके प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूं । प्रताप शोध प्रतिष्ठान - परामर्श समिति के सदस्यों का समय समय पर मार्गदर्शन मिलता रहा अतः उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं । सुखाड़िया विश्वविद्यालय इतिहास विभागाध्यक्ष डा. नारायण सिंह चूण्डावत का सम्पादन कार्य में विशेष सहयोग रहा इसके लिये उन्हें हार्दिक धन्यवाद । आशा है टॉड के बहुआयामी व्यक्तित्व को समझने में हमारा यह श्रम उपयोगी सिद्ध होगा ।

— हुकमसिंह भाटी

टॉड—एक सवाहक

—डॉ जगन्नाथ कुमार ओझा

विश्व-पटल पर 'राजपूताना' को 'राजस्थान' नाम से अभिहित कराने वाले कर्नल जेम्स टाड का जन्म मार्च 20 1782 ई को इगलड के ईस्लिंगटन म हुआ था ।[1] टाड का प्रारंभिक उद्देश्य व्यापार था किन्तु उसके मामा पट्रिक हीटली ने उसे ईस्ट इडिया कम्पनी के उच्च पद व सैनिक उम्मीदवारो म भरती कर दिया जिसस 1798 ई म वूलविच के रायल मिलीटरी एकेडमी म उसका प्रवेश हो गया । मार्च 1799 ई म सत्रह वर्षीय टाड को बगाल भेजा गया जहाँ जनवरी 9 1800 ई को दूसरी यूरोपियन रेजीमेण्ट म उसे स्थान मिला । सनिक जीवन की सभी परिस्थितियो का अनुभव प्राप्त करत हुये टाड को मई 29 1800 ई को देशी पदल फौज की 14 वी रेजीमेण्ट का लेफ्टिनेण्ट नियुक्त किया गया । उसी रेजिमण्ट क अधिकारी लफ्टिनण्ड कनल विलियम निकाल ने टाड के सरल-सहज स्वभाव की भूरि-भूरि प्रशसा करत हुए बताया कि वह उस सेना के सभी अधिकारियो का प्रिय बन गया था । उसम उस उदीयमानता के सभी लक्षण दृष्टिगत होते थ जो बाद म उसने अपनी प्रतिभा के बल पर प्राप्त की थी । वह इजीनियरिंग के काम म निपुण था । अत 1801 ई म दिल्ली के निकट पुरानी नहर की पमाइश (सर्वेक्षण) करने का काम सौंपा जिसे उसन

---

1 टाड का पिता मिस्टर टॉड हेनरी टॉड और जेनेट मॉन्क्रीय का प्रथम संतान क रूप म मवट्ट 26 1745 ई म पदा हुआ था । उसका उस प्राचीन वंश से सबद्ध था जिसके एक पूवज जान टाड न राबट ब्रूस क बच्चा की उस समय रक्षा की थी जब वे इगलण्ड म बदी थे । स्वयं बादशाह ने अपन हस्ताक्षरा से उसको नाइट बैरोनेट का पद और टाड का शीर्षचिन्ह (स्काटलड की भाषा म लोमडी को टाड कहत हैं) तथा Vigilantia (सतक) का 'आदश शब्द' (Mo o) प्रयुक्त करने की अनुमति प्रदान की थी । द्रष्टव्य-पश्चिमी भारत की यात्रा प 1

बड़ी तत्परता से किया। तत्पश्चात् 1805 ई म दौलतराव सिंधिया के दरबार पोलिटिकल एजेन्ट (मरर) के सहायक के रूप म उसकी नियुक्ति हुई।[2] डॉ गौ ही ओझा के अनुसार यहीं से उसकी भावी असाधारण कीर्ति का प्रारभ हुआ।

जेम्स टॉड म शोध खोज की प्रवृत्ति सूझ-बूझ व समझ लिये हुए थी उसे व्यावहारिक रूप देने का समय उसके समक्ष अपने आप ही आया जिसे सभवतया तब वह भी एकाएक समझ ता नहीं पाया होगा किन्तु इधर-उधर लिखित अलिखित, मौखिक-अमौखिक गीत छद, कहानी, गल्प-गाथाओ शिलालेखों, पुरातन पत्थरो, प्राचीन स्मारको आदि स्वरूपो को घंटा देखता, विचारता आदि तौर तरीका की सग्रह नीति से स्पष्ट हो गया था कि कनल टॉड म जन्मजात इतिहास प्रिय अभिरुचि थी जिसे वह विविध प्रकार की ऐतिहासिक सामग्री का यथाशक्ति एव यथा साधन सग्रह कर पूरा कर रहा था। सिंधिया के दरबार क साथ मध्य भारत राजस्थान तथा उसके निकटवर्ती क्षत्रा म सनिक कायवाही के लिये विभिन्न स्थाना तथा मार्गों का सर्वेक्षण करने-कराने का महत्वपूर्ण काय करत हुए कनल जेम्स टॉड ने एक ओर भौगोलिक गुत्थियो का सुलझाया एव गलतियो को दुरुस्त किया ता दूसरी ओर रास्ते म पडन वाल गाँवो वहाँ के निवासियो आदि स अपनी ऐतिहासिक सामग्री के सग्रह का काय भी किया। जून, 1806 ई म टॉड आगरा से उदयपुर रास्ते भर की पमाइश करता हुआ पहुँचा। मरर ने बताया है कि अस्वस्थ होते हुए भी टॉड न पमाइश का काय इतना सुरुचि स किया कि उसम किसी प्रकार क सुधार की गुजायश नजर नही आती है। उदयपुर तक सर्वेक्षण का काय कर लने क बाद टाड की यह प्रबल इच्छा थी कि राजपूताना एव उसके समीपवर्ती प्रदेशो का एक अच्छा सा नक्शा तयार किया जाय। अत इस काय के लिय वह अपना काफी समय देता हुआ उन प्रदेशो का इतिहास जनश्रुति शिलालेख आदि का सग्रह भी करता गया। औ उसकी प्रथम कीर्तिमान पुस्तक एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान की साधन-सामग्री का एकत्र होना उसी वष प्रारभ हुआ।[3]

सर्वेक्षण के दौरान टॉड को कई रास्ता एव क्षेत्रों से परिचित होने का अवसर भी मिला। अत वह एक स्थान पर विभिन्न रास्ता स

---

2 पश्चिमी भारत की यात्रा—अ गोपालनारायण बहुरा पृ 1–4

3 गौ ही ओझा कर्नल जेम्स टॉड का जीवन चरित्र प 4

पहुँचने का प्रयास करता था। इसमें उसे अपने जीवन की बहुत बड़ी जोखिम भी उठानी पड़ती थी जब 1807 ई. में सिंधिया की सेना ने राहतगढ़ पर घेरा डाला उस समय टाड साहब थोड़े से सिपाही साथ लेकर बेतवा नदी के किनारों के पास होते हुए चंबल तक के अज्ञात स्थलों में पहुंचे और वहाँ से पश्चिम की ओर कोटा तक बढ़े। फिर दक्षिण को बहने वाली सब नदियों का मार्ग मालूम कर चंबल के साथ काली सिंध पार्वती बनास आदि मुख्य-मुख्य नदियों के संगम का पता लगाते हुए आगरा जा पहुँचे। टॉड इन यात्राओं के बीच कई बार लूटा भी गया था किन्तु वह हतोत्साहित नहीं हुआ और निरंतर अपनी शोध समझ व संग्रह हेतु सर्वेक्षण यात्रा करता रहा।[4] डा. गौ. ही. ओझा के अनुसार राजपूताना और उसके आस-पास के प्रदेशों का इतिहास भिन्न भिन्न नगरों के बीच का अन्तर व मार्ग वहाँ के रीति रिवाज आदि जानने के लिये वहाँ के निवासियों में से योग्य और वाकिफकार मनुष्यों को प्रीति या पारितोषिक के साथ किसी ढंग से अपने पास बुला लेते थे। सन् 1812 से 1817 ई. तक वे ग्वालियर में रहे तब भी सिंध थाट ऊमर-सुमरा के रण व राजपूताना के प्रत्येक भाग से वाकफियत रखने वाले मनुष्य बहुधा उनके पास रहा करते थे। ऐसे ही कासिद और चिट्ठी पहुंचाने वाले हरकारों से भी रास्ता व शहरों का दूरी का हाल वे हर वक्त दर्याफ्त करते रहते थे और भिन्न भिन्न देशों के कोसों का शुद्ध मान जान लेने के बाद उन लोगों की बतलाई हुई दूरी का यंत्र द्वारा नापी हुई दूरी के साथ मिलान कर लेते थे। यों कुछ समय में ही कर्नल टाड ने इतने नक्शे तैयार कर लिये कि उनकी 11 जिल्दें बनी। उसके ये नक्शे तथा संग्रह किये हुये भूगोल संबंधी वृत्तांत अपने राजस्थान (एनाल्स) का इतिहास लिखने में काफी सहायक रहे।[5]

सामग्री-संग्रह करने में टाड का खूब धन खर्च हुआ तथा उसने स्वास्थ्य एवं श्रम की भी कोई परवाह नहीं की थी। इससे उसके उत्साह की प्रबलता तथा मानसिकता की दृढ़ता का परिचय प्राप्त होता है। मनर कहते हैं कि जब तक मैं इस रेजीडेंसी में रहा वह इस प्रदेश के भूगोल संबंधी अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिये प्रत्येक सुलभ और संभव अवसर का लाभ उठाता रहा, और मेरा विश्वास है कि उसके वेतन का बहुत बड़ा भाग

---

4 वही पृ 5 6 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 4-5

5 ओझा, कर्नल जेम्स टाड का जीवन चरित्र पृ 5 7

न्श क विभिन्न भागा म कायकर्ता भेजकर उनके द्वारा स्थलीय सूचनाएँ प्राप्त करने मे व्यय होता था। वह स्वय भी इस उद्देश्य क लिय प्रबल परिश्रम करता रहता था और उसकी थकान को कम करके उसे पुन सुस्वस्थ बनाने हेतु कभी कभी मुझे एस प्रयत्न भी करने पडते थे कि उसकी प्रवृत्तियों म रोक थाम हो जाय ......। मसर क बाद रिचार्ड स्ट्रची सिंधिया क दरबार म एजेंट बना तो पुन 18 5 ई में टाड को उसका द्वितीय सहायक बनाया गया। स्ट्रची का कहना है कि इस पूरे समय म वह मुख्यत सिंधु और बुन्देलखण्ड तथा जमुना और नमदा के बीच के प्रदेशो स सम्बद्ध भौगोलिक सामग्री एकत्रित करन म व्यस्त रहा।[6]

1817 18 ई म जब मेवाड मारवाड ढूंढाड व अन्य राजपूती रियासतो ने अंग्रेजो के साथ कूटनीतिक सबध स्थापित किए तब गवनर जनरल लाड हेस्टिंग्स न राजस्थान की स्थिति स सुपरिचित कनल टॉड को पश्चिमी भाग के इन राजपूत राज्यो का पोलिटिकल एजेंट बनाकर उदयपुर म नियुक्त किया।[7] या भी अपने भारत प्रवास के 24 वर्षों म स लगभग 18 वष राजपूताना म और उसमें भी अतिम पाँच वष उसने मेवाड मारवाड जैसलमेर, कोटा बूदी और सिरोही क राजपूत राज्यो में व्यतीत हुये। इस बीच सवेक्षण काय निरतर चलता रहा। अक्टू 1819 ई म टाड नाथद्वारा कुंभलगढ घाणेराव नाडोल आदि स्थानो स होत हुए जोधपुर गया। नाडोल में उसने राव लाखणसी[8] के समय क दो शिलालेख वि स 1024 और 1039 ढूढ निकाले जिनके सवत टॉड को ही ओझा क अनुसार अजमेर व नाडोल क चौहान जालोर के सोनगरे और सिरोही क देवडा का प्राचीन इतिहास लिखने वालो के लिए बडे उपयोगी सिद्ध हुए।[9] वहाँ स उसन दो ताम्रपत्र, कई उपयोगी प्राचीन हस्त लिखित

---

6 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 7

7 डॉ रघुबीरसिंह भाटी (द्वारा सपादित), राजस्थान क इतिहासकार, पृ 37

8 राव लाखणसी साभर क चौहान राजा वाक्पति राज का दूसरा पुत्र और सिंहराज का छोटा भाई था जिसन नाडोल में अपना स्वतत्र राज्य स्थापित किया। द्रष्टव्य ओझा कनल जेम्स टॉड का जीवन चरित्र पृ 12

9 द्रष्टव्य डॉ हुकमसिंह भाटी लिखित सोनगरा साचोरा चौहानों का इतिहास।

पुस्तकें और कई अश्वनदा[10] शली के सिक्के सग्रह किये ।

जोधपुर पहुचने पर महाराजा मानसिह न टाड का स्वागत करत हुये विजय विलास सूरज प्रकाश मारवाड की ख्यात आदि जोधपुर राज्य के इतिहास स सबधित 6 पुस्तकें दी । तब टाड न भी महाराजा का फारसी की तारीख फरिश्ता व खुलासउतवारीख का नकलें करवा कर भेजी । जोधपुर स टाड मडोर (परिहार राजपूतो की प्राचीन राजधानी) गया तत्पश्चात् पुष्कर व अजमेर आदि प्राचीन स्थल देखत हुये वहाँ से कई प्राचीन सिक्के एकत्र करके दिसम्बर माह म पुन उदयपुर आ गया ।[11]

टाड के सग्रह-स्नेह को इसीसे समझा जा सकता है कि जनवरी 1820 ई म वह कोटा बूदी गया जहाँ वह बीमार हो गया । पुन लौटते हुये जहाजपुर म माडलगढ आया तब उसकी तिल्ली बढी हुई थी । उन 60 जोकें लगाई गई जो उसका रक्त पी रही थी उस पर भी वह खाट पर लेटे हुए ब्राह्मण और पटेलो स वहाँ का हाल मालूम करके लिखता जा रहा था ।[12]

तदनतर टाड पुन कोटा से बाडोली आकर प्राचीन टूटे फूटे मन्दिरो की खुदाई का काम देखने के लिये कुछ दिन वही ठहरा । तब उसे

---

10 एक ओर सवार तथा दूसरी ओर नदी बने सिक्के अश्वनदी कहलाते थे । चौहान राजा सामत दव स्पलपति देव भीम दव सल्लक्षणपाल दव महीपाल देव मदनपाल देव अनगपाल देव कल्हू देव चाहड देव पीथल देव आदि हिन्दू राजाओं के और मुईजुद्दीन मुहम्मद बिन साम इल्तुतमिश जलालुद्दीन नासिरुद्दीन कुबाचा रुकनुद्दीन फीरोजशाह मुइज्जुद्दीन बहरामशाह अलाउद्दीन मसऊद शाह आदि मुसलमान बादशाहो या हाकिमो के अश्व नदी शली के सिक्के मिले हैं । टाड ने इन्हे नाडोल के चौहान राजाओ के सिक्के बताय हैं किन्तु ओझा का मानना है कि अब तक नाडोल के राजाओ का एक भी सिक्का नही मिला और न टाड के सग्रह म पाया गया । द्रष्टव्य गौ ही कनल जेम्स टाड का जीवन चरित्र पृ 12 की पाद टिप्पणी

11 ओझा कनल जेम्स टाड का जीवन चरित्र पृ 12-13

12 वही पृ 13

वि स 981 का शिलालेख मिला तथा बाडोली से मानपुरा होकर मालवा में घूमनार की गुफा आदि प्राचीन स्थान देखता हुआ झालरा पाटन आया जहाँ उस चन्द्रावती नगरी के खडहरो म कई प्राचीन शिलालेख प्राप्त हुये जिनमे वि स 746 का राजा दुगगण[13] का शिलालेख सर्वाधिक प्राचीन था। इसके अतिरिक्त यहाँ से वह अपने साथ कई देव मूर्तियाँ ले गया। कसवा (कोटा से थोडी दूर) के मंदिर म लगा वि स 795 (ब्राह्मण राजा शिवगण के समय का) का लेख भी मिला, डॉ ओझा ने बताया कि यह लेख भी टॉड के गुरू से पढा नही गया था।[14] कर्नल टाड बिजोलिया गया जहाँ उस मामेश्वर के काल का (वि स 1226 का) चट्टान पर उत्कीर्ण एक बडा लेख मिला। इसके बाद वह मनाल के खडहरो का अवलोकन करते हुए फरवरी 24, 1822 ई को बेगू पहुचा। बगूं म टॉड हाथी पर सवार होकर वहाँ के रावत से मिलने गया। दरवाजा छोटा होने म महावत ने हाथी ले जाना ठीक नहीं समझा किन्तु इससे पूर्व एक हाथी को अंदर गये हुए देख कर टॉड ने महावत को हाथी अंदर ले जाने की आज्ञा दी। खाई व दरवाजे के बीच पुल पर जाते ही हाथी भडक गया जिससे हौदा टूट गया और टॉड गिर पडा। दो दिन बाद होश आने पर जब वह पुनः रावत से मिलने गया तो दरवाजे को गिराया हुआ देख कर उसे बडा दुःख हुआ।[15] या ऐतिहासिक यादगार अथवा धरोहर को वह किसी भी कीमत पर नष्ट होते हुये नहीं देख सकता था।

टाड की एतिहासिक संग्रह की रूचि का पता समझा जा सकता है कि जहाँ कहा भी वह जाता तो वहाँ के वृद्ध और अनुभवी जानकार लोगो को बुला कर राजपूतो की वीरता तथा विभिन्न जातियो की रीति-नीति

---

13 टाड ने इस शिलालेख का जो सारांश दिया उसम पांडव अर्जुन के विरोधी नामक राजा म के साथ लडने का जो वृत्तांत लिखा है वह कपोल कल्पित है। ओझा को इस शिलालेख के फोटो म कहीं उसका उल्लेख नहीं मिला। उसका संवत 748 नही किन्तु 746 है। ऐसा प्रतीत होता है कि टॉड के गुरु उस लेख को ठीक से नहीं पढ सका था। द्रष्टव्य ओझा कर्नल जेम्स टॉड का जीवन चरित्र पृ 16

14 टॉड ने इस लेख का संवत् 597 दिया तथा जाति का बताया जो ओझा के अनुसार सर्वथा गलत है। वही 16 17

15 वही पृ 17 18

अथवा धम सबधी वत्तांत पूछता। साथ ही प्रत्येक प्राचीन मदिर, महल, भवन आदि के बारे म तथा उनको बनाने वाला का पता लगवाता। युद्वा मे काम आये लोगो के स्मारक चबूतरा के लेख पढा कर या लोगों से जानकारी प्राप्त कर उनका हाल एकत्र करता था। मांडल निवासी यति ज्ञानचद्र कनल टॉड का गुरू था जो उस प्राचीन सम्कृत लेख आदि के अनुवाद करने म पर्याप्त सहयोग देता था। ऐसा लगता है कि यति ज्ञानचन्द्र को प्राचीन भाषा एव लिपि का अधिक ज्ञान नही था अतएव टॉड के लिए किये गये अनुवाद कार्यों म गलतियाँ रह जाना स्वाभाविक ही था। दो एक पडित तो वह अपने साथ ही रखता था। अत जहाँ कही भी ठहरते वहाँ के बारे म जानकारी प्राप्त कर वे लिख लिया करते थे।

सुदूरस्थ स्थानो पर प्राचीन लखा आदि का पता लगाने के लिए टॉड अपने गुरू एव उन पडितो को भेज दता था किन्तु विशेष एव महत्व की जगह स्वय टाड जाकर अवलोकन करता था। उठाने योग्य शिलालेख आदि को ऊँटो पर लादकर अपने साथ ल आता था। इतना ही नहीं यत्र तत्र घूमते फिरते वहाँ के चारण भाटो को बुलवा कर वह क्षत्रियों की वीरता के गीत दोहे बातें, आदि सुनता तथा विशेष उपयोगी होते उन्हें लिखवा लेता था। वस्टिन वाग चित्र बनान म बडा दक्ष था। वह टॉड के लिए प्राचीन मदिर महल किले मूर्ति आदि भारतीय शिल्प कला के चित्र बना दिया करता था। घासी नामक एक देशी चित्रकार को भी टॉड अपने साथ रखता था। यो वह राजा महाराजाओ प्रतिष्ठित पुरुषा के चित्र हिन्दी सस्कृत फारसी अरबी आदि भाषाओ म लिखे एतिहासिक या अन्य ग्रथा प्राचीन ताम्र पत्रा व सिक्को का सग्रह करता था। सिक्का क सग्रह के लिये मथुरा आदि नगरो म अपने एजेन्ट रखे हुए थ जो प्राचीन सिक्के एकत्र कर टॉड क पास पहुंचाया करते थे। वह तत्कालिन शासका प्रतिष्ठित पडितो लोगा जन मन्दिरो आदि स्थानो म सुरक्षित हस्तलिखित ग्रन्थो का बडे चाव से देखता उनम से अपने काम क ग्रथा को लने का प्रयास करता यदि सुलभ होने म कोई दिक्कत आती तो उनकी प्रतिलिपि करवा लेता था।

मेवाड के महाराणा भीमसिंह ने टॉड का अपनी ऐतिहासिक सामग्री सुलभ कराने म बडी मदद की। महाराणा ने निजी पुस्तकालय म सग्रहीत पुराण, महाभारत रामायण, पृथ्वीराज रासो आदि एतिहासिक पुस्तको से राज पडिता द्वारा सूर्य व चन्द्रवशी शासको की वशावली तैयार कराके टॉड को प्रदान की। यो सग्राहक टाड ने इगलड जाने से पूव पुराण, रामायण

महाभारत राजपूताना एव अन्य अनेक रायो और राजवशियों की ख्यातें पृथ्वीराज रासो खुमाण रासा हमीर रासा रतन रासो आदि कई रासा ग्रन्थ तथा विजय विलास सूरज प्रकाश जगत विलास, जयविलास राजप्रकाश राज प्रशस्ति नव सास्साक चरित कुमारपाल चरित्र मानचरित्र हमीर काव्य जयसिंह कल्पद्रुम नामक ग्रन्थ एव उनकी तयार कराई हुई राजवशा की वशावली आदि अनेक इतिहास सबधी पुस्तको का सग्रह कर लिया था। पृथ्वीराज रासो तो टाड को बेहद पसन्द आया। अतएव उसका अग्रजी म अनुवाद कर दिया। इन ऐतिहासिक ग्रन्थो के अलावा टाड न काव्य नाटक व्याकरण काग ज्योतिष, शिल्प, माहात्म्य व जन धम सबधी कई पुस्तका तथा अरबी व फारसी के कई हस्तलिखित ग्रन्थो का काफी अच्छा सग्रह किया था। इसी भाँति कई प्राचीन स्थानो राजाओं व सुप्रसिद्ध पुरुषो के चित्र चित्तौडगढ, मनाल बाडाली, बिजोलिया भमराडगढ़, मांडलगढ़ कुंभलगढ, आहतपुर आहाड, नाडोल, वसवा आदि अनेक स्थानो के शिलालेखो ताम्रपत्रो आदि की प्रतियाँ अथवा मूल को प्राचीन मूर्तियो एव बीस हजार के लगभग प्राचीन सिक्को का सग्रह किया था।[16]

स्वदेश जान से पन्द्रह दिन पूव टाड इस अपूव सग्रह के साथ डबोक म उदयपुर आकर सहेलिया की बाडी म इस ऐतिहासिक निधि का वह पकिग करा रहा था। तभी एक दिन महाराणा भीमसिंह उससे विदाई के मिलन हेतु वहाँ आया तो टाड को सानियो के बीच म देखकर उस हँसी भी आगई थी। महाराणा ने कहा कि मेवाड म पाँच वष तक रहते हुए टाड न इस राज्य की सेवा की, इसे क्षति से बचाया किन्तु जाते समय वह यहाँ की एक चुटकी मिट्टी भी नही ले जा रहा है[17] निःसन्देह टॉड का किसी वस्तु या द्रव्य से प्रेम या लगाव नहीं था। उसके लिये तो उसका सग्रह ही सब कुछ था।

यो स्वदेश जाने की सारी तय्यारी हो जाने पर जून 1, 1822 ई को टाड ने उदयपुर से सदा सवदा के लिये अंतिम विदा ली। जून 9 को वह सिरोही होते हुए जून 12 को आबू गया, जहाँ उसे कई शिलालेख मिले

---

16 वही पृ 19 21

17 वही पृ 21 22

जिनमें विशेषतया वि स 1265 का[18] परमार राजा धारावर्ष के समय का था।[19] ऐतिहासिक खोज और उसके द्वारा भूतकालीन इतिवृत्त की अनात लुप्त तथा विशृंखलित कड़ियों को जोड़ने के लिये टाड सन्नद्ध समुत्सुक रहा। वह जानता था कि इन प्रदेशों में ऐसी सामग्री की कमी नहीं है जिसका उपयोग शोध (विषयक प्रवृत्ति) को समान रूप से सम्मानित और प्रोत्साहित करने में किया जा सकता है। शिलालेखों के आधार पर चरित्रों एवं ऐतिहासिक वृत्तों के तिथिक्रम के तथ्यों को निश्चित करना भाटों के लेखों से [अनेकानेक] नामधारी विदेशी जातियों के उत्तरी एशिया से चलकर इन प्रदेशों में आ बसने के क्रम का पता लगाना उन विभिन्न पूजा प्रकारों पर विचार करना जो वे अपने पूर्व पुरुषों की भूमि से यहां पर लाए और यहां से जिन लोगों को हटाकर वे बस गए उनके रहन-सहन आदि के तरीकों में घुलनेमिलने से जो भी थोड़े बहुत परिवर्तन हुए उनके विषय में अनुमान लगाना तथा इस बात की भी शोध करना कि उनकी प्राचीन आदतों संस्थाओं में से कितनी अब भी बच रही हैं ये ऐसे विषय हैं जो किसी भी विचारशील *मस्तिष्क के लिये कदापि हीन या उपेक्षणीय नहीं है और यहाँ* शोध के लिये पूरी-पूरी सुविधाएं प्राप्त हैं।[20] अतः आबू में उसने चन्द्रावती सिद्धपुर अनहिलवाड़ा (पाटन) खम्भात वल्लभी पालिताना शत्रुंजय सोमनाथ पट्टन जूनागढ़ गिरनार गुमली द्वारका आदि के महत्वपूर्ण मंदिरों बावड़ियों और खंडहरों में ही नहीं राह में पड़ने वाले सारे नगण्य और उपेक्षित परन्तु सम्भावित स्थानों में भी शिलालेखों की खोज की "कुछ महत्वपूर्ण शिलालेखों का अनुवाद भी उसने परिशिष्ट में दे दिया है। इन शिलालेखों में परिशिष्ट सं 7 का शिलालेख विशेष महत्व का है जो मूलतः सोमनाथ का होते हुए भी टाड को वेरावल में मिला था। उसमें सिंह संवत् का उल्लेख है जो तब तक अज्ञात ही था।[21]

---

18 यह लेख आबू पर्वत पर ओरिया गाँव के पास कनखल तीर्थ के शिव मन्दिर में लगा हुआ है।

19 ओझा कर्नल जेम्स टाड का जीवन चरित्र पृ 23

20 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 13

21 वही पृ 13 14

पश्चिम भारत की इस यात्रा के दौरान भी टॉड का ऐतिहासिक सामग्री का संग्रह कार्य निरंतर चलता रहा। चन्द्रावती के खण्डहरों में से उसे परमार-कालीन कुछ सिक्के मिले थे। माण्डवी (कच्छ) की श्मशान भूमि व खण्डहरों में से भी उसे मध्ययुगीन के दो सिक्के प्राप्त हुए थे। कांगी के जैन मन्दिरों से मेवाड़ के राजाओं से संबंधित महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री का संग्रह प्राप्त किया। सोमनाथ पट्टन में एक पुराने काजी घराने के ग्रन्थभंडार के पास से एक हिन्दी काव्य का खण्डित प्रति प्राप्त की जिसमें पाटन के पतन की कहानी थी। द्वारका में एक भाटा व चारण सरदार से उनकी वंशोत्पत्ति की विचित्र कथाएँ और वाघेला की उत्पत्ति संबंधी बहुत सी बातें उसने सुनी। द्वारका के ही एक वंश भाट की वंश बही तथा राजवंशावली में से उसने कुछ पत्रों की नकलें करली। भुज नगर पहुँचते ही वहाँ के भाटों और उनकी बहियों का उपयोग किया। वहाँ की रीजेन्सी के प्रमुख सदस्य रतनजी से जाडेजा शासन का पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त किया और राजपूत शासन पद्धति से वह किन बातों में भिन्न था इसको भी टॉड तरह से समझा।[22] जैसलमेर से उसने कागज और ताम्रपत्र की कितनी ही प्रतियाँ प्राप्त कर ली थी। टॉड ने पाटन और खंभात के जैन ग्रन्थ भंडारों में से कुछ ग्रन्थ प्राप्त करने का प्रयास किया। यति ज्ञानचन्द्र को पाटन के ग्रन्थ भंडार में से 'वंश राज चरित्र' और शान्तिनाथ चरित्र की प्रतियाँ ढूंढने का भेजा। काफी परिश्रम एवं पूरा प्रयत्न के बाद भी वंश राज चरित्र तो उपलब्ध न हो सका किन्तु 'कुमार पाल चरित्र' (वस्तुतः 'कुमार पाल रास') की कुछ प्रतियाँ टाड ने अवश्य प्राप्त कर ली।[23] वर्षा के कारण टॉड को कुछ महिने बम्बई में रुकना पड़ा। तब भी उसने अपना समय खोज में व्यतीत करते हुए प्रति दिन अपने संग्रह में कुछ न कुछ वृद्धि ही की थी। उसका यह संग्रह इतना बढ़ गया था कि इंगलैण्ड पहुँचने पर (1823 ई.) उसे कोई 40 मुद्रा का 72 पौंड चुंगी चुकानी पड़ी। टॉड ने अपने इस अमूल्य संग्रह का अधिकांश इण्डिया हाउस तथा लन्दन रायल एशियाटिक सोसायटी में जमा करा दिया जो अद्यतन सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित है।[24]

---

22 वही पृ 15 16

23 वही

24 आमा क्रम जेम्स टाड का पश्चिम भारत चरित्र पृ 22 पश्चिमी भारत की यात्रा (प्रस्तावना लेखक डा रघुवीरसिंह) पृ 16 17

इस प्रकार कनल टाड एक सग्राहक इतिहासज्ञ था। उसने जितना लिखा उससे कही अधिक एकत्र किया था। नि सदेह तत्कालीन प्रारभिक इतिहास लेखन की शोध परक प्रक्रिया म उसम कइ गलतिया भूलें अभाव आदि रह जाना कोई अनहोनी बात नहीं थी। उसने यह स्पष्ट कर दिया कि भारतीयो म इतिहास लखन की प्रक्रिया व्याप्त रही है और यहाँ एतिहासिक सामग्री की विपुलता विद्यमान है। टाड द्वारा लिख एनाल्स एण्ड एन्टिक्वीटीज आफ राजस्थान एव ट्रवल्स इन वेस्टन इडिया ग्रथ भी अपने आप म ऐतिहासिक व तातो क विपुल सग्रह कह दिय जायें तो कोइ अत्युक्ति नही होगी। स्वय टाड ने कहा कि इस विषय को (एनाल्स) इतिहास की कठोर शली म लिखने का मेरा कोई इरादा नहीं था क्योकि एसा करने मे अनक एस विवरण छूट जाते जो एक राजनीतिज्ञ जिज्ञासु के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते थ। मैं अपनी इस कृति को लगन व एकत्रित परिश्रम के साथ किय गये सग्रह के रूप म प्रस्तुत करना चाहता हूँ।[25]

सग्रहकर्ता को कभी सतोष नहीं होता है। टाड ने अपूव सग्रह के उपरान्त भी यह स्वीकार किया कि यदि स्वास्थ्य और पर्याप्त अवकाश मुझे मिलता तो जो कुछ मैंने किया है उसस दस गुना काम करता और यदि विशेष सुविधाएँ मिली होती तो इस इस गुने का भी दस गुना कर दिखाता—मरे इस कथन पर विश्वास कर लेना चाहिये।[26] नवम्बर 17 1835 ई को टॉड तो इस नश्वर ससार को छोड गया किन्तु उसने अपने कठ परिश्रम म जिस दुलभ मूल्यवान एतिहासिक थाती को नष्ट होने से बचाने हुय सुरक्षित किया वह नूतन शोध काज हेतु अन्वेषकों के लिये निश्चित ही प्ररणा दीप बनी है तथा उसने इस महान सग्राहक को चिर अमरत्व प्रदान कर दिया है।

---

25 डॉ हुकमसिंह भाटी स राजस्थान क इतिहासकार पृ 43 द्रष्टव्य डॉ एन एम चूण्डावत का शोध लेख टॉड का व्यक्तित्व व कृतित्व

26 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 256

जेम्स टॉड : जीवन-दर्शन और कृतित्व

—डॉ दवीलाल पालीवाल

(अ) जीवन

प्रारम्भिक जीवन

लेफ्टिनेंट कर्नल जेम्स टाड का जन्म 20 मार्च 1782 ई के दिन इस्लिंग्टन में हुआ था। उसके पिता का नाम जेम्स टॉड (प्रथम) और मां का नाम मेरी हीटली था। उनका विवाह न्यूयार्क अमरिका में 1780 ई, में हुआ था। जेम्स टाड प्रथम अमरिका त्याग कर अपने भाई जान की हिस्सेदारी में भारत में तत्कालीन आगरा एवं अवध के संयुक्त प्रांत मिर्जापुर में नील बागान का मालिक बन गया था। बालक जेम्स टाड (द्वितीय) के दोनों चाचा पैट्रिक और एंड्रयू हीटली ईस्ट इंडिया कंपनी की सिविल सर्विस के सदस्य थे। इस भांति बालक जेम्स टाड में अपने पिता और दोनों चाचाओं के भारत के साथ सम्बन्धों के कारण भारत के प्रति रुचि उत्पन्न हो गई। इसलिये जब वह सोलह वर्ष की आयु का था उसने अपने चाचा पैट्रिक हीटली की सहायता से 1798 ई में ईस्ट इंडिया कंपनी की सेवा में कैडेटशिप प्राप्त की। अनन्तर उसको रॉयल एकेडमी वूलविच में शिक्षा प्राप्त करने भेजा गया। 1799 ई में वह भारत के लिये रवाना हुआ और कलकत्ता पहुंचा। उसको दूसरी यूरोपियन रेजीमेंट में भर्ती किया गया। 29 मई 1800 ई को उसको पदोन्नत कर चौदहवीं देशी पैदल सेना में लेफ्टिनेंट नियुक्त किया गया। 1807 ई में उसको उसी पद पर पचीसवीं देशी पैदल सेना में स्थानांतरित कर दिया गया। 1799-1800 के काल में उसने पहले मोलुक्का द्वीप और बाद में मराठन द्वीप में जहाज पर काम करके सैनिक सेवा का अनुभव प्राप्त किया। बाद में वह कलकत्ता से हरिद्वार के मध्य के भूभाग में सैनिक अभियानों में व्यस्त रहा।

राजनयिक जीवन में प्रवेश

1801 ई म जब टाड दिल्ली म तैनात था उसकी रुचि और क्षमता को देखते हुए उसको दिल्ली की एक पुरानी नहर की पमाईश करने के लिये इंजीनियर बनाया गया। इस काय म उसने अपनी सूझ-बूझ और प्रतिभा का परिचय दिया जिससे अग्रेज सरकार बहुत प्रभावित हुई।

टाड सनिक सेवा के लिये नहीं पदा हुआ था। वह प्रारम्भ स ही महत्वाकाक्षी रहा। दिल्ली के पमाइश काय की सफलता के बाद उसका आत्मविश्वास बढ गया। 1805 ई म अपने चाचा क मित्र ग्रीम मसर *की सहायता से उसने राजनयिक सेवा म प्रवेश किया जिससे उसके जीवन ने* एक महत्वपूर्ण मोड ले लिया। उस समय ग्रीम मसर मराठा सरदार दौलतराव सिंधिया के दरबार म अग्रेज सरकार की ओर स राजदूत एव रेजीडेन्ट नियुक्त था। उसने टॉड की इच्छा और प्रतिभा को देखत हुए उसको अपनी रक्षक सनिक टुकडी के कमान म नियुक्ति दिलवाकर अपने साथ ले लिया। इसस वह प्रशासनिक सेवा और राजपूत एव मराठा राजनीति से परिचित हुआ तथा उसकी बौद्धिक प्रतिभा के प्रस्फुटन के लिये माग प्रशस्त हो गया।

ऐतिहासिक शोध काय का बीजारोपण

1806 ई के प्रारम्भ म वह ग्रीम मसर के साथ आगरा से चलकर जयपुर होते हुए उदयपुर के निकट प्राचीन नागदा स्थान पर पहुचा। उस समय सिंधिया मेवाड राज्य की राजधानी उदयपुर के निकट नागदा (एकलिंगजी मंदिर के पास) म डेरा डाले हुए था। उस वष जून माह म मेवाड क तत्कालीन महाराणा भीमसिंह और मराठा सरदार दौलतराव सिंधिया के बीच हुई मुलाकात के समय टॉड भी एक मूकदर्शी के रूप म विद्यमान था। एक कृपक पुत्र के सम्मुख प्राचीन एव इतिहास प्रसिद्ध राजवश क राणा की दयनीय स्थिति का अवलोकन करके टॉड के भावुक मानस पटल पर मार्मिक प्रभाव पडा। वहीं टाड ऊची अरावली पहाडियों क मध्य स्थित नागदा और एकलिंगजी के मन्दिर क निकट स्थानों म प्राचीन एव अत्यन्त भव्य कला क प्रतीक चिह्न मन्दिरो एव मूर्तियों क ध्वसावशेषों को देखकर मुग्ध हो गया। इस भाति वह मेवाड के प्राचीन राजघराने क उज्ज्वल इतिहास और उसकी तत्कालीन पतनावस्था स परिचित हुआ। उसके मन म राजपूतों के प्राचीन इतिहास और सांस्कृतिक उपलब्धियों के सम्बध म जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई और इस प्रकार अनजान ही उसके मन म इस क्षेत्र क प्राचीन इतिहास संस्कृति समाज और राजनीति आदि विषयों का शोध खोज करने के निश्चय का बीजारोपण हो गया।

भौगोलिक सर्वेक्षण और पिंडारियों का दमन

इस काल म अग्रेज सरकार विभिन्न पिंडारी सनिक दलो को मिटाने म लगी हुई थी जो राजपूताना एव मध्यभारत के विशाल भू क्षेत्र म लूटमार करके अराजकता उत्पन्न कर रहे थे। किन्तु इस भू भाग की सही भौगोलिक जानकारी के अभाव म कपनी सरकार के लिये पिंडारी दमन का काय दुष्कर हो रहा था। 1791 ई म डाक्टर विलियम हटर ने इस क्षेत्र क भौगोलिक सर्वेक्षण का काय प्रारम्भ किया था किन्तु वह अपूर्ण रहा। स्वय टाड के शब्दो म उस समय अग्रेज अधिकारियों का भौगोलिक जानकारी की यह स्थिति थी कि उदयपुर और चित्तौड की स्थिति मानचित्रो म उल्टी दिखाई गई थी। उनम चित्तौड को उदयपुर क उत्तर पूव क बजाय दक्षिण पूव म दिखाया गया था। राजस्थान के लगभग तमाम पश्चिमी और मध्यभाग क राज्य अग्रेजी मानचित्रो म नहा थे और यह माना जाता था कि राजस्थान की सभी नदिया का बहाव दक्षिण म नबदा की ओर है। युवक टाड की प्रतिभा और रुचि का देखते हुए ग्रीम मसर ने राजस्थान और मध्यभारत क विशाल भू क्षेत्र की भौगोलिक पमाइश करने का बडा उत्तरदायित्व टॉड को दिलवाया। सिंधिया की सना क साथ एक स्थान स दूसरे स्थान पर यात्रा करते हुए टॉड न अथक परिश्रम करके दस वर्षों म 1815 ई तक यह काम लगभग पूरा कर लिया। उस वष उसन पहली बार राजपूताने का सयुक्त भूगोल तयार करके पिंडारियो क विरुद्ध एक बडी लडाई प्रारम्भ होन स पूव कपनी क गवनर जनरल मार्क्विस आफ हस्टिंग्ज का प्रस्तुत किया। उसक तुरन्त बाद उसने मालवा क्षत्र का मानचित्र भी तयार कर लिया। य मानचित्र पिंडारियो एव मराठो क विरुद्ध सनिक अभियानो म बडे उपयोगी सिद्ध हुए। इसक साथ टाड ने लडाई शुरू होने पर युद्ध क्षेत्र का विस्तृत मानचित्र और युद्ध योजना प्रसग मे बनाई और पिंडारियो क उद्भव वद्धि और स्वरूप क सम्बध म दस्तावेज तयार किया। ये दोनो जनरल डाविन मार्शल एडम्स और ब्राउन के सनिक अभियानो म बड सहायक सिद्ध हुए। गवनर जनरल हस्टिग्स ने टॉड के इस योगदान की अत्यन्त प्रशसा की। हाडौती क रावता नामक स्थान से उसने अपनी जानकारी क आधार पर इन अभियानो का निरतर मागदशन किया। उसने स्वय अपनी सनिक टुकडी की सहायता स काली सिंध नदी की घाटी म सक्रिय पिंडारियो का सफाया किया और वहा स लूट म प्राप्त माल स कोटा क पूव म नदी पर हस्टिग्ज पुल बनवाया। इसी काल म उसने राजपूताने के तत्कालीन शीषस्थ दूरदर्शी राजनीतिज्ञ

एव चतुर कूटनीतिज्ञ भाला जालिमसिंह को अपना मित्र बनाया और उसको कूटनीति द्वारा होलकर से अलग करके अंग्रेजों का पक्षपाती बनाकर अपनी सरकार की बड़ी मूल्यवान सेवा की। 1813 ई. में उसको कप्टन पद पर पदोन्नत किया गया और 1815 ई. में उसको रेजीडेंट का द्वितीय सहायक बनाया गया। यह उल्लेखनीय है कि राजपूत राज्यों वाले भू क्षेत्र के लिये टॉड ने सवप्रथम 'राजपूताना' के स्थान पर राजस्थान नाम का उपयोग किया था। बाद में भी अंग्रेजी शासन के अन्तर्गत राजपूताना नाम का प्रयोग जारी रहा। स्वयं टॉड ही प्रांतों ने अपनी पुस्तक का नाम राजपूताना का इतिहास रखा इस क्षेत्र के प्रथम विश्व विद्यालय का प्रारम्भिक नाम 'राजपूताना विश्व विद्यालय' रखा गया था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात राजपूत राज्यों के विलय एव एकीकरण के बाद नवनिर्मित राज्य का नाम राजपूताने के बजाय राजस्थान रखा गया। इसका श्रेय टॉड को जाता है।

राजनैतिक प्रतिनिधि

सिन्धिया के दमन और मराठों की पराजय में महत्त्वपूर्ण योगदान टाड और कोग म सूझ-बूझ पूर्ण राजनैतिक कार्यवाहियां आर्यानिक प्रमाण के कारण राजपूताना क्षेत्र के सम्बन्ध सभी प्रकार की जानकारी होने के राजाओं एव सामन्तों से निकट सम्बन्ध बनाने तथा अपने व्यवहार एवं विचारों से जनप्रिय हो जाने आदि बातों को दृष्टिगत करके हुए अंग्रेज सरकार ने मार्च 1819 ई. में कप्टन टॉड को ग्वालियर रेजीडेंट के प्रथम सहायक के पद से पदोन्नत कर मेवाड़ में अपना राजनैतिक प्रतिनिधि नियुक्त किया। उस समय डविड ओक्टर लानी राजपूताना का रेजीडेंट था। सरकार ने उसको दिल्ली में रेजीडेन्ट नियुक्त कर टाड को मेवाड़ के अतिरिक्त जोधपुर कोटा बूंदी जसलमेर और सिरोही राज्यों के लिये भी अपने लिये प्रतिनिधित्व का दायित्व दे दिया। टाड की इस आकस्मिक एवं अप्रत्याशित पदोन्नति से आक्टरलोनी के मन में भारी ईर्ष्याग्नि उत्पन्न हुई। उसका बड़ा भारी प्रभाव था। उसने हर प्रकार से टॉड को नीचा दिखाने और अपमान करने के लिये निरन्तर षड्यन्त्र किये और उसको चार वर्ष अधिक अपने पद पर नहीं टिकने दिया।

मेवाड़ में प्रशासनिक सुधार

जब टाड राजनैतिक प्रतिनिधि बन कर राजपूताने में आया उस समय राजपूत राज्यों की हालत बहुत खराब थी। मराठों आक्रमणों और सिन्धिया

की लूटपाट के कारण व विनाश और अराजकता के कगार पर पहुँच गये थे। प्रांतरिक प्रशासन नाम मात्र के लिये रह गया था। सामंत लोग विद्रोह आपसी कलह छीना झपटी और हिंसक कार्यवाहियों में लीन थे। डाकुओं एवं लुटेरों का उत्पात सर्वत्र फैल गया था। इन कारणों से कृषि, उद्योग और व्यापार चौपट हो गये थे। मेवाड़ के राणा भीमसिंह का शासन तो सिमटकर उदयपुर की पर्वतीय घाटी तक रह गया था और उसका निर्वाह कोटा के मंत्री राजा जालिमसिंह की मदद से हो रहा था। ऐसी स्थिति में उसको दोहरे दायित्व का भार उठाना पड़ा। एक ओर उसको अंग्रेज सरकार के आर्थिक एवं राजनैतिक हितों की रक्षा करनी थी दूसरी ओर मेवाड़ तथा अन्य *राज्यों में व्याप्त अराजकता और लूटमार समाप्त कर उनमें शांति* और सुव्यवस्था कायम करनी थी उसको करने के लिये नया काम मिला था। उसको पूरा करने के लिये वह सम्पूर्ण उत्साह योग्यता शक्ति और सामर्थ्य के साथ जुट गया। उसके साहस लगन और उत्साह में सच्चाई और ईमानदारी थी। वह महत्वाकांक्षी था और कुछ असाधारण करके दिखाना चाहता था। उसके इस उत्साह और जोश को देखकर और प्रधानतः मेवाड़ में शांति और व्यवस्था कायम करने उसकी सीमाओं को सुरक्षित करने और प्राचीन गौरव को पुनर्स्थापित करने के काम में जो सफलता प्राप्त की उनको देखकर अंग्रेज अधिकारी दंग रह गये और उससे ईर्षा करने लगे। प्रारम्भ में उसको गवर्नर जनरल हेस्टिंग्ज का विश्वास प्राप्त रहा। टाड ने मेवाड़ का शासन सीधा अपने हाथों में ले लिया। *उसने विद्रोही जागीरदारों को वश में किया और उनको बलात् हड़पी खालसा* भूमि से हटने तथा राणा के प्रति आज्ञाकारी बनने के लिये बाध्य किया। मीणा एवं मीणा लोगों की जोर जबरदस्ती एवं लूटमार समाप्त की, राज्य की आय में वृद्धि के लिये भू-कर का नया बन्दोबस्त किया व्यापार के लिये मार्ग सुरक्षित किये और मेवाड़ छोड़कर गये व्यापारियों को अंग्रेज सरकार की गारंटी देकर वापस बुलाया। इन सब कार्यवाहियों से न केवल राणा का राज्य और गौरव पुनर्स्थापित हुआ अपितु आय में वृद्धि होने और कृषि व्यापार एवं उद्योगों के फिर से पनपने से मेवाड़ पुनः तरक्की करने लगा।

राजपूत राज्यों के प्रति नीति

मेवाड़ में टाड के प्रशासन से जो परिणाम निकले, उसकी प्रशंसा हुई तो निन्दा भी हुई। आश्चर्य की बात यह है कि जिस प्रयोजन की पूर्ति के लिये टॉड ने काम किया उसी के विरुद्ध कार्य करने का उस पर

आरोप लगाया गया। मेवाड के आंतरिक मामला मे हस्तक्षेप करने मनमाने परिवर्तन करने राणा की स्वतन्त्रता और अधिकारो का हनन करने जागीरदारो के परपरागत अधिकारो पर आघात लगाने आदि कार्यवाहियो के लिये उसको दोषी ठहराया गया और कहा गया कि ये सब कार्यवाहिया सधि की शर्तों के विरुद्ध हैं। उसके विरुद्ध भ्रष्टाचार की झूठी बातें भी फैलाई गई। किन्तु वस्तुत इन आरोपो को लगाने वाले डेविड आक्टर लोनी जसे अग्रेज अधिकारी ही अधिक थे जो टाड की महत्वाकाक्षापूर्ण प्रवतियो क्षमताओ और तीव्र प्रगति की सभावना से आशकित थे। उन्होने उसके विरुद्ध व्यापक वातावरण बनाया और उसके काय म बाधाए उत्पन्न की। अपनी सफलताओ के जोश म तथा डेविड आक्टर लोनी जसे प्रतिद्वन्द्वियो द्वारा पदा किये प्रशासनिक अवरोधो की अवहेलना करने के लिये टाड ने कुछ ऐसे कदम उठा लिये जो सरकारी आदेशो के विपरित थे। इससे उसका सकट और बढ गया और केन्द्रीय प्रशासन विरुद्ध हो गया। जोधपुर और कोटा राज्यो म किसी भी प्रकार के परिवर्तन करने से रोका गया। अधिकारो म कमी की गई। *जोधपुर और कोटा के मामलो म उसको देहली रेजीमेण्ट आक्टर लोनी के* मातहत कर दिया गया। तथा अन्य अधिकारियो को उसके काम म लगाया गया। अप्रैल 1822 तक कोटा बूदी और जसलमेर पूरी तरह उसके उत्तरदायित्व से ले लिये गये। अन्त म मेवाड के मामलो म भी अग्रेज सरकार ने आक्टर लोनी को राजपूताना एव मालवा क्षेत्र के लिये अपना सर्वोच्च अधिकारी नियुक्त कर टाड को उसका मातहत बना दिया। टाड ने इन कार्यवाहियो से स्वय को अपमानित महसूस किया जबकि वह अपनी सफलताओ पर हर्षित हो रहा था, उसको उसके विपरित दडित किया गया। कुपित और विरक्त होकर उसने अस्वस्थता का कारण बनाकर त्यागपत्र दे दिया। 1 जून 1822 को सेवा मुक्त होकर वह उदयपुर से रवाना हो गया। वहा से वह पश्चिमी भारत के प्रधान प्राचीन एतिहासिक एव सास्कृतिक महत्व के स्थलो आबू सिद्धपुर अणहिलवाडा पाटन बडोदा भावनगर पालीताणा जूनागढ द्वारका सोमनाथ आदि का अवलोकन एव अध्ययन करते हुए जनवरी 1823 मे बम्बई पहुचा जहां से वह लन्दन लौट गया।

अग्रेज अधिकारियो की अप्रसन्नता

टाड के प्रति उच्च अग्रेज अधिकारियो की नाराजगी का बडा कारण राजपूत राज्यो के प्रति उसकी सहानुभूति उसके द्वारा अग्रेज सरकार द्वारा उनके साथ की गई सधियो की शर्तों के पालन पर खुले रूप से जोर देना

तथा इस क्षेत्र के सभी वर्गों के लोगों के साथ उसका मेल जोल और जनप्रियता था। उसने मेवाड़ राज्य के आन्तरिक मामलों में सीधा हस्तक्षेप करके शासन के सारे अधिकार अपने हाथों में ले लिए थे किन्तु वास्तव में यह राणा के अधिकारों को पुनर्स्थापित करने के लिए की गई अस्थायी कार्यवाही मात्र थी। सिद्धान्ततः वह राजपूत राज्यों की मूल सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्थाओं नियमों एवं रीतिरिवाजों में किसी प्रकार के बाहरी हस्तक्षेप अथवा परिवर्तन करने तथा उन पर अंग्रेजी कानून और रीति व्यवहार लादने का विरोधी था। दासताजन्य परिस्थितियों के कारण जो बुराईयाँ राजपूतों के सामाजिक एवं निजी जीवन में आ गई थी उनमें सुधार लाने के सम्बन्ध में उसका कथन था कि वह सुधार बाहरी शक्ति द्वारा न किया जाकर वे स्वयं करें। भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के स्थायित्व और दृढ़ता के लिये टॉड ने मुगलों के इतिहास का उदाहरण देते हुए अंग्रेज सरकार को यह राय दी थी कि राजपूत राज्यों के साथ ऐसा कोई कार्य नहीं किया जाय जिससे दासता अथवा हीनता की भावना उत्पन्न हो। उनके साथ विजेता अथवा संरक्षक की भांति व्यवहार न करके मित्र की भांति व्यवहार करें। उनके प्रति अंग्रेज अधिकारियों के निरंकुश एवं स्वच्छाचारी व्यवहार की टॉड ने खुलकर आलोचना की और इस आचरण को सन्धि शर्तों के विपरीत बताते हुए टॉड ने लिखा था "हम ब्रिटेन के संरक्षण में आई इन जातियों को दंड देते समय दया का नहीं डंडे का व्यवहार करते हैं उनके साथ तलवार का न्याय करते हैं। हमारी सरकार के करों तथा अन्य सम्बन्धी कानून इन राज्यों के प्रजाजनों के हित में नहीं बनाकर हमारा कोष भरने के लिये बनाये जाते हैं।" निश्चय ही टॉड की इस प्रकार की कटु स्पष्टोक्तियों के कारण वह कम्पनी के उच्चाधिकारियों का कोप भाजन बना और साम्राज्य की सेवा में किये गये उसके अच्छे कार्यों के लिये कभी भी सराहना भी नहीं की गई।

अन्तिम वर्ष

भारत छोड़ने के बाद टॉड केवल तेरह वर्ष और जीवित रहा। 1 मई, 1824 ई. को उसको मेजर पद और 2 जून, 1826 को लेफ्टिनेन्ट कर्नल के पद पर पदोन्नत किया गया। 16 नवम्बर 1826 ई. को टॉड का विवाह लन्दन के एक प्रसिद्ध सज्जन की पुत्री जुलिया से हुआ। जिससे दो पुत्र तथा एक पुत्री हुई। मार्च, 1823 में लन्दन में उसके सहयोग से रायल एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना हुई। वह उसका सदस्य बना तथा उसने उसके लाइब्रेरियन का दायित्व भी ग्रहण किया। उसने स्वयं द्वारा

भारत म सग्रहीत कई प्राचीन पाडुलिपिया शिलालेखो की छापें सिक्के आदि पुस्तकालय म भेंट किये। उसकी कृतिया को दर्शित करने वाले भारतीय कलाकार घासी एव कैप्टन वाघ द्वारा तयार किये गये चित्र सूची बद्ध करके रायल एशियाटिक सोसाइटी लन्दन के पुस्तकालय म रखे गये।

भारत म अपनी सेवा काल के दौरान टाड निरन्तर राजपूत राज्या क इतिहास पुरातत्व साहित्य, सस्कृति कला आदि विषयों का अध्ययन एव शोध करता रहा और उसने प्रचुर शोध सामग्री एकत्र की। अपनी यात्राओं के दौरान उसकी यह शोधप्रवृति अनवरत रूप से सक्रिय रही। अपने अध्ययन और शोध के आधार पर टाड ने पहिले राजस्थान के इतिहास सस्कृति आचार विचार और सामाजिक रीतिरिवाजो के सम्बध म एक विशाल ग्रथ तयार किया। इस ग्रथ का नाम एनाल्स एण्ड एटीक्विटीज आफ राजस्थान रखकर उसका प्रथम भाग 1829 ई मे प्रकाशित कराया। दूसरा भाग 1832 म प्रकाशित हुआ। उसके बाद उसने 'ट्रैवल्स इन वेस्टन इण्डिया ग्रथ लिखा जो उसकी आकस्मिक मृत्यु के कारण चार वर्ष बाद 1839 ई म प्रकाशित हुआ। 17 नवबर 1835 ई को उसका देहान्त हुआ।[1]

(ख) इतिहास दर्शन

भारत सम्बधी इतिहास लखन

अठारहवी शती के मध्यकाल तक ब्रिटेन का भारत सम्बन्धी इतिहास लखन बडी सीमित परिधि म अवरुद्ध रहा। उस समय तक अग्रेज इतिहास लेखक प्राचीन भारतीय विद्या साहित्य और सस्कृति से अपरिचित रहने के कारण भारत के इतिहास को गौण मानकर उसको मुस्लिम इतिहास के एक अग क रूप म ही लिखते थे। अठारहवी शती क उत्तरार्द्ध म पाश्चात्य विद्वानो द्वारा प्राचीन भारतीय विद्या एव ज्ञान विज्ञान सम्बधि शोध-खोज किये जाने से भारत सबधी विस्मयकारी तथ्य यूरोपियो के सम्मुख उदघाटित हुए। उसके बाद स्वतत्र रूप स भारत का इतिहास लिखन का क्रम प्रारम्भ हुआ। विलियम जोन्स क प्रयत्नो म 1784 ई म कलकत्ता मे रायल एशियाटिक सोसायटी की स्थापना और 1788 ई म उसके द्वारा एशियाटिक रिसर्चेज पत्रिका प्रकाशित करन के बाद इस ओर विशेष ध्यान दिया जाने लगा।

---

1 सन्दभ ग्रथ डा ओझा कनल जेम्स टाड का जीवन चरित्र
पश्चिमी भारत की यात्रा स गोपालनारायण बहुरा

तत्कालीन इतिहास दर्शन

उस समय ब्रिटेन के इतिहास लेखकों में प्रधानतः तीन प्रकार की दार्शनिक विचारधाराएं काम कर रही थीं– ज्ञानोदयी (Enlightenment) रोमानी (Romantiism) और उपयोगितावादी (Utilitasianism)। तीनों विचार धाराओं का संस्कृति समाज, राज्य आदि के सम्बन्ध में अपना अलग अलग दृष्टिकोण था और उनमें विदेशी जातियों और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के उद्देश्यों एवं नीतियों के सम्बन्ध में मतभेद था। अठारहवीं शती के अन्त में तथा उन्नीसवीं शती के प्रारम्भ में रोमानी और उपयोगितावादी विचारधाराओं वाले कई इतिहास लेखकों के भारत सम्बन्धी इतिहास ग्रन्थ प्रकाशित हुए। विलियम जोन्स (Hindu Culture) विलियम राबटसन (Disguisition Concerning Ancient India 1791 ई), थामस मारिस (Modern History of the Hindostan 1802 10 ई) वान्स कनडी (Origin and Aftinity of the principal languages of Asia and Europe 1828 ई) चार्ल्स हमिल्टन (Timur 1783 ई) जैसे रोमानी इतिहास लेखकों ने प्राचीन भारतीय विद्या एवं ज्ञान को उजागर किया और भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को मानव सभ्यता की महान धरोहर बताया। विलियम जोन्स ने अपने लेखन में प्राचीन भारतीय भाषा, साहित्य धर्म, दर्शन कानून नीति विद्या पुरातत्व कला आदि सभी विषयों में विस्तृत विवेचन किया। रोमानी इतिहास लेखकों के मतानुसार प्राचीन हिन्दू लोग खोजी प्रतिभा रखने वाले लोग थे। वे सभी प्रकार की कलाओं में निपुण, शासन-कार्य में श्रम विधि एवं न्याय के कार्य में विवेकशील तथा ज्ञान विज्ञान के सभी विभागों के ज्ञाता थे। विलियम जोन्स ने सिद्ध किया कि संस्कृत भाषा ग्रीक और लेटिन भाषाओं की बहन है। इन भाषाओं में लिखी गई पौराणिक गाथाओं के बीच घनिष्ठ संबंध है तथा यूनानी, रोमन एवं भारतीय संस्कृतियों का उद्गम एक ही है। उसने यह भी कहा कि प्राचीन हिन्दू सभ्यता यूनानी एवं रोमन सभ्यताओं से अधिक प्राचीन और बढ़चढ़कर है। जोन्स ने यह मत भी प्रकट किया कि यूनानी सभ्यता की जो देन यूरोपीय सभ्यता को रही उसी प्रकार की देन हिन्दू सभ्यता की प्राचीन एशियाई सभ्यता को रही है। जिस भांति प्राचीन यूनानी विद्या एवं ज्ञान को पुनर्जीवित करने से यूरोप में सांस्कृतिक पुनर्जागरण हुआ उसी भांति यदि हिन्दुओं की प्राचीन विद्या ज्ञान, और साहित्य का पुनप्रकाशित किया जाय तो उससे न केवल एशिया में पुनर्जागरण आरम्भ होगा अपितु उसका प्रकाश यूरोप में भी फैलेगा।

भारत सबधी विरोधी विचारधाराए

चाल्स ग्राट और जेम्स मिल जसे उपयोगितावादी विचारधारा के इतिहास लेखकों ने विपरित मत प्रकट करते हुए लिखा कि प्राचीन हिन्दुओ म प्रतिभा तथा बौद्धिक गुणों का अभाव था। उनका अपना कोई इतिहास ग्रन्थ नहा चू कि उन्होने उसके लेखन के लिये आवश्यक बौद्धिक परिपक्वता कभी प्राप्त नही की। उनकी कोई व्यवस्थित एव निश्चित न्याय प्रणाली और विधि सहिता नहीं रही। जेम्स मिल के अनुसार सम्म भारत केवल कथाओ एव पौराणिक गाथाओ तक ही सीमित था। हिन्दू राज्य व्यवस्था राजाओ एव पुरोहितो की स्वार्थपूर्ण दुरभिसधि और सयुक्त निरकुश तानाशाही मात्र रही जिसके कारण हिन्दुओ की बौद्धिक उन्नति अवरुद्ध रही। रोमानी इतिहास लेखकों ने जेम्स मिल जसे इतिहास लेखको की धारणाओ का कड़ा विरोध किया। प्रधानत 1829 ई मे प्रकाशित टाड के ग्रन्थ Annals and Antiquities of Rajasthan जान ब्रिग्ज के ग्रन्थ History of the riseof Mohamadan Power in India (1829 ई) तथा राबट ग्लेग के ग्रन्थ History of British Empire 4 Vols (1830 1835 ई) म उन विचारो का पूरा उत्तर दिया गया। इतिहासकार ग्लेग न तो मिल की स्थापनाओ का बिदुवार उत्तर दिया। इस भाति ज्यो ज्यो प्राचीन भारतीय विद्या साहित्य कला पुरातत्व आदि विषयो की शोध-खोज का विस्तार हुआ भारत सम्बधी भ्रान्त प्रस्थापनाओ का लोप होता गया। 1841 ई म एल्फिन्स्टन की पुस्तक History of India के प्रकाशन क बाद तो उनको पूछने वाला ही नही रहा।

टॉड रोमानी विचारक

जेम्स टाड रोमानी विचारधारा का लेखक था। वह रावटसन जोन्स मिल मारिस जसे इतिहास लेखको की मान्यताओ से प्रभावित था। टाड ने अपने लेखन म जेम्स मिल की भ्रान्त धारणाओ का खण्डन किया और ब्रिटेन म व्याप्त भारत सम्बधी निराधार एव मिथ्यापूर्ण विश्वासो को मिटाने म महत्वपूर्ण योगदान किया। टाड के विचारो ने राबट लग एन पोकोक तथा अन्य परवर्ती इतिहास लेखकों को प्रभावित किया।

रोमानी दशन का इतिहास लेखन काव्यात्मक एव कलात्मक अभिव्यक्ति से पूर्ण होता था। वसी ही भाषाई श्रेष्ठता और ओजस्वी साहित्यिक अभिव्यक्ति टाड के इतिहास ग्रथो म दृष्टिगत होती है जो इतनी हृदयस्पर्शी एव प्रभावोत्पादक है कि उनको बार बार पढने की इच्छा होती है। यही

कारण है कि टॉड का राजस्थान सम्बन्धी ग्रंथ 'एनाल्स' को उसके प्रथम प्रकाशन के एक सौ साठ से अधिक वर्ष बीतने और टॉड की भूलों एवं कमियों को ठीक करने वाले कई शोधपूर्ण इतिहास ग्रंथ प्रकाशित हो जाने के बाद भी मूल अंग्रेजी ग्रंथ तथा उसके मारवाड़ी अनुवादों की मांग आज तक बनी हुई है और बराबर उनके नवीन संस्करण निकलते रहे हैं जबकि लगभग अन्य सभी ख्यातनामा इतिहासकारों के ग्रंथों के पुराने संस्करण ही पुस्तकालयों में उपलब्ध होते हैं।

अंग्रेजी साम्राज्यवाद सम्बन्धी दृष्टिकोण

ब्रिटेन के रोमानी इतिहास लेखकों की विचारधारा का दूसरा पक्ष उनकी रूढ़िवादिता थी जो किसी भी सभ्यता की मौलिक विशेषताओं में सुधार अथवा परिवर्तन के विरुद्ध थी। यही दृष्टिकोण टॉड के लेखन में प्रकट होता है। उनके मतानुसार किसी भी राष्ट्र की संस्थाएं किसी भी काल में उसकी सम्पूर्ण जीवन पद्धति को अभिव्यक्त करती हैं और प्रत्येक राष्ट्र द्वारा स्वयं के लिये विकसित सामाजिक व्यवस्था ही उसकी अपनी विशिष्ट स्थिति और प्रतिभा (genius) के लिये सर्वोत्तम रूप से उपयुक्त होती है। इस भांति उसने उपयोगितावादियों और ईसाइयत के प्रसार के पक्षधर विचारकों के विपरीत दृष्टिकोण अपनाया जो एशियाई सभ्यताओं को बर्बर मानकर उनमें पाश्चात्य आचार विचार के आधार पर सुधार चाहते थे। टॉड ने राजपूत जातियों के प्राचीन इतिहास उनकी सांस्कृतिक एवं सामाजिक विशिष्टताओं एवं गुणों को उजागर किया। उसने मुगल और मराठा आधिपत्य की परिस्थितियों में राजपूतों में उत्पन्न चारित्रिक दोषों एवं सामाजिक बुराईयों को दर्शाया और उनको दूर करने पर जोर दिया। किन्तु उसने राजपूतों की मूल संस्थाओं, नियमों और विशिष्ट आचार विचार में किसी भी प्रकार के सुधार के लिये बाहरी हस्तक्षेप का विरोध किया। उस काल में अंग्रेज अधिकारी गण राजपूतों की सामाजिक राजनैतिक व्यवस्था में मनमाने ढंग से पाश्चात्य प्रकार के परिवर्तन लाने, उन पर विशिष्ट प्रकार की शर्तें लगाने तथा ऐसी अपमानजनक कार्यवाहियां करने की कोशिशें कर रहे थे जिनके कारण उनकी आन्तरिक स्वतन्त्रता और जातीय स्वाभिमान को आघात लग रहे थे। टॉड ने इन कार्यवाहियों से न केवल एक प्राचीन सभ्यता के अवशेषों के नष्ट होने का खतरा देखा, अपितु अंग्रेजी साम्राज्य द्वारा एक मित्र को खो देने का खतरा भी देखा जिनकी मित्रता का बंधन ही साम्राज्य की रक्षा और स्थायित्व का आधार था। निश्चय ही जब एक बार उसका भावुक हृदय

इस प्राचीन सभ्यता को छिन भिन्न और लुप्त होने से बचाना चाहता था वही दूसरी ओर उसकी स्पष्ट मान्यता थी कि उनको कुचलने और आत्मसात करने की कार्यवाही अंग्रेजी राज्य की रक्षा और स्थायित्व के लिये खतरनाक सिद्ध होगी। उसने लिखा था हमारे हर प्रकार के हस्तक्षेप को बन्द करने पर ही उनकी स्वतन्त्रता निभर करती है अन्यथा उनके राज्य हमारे राज्य में विलय हो जाने से हमारे अतिशय बने हुए शासन के लिये भयानक सकट उत्पन्न हो सकता है टॉड उसके स्पष्ट और स्वतंत्र विचारो के लिये कितना ही कोसा गया हो उसकी चेतावनी सही निकली। 1857 की विप्लवकारी घटनाओ ने भारत में अंग्रेजी राज्य हिला दिया था।

अतिशयता

टाड के लेखन में जहा एक ओर प्राचीन हिन्दू सभ्यता के प्रति प्रशसा और तत्कालीन हिन्दू समाज की पतनावस्था के प्रति सहानुभूति की भावना प्रकट होती है वहीं दूसरा ओर मुस्लिम विरोधी विचार दर्शित होते हैं। टाड ने मुस्लिम इतिहास के प्रति दुर्भावना से काम लिया है। इसका प्रधान कारण उपरोक्त तत्कालीन इतिहास दशन की दो विचार धाराओ का प्रबल पारस्परिक टकराव था। जेम्स मिल जसे उपयोगितावादी इतिहास लेखको ने मुस्लिम शासन और उसकी सस्थाओ को प्रधान महत्व देते हुए प्राचीन हिन्दू सभ्यता और उसकी सस्थाओ की अति भर्त्सना करने में दुर्भावना से काम लिया था टाड का लेखन प्रधान रूप से उसका प्रत्युत्तर था और उस टकराव में टाड भी प्रतिवादी मनोवृत्ति से ग्रस्त रहा। अठारहवी शती में एक ओर सामाजिक सस्कृति स्तर हिन्दू मुस्लिम सभ्यताओ मे समन्वय की प्रक्रिया चल रही थी दूसरी ओर तत्कालीन अराजकता की स्थिति में राजनतिक स्तर पर हिन्दू मुस्लिम शासको में टकराव की नई स्थिति पदा होने पर हिन्दुओ और मुसलमानो के बीच वमनस्य और शत्रुता के बीज बोये जा रहे थे अंग्रेज सरकार के अधिकारी साम्राज्य को शक्ति को सुदृढ करने के लिये उसको बढ़ावा दे रहे थे। टाड को यह वातावरण भी मिला। किन्तु यह निश्चित है कि टॉड के लेखन से हिन्दुओ मे पुनर्जागरण पुनरुत्थान एवं स्वाभिमान की भावना प्रबल रूप से उत्पन्न की तथा उनसे अनचाहे ही आगे चलकर भारतीयों में अंग्रेजी शासन से स्वतंत्र होने के लिये आदोलन किया किन्तु साथ ही उसने भारतीय समाज में हिन्दू-मुस्लिम विष का साम्प्रदायिक विद्वेष भी फलाने का काय भी किया।

भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन पर प्रभाव

टॉड ने राजस्थान के इतिहास ग्रंथ में राजपूतों की वीर गाथाओं का, राजपूतवीरों के अदम्य साहस, अद्भुत वीरता और अनुपम शौर्य (युनानी वीर योद्धाओं के साथ तुलना करते हुए) तथा उनके त्याग और बलिदान का जो ओजस्वी वर्णन किया है प्रधानतः चित्तौड़ के साकों, महाराणा प्रताप की वीरता और हल्दी घाटी युद्ध का जो वृत्तांत दिया है उसको पढ़कर बीसवीं शती के प्रारम्भ में बंगाल, महाराष्ट्र तथा अन्य प्रान्तों की भाषाओं में स्वतन्त्रता की प्रेरणा देने वाले वीर चरित्रों पर आधारित कहानी, नाटक, उपन्यास और काव्य साहित्य लिखे गये। उनको पढ़कर अंग्रेजी दासता से मुक्ति के लिये युवकों ने गुप्त आतंककारी क्रांतिकारी संगठन स्थापित किये। प्रताप का आदर्श और हल्दी घाटी की मिट्टी उनके प्रधान प्रेरणा स्रोत बन गये। स्वतंत्र भावना के जो बीज टॉड ने अपने ग्रंथ में छोड़े। तत्कालीन अंग्रेज अधिकारियों को उसका पूरा आभास हो गया था[1]।

कम्पनी सरकार का हितैषी

टॉड एक व्यापारिक कंपनी का नौकर था। उसको कंपनी के आर्थिक हितों का पूरा ध्यान था। ब्रिटेन में नवोदित व्यापारी एवं उद्यमी वर्ग ने वहां के सामन्त वर्ग को अत्यधिक अशक्त कर दिया था और बड़ी सीमा तक राजा को उनके प्रभाव से मुक्त कर दिया था। टॉड के विचारों में तत्कालीन पतित एवं लूट खसोट में ग्रस्त राजपूत सामंत वर्ग के अधिकारों के लिये कोई उपयोगिता नहीं थी। उसके विचार से राजपूत राज्यों को अराजकता एवं अशांति से पूर्ण तथा मुक्त करने के लिये उन राज्यों में सामन्तों को शक्तिहीन तथा राजाओं को पूर्ण अधिकारी बनाना आवश्यक था जिससे अंग्रेज सरकार उनसे आसानी से खिराज प्राप्त कर सके और अपने आर्थिक एवं राजनैतिक लाभ प्राप्त कर सके। मेवाड़ में उसने यही नीति अपनाई और अपने लेखन में राजस्थान की सामंतवादी प्रणाली का वर्णन करते हुए इन्हीं विचारों का प्रतिपादन किया। राजस्थान के सामन्त वर्ग में इससे बड़ी खल बली मची और अंग्रेज अधिकारियों ने बड़ा विरोध किया किन्तु अन्ततः अंग्रेज सरकार को ऐसा राज्यों के साथ सम्बन्धों में मूल रूप से इसी नीति को अपनाना पड़ा।

---

1 विस्तृत विवरण के लिये देखें 'राजस्थान के इतिहासकार' पृ 58 61, प्रताप शोध प्रतिष्ठान (सम्पादक)

(ख) इतिहास लेखन

शोध सामग्री का सर्वेक्षण एवं संग्रह

1806 ई के बसन्त में उदयपुर के निकट एकलिंगजी तथा नागदा के खडहरों में डेरा डाले सिंधिया के दरबार में रहते हुए जब टाड की मेवाड़ के प्राचीन राजवंशी महाराणा भीमसिंह से भेंट हुई तो उसके भावुक मस्तिष्क पर ऐसा प्रभाव पड़ा मानो वह गौरवमय अतीत की कोई झांकी देख रहा हो। पतनावस्था के गर्त में डूबे सिसोदिया राजवंश के प्राचीन इतिहास की गाथा सुनकर नागदा के प्राचीन कलापूर्ण खडहरों का अवलोकन कर तथा राजपूतों के विशिष्ट चरित्र स्वाभिमान की भावना तथा उनके विशिष्ट आचार विचार की भव्यता देखकर टाड मुग्ध हो गया। उसके देश के कई विचारक जिन लोगों को बर्बर एवं असभ्य कहते नहीं थकते थे अत्याचार और अन्याय के नीचे दबे पड़े उन लोगों में उच्च सांस्कृतिक मूल्यों एवं आचार विचार के दर्शन करके वह आश्चर्य चकित रह गया जैसे उसको एक नया प्रकाश नजर आया। उसको लगा कि राजपूतों का उच्च चरित्र स्वाभिमान की भावना और आदर्श आचार व्यवहार विश्व को सभ्यता का पाठ पढ़ाने का दावा करने वाली और अपनी उच्चता का अहंकार करने वाली यूरोपीय जातियों से कहीं बढ़कर है जिनको विश्व के सम्मुख प्रकट करना उसके जीवन का बहुत मूल्यवान कार्य होगा जो पश्चिम के लोगों को आंखें खोल देगा और उनके झूठे अहंकार तथा उनके सामाजिक राजनैतिक दोषों को प्रकट कर देगा। इसलिए दौलतराव सिंधिया के दरबार में रहते हुए जब उसको भौगोलिक सर्वेक्षण का कार्य दिया गया तो उसने साथ साथ राजपूतों के प्राचीन इतिहास धर्म संस्कृति सामाजिक प्रथाएं आचार विचार तथा उनकी विभिन्न प्रकार की कलात्मक उपलब्धियों सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने तथा उनसे सम्बन्धित शोधपूर्ण सामग्री का सर्वेक्षण करने तथा एकत्र करने के लिये समाज के विभिन्न वर्ग के लोगों से सम्पर्क स्थापित किया।

टाड ने राणा के प्राचीन साहित्य-संग्रहालय का अवलोकन किया चारणों और भाटों की वंशावलियां तथा ऐतिहासिक विषय की सामग्री देखी प्राचीन पट्टों परवानों ताम्रपत्रों शिलालेखों की नकलें प्राप्त की भाटों चारणों राव लोगों से लोक कथाएं वीर गाथाएं चारणी गीतों और किम्वदन्तियों का संग्रह किया। अपनी यात्रा के दौरान प्राचीन स्थानों मन्दिरों, मैदानों

कलात्मक भवनों आदि को देखा और उनके सम्बन्ध में लिखित एवं अलिखित सामग्री एकत्र की। मार्ग में जो भी साहित्य मिला शिलालेख देखे उनकी प्रतिलिपियां द्वारा आदि प्राप्त की। टॉड लिखता है कि जब भी वह प्राचीन स्थल कलाकृति अथवा उसके भग्नावशेष देखता था तो उसके मन में नाना प्रकार के भावों का ज्वार उठता था। टॉड ने यूरोपीय साहित्य प्रधानतः प्राचीन यूनानी एवं रोमन साहित्य का विशेष अध्ययन किया था तथा विलियम जोन्स के विचारों और कलकत्ता से प्रकाशित एशियाटिक रिसर्चेज में प्रकाशित अन्य लेखकों के शोध लेखों को पढ़ता रहता था। इसीलिए उसके शोध एवं अध्ययन के विषयों में न केवल इतिहास एवं पुरातत्व अपितु मानव जाति विज्ञान समाजशास्त्र लोक धर्म लोक कला और लोक विश्वास जैसे विषय भी शामिल थे। स्वयं भाषा शास्त्री नहीं होने से उसने समय समय पर जैन यति ज्ञान चन्द्र और कई ब्राह्मण पंडितों से पुराने लेखों को पढ़ने एवं समझने में सहायता प्राप्त की।

टॉड की मान्यताएं

उस समय भारत में प्राचीन शोध का कार्य अभी प्रारम्भिक अवस्था में ही था और अपने अल्प समय और सीमित प्रयासों के कारण टॉड तथ्यात्मक सामग्री बहुत कम मात्रा में एकत्र कर सका था। अतएव प्राचीन इतिहास के लिए टॉड को विभिन्न राजकुलों की अलग अलग वंशावलियों से प्राप्त सूचियों का ही उपयोग करना पड़ा। तत्कालीन सभी राजपूत राजवंश अपनी प्राचीन गौरवमय परंपरा एवं प्रतिष्ठा दर्शाने के लिये पुराणों में वर्णित सूर्यवंश एवं चन्द्रवंश से अपना सूत्र जोड़ते थे। किन्तु टॉड ने राजपूतों में प्रचलित रीति रिवाजों जैसे सूर्योपासना सतीप्रथा अश्वमेध यज्ञ, मद्यपान द्यूत शस्त्रों और घोड़ों की पूजा आदि बातों की सीथियनों अथवा शक लोगों में प्रचलित बातों से समानता देखकर टॉड ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि राजपूत सीथियनों अथवा शकों से निकले हैं। टॉड ने तातारी और शक लोगों की पुरानी कथाओं और भारतीय पौराणिक कथाओं में समान बातों की ओर संकेत किया है। समानता दिखाने में टॉड ने अतिशयता से काम लिया है। उदाहरणार्थ सीथियनों में सर्प पूजा का प्रचलित होना बताना अथवा उत्तरी भारत में बस जाने वाले लोगों का नाम के आधार पर यूरोप के 'जट' अथवा गोथ लोगों के साथ सम्बन्ध स्थापित करना। हेनरी ह्यूम ने जिसके ग्रंथ A View of the state of Europe during the Middle Ages से टॉड ने अपने लेखन में बड़ी सहायता ली है, लिखा है - बाहरी तौर पर दिखाई देने वाली समानताओं के सम्बन्ध में सावधानी आवश्यक है

चूंकि गहराई से देखने पर वे गायब हो जाती हैं। स्वयं टाड ने एक जगह लिखा है— मानव जाति के विकास की समान प्रकार की अवस्था में अलग अलग स्थानों पर रहने वाली अलग अलग जातियों में एक ही प्रकार की बातों का होना पाया जाता है। इसलिये यह आवश्यक नहीं कि वे एक दूसरे से निकली हों। यह बात यूरोप एशिया और भारत में मध्ययुग में उपलब्ध सामंती प्रथा के विभिन्न स्वरूपों के सम्बन्ध में कही जा सकती है। राजपूतों की सामंती प्रणाली में कई ऐसी मूल बातें मिलती हैं जो यूरोपीय प्रणाली प्रधानतः फ्रांस के गाल अथवा इंग्लैंड के नामन लोगों में भी दिखाई पड़ती है। किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि उनमें सभी बातें समान रूप से मिलती हैं- यहां तक कि यूरोप के विभिन्न लोगों में मिलने वाली इस प्रणाली के स्वरूपों में भी कुछ विभिन्नता दिखाई पड़ती है। किन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यह प्रणाली मानव जाति के विकास की समान अवस्था में एवं समान आवश्यकता के कारण उत्पन्न हुई।

राजपूत जातियों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में प्राचीन क्षत्रिय राजवंशों से निकलने सम्बन्धी धारणा बहुत प्रचलित रही है। किन्तु यह सिद्ध हो चुका है कि ईसा पूर्व की दूसरी शती के मध्य में हुए शक एवं कुषाण आक्रमण तथा उसके बाद के विदेशी आक्रमण प्रधानतः गुप्त साम्राज्य को विनष्ट करने वाले सफेद हूणों के आक्रमण में भारत में जो राजनीतिक उथल पुथल हुआ उसमें पूर्व के क्षत्रिय राजवंशों के प्रताप लुप्त हो गये जबकि बाहर से आकर भारत में बसने वाली विदेशी गूजर आदि जातियों ने हिन्दू धर्म अपना लिया और क्षत्रिय बन गईं। पश्चिम और मध्य भारत में इन जातियों द्वारा राज्य करना पाया जाता है।

जयचन्द्र विद्यालंकार ने लिखा है असल में राजपूत कोई जाति नहीं थी। राजाओं के पुत्र राजपुत्र कहलाते थे और विवाह—सम्बन्ध प्रायः बराबर के राजघराने में होता था। ग्यारहवीं शती तक यह चलन मिलता है। उसके बाद सामाजिक जीवन में संकीर्णता आने के कारण यह शादी की दृष्टि से राजघराने निश्चित कर लिये गये जिससे राजपूतपन की शुद्धता बनी रहे। इससे राजपूतपन लकीर हो गया। इसके परिणामस्वरूप जिन राजवंशों की संतानों के हाथ में राज न भी रहे फिर भी वे राजपूत कहलाते रहे और दूसरे कुलों के लोगों के राजा बनने पर भी वे राजपूत नहीं माने गये। सब राजकुलों को मिलाकर राजपूत बनाने की स्थिति परिपक्व रूप में सोलहवीं शती के लगभग सामने आई जबकि उसके पूर्व मुस्लिम शासन काल में क्षत्रियों के राज्य नष्ट होने गये और उनमें से अवशिष्ट राजवंश नाम

स्वतन्त्र राजा न रहकर सामन्त बन गये थे। ऐसी दशा में राजवंशी होने के कारण उनके लिये 'राजपूत' नाम का प्रयोग हुआ। राजपूत नाम से जानी जाने वाली जातियों का संगठन और विकास प्रधानतः गुजरात, राजस्थान और मालवा के प्रदेशों में हुआ। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इन कई राजपूत जातियों का उद्भव ईसा पूर्व की दूसरी शती में मध्य एशिया से आने वाली उन जातियों से हुआ जो हिन्दू धर्म को स्वीकार करके क्षत्रिय बन गई। गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने मत व्यक्त किया है कि 'भारत पर आक्रमण करने वाली शक और हूण जातियां आर्यों से भिन्न नहीं थी, वे वस्तुतः क्षत्रिय ही थी और वैदिक धर्म को छोड़कर अन्य धर्मों (बौद्ध आदि) के अनुयायी हो जाने के कारण वैदिक धर्म के आचार्यों ने उनकी गणना विधर्मियों में की।

ईसा की उन्नीसवीं शती के प्रारम्भ में टॉड ने राजपूतों को एक संगठित जाति के रूप में देखा और उसको राजपूतों के छत्तीस राजकुलों का विस्तृत वर्णन पढ़ने और सुनने को मिला। चूंकि पुराणों तथा अन्य प्राचीन ग्रंथों में छत्तीस राजपूत कुलों का वर्णन नहीं मिलता, टॉड को कवि चन्द बरदाई कृत पृथ्वीराज रासो तथा चारण भाटों द्वारा रचित अन्य काव्यमय गाथाओं पर आधारित रह कर लिखना पड़ा और यत्र-तत्र अनुमान का सहारा लेना पड़ा।

टॉड के लेखन की समीक्षा

इतिहास लेखन की दृष्टि से टॉड के राजस्थान सम्बन्धी ग्रंथ की बड़ी समीक्षा हुई है। उसकी कमियों, भूलों और अतिशयोक्तियों के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चाएं हुई हैं। टॉड ने इस सम्बन्ध में स्पष्टतया लिखा है, "प्रस्तुत विषय को इतिहास की कठिन शैली में लिखने की मेरी इच्छा नहीं रही क्योंकि उसके कारण मुझे ऐसी कई बातें छोड़नी पड़ती जो राजनीतिज्ञों एवं जिज्ञासु विद्यार्थियों के लिये उपयोगी होती है। मैं इस ग्रंथ को भावी इतिहासकारों के उपयोग के लिये प्रचुर संग्रह के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूं।" निस्संदेह ही टॉड अपने ग्रंथ के लेखन में पुराणों तथा कवि चन्द बरदाई द्वारा लिखित पृथ्वीराज रासो तथा अन्य चारण भाटों की काव्यमय गाथाओं पर अत्यधिक आधारित रहा, जिनसे उस काल के रीति व्यवहारों और विश्वासों के सम्बन्ध में जानकारी अवश्य मिलती है किन्तु जिनका वर्णन ऐतिहासिक तथ्यों की दृष्टि से पूरी तरह निष्पक्ष एवं विश्वसनीय नहीं था। उसके अथक प्रयासों के बावजूद समय और अवसर की सीमा के कारण वह अन्य प्रकार की शोध सामग्री बहुत कम जुटा पाया। किन्तु उसके लेखन में भूलों के अन्य कारणों से

उनकी अधिक उत्साह कल्पना और भावुकता भी रही जो राजपूतो और भीलियो तथा यूरोपीय तथा एशियन जातियों के धार्मिक विश्वासों और कर्म काडो आदतो और रीति व्यवहारो के मध्य समानता दिखाने राजपूतो प्रधानत सिसोदियो और राठोडो की अत्यधिक प्रशसा करने आदि के वर्णन से प्रकट होती हैं ।

टॉड के लेखन म जो भी कमियां और भूलें रही हो इसमें कोई सदेह नही है कि वह राजस्थान के इतिहास का जनक प्रथम आधुनिक लेखक था । उसने अलग अलग राजपूत राज्यो के इतिहास के सम्बन्ध मे जो पद्धति अपनाई वह आगे के इतिहासकारो के लिए आधार और मार्ग दर्शक बनी । उसने इस भू भाग म प्रचलित भारतीय धर्म मानव विज्ञान और समाजशास्त्र का प्रथम मौलिक अध्ययन प्रस्तुत किया तथा साथ ही उसने लोक कलाओ लोक धर्म सामाजिक रीतिरिवाजो और व्यवहार नियमो का वृत्तांत दिया । कृषको और आदिवासियो के धार्मिक विश्वासो का वह प्रथम अध्ययता और मौलिक प्रस्तुतकर्ता था । ऐतिहासिक तथ्यान्वेषण की दृष्टि से उसने न केवल सर्वप्रथम प्राचीन साहित्य शिलालेखो पुरालेखो भवनो, मन्दिरो स्मारक स्थलो आदि का उपयोग किया अपितु उनके महत्व को प्रकट करके इस प्रकार की तमाम सामग्री को विनष्ट होने से बचाने तथा सग्रहित करने की प्रवत्ति को उत्पन्न किया । 1832 ई म लन्दन के क्वार्टरली रिव्यू म ग्रथ की समीक्षा करते हुए लिखा गया था इतिहास की सामग्री के सर्वाधिक मनोरजनपूर्ण एव परिश्रमी सग्राहक के तौर पर टाड का कार्य प्रशसनीय है । उसकी स्वय की वर्णन शैली कई स्थलो पर मुक्तता ओजस्विता एव ओजलता से परिपूर्ण है । सत्य सही सना होने तथा कही कहीं कठिन और आडम्बरपूर्ण होने पर भी उसकी शैली अधिकतर सजीव और सरस है । उसकी कृति के दोष कृति के स्वरूप के कारण है । भिन्न भिन्न राजपूत जातियो के विशिष्ट एव अलग अलग इतिहासो को एक गुथे हुए निरतर इतिहास के रूप म ढालना असभव ही था । किन्तु इस प्रकार के स्वरूप के ग्रथ लेखन के लिये सम्पूर्णत सामग्री एकत्र करने का कार्य केवल कर्नल टाड ही कर सकता था । इस प्रकार के कम लोग होंगे जो उनको इतने उत्तम ढग से उपयोग कर सकें । ग्रथ को पढने के बाद निष्पक्ष पाठक ग्रथकार के चरित्र के सम्बध म उच्च भावना प्रकट किये बिना नहीं रहेंगे विद्वान लोग निश्चित ही उसके कृतित्व के प्रति सम्मान प्रदर्शित करेंगे और साहित्य की एक शाखा को जो सदा उसने की है उसके लिये अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करेंगे ।

—

टॉड की दृष्टि मे राजपूत जाति

—डॉ मीना गौड़

टॉड लिखित 'एनाल्स एण्ड एण्टिक्विटीज ऑफ राजस्थान' तथा 'ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इण्डिया' राजस्थान के इतिहास के लिए एक अभूतपूर्व देन है। राजस्थान के इतिहास को जानने के लिए उसकी पुस्तक एक कोष के समान है। जेम्स टाड राजपूतो का प्रबल पक्षपाती था। वह राजपूतो के चरित्रगत विशेषताओ से काफी प्रभावित था। इस जाति के प्रबल साहस, देशहित की इच्छा, राजभक्ति, सम्मानित आचरण, आतिथ्य और सरल व्यवहार ने उसे विमुग्ध कर दिया था।[1] टाड को राजस्थान के निवासियो से काफी अनुराग हो गया था। अन्य अंग्रेज अधिकारियो की अपेक्षा वह यहाँ का शुभचिन्तक बन गया और अपने अधिकारो का प्रयोग सबके कल्याण के लिए करने लगा। अंग्रेज सरकार का एक अधिकारी होकर भी वह यहाँ के राजाओ और जागीरदारो को जनहितकारी तथा न्यायप्रिय कार्य करने के लिए प्रोत्साहन देता रहा। उसकी राजपूत रियासतो तथा राजपूतो के प्रति अनन्य भक्तिपूर्ण भावना के फलस्वरूप कम्पनी के अन्य अधिकारियो ने उस पर सन्देह तथा भ्रष्टाचार के आरोप लगाये जिसे टाड ने सहन नही किया और अपना त्यागपत्र कम्पनी को भेज दिया।[2]

टॉड ने एनाल्स मे राजपूत जाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे काफी विस्तार के साथ वर्णन किया है। उसने इस बात की स्थापना का भरसक प्रयत्न किया है कि राजपूत मुख्य रूप मे सिथियनो अर्थात् शको के वंशज हैं।[3] अपने इस कथन के समर्थन मे टाड ने बताया है कि राजपूतो मे प्रचलित

---

1 जेम्स टॉड, एनाल्स एण्ड एण्टिक्विटीज ऑफ राजस्थान भाग 1 पृ 8, 21
2 नरसिंह ऑफ इण्डियन हिस्टारीकल रिसर्च प्रकाशन, उदयपुर
3 टॉड वही पृ 21

अनेक रीति रिवाज जसे सूयपूजा सतीप्रथा अश्वमधयज्ञ वीर व्यवहार युद्ध स्त्रियो के प्रति व्यवहार जुआ खेलना मद्यपान शस्त्रों तथा घोडों की पूजा आदि शक जाति के रीतिरिवाजा स बहुत मिलत जुलत हैं। टाड के मतानुसार तातारी तथा शक लोगा की पुरानी कथाओ तथा पुराणा की कथाओ म भी समानता पाई जाति है। इसके अतिरिक्त शको की वीरता उनका आदर्श तथा उनक विश्वास राजपूता म पूर्णरूप स देखने को मिलत हैं किन्तु बहुत से विद्वान उनका मान्यता म सहमत नहीं हैं। आधुनिक शोध की दृष्टि से भी टाड की सिथियन उत्पत्ति सिद्धान्त *को नकार दिया गया है तथापि उत्पत्ति विषयक प्राथमिक ध्यान आकर्षित करन क* सदभ म इस उपकल्पना का महत्व है।

टाड ने राजपूता के सामाजिक परम्पराओ रीतियो रिवाजों रूढियों आचरणा प्रतिमाना आदर्शों आदि के सम्बन्ध म काफी लिखा है। टाड के ग्रन्थ राजपूत जाति और राजस्थान का मानचित्र है। उसने अपने वर्णनों द्वारा ब्रिटिश भारत सरकार का ध्यान उन अमानवीय कृत्यों के प्रति भी आकर्षित किया जो राजपूता म प्रचलित थ। इन कुरीतियो को मिटाने के लिए प्रशासनिक प्रयत्न आरम्भ किये गये थे। राजपूता की परम्परा व प्रियता पर प्रकाश डालत हुए टाड न लिखा है सहस्त्रो वर्षों के बीत जाने पर भी राजपूतो के नित्य व्यवहार के द्रव्य स्पृश्या की रीति सब प्रकार से अचलभाव *से स्थिर रही है।*[4]

टाड राजपूतो की चरित्रगत विशेषताओ स काफी प्रभावित था। एनाल्स म उसन लिखा है कृतज्ञता आत्मसम्मान की रक्षा विश्वास पालन राजपूता का मूलमत्र रहा है तथा कृतघ्नता उनक लिए सबस बडा अपराध। राजपूत स्वभाव तो भल ही उग्र हो पर उनके हृदय म राजभक्ति तथा देशभक्ति की कामना सवदा विराजमान रहती है। अकबर जहाँगीर तथा औरंगजेब न जिन युद्धो म विजय तथा गौरव पाया था उनक मूल में उसके राजपूत मित्र ही थ।[5]

टाड ने मडता म औरगजेब कालीन एक मस्जिद का देखा था जो बिल्कुल सही हालत म थी जब कि राठौड औरंगजेब-युद्ध 30 वर्षो तक चला था। उसन अनुभव किया राजस्थान के लोग धम के प्रति दृढ तथा विश्वासी

4 टाड एन पृ 510

5 टाड एन पृ 97

होते हुए भी अन्य धर्म के प्रति सहिष्णु होते हैं। उसके विपरीत मुसलमानों द्वारा पुजारों का मशहूर मन्दिर उस आक्रमण के दौरान तोड़ दिया गया था।[6] टॉड राजपूतों के इस चरित्रगत विशेषता से काफी प्रभावित हुआ था।

राजपूतों में व्याप्त कुरीतियाँ भी टाड की दृष्टि से अछूती नहीं रहीं टाड ने राजपूतों को महज एक योद्धा के रूप में नहीं देखा बल्कि उसने समूचे राजपूत समाज एवं उनकी संस्कृति का भी गहन अध्ययन किया। उसने न केवल राजपूती शौर्य के समक्ष मस्तक झुकाया बल्कि राजपूतों के मध्य प्रचलित अफीम जैसी बुराईयों की तरफ भी लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। राजपूतों में प्रचलित अफीम के प्रचलन को उसने उनकी दुर्बलता क्रूरता तथा अमानवता के लिए उत्तरदायी ठहराया। राजपूत एक साथ अफीम का सेवन करते थे। राजपूत जाति संगठन ने इस प्रकार परस्पर एक साथ बैठकर जो प्रतिज्ञा कर ली वह प्रतिज्ञा शपथ की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ होती थी।[7]

तत्कालीन राजपूत समाज में प्रचलित कुरीति बहुविवाह प्रथा के सम्बन्ध में टॉड ने लिखा है कि सामन्तों के मध्य आपसी झगड़ों का कारण बहुत हद तक राजपूतों के मध्य प्रचलित बहु विवाह प्रथा है। इसके फलस्वरूप पारिवारिक संकट उत्पन्न होते थे और उस संकट में छोटे छोटे बालक मार दिये जाते थे।

पितृसत्तात्मक से उत्पन्न होने वाली बुराईयों की तरफ टॉड का रचनात्मक कलम आगे नहीं बढ़ा। साथ ही मानवीय पीड़ा तथा अन्याय जो राजपूत समाज में प्रचलित था उसकी तरफ से भी टॉड विमुख हो रहा। राजपूत समाज प्रचलित सतीप्रथा तथा जौहर प्रथा में राजपूत स्त्रियों के त्याग तथा बलिदान से वह काफी प्रभावित था। उसने लिखा है अन्य देशों की स्त्रियों के सम्मुख राजपूत स्त्रियों का भाग्य अत्यन्त ही शोचनीय प्रतीत होता है। जीवन के एक-एक पग पर मानो उनके लिए मृत्यु मुँह फैलाये खड़ी रहती थी। राजपूतों के युद्ध में पराजय होने पर या नगर पर शत्रुओं का अधिकार हो जाने की अवस्था में राजपूत स्त्रियाँ अपने सतीत्व

---

6 टॉड पश्चिमी भारत की यात्रा से डा गोपाल नारायण बहुरा, पृ 43

7 टॉड एन पृ 511

की रक्षा के लिए मत्यु का वरण कर लती थी ।[8]

टाड राजपूता म प्रचलित घोर अमानवीय प्रथा कन्या वध के लिए जिम्मेदार उनके मध्य प्रचलित विवाह रीति को माना है । अपनी पुस्तक एनाल्स मे वह लिखता है राजपूत अपनी अपनी कन्याओ को बराबर वाले पात्र के हाथ म समर्पित करन म असमथ हो वश म कलक लगान की अपेक्षा उस सुकुमारी कन्या को अफीम देकर मार डालते थे। राजपूता म अपनी शाखा और अपने गोत्र म विवाह नहो हो सकता था। विवाह म धन भी काफी खच होता था । शादी के अवसर पर ब्राहमण कवि आदि दल बाधकर आत थे । और कन्या के पिता की उच्च प्रशसा कर उससे ज्यादा दान लने की अपेक्षा करत थे । यदि कन्या का पिता उनकी इस प्राथना को पूरा नही करता तो कविगण उनके अपमान की कविता बनाकर उसका घोर तिरस्कार करत थे । अत कन्या का पिता अधिक धन खच करने म सामथ्य नही होने पर भी भयवश किसी न किसी प्रकार अधिक धन खच करता था ।[9]

राजपूता क समीप रहकर टॉड ने यह अनुभव किया कि राजपूत जाति म दिनोदिन राष्ट्रीय भावना म ह्रास आता जा रहा है। उसका विचार था कि इसका मूल कारण उन पर मुसलमानों का अत्याचार तथा मराठों की लूटमार था । वह राजपूत राज्यों के पुनगठन क मत म था ताकि राजपूत जाति पुन अपनी गौरवशाली पुर्वावस्था को प्राप्त कर सके ।

राजपूत जाति की राजनीतिक दुरावस्था क सम्बध म उसन लिखा है कि राजपूता म सगठन क अभाव न उनम राष्ट्रीय शक्ति के निर्माण म बाधाऐं पहुचाई तथा इसी क अभाव क कारण वह कभी भी मराठा की भाँति अपना स्थाय शक्ति की स्थापना नही कर पाय । प्रत्येक राजपूत राजा स्वय या अपनी सना की सहायता से अपने राज्य की रक्षा करता था किन्तु किसी अन्य बाह्य शक्ति के निर्माण की तरफ किसी न कोई ध्यान नही दिया । राजपूत शासकों द्वारा ब्रिटिश सरकार को किसी प्रकार क अनिष्ठ की आशका स वह मुक्त था। उसका विचार था कि राजपूत राजा सरकार का किसी प्रकार अनिष्ट

---

8 टाड पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 33

9 टाड एन पृ 503

नहीं कर सकते हैं। यदि राजपूत पूर्व के समान बल पराक्रम गौरव धन मर्यादा को प्राप्त भी कर लें तो भी एकता के अभाव के कारण वे अंग्रेजों का किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुंचा सकते क्योंकि राजपूतों में एकता का अभाव शुरू से रहा है। अपनी जन्मभूमि की रक्षा के लिए विभिन्न राजपूत कभी एक नहीं हुए।

टॉड ने राजपूतों को एक संक्रमण काल में होकर गुजरते देखा था। यद्यपि टाड को मराठाकालीन प्रवृत्तियों तथा स्रोतों का पता था वह स्वयं भी तत्कालीन घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी था किन्तु उसने मराठा राजपूत सम्बन्धों पर संतुलित प्रकाश नहीं डाला है अपितु मराठों को लुटेरा के रूप में बताते हुए राजपूत पक्ष का अधिक लिखा। राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा और राजनीतिक संस्थाओं के पतन में भी उसे मराठों की कार्यवाहियां अधिक दिखाई दी। उसने अपनी पुस्तक में लिखा है बाह्य दृष्टि से देखने पर यह पता चलता है कि दीर्घकाल तक विजातीय आक्रमण से राजपूत जाति में प्रतिभा तथा वीरत्व का अभाव हो गया है, किन्तु यह कल्पना भ्रांतिपूर्ण है विजातीय उत्पीड़न और अत्याचार से राजपूत चरित्र में इस समय जितने शोचनीय लक्षण दिखाई देते हैं शांति विस्तार के साथ साथ वह सब दूर हो जायगें।[10]

टाड एक ऐसा इतिहासकार था जिसने न केवल राजस्थान की राजनीति एवं देशी राज्यों के युद्ध अभियान को महत्व दिया वरन् यहां की सभ्यता एवं संस्कृति को भी अपने लेखन में वृहद स्थान दिया। यह अवश्य है कि जिन तथ्यों को उसने अपने लेखन में स्थान दिया उनमें हार के कारणों का सही विश्लेषण नहीं कर सका। वह इस बात का भी तथ्यात्मक परीक्षण नहीं कर सका कि शौर्य एवं वीरता का विपुल भण्डार होने के बावजूद राजपूतों ने अपनी आजादी क्यों खोयी? सम्भवतः राजपूत वीरों के आत्मत्याग तथा उनकी वीरता ने टाड को अपने लेखन में पुराने याद ने दन के लिए बाध्य कर दिया। टाड के राजस्थान के राजपूत शासकों सरदारों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों ने टॉड को एक इतिहासकार एवं राजनीतिज्ञ की व्यापक दृष्टि प्रस्तुत करने में सहयोग प्रदान किया। टॉड ने अपने लेखन में राजपूत वीरों एवं वीरांगनाओं का जो अतिशयोक्तिपूर्ण मार्मिक हृदयस्पर्शी चित्रण प्रस्तुत किया, उसका राजपूत जाति पर गहरा प्रभाव पड़ा। यद्यपि पाश्चात्य सम्पर्क में मान तथा अंग्रेजी सत्ता द्वारा

10 टाड एनल्स पृ 505

सुरक्षा की गारण्टी दिये जाने के बाद यहा के नरेश ऐश्वर्य एवं विलासिता में डूब गये। टॉड के इतिहास से आगे चलकर राजपूतों को अनिवार्य प्रेरणा मिली। वे अपने पूर्वजों के आदर्शों को समझने लगे। समाज में चली आ रही कुरीतियों को जड़ से उखाड़ने के लिये वे कटिबद्ध हो गये। राजा महाराजाओं ने टॉड के इतिहास मे प्रेरित होकर अपने अपने राज्यों का इतिहास लिखवाया था। टॉड के इतिहास लेखन ने राजपूत जाति में सर्वथा क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया।

—

टॉड की दृष्टि में
पश्चिमी भारत के मन्दिर और उनका स्थापत्य

डॉ रोहन कृष्ण पुरोहित

कर्नल जेम्स टॉड की इतिहास में विशेष रुचि थी। इसलिये उन्होंने अपने भारत प्रवास के दौरान *राजस्थान का इतिहास* और *पश्चिमी भारत की यात्रा* शीर्षक ग्रन्थों की रचना की।[1] टॉड की पश्चिमी भारत की यात्रा से सम्बन्धित ग्रन्थ तो उनकी मृत्युपरान्त ही प्रकाशित हो पाया। इस ग्रन्थ को लन्दन की विलियम एच एलन एण्ड कम्पनी ने प्रकाशित किया। टॉड ने यह ग्रन्थ अपनी पत्नी श्रीमती कर्नल विलियम हण्टर क्लयर को समर्पित किया।

जेम्स टॉड ने पश्चिमी भारत की यात्रा शीर्षक ग्रन्थ में उदयपुर से स्वदेश रवाना होने तक की यात्रा को कलमबद्ध किया। इस ग्रन्थ में पश्चिमी भारत के ग्रामों, नगरों, नदियों, वनस्पति के अलावा वहाँ के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन का सजीव चित्रण किया गया है।[2]

प्रस्तुत निबन्ध में हमारा उद्देश्य कर्नल टॉड द्वारा अपने ग्रन्थ पश्चिमी भारत की यात्रा में उद्धृत मन्दिरों और उनके स्थापत्य पर प्रकाश डालना है। टॉड ने विवेच्य ग्रन्थ में मुख्य रूप से राजस्थान और गुजरात के उन मन्दिरों का उल्लेख किया है जो उसने अपनी वापिसी यात्रा के दौरान स्वयं देखे थे। उन मन्दिरों में से कुछ तो आज केवल इतिहास ग्रन्थों की ही विषयवस्तु रह गये हैं।

---

1 हग डवनपोर्ट द ट्रावल्स एण्ड ट्रबल्स आफ द मेवाड किंगडम पृ 79 84

2 टॉड जेम्स पश्चिमी भारत की यात्रा (ट्रावल्स इन वेस्टर्न इण्डिया का हिन्दी अनुवाद) से गोपालनारायण बहुरा

कनल टॉड द्वारा उल्लिखित वैष्णव शव शाक्त और जन मन्दिरो के विवरण को हम अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से दो भागों म बाट सकते है प्रथम राजस्थान के मन्दिर और द्वितीय गुजरात के मन्दिर।

कनल टाड स्थापत्य कला का विशेष जानकार न था लेकिन फिर भी अपनी बुद्धि चातुय से वह मन्दिरो का जितना विवरण सकलित कर सका उतना उसने किया। अब हम उन मन्दिरो का विवरण प्रस्तुत करते है जिनका उल्लेख टाड ने अपने ग्रन्थ मे किया।

राजस्थान के मन्दिर और उनका स्थापत्य

कनल टाड ने उदयपुर से जब यात्रा प्रारम्भ की तो माग म कई छोटे और बड मन्दिरो को उसने देखा और उनका विवरण उसने अपने ग्रन्थ मे प्रस्तुत किया। उसने गोगुदा होकर घस्यार का माग अपनाया। उसने घस्यार क श्रीनाथजी की प्रतिमा और मन्दिर का वणन करत हुए लिखा कि मराठा और पठानो न भगवान विष्णु का सम्मान नहीं किया। औरगजेब ने भी यमुना तट पर बने आदि मन्दिर से खण्ड किया तो नाथद्वारा के श्रीनाथजी न यहा शरण ली इसलिये इस स्थान को प्रसिद्धि मिली। इस स्थान के चारो ओर एक सुदृढ परकोटे से किलबन्दी की गई थी।[3]

प्रकरण तीन म उसने अरावली के पश्चिमी ढाल की यात्रा के दौरान नायनमाता की प्रतिमा के दशन किये थ। यही पर बच्चो को चचक रोग से बचाने वाली शीतला माता का भी मन्दिर था।[4]

बालपुर या बालनगर के शिवलिंग और उसके सम्मुख बने पीतल के बल ने उसे रोमाचित किया।

टाड ने सिरोही के सारणेश्वर महादेव के मन्दिर[5] का विस्तत

---

3 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 9 10

4 वही पृ 27

5 वही पृ 60, पटनी सोहनलाल अबुद मण्डल का सास्कृतिक वभव, पृ 35 39 ओझा गौरीशकर हीराचन्द सिरोही का इतिहास, पृ 200 अ।

विवरण प्रस्तुत किया है। वह लिखता है कि यह मन्दिर छतरियों से घिरा हुआ है। मन्दिर की गोल और महराबदार छत खम्भों पर टिकी हुई है। गुम्बद की आकृति इस प्रदेश के रिवाज के अनुसार अण्डाकार है। जिसका छोटा भाग एक लम्बे आधार पर सीधा रखा हुआ है। मन्दिर के अन्दर शिवलिङ्ग विराजमान है और बाहर एक भारी त्रिशूल है जो 12 फीट लम्बा है और वह सप्त धातु का बना बताया जाता है। प्रवेश के ऊपर दो हाथी दरवाजे पर रक्षा के लिए खड़े हैं। पूरा मंदिर एक पक्के परकोटे से घिरा हुआ है। जिसे माण्डू के मुस्लिम सुल्तान ने बनवाया था। यहां पर स्थित कुण्ड का जल रोगों से मुक्ति दिलवाता है।

कर्नल टाड ने मरिया के पथ जैन मन्दिरों का उल्लेख मात्र किया है। जिन्हें उसने स्वयं देखा था।[6]

टाड ने आबू की भी यात्रा की थी।[7] इस प्रसंग में उसने गणेश मंदिर का वर्णन किया है। वह लिखता है कि इस मंदिर पर चढ़ना कठिन कार्य है। ओरिया और अचलेश्वर मन्दिर के मध्य टाड ने मन्दिरों का एक समूह देखा था। जिनमें सबसे प्रमुख नागेश्वर का मन्दिर था। यह मन्दिर चम्बल के प्रपात पर बने हुए गंगाभ्या और उदयपुर के पास बावड़ियों पर बने हुए मन्दिरों की अनुकृति था। वह लिखता है कि इसकी सरल ठोस बनावट, बाहरी चौकोर खम्भे जिनका ऊपरी भाग ठेठ देहाती ढंग का बना हुआ है। बिलकुल उसी ढांचे में ढले हुए हैं और उन्हें देखकर यही कल्पना होती है कि यह उसी काल में और उसी कारीगर द्वारा बनाया हुआ है।

आबू प्रवास के दौरान टाड ने अचलगढ़ के मन्दिरों का निरीक्षण किया। वह लिखता है कि अचलगढ़ में हनुमान मंदिर का दरवाजा ग्रेनाइट के पत्थरों का बना है।

---

6 टॉड पूर्वो पृ 74

7 वही पृ 77-118 आबू के दर्शनीय स्थलों के सम्बन्ध में स्पष्ट आबू दर्शन (जन सम्पर्क निदेशालय राजस्थान, जयपुर द्वारा प्रकाशित), पटनी पूर्वो पृ 171 178

अचलगढ का पाश्वनाथ मन्दिर दर्शनीय है। इस मंदिर का निर्माण माण्डू के श्रेष्ठी ने करवाया था। मन्दिर के स्थापत्य के सम्बन्ध मे टाड ने लिखा है कि इसके खम्भे अजमेर के अढाई दिन के झोपड (जो मूलत जैन मन्दिर था) जैसे थे। वहीं पर ऋषभदेव के मंदिर को भी उसने देखा था। इस मंदिर मे चौबीस मे से प्रथम 12 तीर्थङ्करो की मूर्तिया विराजमान थी। इनका वजन कई हजार मन था तथा ये सर्वधातुनिर्मित थी। दुर्ग के पास स्थित एक अन्य मंदिर मे पाश्वनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित थी। इस मंदिर का निर्माण कुमारपाल ने करवाया था।

टाड के अनुसार– अचलेश्वर आबू के रक्षक माने जाते हैं। मंदिर मे आकार के लिहाज से कोई खास बात नहीं हैं और सजधज बहुत कम है। यह एक प्राचीन मन्दिर था और एक चतुष्कोण के बीच बना हुआ था। सम्पूर्ण मन्दिर नीले स्लेट के पत्थरो मे निर्मित छोटी छोटी गुमटियों से घिरा हुआ था। वहा राजमराज पातालेश्वर का प्रसिद्ध अंगूठा मुख्य पूजा पात्र था। वहा पर्वत की देवी की प्रतिमा की भी पूजा की जाती थी। इस मन्दिर मे टाड ने शिव के उज्ज्वल नख के भी दर्शन किये। मन्दिर के चारो ओर अन्य मंदिरो मे से एक के बाहर प्रलयकालीन जल मे हजार फनवाले शेषनाग पर भगवान नारायण की मूर्ति तैर रही थी। बाहर खड स्तम्भो पर गज की मूर्तिया उत्कीर्ण थी। आबू मे देलवाडा का[8] पुण्य देवालयो का स्थान है। इसलिये यहा के मन्दिरो के समूह को यह नाम दिया गया है। टाड इन मंदिरो के स्थापत्य को देखकर मुग्ध हो गया। इसलिये उसने यहा के जैन मंदिरो का वर्णन विस्तृत रूप से किया। उसने लिखा कि जैनो के इन मंदिरो की सुन्दरता का वर्णन लेखनी से करना कठिन है। देलवाडा के जैन मंदिरो का विस्तृत विवेचन मुनि जयन्तविजय ने भी किया है। लेकिन एक विदेशी होने पर भी टाड का विवरण कम महत्वपूर्ण नहीं है।

टाड ने ऋषभदेव (देलवाडा) के मन्दिर का वर्णन करते हुए लिखा कि भारत के सभी मन्दिरो से उत्कृष्ट इस मंदिर की समानता ताजमहल के अलावा कोई इमारत नहीं कर सकती। इसका निर्माण विमल शाह ने करवाया जो अणहिलवाड का व्यापारी था। मन्दिर के दरवाजे पर लक्ष्मी

---

8 देलवाडा के जैन मन्दिरों के स्थापत्य के अध्ययन हेतु पठनीय टाड पूर्वो प 107 119 मुनिजयन्त विजय आबू (प्रथम खण्ड) प 25 105

की मूर्ति प्रतिष्ठित है । यह मन्दिर एक चौकोर चौक में स्थित है । चौक की लम्बाई पूर्व से पश्चिम 180 फीट और चौड़ाई 100 फीट है । अन्दर की तरफ किनारे किनारे कोठरियां बनी हुई हैं । लम्बाई की ओर 19 और चौड़ाई की तरफ 10 कोठरियां बनी हैं । कोठरियों के सामने चारों तरफ चबूतरे पर दोहरे खम्भों वाली रविश बनी हुई है जो चौक की सतह से चार सीढ़ी जितनी ऊंची है। इसके बीच खम्भों की चौड़ाई भी इतनी ही है । इन चार खम्भों के अतिरिक्त इनके व कोठरियों के बीच की दीवार के अनुरूप ही दो-दो खम्भे और बने हुए हैं जिनकी छतें चपटी हैं। प्रत्येक कोठरी के सामने एक ऊंची वेदी बनी है जिस पर चौबीस जिनेश्वरों में से किसी एक की प्रतिमा प्रतिष्ठापित है। सम्पूर्ण मन्दिर श्वेत संगमरमर का बना हुआ है । इस मन्दिर के प्रत्येक खम्भे, छतरी और वेदी की बनावट एवं सजावट अलग अलग है । पत्थरों पर की गई पच्चीकारी दर्शनीय है । मन्दिर के प्रत्येक कण का अध्ययन करने हेतु कई दिनों का समय चाहिए ।

मन्दिर के स्तम्भों का वर्णन करते हुए टाड ने लिखा कि खम्भों के निर्माण में जैन वास्तुकलागत स्तम्भ सम्बन्धी नियमों का उदाहरण मौजूद है । मन्दिर के प्रत्येक कोष्ठ में उस व्यक्ति के इष्टदेव की मूर्ति विराजमान है जिसके व्यय से उसका निर्माण हुआ । निर्माणकाल सम्बन्धी शिलालेख प्रत्येक दरवाजे की देहली पर उत्कीर्ण है । चौड़े पत्थरों वाले चौक के बाद सभा मण्डप है जो स्तम्भों पर टिका है । उस पर 24 फीट व्यास की अर्द्धवृत्ताकार छतरी है। खम्भों के बीच की जगह पर गुम्बदाकार और चपटी छतों पर रामायण, महाभारत, भागवतपुराण, के दृश्य उत्कीर्ण हैं । रास मण्डल में गोपियों घिरा हुआ कन्हैया भी यहां उत्कीर्ण किया गया है ।

निज मन्दिर में ऊंची वेदी पर ऋषभदेव की सप्तधातुनिर्मित प्रतिमा विराजमान है। इस विशाल प्रतिमा के नेत्र चमकीले थे और ललाट पर हीरे का टीका सुशोभित था । ऊपर एक सुनहरा जरी का चंदोवा लगा हुआ था । इसी मन्दिर के दाहिनी ओर भवानी को प्रतिष्ठापित किया गया था। पास के कक्ष में टाड ने नेमिनाथ के दर्शन किये । उनकी प्रतिमा प्रस्तर निर्मित थी । टॉड ने चौक से बाहर चौकोर कक्ष में जाने पर वहां मन्दिर के निर्माता की अश्वारोही प्रतिमा देखी । उसके पीछे उसका भतीजा बैठा हुआ था। निर्माता की प्रतिमा के पीछे एक स्तम्भ था जिस पर अनगिनत छोटे छोटे ताखों में जिनवर प्रतिमाएं थीं ।

देलवाड़ा में ही पार्श्वनाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है। टॉड ने इस मन्दिर का

विवरण भी अपने ग्रन्थ म प्रस्तुत किया । यह मन्दिर मानों ऋषभदेव क मन्दिर स प्रतिस्पर्धा कर रहा था । तेजपाल वस्तुपाल नामक बन्धवन्धु इस मन्दिर के निर्माता थे। वे चन्द्रावती के निवासी थे । टाड के अनुसार इस मन्दिर के वभव म सादगी अधिक है । मन्दिर के कामदार खम्भे अधिक ऊचे हैं । छत की कारीगरी उत्कृष्ट बन पडी ह । गुम्वद का व्यास 26 फीट ह । मन्दिर के विशाल लटकन देखने योग्य है । बीच के गुम्वद तथा आसपास की छतरियों पर कुराई का काम है । मन्दिर म छेनी का काम इतनी सफाई म किया गया है कि वह सब मोम म ढला हुआ लगता है । मन्दिर म वेदी पर पार्श्वनाथ विराजमान है जिनका चिह्न सर्प ह । यहा वनदेवा देवताओ किन्नरा और व्यापारियों का भी सगमरमर पर उत्कीण किया गया ह ।

टाड न भीनशाह के मन्दिर का भी वर्णन किया। वह लिखता ह कि यह मन्दिर आकृति और शली म अन्य मन्दिरा स भिन्न ह। यह मन्दिर चार खण्ड ऊचा और साञ्ची क घाटी वाले मन्दिर स मिलता-जुलता था । यहा उसन जिनवर की 4 मन भारी पीतल की प्रतिमा को देखा । उनकी पृष्ठभूमि म तीर्थङ्करो मनुष्या और पक्षियों की मूर्तिया बनी हुई थी।

इन मन्दिरो की खम्भों वाली छतें निर्माता की प्रचुर सम्पत्ति का प्रदर्शन ता कर रही थी लकिन व उनकी कला के प्रति लगाव का उच्च स्तरीय सूचन भी कर रही थी।

आबू म स्थित अबुदा देवी का मन्दिर ऊचाई पर प्राकृतिक वातावरण क मध्य स्थित था।[9]

वशिष्ठ क मन्दिर क सम्बन्ध म टाड न लिखा ह कि इस मन्दिर की इमारत छोटी थी और उसका जीर्णोद्धार कई बार हो चुका था । मन्दिर म मुनि प्रतिमा क शिरोभाग के दर्शन होत थ। यह प्रतिमा काल पत्थर से निर्मित थी। मन्दिर के एक हिस्से म अन्तिम परमार की छवी था। जिस पर अण्डाकार गुम्बद था और नीचे वेदी पर परमार की पातल की मूर्ति रखी थी । जिस मुस्लिम आक्रमणकारी न खण्डित कर दिया था । चौक क दाहिनी तरफ पातालेश्वर का मन्दिर था।[10]

---

9 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 115

10 वही पृ 116

कनल टाड ने चन्द्रावती की भी यात्रा की जो परमारो की क्रीडास्थली थी। गिरवर और चन्द्रावती के मध्य स्थित मानव ग्राम म उसने अम्बा भवानी और तारिणा के मन्दिरो की चर्चा की है। यह स्थल शव और जनों का तीर्थ स्थान बताया गया है।[11]

चन्द्रावती की यात्रा के समय टाड ने एक ब्राह्मण मन्दिर को जीर्णशीर्ण अवस्था म देखा। जिसकी आकृतियां और आलकारिक वस्तुओं की सजावट बहुत बारीकी से एव उभडी हुई रीति से की गई थी। मानव आकृतिया जो मूर्तियो के समान थी आधार मात्र के लिये भवन मे लगाई गई थी। वहा ऐसी 130 मूर्तिया थी जिन म स छोटी स छोटी 2 फीट की थी। जिन्हें श्रेष्ठ कारीगरी से बनाये गये ताको म रखा गया था। वहां की महाकाल की प्रतिमा ने उसे प्रभावित किया। यह सम्पूर्ण मन्दिर श्वेत सगमरमर स निर्मित था। मन्दिर के भीतरी और मध्य की गुम्बद मे काम बहुत बारीकी से किया हुआ था और वह उच्च स्तरीय भी था। मण्डप के आग की भूमि पर खड हुए खम्भे रविश क ही अग दृष्टिगोचर हो रहे थे, जो कभी मन्दिर के चारो ओर घूम गई थी।[12]

टाड ने कोलियो की कुलदवी आया माता के मन्दिर को भी देखा, जो शिखरों वाला और ऊचे डूगर (पहाड) पर स्थित था। यह मन्दिर गिरवर स चार मील दूर था।[13]

गुजरात के दर्शनीय मन्दिर और उनका स्थापत्य

कनल टाड न आबू स गुजरात म प्रवेश किया और वहा के दुर्लभ, प्राचीन और स्थापत्य कला स परिपूर्ण मन्दिरो को देखा। जिसका विवरण उसके ग्रन्थ पश्चिमी भारत की यात्रा म प्रकाशित हुआ है।

---

11 वही पृ 130

12 वही, पृ 134 जन के सी एन्श्येण्ट सिटीज एण्ड टाउन्स ऑफ राजस्थान, पृ 341 347

13 वही पृ 136

टाड ने गुजरात क सिद्धपुर के शिव मन्दिर को देखा। यह मन्दिर रुद्रमहालय (युद्ध के देवता की माला) के नाम से प्रसिद्ध था। यह मन्दिर आयताकार और पच खण्डा था। उसकी ऊचाई 100 फीट थी। टॉड की यात्रा के समय तक यह मन्दिर दो खण्डो का खण्डहर मात्र रह गया था। इसका निज मन्दिर तो मस्जिद में बदला जा चुका था।

इस मन्दिर के सम्बन्ध म टाड का सामला भाट ने बताया कि रुद्र के इस मन्दिर म 1600 स्तम्भ 121 रुद्र की प्रतिमाए विभिन्न कक्षों म विराजमान थी। इसम 121 स्वण कलश 1800 अन्य देवी देवताओं की मूर्तिया 7213 विश्राम कक्ष 1,25,000 कुराईदार जालिया पर्दे निशान और ध्वज लिये हुए चोबदारों योद्धागणो यक्षो मानवों तथा पशुपक्षियों की हजारों लाखों पुतलियें बनी हुई थी। इस मन्दिर क निर्माण पर सिद्धराज ने चालीस लाख स्वण मुद्राए व्यय की थी। यह मन्दिर अलाउद्दीन के द्वारा विध्वस किया गया था।[14]

प्रकरण आठ म टॉड न इतिवत प्रकीण सग्रह के आधार पर लिखा है कि अणहिलपुर म अनक मन्दिर और पाठशालाए थी। यहाँ वन्न स जन मन्दिर है और भील क किनारे सहस्रलिंग महादेव का मन्दिर भी बना हुआ ह। वशराज ने वहा पर पार्श्वनाथ का जन मन्दिर बनवाया।[15]

टाड ने गुजरात की तारगो पहाडी पर लकडा से बने एक मन्दिर का सकेत किया ह।[16] अणहिलवाडा क काली क मन्दिर का भी उल्लेख किया ह जो कालीकोट अथवा अन्तरग नगर का अवशेष मात्र था। जिसम दो मजबूत बुर्ज बनी हुई था जो काली की छतरिया कहलाती थी।[17] शिलालेख को स्रोत मानकर टाड न लिखा कि पुणहिलवाडा म सवत 802 म देवीचन्द्र सूरि आचाय न अल्लश्वर महादेव की प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाई।[18]

---

14 वही पृ 142 143 उपाध्याय वासुदेव प्राचीन भारतीय स्तूत गुहा एव मन्दिर पृ 253

15 वही पृ 164 165

16 वही पृ 202 (प्रकरण 9)

17 वही पृ 237

18 वही पृ 244 245

खम्भात में टॉड ने एक स्तम्भ देखा जो पार्श्वनाथ के जैन मन्दिर का अस्तित्व सिद्ध करता था। टॉड के समय भी वहां पार्श्वनाथ मंदिर और महादेव के मंदिर के अवशेष थे।

टाड ने वलभी के निकट स्थित भीमनाथ के दर्शन किये। यहां शिवलिंग बड़ के वृक्ष के नीचे खुले में ही स्थित था और वहां के जलस्रोत का जल चमत्कारी बताया जाता था।

प्रकरण चौदह में टाड ने जैन धर्मावलम्बियों के प्रमुख तीर्थ पलीताना का विवरण प्रस्तुत किया है।[19] यहां के शत्रुञ्जय पर्वत की भी टाड ने यात्रा की थी। इस तीर्थ की महत्ता का वर्णन शत्रुञ्जय माहात्म्य (धनेश्वर सूरि रचित) शीर्षक ग्रन्थ में मिलता है।

शत्रुञ्जय पर्वत 2 हजार फीट ऊंचा है। यहां के पवित्र आदिनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार सूर्यवंशी शिलादित्य ने 421 ई० में करवाया था। शत्रुञ्जय जैनों के पंचतीर्थों में से गिना जाता है। शत्रुञ्जय पर्वत तीन भागों में बंटा हुआ है जो टूक कहलाते हैं। पहले का नाम मूलनाथ, दूसरा शिखर सोमजी का चौक तथा तीसरा मोटी टूक कहलाता है। इस पर्वत पर स्थित बाहुबली की मूर्ति 46 ई० की है।

टाड के अनुसार शत्रुञ्जय पर्वत पर पहली इमारत भरत ने, दूसरी पुष्पवीर्य ने, तीसरी ईशानेन्द्र ने, चौथी महेन्द्र ने, पांचवीं ब्रह्मेन्द्र ने, छठी भवनपति ने, सातवीं सगर चक्रवर्ती ने, आठवां व्यन्तर ने, नवां चन्द्रयशा ने, दसवीं चक्रायुध ने, ग्यारहवीं राजा रामचन्द्र ने, बारहवीं पाण्डव बंधुओं ने, तेरहवां कश्मीर के व्यापारी जावड़ शाह ने, चौदहवां अणहिलवाड़ा के राजा सिद्धराज के मंत्री बाहड़ ने, पन्द्रहवीं दिल्लीपति के कारण समरा सारंग ने और सोलहवीं चित्तौड़ के मंत्री कर्माशाह डोसी ने बनवायी।

पलीताना में पर्वत की तलहटी में हिंगराजमाता का मन्दिर स्थित था।

---

19 कनी पृ 290 306 द्र भारत के मन्दिर पृ 17
उपाध्याय भगवतशरण सारनाथ कला का इतिहास पृ 149
उपाध्याय वासुदेव प्राचीन भारतीय स्तूप गुहा एवं मन्दिर पृ 252 भट्टाचार्य, स न भारतीय इतिहास कोश पृ 444

बाघनपोल के पास सिंह केसरी माता की लघु मूर्ति स्थित थी। हाथीपोल पर जिनेश्वर पार्श्वनाथ मन्दिर था। पार्श्वनाथ पर सहस्त्रफणों का सर्प दृष्टिगोचर होता था। यहीं पर जगत सेठ का सहस्त्र स्तम्भ मन्दिर था लेकिन उसमें 64 खम्भे ही थे। पास ही कुमारपाल के मंदिर में टाड ने 52 प्रतिमाएं देखी। पहली से पांचवी पोल के मध्य सूयकुण्ड के पास शिवालय और अन्नपूर्णा का मंदिर था।

इसके बाद टाड ने आदिनाथ मंदिर का विस्तृत विवेचन किया है। वह लिखता है कि यह एक भव्य इमारत है। निज मन्दिर एक चौकोर कक्ष के रूप मे निर्मित है। जिस पर गोल छत है। इसी प्रकार सभामण्डप भी ऐसी ही छत से ढका है। देव प्रतिमा विशाल श्वेत संगमरमर की है। ऋषभदेव सुपरिचित विचार मुद्रा में पद्मासन लगाये बैठे है। जिनका चिह्न वृषभ है। उनकी मुखाकृति गम्भीर है और नक्श तराशे हुए हीरे के हैं। यह मन्दिर उच्च बनावट की आकृतियों के सुन्दर चित्रो से सजाया गया है। ड्योढ़ी पर संगमरमर की बनी हुई एक बैल की मूर्ति तथा एक छोटी हाथी की मूर्ति भी है। जिस पर आदिनाथ की माता मरुदेवी अपने पौत्र भरत और बाहुबलि को गोद मे लिये विराजमान हैं।

शत्रुन्जय पर्वत पर ही टॉड ने बाहुबलि का छोटा मन्दिर प्रेम टूक पर स्थित आदिनाथ मन्दिर शिवा सोमजी टूक पर चौमुखी आदिनाथ मन्दिर मरुदेवी के मन्दिर का अवलोकन किया।

आदिनाथ मंदिर से उतरते समय टाड पश्चिमी ढाल पर स्थित कृष्ण की माता देवकी के 6 पुत्रो के थान पर आया जिन्हें कंस ने मार डाला था। यह मन्दिर पटशैलीय था। इसमें केवल चबूतरा और स्तम्भ विद्यमान था। वध किये हुए शिशुओ की प्रतिमाए काले पत्थर से निर्मित थी।

शत्रुन्जय तीर्थ की यात्रा पूर्ण कर आगे बढ़ते हुए टाड ने तुलसीश्याम में श्याम मंदिर जाफुनबाड और भीमगाँव के मध्य स्थित विश्वनाथ महादेव कारवार में रणछोड़ मन्दिर और सून्पाड़ा में सूर्य मंदिर भी देखा।[20]

शूद्रपाडा के पास नवदुर्गा का मंदिर था। वहाँ से उत्तर में सातमोर

---

20 टाड, पूर्वो पृ 331 335

दूर मधुराय का मंदिर और लूटेश्वर (लूटपाट के देवता) का मंदिर विद्यमान थे। लूटेश्वर शिव का ही स्वरूप माना जाता है।[21]

पट्टण सोमनाथ में टॉड को सूर्य मंदिर ने बहुत प्रभावित किया। उस समय तक इस मन्दिर के खण्डहर मात्र रह गये थे। मंदिर का शिखर और गर्भ गृह टूट रहे थे। यद्यपि मंदिर की बनावट ठोस थी। यह शिल्पशास्त्र वर्णित पवित्र शिखरबन्ध भवनों के विधाता से परिपूर्ण था। भित्तियों पर बनी आकृतियों के ढाँचे स्थूल और स्पष्ट थे। इसका प्रवेश द्वार पीत पत्थर से निर्मित था। मण्डप का व्यास 16 फीट था जो सजावट वाले खम्भों पर आधारित और चारों ओर दरामदे से घिरा था। मण्डप के आगे एक अलिन्द था जिसकी छतरियां चौकोर एवं सीधे स्तम्भों पर टिकी हुई थी। यहां से निज मंदिर में प्रवेश करते थे।[22]

सूर्य मन्दिर से टाड सिद्धेश्वर महादेव के मन्दिर में गया। यह मन्दिर चट्टान खोदकर बनाया गया था। यहां दिवारों पर चारणों की देवी हिंगलाज और पातालेश्वर की मूर्तियां के दर्शन किये। छोटे से मण्डप की दीवारों पर कुछ अन्य मूर्तियां भी थी। जो नवग्रह की बतलायी जाती थी।

टाड ने उस स्थल की भी यात्रा की जहा से भगवान् श्री कृष्ण परम धाम पधारे थे। वहां पास ही पीपलेश्वर महादेव का मंदिर स्थित था। जिसका उल्लेख अबुल फजल ने भी किया है। वहां से टॉड ने हिरण्य नदी के आगे भीमनाथ के मन्दिर को देखा। इस शिव मंदिर का शिखर ढेरे की भांति था। उसकी छत पिरामिड के ठोस आकार जैसी थी। टॉड इस मंदिर के सम्बन्ध में प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए लिखता है कि यह मन्दिर सम्भवतः महाकाल के मन्दिर का प्राचीनतम प्रकार था। टॉड के अनुसार इस मंदिर के समीप ही महादेव का एक बहुविग्रह लिंग है। जो कामेश्वर के नाम से प्रसिद्ध रहा है। टॉड ने लिखा है कि यह शिवलिंग लाल पत्थर से निर्मित है और उस पर बहुत से छोटे छोटे लिंग बने हैं। इस पश्चात् इस विदेशी इतिहासकार ने पापेश्वर के मंदिर को भी देखा जिसकी इमारत नष्ट हो चुकी थी। कहा जाता है कि इसका निर्माण रुक्मणी ने करवाया था।[23]

21 वही पृ 335 337

22 वही प्रकरण 16 पृ 339-340

23 वही पृ 341-344

इतिहासकार टाड ने भगवान् सोमनाथ के मन्दिर का विस्तत विवेचन किया है। उसने देखा कि इस मन्दिर के शिखर जमीन पर बिखरे पडे थे। मंदिर के प्रवेश द्वार पर कलशदार मिनारें थी जो मुस्लिम शिल्प का प्रतीक थी। यद्यपि मंदिर का अधिकाश भाग महमूद ने नष्ट कर दिया था। इस मंदिर की बनावट की तुलना टॉड ने चित्तौड के लाखा के मंदिर से की है। यह मन्दिर चार भागों म विभक्त था यथा बाहरी पाल निज मन्दिर का प्रवेश द्वार है जो स्तम्भ पक्ति युक्त विशिष्ट मार्गों (बरामदों) स घिरा हुआ है। बाहरी परिधि 336 फीट लम्बाई 117 फीट और पूरी चौडाइ 74 फीट है।

मंदिर के बाहरी भाग का वणन करते हुए टाड ने लिखा है कि स्तम्भाधार भूमि चार भागो म विभक्त है और प्रत्यक का नामकरण उस भाग म हुए सगतराशी के काम पर हुआ है। पहले भाग म साधारण हजारो के मानाकार दानो पर ग्रहा के बहुत स मस्तक बने हैं। एक हल्की सी मखला इसका दूसरा शोप पक्ति स विभक्त करती है जो गजतुड है इसम श्रष्ठ मणिमाओ में अश्व बन हुए हैं और इसम भी ऊपर की पट्टी म जो कुछ अधिक चौडी है मतवाले मर्दप नतको की टालियां उत्कीण है। जो विविध प्रकार क वाद्य लिय हुए हैं और नाना प्रकार क हाव भाव प्रदर्शित कर रहे हैं। पीठिका के ऊपर उत्कीण आकृतियों म से अधिकाश नष्ट हो चुकी ह। एक बचे हुए स्थान के कुछ अशा से ज्ञात होता ह कि यहा राममण्डल की स्वर्गीय अप्सराओ का अकन हुआ ह।

मण्डप का गुम्बज पूण ह। मेहराब की चौडाई 32 फीट ह और सिरा पर चपटे अर्द्धाण्ड का भाग होने क कारण इसकी ऊचाई व्यास म अधिक ह अर्थात् धरातल से महराब की उठान तक लगभग तीस फीट ह। छतरी 8 खम्भो पर टिकी हुइ ह। जिनके शीप घने अतिभारी पट्टो द्वारा सम्बद्ध ह। गुम्बज की आकृति एक जहाजी पिण्ड के समान है। इस पर कितनी ही परतें चढी हुई ह। उसे टकोरने पर इसम से धातु के समान ध्वनि निकलती ह। इन खम्भों और शीप पट्टा की स्थिति स जो एक अर्द्धाण्डाकार गुम्बज क लिये अष्टकोण आधार बना हुई ह, यह प्रमाण मिलता ह कि आडी डाट के सिद्धान्त क अनुसार इस छतरी की मूल आयाजना हिन्दू प्रकार की रही होगी।

मुख भाग के अतिरिक्त जिससे दालान म होकर हम निज मन्दिर म जाते हैं इसकी अन्त स्तम्भ-सघटना सुघड और महराबदार है और ये

महराबें एक का छोड़कर एक नुकीली अथवा दीर्घ वलाकार है। इसकी के मुख्य भाग और निज मन्दिर के बीच में एक विस्तीर्ण आच्छादित और स्तम्भ पंक्ति युक्त प्रतिहार है। जहा शिव लिंग था वह स्थान अब ध्वस्त पड़ा है। पश्चिमी दीवार पर इस्लाम का धर्मासन खुदा हुआ है। मुख्य कक्ष और बाहरी दीवार के बीच भारी भारी खम्भो की पंक्ति है जिन पर बने हुए चपटे अथवा अर्द्धवलाकार बाहर निकलते स्तम्भ शीर्षों पर छत की पट्टीया टिकी हुई है। सोमनाथ मन्दिर अपने ऊँचे परकोटे से घिरे हुए विशाल चौवार चौक के बीच खड़ा है। इसके आसपास के मन्दिर उपग्रह की भांति सोमनाथ के मन्दिर की शोभा बढ़ाते रहे होंगे। ये मन्दिर अब काल कवलित हो गए थे। टाड ने उन मन्दिरों के मलबे को देखा था। उसने सोमनाथ के मन्दिर के सम्बन्ध में लिखा कि भारत में तो इसकी समानता करने वाला कोई स्थान नहीं है।[24]

पट्टण से लगभग 40 मील की दूरी पर स्थित अहीरों के गाव ढाव में टाड ने दो मन्दिरों के खण्डहर देखे। उनमें से एक सूर्य का देवालय था।

जूनागढ़[25] गुजरात का ऐतिहासिक स्थान है। टॉड ने यहा के दुर्ग की यात्रा के दौरान कुमारपाल का मन्दिर तथा नेमीनाथ मन्दिरों के अवशेष देखे। दुर्ग के बाहर पूर्वीय द्वार से आगे चलने पर सोनार कुण्ड के पास पहाड़ी पर उसने बाघेश्वरी माता का मन्दिर देखा। इस मन्दिर में माता काटों का मुकुट धारण किये हुए थी और उसका वाहन सिंह था।

गिरनार जाते समय मार्ग में दामोदर महादेव का मन्दिर है। पास ही छोटे मन्दिर में बलदेव की मूर्ति विराजमान है। टाड के ग्रंथ पश्चिमी भारत की यात्रा के सम्पादक गोपाल नारायण बहुरा के अनुसार यह प्रतिमा बलराम की नहीं अपितु विष्णु की है जो गदा चक्र तथा शंख

---

24 वही पृ 345-355 भट्टाचार्य सच्चिदानन्द भारतीय इतिहास कोश पृ 485 उपाध्याय वासुदेव, पूर्वो पृ 253

25 टाड पूर्वो, पृ 378 387

धारण किये हुए हैं।[26] ामादर महादेव के मन्दिर से आगे बढते हुए टाड न भावनाथ महादेव क मदिर को देखा । यह एक रमणीय स्थल था। गिरनार की तलह ी के समीप पाण्डवो का मन्दिर था । वही दो अन्य मन्दिर कन्हैया तथा द्रौपदी के थ । इन मन्दिरो की छतें ग्रेनाइट के खम्भों पर आधारित थी।

गिरनार[27] पहुचकर टाड ने अम्बा गोरखनाथ और कालिका के मन्दिरों को देखा। उसन गोरखनाथ मन्दिर म सिद्धो की पादुकाओं के भी दशन किये ।

गिरनार जन धर्मावलम्बिया हतु श्रद्धा का प्रमुख केन्द्र है। यहा पर टाड न नमिनाथ मन्दिर क दशन किये । उसने तीन मन्दिरो की त्रिकुटी को भी देखा जिनका जिर्णोद्धार अथवा निर्माण तजपाल वस्तुपाल ने करवाया था । ये तीनो एक चबूतरे पर हैं और आबू के मन्दिरो स आधी शताब्दी पुराने है। बीच के मन्दिर म उन्नीसवें जन तीर्थङ्कर मल्लिनाथ की मूर्ति है । इनक दाहिनी ओर का मन्दिर सुमरु और बायी ओर का समेत शिखर कहलाता है। जो जन धर्मावलम्बियो का पच तीर्थों के पवित्र दो शिखरो के रूप म प्रसिद्ध है। मन्दिरों पर पत्थर की कारीगरी व ी सुन्दर है । मल्लिनाथ की मूर्ति श्यामल है। उनका मन्दिर चार मजिलो का है जो एक क बाद एक छोटी होती चली गई है । सबसे उपर आठवें तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभ विराजमान है प्रत्येक दिशा क कोने पर भी एक एक मूर्ति स्थित है । एक कोने पर पीले रत्न की बनी मेरु शिखर की लघु आकृति है जो छत क पार चली गई है ।

आग वाला मन्दिर जो पार्श्वनाथ को अर्पित है, उसे सामप्रीति ने बनवाया था । मन्दिर स प्रवेशद्वार से एक सोपान सारणि खम्भों पर टिकी ड्योढी तक जाती है । जिसम होकर मन्दिर के मुख्य भाग में प्रवेश करते हैं। दोहरी स्तम्भ पक्ति पर छत स आच्छादित विशाल कक्ष म होकर मण्डप में पहुचते हैं । जो प्राय 30 फीट लम्बा और इतना ही चौडा है । यह स्तम्भों पर खडा है। स्तम्भ पक्ति युक्त दीर्घाए जिसम चौकोर खम्भे दीवार क सहारे खडे ह इसे दालान स और अन्तरग मण्डप से अलग करती है जो गुम्बजदार

26 वही पृ 385
27 वही, प 390-402

छत से प्राच्छादित है। इसके आगे वेदी पर पार्श्वनाथ की मूर्ति निज मन्दिर में विराजमान है।

इस मंदिर से टाड भीम कुण्ड गया जिसके निकट एक मन्दिर को टूटी फूटी अवस्था में देखा। इस मन्दिर को अणहिलवाडा के कुमारपाल ने बनवाया था। मन्दिर का नक्शा पार्श्वनाथ मन्दिर जैसा ही था।

इसके पश्चात ऊंची दीवारों से घिरे हुए सहस्त्रफणी पार्श्वनाथ को देखा जो अत्यन्त सुन्दर ढंग से निर्मित था। यह मन्दिर सोनी पार्श्वनाथ कहलाता था। क्योंकि इस मंदिर का जीर्णोद्धार दिल्ली के सोनी संग्राम ने करवाया था। मन्दिर के भीतर हल्के हरे और चमकीले चट्टानी पत्थरों के खम्भा के कारण यह काफी अच्छा दिखाई पड़ता था। इस मंदिर की बनावट भी पूर्व वर्णित मंदिरों के समान ही थी। आंगन में कोठरियों में महन्तों तथा भक्तों की प्रतिमाएं स्थापित थीं।

गढ की टूक पर ऋषभदेव का मन्दिर था। जिसके कंगूरे और स्तम्भ अत्यन्त सुन्दर थे। यहां सफेद और पीले सूर्यकान्त के बने हुए मेरु और समेत आदि पवित्र जैन शिखरों की लघु आकृतियां विद्यमान थीं तथा चौक की चारों दीवारों के सहारे सहारे छोटी कोठरियों की पंक्ति चली गई है जिनमें चौबीस तीर्थङ्कर विराजमान थे।

टाड के अनुसार समूह का अन्तिम मंदिर खंगार के महलों से सटा हुआ गिरनार के देवता नेमिनाथ का है। यह मंदिर बहुत पुराना है। इसका भीतरी भाग भी भित्ति चित्रों तथा चमकीले जड़ाव से सजा है।

गिरनार की यात्रा के बाद कर्नल टाड आगे बढ़ते हुए घूमता घरडा पहुंचा। वहां का जेठवा का मन्दिर बड़ा प्रसिद्ध था। टॉड लिखता है कि यह इमारत क्रास की आकृति की है। मन्दिर एक चबूतरे की पीठिका पर खड़ा है। जिसका माप 163X120 फीट है। यह मंदिर तराशे हुए पत्थरों से बना है। इसकी भित्ति सज्जा सुन्दर है। मन्दिर में 23 फीट व्यास वाला एक अष्टकोण मण्डप है जिसकी ऊंचाई दो खण्ड है और इसके ऊपर गुम्बज है जो धरातल से 35 फीट ऊंचा है। इसके आधार में लगभग 12 फीट ऊंचाई के स्तम्भों की एक सारिणी है अष्टकोणाकृति में आयोजित की गई है और ये स्तम्भ तोरणों का काम लिये हुए हैं और पट्टों से सम्बद्ध कर दिये गये हैं। इसी के ऊपर दूसरी स्तम्भ पंक्ति है जिस पर तोरणों द्वारा उत्कीर्ण राम मन्दिर अथवा स्वर्गीय नृत्य सम्बन्धी मूर्तियों से सुसज्जित गुम्बद टिका है। पूर्व और

पश्चिम की ओर आग निकला हुई दो छयान्यिा ह जो गिरिजाघरा के मध्य भाग के समान हैं। इनकी ऊचाई तथा चौडाई 14 फीट व 18 फीट ह। इनम अनक खम्भे व बीच म छत हैं जिसके मध्य म बारिकी और सजावट स एक कमल बनाया गया ह। बडी गुम्बज के चारो ओर छोटी गुम्बजें भी ह जो भी इसी की तरह खम्भों पर टिकी हुइ है। पश्चिम म निज मन्दिर मूर्ति विहीन है । इसक ऊपर का शिखर तोडकर गिरा दिया गया है । यह मन्दिर सम्भवत शिव या हर्षद माता का रहा होगा ।[28]

इस मन्दिर स थोडा दूरी पर ही गणपति के मंदिर का भी टॉड न अवलोकन किया । मन्दिर म कोठरियों के चारो ओर खम्भो के स्थान पर दीवारें और चौखटदार खिडकिया थी और इसकी छत मण्डलाकार थी। गणपति मन्दिर क उत्तर म बौद्धा का एक मन्दिर था। जिसम एक दूसरे म सट हुए चार मण्डप थ जो खम्भा पर टिके हुए थ । इस मन्दिर के भीतर पार्श्वनाथ की मूर्ति थी और एक पत्थर पर चौबीस तीर्थङ्करा की मूर्तिया उत्कीर्ण था।[29]

द्वारका प्राचीन काल मे भारतीय व्यापार एव वाणिज्य का प्रमुख केन्द्र रहा है । पौराणिक ग्रन्था म द्वारका सम्बन्धी कई कथानक लिख गये हैं । टाड क अनुसार यहा का कृष्ण मन्दिर समुद्र तट से कुछ ऊचाई पर बना हुआ है । यह मन्दिर परकोटे मे घिरा हुआ है । इसकी शिल्प कला वही है जिसे हम (शिखरबन्ध) देवालय की सज्ञा दिया करत हैं। अध्ययन हेतु इस मन्दिर को तीन भागो मे बाटा जा सकता ह यथा मण्डप या सभा भवन देवायतन या निज मन्दिर (गर्भगृह) और शिखर। इस मंदिर का सभा भवन चौकोर ह तथा इसकी ऊचाई पाच स्पष्ट श्रेणिया (मजिलो) म विभक्त ह । प्रत्येक खण्ड म स्तम्भ समूह ह । सबसे नीचे खण्ड की ऊचाई बीस फीट ह और अन्त तक वही सम चौकोण आकृति रहती चला गई ह जिसम आड शीष पट्ट लगाये गय है जो उत्तरोत्तर गुम्बज क लिये आधार बन जात हैं सबस ऊपर की चोटी धरातल स पचहत्तर फीट ऊची ह । प्रत्येक वर्ग चतुष्कोण क मुख भागो पर चार-चार भारी खम्भ खड़ कियं गय हैं जो इस महान भार की नीव का काय करत हैं । परन्तु इन्हें भार वहन करने क लिये अपर्याप्त समझ कर प्रत्यक स्तम्भयुग्म के बीच बीच म कुछ अतिरिक्त

28 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 413-414
29 वही पृ 414-416

खम्भे लगा दिये गये हैं जिससे समरूपता का बलिदान हो गया है। लगभग दस फीट चौड़ाई की एक खम्भेदार 'भमती' या फिरनी सबसे नीचे की मंजिल में घूम गई है। जिससे उत्तर दक्षिण और पश्चिम की ओर के भाग खम्भों के सहारे और भी आगे बढ़ गये हैं। प्रत्येक खण्ड में एक भीतरी रविश भी है जिसके सिरे पर तीन-तीन फीट ऊँची दीवार बनी हुई है कि जिससे कोई असावधान मनुष्य नीचे न गिर जाय। इन छोटी-छोटी दीवारों पर पृथक-पृथक विभक्त भागों में खुदाई का बढ़िया काम हो रहा था। परन्तु विदेशी आक्रमणकारियों ने उन्हें नष्ट भ्रष्ट कर दिया। फिर भी इससे मूल इमारत को कोई क्षति नहीं पहुँची।

टाड के विवरण के अनुसार निज मन्दिर वर्गाकार है। इस मन्दिर में कृष्ण भक्तिकाल में पूर्व बुद्ध त्रिविक्रम की पूजा होती थी। जिसका एक लघु मन्दिर अब भी देवालय में विद्यमान है और कृष्ण की मूर्ति इसके बाहर कक्ष में स्थापित है। अत्यन्त प्राचीन शैली में निर्मित इस शिखर में एक के बाद एक पिरामिड बने हुए हैं जो जमीन से 140 फीट की ऊँचाई पर जाकर समाप्त होता है। जहाँ इस पिरामिड की आकृति वाले शिखर का व्यास बहुत छोटा हो जाता है उसमें पहले इसकी सात मंजिलें स्पष्ट हैं। प्रत्येक मंजिल का मुख्य भाग एक खुले आसारे से सजा हुआ है जिस पर छोटे छोटे खम्भों पर टिके हुए छज्जे भी बने हुए हैं। प्रत्येक मंजिल में भीतर की ओर खम्भों पर खम्भे टिके हुए हैं और इन पर टिके हुए मध्य पट्ट उन पर धरे हुए भार की घटती हुई मात्रा की अपेक्षा अनुमानतः अधिक भारी होते चले गये हैं। इन खम्भों के शीर्ष दल बिलकुल सादा है और चारों तरफ कुछ-कुछ आगे निकले हुए हैं कि उन पर मध्य पट्ट आसानी से टिक सकें। इस इमारत की पूरी बनावट जिसकी भीतर से लम्बाई चौड़ाई अड़सठ फीट और छियालिस फीट है चट्टानी पत्थर या बलुआ पत्थर की है।[30]

यहाँ कृष्ण पूजन रणछोड़ के रूप में होता है। एक स्तम्भाधारित ढकी हुई सुरंग कृष्ण के मन्दिर को उनकी माता देवकी के मन्दिर से जोड़ती है। विशाल चौक में कुछ और भी छोटे-छोटे मन्दिर हैं। इसके सामने ही मुख्य मन्दिर के दक्षिणी-पश्चिमी कोने में कृष्ण के दूसरे रूप मथुरानाथ (मथुरापुरी के स्वामी) का छोटा मन्दिर है।

---

30 वही पृ 431 433

द्वारका म ही टाड न गोमती क किनारे पर सगम नारायण क मन्दिर का उल्लेख किया है। यहा पर भायरे म मण्डप क दक्षिण पश्चिमी कोने मे बलदेव की प्रतिमा विद्यमान ह। इसी प्रकार वहा चारों और एकता के देवता के मन्दिर का विवरण देत हुए टाड लिखता है कि यह मन्दिर त्रिविक्रम बुद्ध के प्राचीन मंदिर पर ओखामण्डल क राजा वज्रनाभ न बनवाया जो कृष्ण का पोता था।

द्वारका क मन्दिर क शिखर का तोडन का काय औरगजेब ने किया। परन्तु सामला मानिक वाघेर रणछोड की प्रतिमा को पहल ही बेट (शखोप) म ले गया जहा वह अब तक मौजूद है।

टाड न द्वारका क कृष्ण मन्दिर क अलावा कुछ और मन्दिरो का भी विवेचन किया है। प्रकरण बीस म आरमरा क निकट गोपनाथ का मन्दिर शखोद्धार म शख नारायण मन्दिर वहीं मीरा बाइ द्वारा निर्मित गोपाल मन्दिर सगद के सगम नारायण मन्दिर (दस्युओ के देवता और रक्षक) का सक्षेप म वणन किया गया है।[31] जेम्स टाड न माण्डवी (रायपुर बन्दरगाह) क तरुणनाथ मन्दिर क प्राचीन अवशेषो का भी निरीक्षण किया। यह एक समाधि स्मारक था।[32]

उपयुक्त विवेचन स स्पष्ट है कि कनल जेम्स टाड का भारतीय सस्कृति क प्रति विशेष अनुराग था। अत भारतीय प्रवास क प्रत्यक क्षण का वह सदुपयोग करना चाहता था। उसन अपनी स्वदेश वापसी की यात्रा म भारत क सास्कृतिक स्थलो को देखने का निश्चय इसी सन्दभ म किया। टाड न जो भी स्थल देखा उसका विवरण लिपिबद्ध किया। उसन अपन यात्रा वणन म पश्चिमी भारत क मन्दिरो का विस्तार स विवेचन किया। मन्दिरो का उल्लेख करत हुए उसन उनकी स्थापत्य कला पर भी पूण प्रकाश डाला। टाड का यह विवरण भारतीय कला म रुचि रखने वाले विद्वानो हेतु ज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान है। उसके विवरण म पूणता ह और कला सम्बन्धी तकनीक की झलक भी। कनल टाड न पश्चिमी भारत की यात्रा शीषक ग्रथ म हम ऐस कई मन्दिरो स अवगत कराया ह जो हमारे स्मृति पटल मे लुप्त हो चुके थे। अथवा जिनका स्वरूप अब बदल गया ह। इसका प्रमुख उदाहरण गुजरात का सोमनाथ का मन्दिर है जो अब इस रूप म विद्यमान नहीं ह जिस रूप म उस टाड न देखा था। इस प्रकार कनल टाड प्राचीन भारतीय स्थापत्य परम्परा की निरन्तरता को बनाये रखने वाला प्रमुख कडी समझा ह और उसका ग्रथ पश्चिमी भारत की यात्रा भी किसी कला कोश स कम उपादेय नहीं है।

31 वही पृ 434 449
32 वही पृ 461

कर्नल जेम्स टॉड : समाज सुधारक

—डॉ गोपाल व्यास

भारत के उत्तर प्रान्त (वर्तमान में उत्तर प्रदेश) के मिर्जापुर नामक स्थान पर जन्मे टाड अपने पिता के साथ 8 10 वर्ष की अवस्था में भारत आया था।[1] यद्यपि वह यहाँ एक वर्ष भी नहीं रहा किन्तु उसके मन में इस भूमि के प्रति जिज्ञासा तभी से बनती रही होगी। इसीलिए वह ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेवा में भर्ती होकर 1800 ई के आरम्भ में पुन भारत आया।[2] कलकत्ता में कम्पनी की सैनिक सेवा करते हुए उसने बंगाल के जन-जीवन को समीप से देखा। यहाँ से टाड का स्थानान्तर दिल्ली कर दिया गया जहाँ से दो तीन वर्ष उपरान्त 1805 06 ई में उसका पदस्थापन दौलतराव सिंधिया के दरबार में किया गया।[3] सिंधिया के साथ रहते हुए केप्टन टाड ने मालवा एवं राजपूताना के जन-जीवन का दर्शन और अध्ययन का प्रयत्न शुरू किया। इसके फलस्वरूप उसकी रुचि भौगोलिक ऐतिहासिक तथ्यों का संग्रह करने की ओर अग्रसर हुई। 1818 ई के प्रारम्भ में उसे मेवाड़ मारवाड़ तथा हाड़ौती का पॉलिटीकल एजेन्ट नियुक्त कर राजस्थान भेजा गया तब से 1 जून 1822 ई तक[4] टाड ने उदयपुर जोधपुर जैसलमेर कोटा बूंदी सिरोही आदि राज्यों की प्रशासनिक यात्राएं[5] ही नहीं बल्कि इस क्षेत्र

---

1 गुप्ता एवं व्यास राजस्थान के इतिहास के स्रोत, पृ 107

2 1798 ई में टाड इंगलैंड में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सेवा में एक कैडेट के रूप में भर्ती हुआ था, उपरान्त पृष्ठ-वही

3 उपरान्त

4 फरवरी 1818 ई में टाड को उदयपुर जाने का आदेश हुआ तथा 8 मार्च 1818 ई को वह अपना कार्य ग्रहण करने उदयपुर पहुँचा था।

5 टाड ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इण्डिया (हिन्दी अनुवाद), प्रकाशकीय वक्तव्य प

पारिवारिक-कलह एव द्वष की उत्पत्ति ही नही वरन दहेज की ऊची दरों शिशुवत कन्याओं की हत्या का वातावरण भी उत्पन्न कर दिया था।[9] दहेज प्रथा के विकृत स्वरूप ने राजस्थान में त्याग प्रथा के स्तर पर राजपूतों की आर्थिक शोषण की परम्परा को स्थापित किया जिससे फलस्वरूप अन्तत म सम्पन्न समृद्ध राजपूत भी पुत्री विवाह से कतराने लगा। इसका फल यह हुआ कि विवाह की उम्र होने पर भी राजपूत परिवार में कुमारी बहन बेटियां परिवार की ईर्ष्या द्वेष तथा कलह बढ़ाने का साधन बनने लगा।

सामन्ती-वातावरण ने अमानवीय व्यवहारों का इतना गहरा समाज म छा दिया था कि जहां दासों को पुत्रवत सम्मान प्राप्त होता आया था वहां अठारहवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध म यह दास-स्तर' जसी स्थिति म पहुंचा दिए गये।[10] इनका अस्तित्व इनके स्वामियों की कृपा पर निर्भर रहता था। टाड कालीन राजस्थान के समाज म सम्प्रभु वग द्वारा थापी गई बेठ बगार[11] प्रथा भी सामाजिक शोषण का प्रतिमान बन गई थी। शासक प्रशासक एव समृद्ध जन का जीवन इतना विलासपूर्ण हो गया था कि कज, अमल शराब तथा रखैल स्त्रियाँ उनके सामाजिक सम्मान की श्रेणी म आकी जाने लगी थी।[12]

राजस्थान म मराठा अतिक्रमणों म प्रभावित कई जातियों ने अपना जीविका-साधन चोरी डकैती को बना लिया था।[13] इनम कजर सांसी थोरी बावरी मर मीणा भील मुख्य थे।[14] किन्तु अपने क्षेत्र और प्रभाव विस्तार हेतु छोटे छोटे जागीरदार (राजपूत) भी डकैती के काय करने म

---

9 बनर्जी ए सी-द राजपूत स्टेटस एण्ड ब्रिटीश पैरामाउन्टसी, पृ 45-46
10 सिंह जवार द ईस्ट इण्डिया कम्पनी एण्ड मारवाड, पृ 211
11 प्राचीनकाल म यह कर्त्तव्याभिमुख सामाजिक-आर्थिक सेवा रही थी (श्याम सामाजिक आर्थिक जीवन पृ 88-89) किन्तु इस समय यह श्रम-शोषणकी धार उन्मुख होने लगी टाड एनाल्स भा 1, पृ 237, 1088ट्रेवल्स(हिन्दी) पृ 100 वीर विनोद पृ 136
12 टॉड एनाल्स भा 1 पृ 350 (46 एव 1092 ट्रेवल्स (हिन्दी) प 3,13 496 श्यामा, उदे भाग 2 प 701
13 श्याम सामाजिक-आर्थिक जीवन प 130
14 उपरोक्त प 127-133

हितचिन्तक नही थे।[15] इसी प्रकार राज्य में सामाजिक कर्त्तव्य के प्रति लोगो में उदासिनता का भाव[16] कई प्रकार के राजनीतिक सामाजिक संकट पैदा करते हुए प्रशासनिक व्यवस्थाओं को प्रभावित कर रहा था। इनमें रक्तवाली, बोलाई जमी राजनीतिक-आर्थिक स्वेच्छाचारिता और किसान व वणिक वर्गों का मातृभूमि से पलायन की समस्या प्रमुख थी।[17] इन परिस्थितियों में समाज का ब्राह्मण साधारण-वर्ग कृषि कार्य के प्रति निष्क्रिय था कि कई बार राजस्थान की उपजाऊ भूमि बंजर पड़ी हुई थी। फलस्वरूप समाज पीछे ही नही रहा था बल्कि आर्थिक दृष्टि से सामाजिक विषमता का साम्राज्य राजस्थान में जड़ जमा चुका था।

कर्नल जेम्स टॉड ने उल्लेखित वातावरण का अनुभव ही नही किया वरन् इसके लिए उसने सुधार हेतु प्रयत्न भी आरम्भ किये। उसके सुधारात्मक उपायों का अध्ययन दो प्रकार से किया जा सकता है (1) विद्यमान समस्याओं के प्रति टॉड के विचार एवं (2) सामाजिक रुग्णता के निवारणार्थ टॉड के चिकित्सीय प्रयास। अब हम टॉड के सामाजिक सुधारक स्वरूप का अवलोकन करने के लिए दोनों ही प्रकारों के उपायों की एकीकृत रूप में व्याख्या करेंगे।

समाज सुधारक कर्नल टॉड

राजस्थान ही नहीं अपितु समस्त भारत अठारहवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे सामाजिक कुरीतियों के अभिशाप से ग्रस्त रहा था। फिर

---

15 टॉड के अनुसार स्वयं ठाकुर लोग अपने अधीन सेवकों अथवा अपराधकर्मी जातियों को संरक्षण प्रदान कर चोरी-लूटपाट बलात्कार आदि को बढ़ावा देते थे इसीलिए टॉड द्वारा किये गए संधि पत्र 1818 ई में इसको रोकने हेतु निर्देश है एनाल्स भा 1 पृ 564

16 एनाल्स भा 1 पृ 651

17 राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली मर्सी - फारेन पोलीटिकल कंसल्टेशन पत्र सं 19 20 1821 ई 6 अक्टूबर वीर विनोद पृ 1743 14

राजस्थान के राजपूत राज्यों का समाज तो प्राचीन काल से कट्टर परम्परावादी तथा रूढ़ियों के भंवर में फंसा हुआ था। कर्नल जेम्स टाड ने पोलीटीकल एजेंट का पदभार ग्रहण करने के साथ ही सर्व प्रथम सामाजिक राजनीतिक सुधार की ओर ध्यान दिया। मेवाड़ राज्य में सामन्तों की स्वेच्छाचारी प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने के लिए उसने उच्च श्रेणी के जागीरदारों से व्यक्तिगत सम्पर्क किया और समझौता-पत्र पर उनके हस्ताक्षर कराये।[18] यद्यपि सरदारों ने इस समझौते का पूर्णतः पालन नहीं किया किन्तु इसके परिणामतः राजपूत समाज में राणा की पद प्रतिष्ठा पुनः प्रतिष्ठित होने से राज्य का सामाजिक राजनीतिक जन-जीवन शनैः शनैः व्यवस्थित होने लगा। इस समझौते से रखवाली चुंगी जैसे अधिकार सामन्तों को छोड़ने पड़े साथ ही चोर डाकू ठग तथा हत्यारों को उनकी जागीर में शरण प्रदान करना दण्डनीय अपराध घोषित किया गया।[19] अपराधकर्मी जातियों के पुनर्वास हेतु टाड ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के भारतीय शासन को अपनी योजना प्रेषित की थी।[20] पर कम्पनी की सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं दिया क्योंकि केन्द्रीय सरकार ने राजपूताने (राजस्थान) के प्रति कोई निश्चित नीति टाड के समय तक निश्चित नहीं की थी।[21] इसीलिए टॉड ने अपने प्रयत्न शासकों तथा सामन्तों के मध्य निरन्तर रखे। उसने मेरों की गतिविधियों को रोकने हेतु मेवाड़ के पूर्वी उत्तरी पर्वत क्षेत्र में थाने स्थापित कराये तथा जोधपुर के शासक मानसिंह को भी इस हेतु परामर्श

---

18 टाड द्वारा चार्ल्स मेटकॉफ को प्रेषित रिपोर्ट फारीन-पोलिटीकल कन्सलटेशन 1819 ई 6 जून नं 13 एवं 18 राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली टाड एनाल्स भा 1 पृ 565-72

19 एनाल्स भा 1 पृ 564, ओझा उ ई भा 2, पृ 707 यद्यपि भरगा के अधिकार को मलूम्बर तथा कोठारिया के जागीरदार ने 1827 ई तक नहीं छोड़ा था फलतः टॉड के उत्तराधिकारी कप्तान काब को अप्रैल 1827 ई में इस हेतु पुनः प्रयत्न करना पड़ा था (उ इ भा 2 पृ 719 एवं 734) ब्रुक जे सी - हिस्ट्री ऑफ मेवाड़ पृ 72

20 टॉड द्वारा एडम को भेजा गया पत्र, फॉरीन-पालीटीकल कन्सलटेशन 1819 ई अप्रेल 17 नं 38 तथा टॉड का मेटकाफ को पत्र, उक्त, 1821 ई, जनवरी 6, रा अ दि

21 वशिष्ठ वी के राजपूताना एजेन्सी पृ 231

लिया गया। मेरों और भीलों के पुनर्वास हेतु मेवाड़ा पीडवाड़ा मेरवाड़ा खैरवाड़ा की छावनियों में इनकी भर्ती की जाने लगी वहाँ मेर और मीणा जाति के लोगों को कृषि कार्य हेतु प्रेरित करने उनमें भूमि का वितरण किया गया।[23] यद्यपि यह पुनर्वास अंग्रेजों के आर्थिक-लाभ को दृष्टिगत रखते हुए योजित किया गया था।[24] किन्तु अप्रत्यक्ष इसका प्रभाव सामाजिक शांति और सुरक्षा पर भी पड़ा। जब भी ऐसी अपराधगामी जाति के लोगों से टॉड का साक्षात्कार हुआ तो उसने एक उपदेशक की भांति उन्हें घृणित कार्य को छोड़ने हेतु समझाया और उनसे प्रतिज्ञा कराई कि भविष्य में वह अपराधकर्म से विमुख रहेंगे। टॉड ने सोई हुई आत्मा के जागान का प्रयत्न समाज के हर वर्ग के लिए किया फलस्वरूप जन राजा और सामन्त में भ्रातृत्व का बीज अंकुरित होने लगा तथा शासक और प्रजा के मध्य पिता एवं संतान का प्रेम प्राचीन से अन्त की ओर उन्मुख हुआ। उदयपुर (मेवाड़) का शासक राणा ने टाड के प्रभाव से अपने को हिन्दू संस्कृति के पोषणकर्ता के रूप में संस्थापन करना आरम्भ कर दिया।[25] इस तरह टॉड ने राजस्थान में सामाजिक-विधि तथा सामाजिक मर्यादा की पुनर्स्थापना के प्रति अपने प्रयत्नों द्वारा सामाजिक सुधार का ही मार्ग प्रशस्त किया था।

मराठा-अतिक्रमण एवं सामन्तों द्वारा अत्यधिक आर्थिक दबाव से पीड़ित किसान तथा व्यापारी राजस्थान के कुछ राज्यों में पलायन कर गुजरात मालवा तथा उत्तरप्रान्त चले गये थे।[26] कर्नल टाड ने इस हेतु घोषणा पत्रों तथा शासकों को प्रेरित कर सुविधाओं के मार्ग द्वारा व्यापारियों और कृषकों को स्वदेश बुलवाया तथा उन्हें व्यापार और भूमि सम्बन्धित सुरक्षा

---

22 टाड-एनाल्स भा 2, पृ 285 तथा उक्त ग्रन्थ पृ वही

23 बुक-हिस्ट्री आफ मेवाड़ पृ 26 27 72-73 उ इ भा 2 पृ 711

24 राजपूताने पर कम्पनी का प्रभाव स्थापित हो जाने से गुजरात एवं मुम्बई के बन्दरगाहों पर अंग्रेज व्यापारियों का माल राजस्थान के भिन्न मेर विनोद टाडगढ़ उदयपुर सरवाला नामक आदि स्थानों से गुजरता था जहाँ मेर, मीणा और भील के आवास मार्ग में पड़ते थे।

25 ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इण्डिया (हिन्दी अनु) पृ 56 एवं 59

26 शर्मा कालूराम राजस्थान का सामाजिक आर्थिक जीवन पृ 70

27 टाड-एनाल्स भा 1 पृ 555 56 559 एवं 562 ओझा उ इ भा 2 पृ 706 शर्मा मथुरालाल कोटा राज्य का इतिहास भा 2 पृ 548-49

एव रियायतें दिलवाई।[28] इसके अतिरिक्त राज्य की आर्थिक - दशा को सुधारने के लिए विदेशी व्यापारियो को राजकीय बैंक के अधिकार प्रदान करवाये गये।[29] व्यापारिक काफिला आदि के लिए मार्ग और उनकी सुरक्षा की व्यवस्था द्वारा राज्यो म व्यवस्थित आर्थिक - जीवन का सचार करने के प्रयत्न टॉड ने किये थे।[30] सामाजिक - आर्थिक सुधार की दृष्टि से ही उसने तत्कालीन समाज म विशेषत राजपूतो की ऋणग्रस्त रहने की प्रवृत्ति के प्रति मनन ही नही किया बल्कि इसके लिए जागीरदारो तथा छोटे छोटे जमींदारों को इसके दुष्परिणामों के प्रति सचेत भी किया।[31] यद्यपि टाड को इसमें कोई सफलता नहीं मिली फिर भी इससे यह तथ्य तो स्पष्ट होता ही है कि उसके मन म सामाजिक उत्थान के लिए निश्चित् दृष्टिकोण अवश्य था। इससे राजस्थान की जनता का जीवन स्तर ही समृद्ध होता। कृषि के लिए भूमि और श्रम ही नही, अपितु उससे सम्बन्धित पानी की व्यवस्था के लिए टॉड ने शासक और अशासकों को नये तालाब खुदवाने और कुआ को गहरा कराने के लिये प्रोत्साहित किया था।[32] ऐसी समाज कल्याणार्थ प्रेरणा से कृषकों की दशा म सुधार होने लगा। ग्रामीण-समाज के शोषणकर्त्ता स्वेच्छाचारी पटेलो के लिए नियुक्ति - प्रथा को

---

28 एनाल्स भा 1 पृ 382 एव उपरोक्त ग्रथ पृ वही

29 उदयपुर राज्य का इतिहास भा 2 पृ 709

30 आधुनिक राजस्थान का इतिहास पृ 117 पर डॉ एम एस जैन ने टॉड को राजस्थान म आर्थिक अव्यवस्था के सिद्धांत का जनक' बतलाया है जो कि सर्वथा सत्य नहीं है। टॉड को कम्पनी के राजनीतिक अधिकारी के रूप म कम्पनी का हित अवश्य रखना था किन्तु वह राजस्थान से प्रेम करने वाला पहला अग्रेज अधिकारी था जिसे राजपूताने की व्यवस्था को व्यवस्थित करने हेतु अपने उपर आरोपण भी सहन पड़े व इसी के फलस्वरूप उसने अपना त्यागपत्र देकर इगलण्ड प्रस्थान किया था। जैसा कि डॉ जैन लिखते है कि टॉड का समझौता भील तथा मेरो से व्यापारिक आवागमन की सुरक्षा हेतु आवश्यक था (वही पृ 101) पर डॉ जैन इसके दूसरे पक्ष का अविस्मरण कर देते हैं कि इस समझौते से मार्गों और गांवो की लूट पाट म मुक्ति पाने की ओर समाज अग्रसर हुआ वहीं इन उल्लेखित जातियों का अपराधिक जीवन सम्मानित जीविका - यापन हेतु परिवर्तन की ओर उन्मुख हुआ।

31 एनाल्स भा 1 पृ 646

32 ईस्ट इण्डिया कम्पनी ह मारवाड़ पृ 211

समाप्त कर विर्शवन-परम्परा को पुनर्जीवित करने की पहल भी टाड ने ही की थी।[33] बेठ-बेगार राजस्थान के जनजीवन का एक आर्थिक अभिशाप बन गया था। सभी राज्यों मे प्रशासकों की इच्छानुसार इसमें वृद्धि होती रहती थी। टाड की मान्यता थी कि जनता पर आर्थिक भार राज्य की सुव्यवस्था के लिए घातक रहता है अत उसने बेठ-बेगार प्रथा के उन्मूलन हेतु जो भी प्रयत्न किये होंगे उसका एक उदाहरण ही यहा समीचीन होगा [34]

"आबू और सिरोही का स्वामी राव श्योसिंह मुझ (टाड) मिला मैंने उसे समझाया कि प्रजा का उत्थान कैसे हो सकता है, बेगार प्रथा को बन्द कर देना क्यो जरूरी है व्यापारियों को सुविधाए देना राज्य की तरफ से क्या आवश्यक हैं। इस तरह की बहुत-सी बातो के साथ-साथ मैंने राव को समझाया कि जगली जातियों को अच्छा आदमी बनाने के लिए क्या किया जा सकता है।

कोटा राज्य मे हाली *लोगों पर अधिक अत्याचार होते थे। कर्नल टाड ने इस हेतु उनकी दशा सुधारने का प्रयत्न किया किन्तु मेवाड मे रहते हुए वह इस ओर अधिक ध्यान नहीं दे सका। वह दासो के प्रति शासकों और सामन्तो से सद्व्यवहार की अपेक्षा रखता था। उसके हृदय मे इन उपेक्षित मानव मानवियों के प्रति करुणा थी इसीलिए उसने अपनी एजेन्सी से सम्बन्धित शासकों को गोला नामक दासो के प्रति उनके बर्बर व्यवहार के प्रति सचेत किया था।[35]

स्वेच्छाचारी-प्रचलन के उक्त सुधारो की दिशा में टॉड को कुछ स्तर पर सफलता मिली थी उसे हम उसके प्रति प्रजा और राज के द्वारा प्रदत्त सम्मान और स्नेह द्वारा आक सकते हैं। वह जब राजस्थान छोड कर स्वदेश लौट रहा था तब उससे मिलने सामन्त ही नहीं अपितु साधारण जन भी आये और वह ऐसे समय मे भी सामाजिक-राजनीतिक एव आर्थिक

---

*कृषि सम्बन्धी कार्य करने वाला चाकर अथवा नौकर।

33 एनाल्स भा 1 पृ 664 666 बनर्जी- द राजपूत स्टेटस एण्ड ब्रिटीश पेरामाउन्टसी पृ 33

34 ट्रवल्स पृ 100

35 एनाल्स भा 1 पृ 1085 88 - ईस्ट इण्डिया कम्पनी एण्ड मार-वाड पृ 211

मान्शों के सुभाव लागा को यथास्थान समभाता रहा था ।[36] मेवाड का राणा भीमसिंह उससे कितना प्रभावित था इसका उदाहरण इसीस मिलता है-[37]

"... (भीमसिंह) आप(टाड)को तीन वर्ष की छुट्टी दे रहा रहा ह इस बात को भूल नही जाना मगर तीन वर्षों से अधिक ठहरा का आपा वहा (इगलण्ड) पर इरादा किया ता म स्वय आपका लान क लिए आउगा और जहा कहीं मिलेंगे पकड कर ले आऊगा।

टाड एक तरह स अग्रज राजपूत हो गया था जो राजस्थान के हितार्थ विचार संजोया करता था । वह इगलण्ड से जब भारत म आया तब उसक देश म भी कई सामाजिक रूढ़ियाँ विद्यमान थी उनम डाकिन प्रथा जैसा अंधविश्वास की परम्परा एक थी । राजस्थान में कोटा तथा मेवाड इसम ग्रस्त थ ।[38] अन्ध टॉड क इस समस्या हतु विचार का तत्कालिन काठारिया क रावत के परिवार म पनप अंधविश्वास के प्रति उल्लसित् उसके विचार स समझा जा सकता है[39]

"... यह सोचन की बात है कि जिन परिवारा म स्त्रिया अन्ध विश्वासों म रहा करती है उस परिवार और वश का कल्याण कैस हो सकता है ।"

अंधविश्वासों क प्रति जनमोह का कारण टॉड न समाज म अज्ञान क वातावरण को माना था । वह लिखता है कि ' अज्ञान क अधकार म पड़ हुए लोग दयालु हो कर, घृणित अपराधी का भी प्राण क लिए भाजन दत हैं और एसा करन म व कभी सकोच नहीं करत । सकाव का आशय हम अन्य उदाहरण द्वारा ग्रहण कर सकत हैं जिसम टाड न

36 ट्रेवल्स (हिन्दी अनुवादक स, केशव कुमार), प 21।
37 उक्त पृष्ठ वही
38 एनाल्स, भा 3 प 1615 ट्रेवल्स प 15, वी वि प 2039।
39 ट्रेवल्स (अनु केशवकुमार) प 34—काठरिया रावत की एक पत्नि के पुत्र की बीमारी स मृत्यु का भार मृत पुत्र की माता ने अपनी सौतन पर यह कह कर लगाया कि उसन उसक पुत्र का (डाकिनी) द्वारा हत्या करा दी है ।

लिखा है— देवडा राजपूत सरदार ने बतलाया कि कुछ दिन पूर्व जब वह अपने भाई का दाहँ संस्कार कर रहा था तो एक अघोरी ने आकर मृत शरीर को यह कह कर मांगा कि अब की बहुत बढ़िया चटनी बनती है, उसी (राजपूत सरदार) ने बताया कि ऐसे लोगो (अघोरी) पर आदमी के मारने का अपराध नहीं लगाया जाता है।[1] टाड ने इस हेतु क्या प्रयत्न किये यह हमें विदित नहीं होता है किन्तु इसके लिए उसने लोगो को समझाया अवश्य होगा कि यह अमानवीय कृत्य मूलत सामाजिक अपराध है।[40]

बहु विवाह और बेमेल विवाह के प्रति टॉड ने कोई सुधारात्मक चरण नहीं उठाये किन्तु इनमें उत्पन्न दुष्परिणामों का उल्लेख उसने अपने ग्रंथ में ही नहीं वरन् कम्पनी - सरकार को प्रेषित अपनी रिपोर्टस में भी किया है।[41] सम्भवत उसने अपने क्षेत्र से सम्बंधित शासक और जागीरदारों में पारिवारिक क्लेश के दावा को निपटाने के सन्दर्भ में इस पिछड़ी परम्परा की चर्चा की होगी। पर इसका परिणाम कुछ भी नहीं हुआ। राजपूत लोग बहु - विवाह को सम्मान एवं प्रतिष्ठा का साधन मानते रहे थे। सति प्रथा बाल-हत्या एव कन्या-वध जैसी कलंकित प्रथाएं टाड के द्वारा प्रयत्न करने पर भी रुकी नहीं इसका मुख्य कारण कम्पनी प्रशासन का राजस्थान के सामाजिक जीवन के प्रति उदासीन व्यवहार कहा जा सकता है। किन्तु लार्ड विलियम बेंटिक द्वारा अपनाई गई सुधारात्मक - नीति का प्रभाव राजस्थान में कार्यरत आंग्ल अधिकारियों पर भी पड़ा और उन्होंने इस हेतु कानूनी - अधिकार मांगना प्रारम्भ कर दिया। इस सन्दर्भ में राजस्थान के शासकों पर 1840 ई के पश्चात सुधारात्मक उपाय लागू करने अत्यधिक दबाव डाला गया तब भी राजस्थान, से इन कुप्रथाओं का सर्वथा विनाश नहीं हो पाया। पर टॉड के द्वारा राजस्थान में व्याप्त कुरीतियों का संकलन उसके परवर्ती राजनीतिक - अधिकारियों को समस्या के समझने में सहायक सिद्ध हुए। शराब और अफीम के सेवन से होने वाली हानियों के प्रति भी टाड ने लोगों को सचेत किया था।[42] इसीके फलस्वरूप नशे की पीनक में बन्ला अथवा वेर लन की भावना से उत्पन्न सामाजिक विघटन की ओर टाड

40 ट्रवल्स पृ 83 85 एव 393

41 उक्त पृ 15-16 टाड द्वारा मेटकाफ को प्रेषित 207 अनुच्छेद की रिपोर्ट फा पा क 1819 ई जून 12, रा म नि

42 एनाल्स भा 2 पृ 350 ट्रेवल्स पृ 3 एव 13, बनर्जी परामाउन्टसी प 47

ने लोगो का ध्यान आकर्षित किया था ।[43] इन सभी प्रयत्नो का तत्कालीन प्रभाव शून्य ही दिखलाई देता है पर टॉड के पश्चात् आने वाले अग्रेज राजनीतिक-अधिकारियो ने सामाजिक सुधार के लिए टॉड द्वारा इगित अनुरेशा का ही अनुसरण किया । इससे स्पष्ट होता है कि टॉड चाहे अपने समय म राजस्थानी समाज को जाग्रत करने मे सफल नही रहा हो[44] परन्तु कुछ समय बाद उसके प्रयत्न परिणाम भी उत्पन्न करने लगे थे ।

निष्पक्ष कहा जा सकता है कि कर्नल जेम्स टॉड का एक सुधारक के रूप म अवलोकन उसके द्वारा किये गये (1) सामाजिक राजनीतिक (2) सामाजिक आर्थिक तथा (3) सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्र मे प्रक्रियात्मक प्रयोग एव उसके उल्लेखित विचारो स किया जा सकता है । और इस रूप म वह प्रशासनिक मान्यता धारण किये हुए राजस्थान के समाज मे व्याप्त बुराइयो का प्रथम कल्पनाशील सुधारक था ।

---

43 उक्त-ग्रन्थ प 1090

44 इसका कारण 1867 68 ई की एडमीनीस्ट्रेटीव रिपोर्ट स पता चलता है कि राज्य के कर्मचारी और सामन्त अपने क्षुद्र स्वार्थों के फलस्वरूप सुधारो के विरोधी थ, रिपोर्ट आफ राजपूताना स्टेटस, प 19

कर्नल टॉड का समाज शास्त्रीय योगदान

—डॉ सी एल शर्मा

कनल जम्स टॉड एक ऐस अग्रेज विद्वान एव इतिहासकार कहे जा सकत हैं जिनके लखन को कवल इतिहास विषय की सीमाओं तक ही परिसीमित नही रखा जा सकता। व समाजशास्त्रियो क लिय भी उतन ही उपयोगी सिद्ध होते हैं जितने कि इतिहासकारो के लिय। इस लख म उनके समाजशास्त्रीय योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला जा रहा है।

कनल टाड की दोनो प्रमुख रचनाओ का हिन्दी अनुवाद किया जा चुका है और इस लेख के सन्दभ के लिये इन्ही अनुवादित पुस्तकों [1] को आधार माना गया है।

टॉड का समाज शास्त्रीय योगदान

हम दो आधारो पर किसी भी विद्वान के योगदान का मूल्याकन समाजशास्त्रीय दष्टि स कर सकते हैं-पहला पद्धतिशास्त्रीय एव दूसरा सद्धातिक। टाड की रचनाओं का मूल्याकन भी इन दोनो आधारों पर किया जाना समीचीन होगा।

---

1 (i) टाड लिखित राजस्थान का इतिहास एनाल्स एण्ड एन्टिक्विटीज आफ राजस्थान का हिन्दी अनुवाद-अनुवादक केशव कुमार ठाकुर तथा भूमिका लेखक ईश्वरीप्रसाद, इलाहाबाद आदश हिन्दी पुस्तकालय 1965

(ii) पश्चिमी भारत की यात्रा ल कनल जम्स टाड रचित ट्रवल्स इन वेस्टन इण्डिया का हिन्दी अनुवाद अनुवादक एव सम्पादक गोपाल नारायण बहुरा (राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर 1965) प्रस्तावना लखक रघुवीरसिंह

पद्धतिशास्त्रीय योगदान

वैज्ञानिक विधि पर आधारित अनुसंधान में सर्वाधिक महत्व पद्धति का है आनुभविक पद्धति से तथ्यों का आकलन एवं संग्रह किया जाता है तथा उन्हीं पर आधारित विश्लेषण। फिर विश्लेषण के आधार पर सिद्धांत निर्माण किया जाता है। अत: दोनों आधार एक दूसरे के पूरक हैं। यद्यपि टॉड के द्वारा जिस पद्धति को प्रयुक्त किया गया वह केवल एक ही प्रकार की नहीं है। फिर भी तुलनात्मक पद्धति को उन्होंने अधिकांश रूप में अपनाया है। उनके द्वारा संकलित तथ्यों के स्रोत द्वितीयक एवं प्राथमिक दोनों हैं। प्राथमिक स्रोतों में उन्होंने स्वयं पुराने सिक्के, शिलालेख, ताम्रपत्र एवं अन्य प्रामाणिक ऐतिहासिक सामग्री को एकत्रित किया तथा उसको श्रेणीबद्ध करके अपनी ओर से विश्लेषण दिया है। इस कार्य में उन्हें एक ऐसे भारतीय मनीषी की आवश्यकता थी जो संस्कृत एवं प्राकृत तथा स्थानीय प्राचीन लिपियों का ज्ञाता हो। उन्होंने एक जैन मुनि को गुरू मानकर उनसे सभी प्रामाणिक शिलालेखों एवं अन्य ग्रंथों से प्राप्त भाषा में आवश्यक जानकारी हासिल की। वे थे यति ज्ञानचन्द्र। मुनि ज्ञानचन्द्र के अलावा एक ब्राह्मण पंडित से भी इसी प्रकार की सहायता ली थी किंतु ब्राह्मण पण्डित अधिक पढ़ा हुआ नहीं था। सामग्री संकलन की यह विधि वस्तुनिष्ठता को बताती है तथा लेखक एवं अनुसंधानकर्ता के लिये उपयोगी सिद्ध होती है। समाजशास्त्र में उन नवीन अध्ययनों के लिये यह पद्धति अनुकरणीय साबित होगी जिनमें ऐतिहासिक तथ्यों का सहारा लिया जाता है। विशेष रूप से भारतीय सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन की दिशाओं, आन्दोलनों एवं जमींदारी जागीरदारी व्यवस्था के अंतर्गत भारत में कालान्तर में होने वाले परिवर्तनों को समझने के लिये इसी विधि का सहारा लिया जाना चाहिये। जो भी तथ्य संकलित इस प्रकार से कर लिये जाते हैं उनका संक्षिप्त वर्णन करने के बजाय विविध सामाजिक व्यवस्थाओं के तत्कालीन तथ्यों से तुलना करके विश्लेषण प्रस्तुत किया जाय तो उसकी शैक्षिक महत्ता अधिक प्रमाणित होती है।[2]

टॉड ने अपने एनाल्स में सर्वप्रथम राजस्थान की जागीरदारी प्रथा का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। यूरोपीय देशों और विशेषकर इंगलैंड में पाई जाने वाली जागीरदारी व्यवस्था से राजस्थान की जागीरदारी

---

2 रसिक नारायणसिंह चूण्डावत, टॉड का व्यक्तित्व एवं कृतित्व, हुकमसिंह भाटी द्वारा सम्पादित राजस्थान के इतिहासकार, उदयपुर, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, पृ 34

व्यवस्था की तुलना की है और यद्यपि बहुत अन्तर के अलावा दोनों व्यवस्थाओं में समानताएं अधिक बताई गई हैं। इसी तरह से राजपूत जाति की उत्पत्ति तथा इसकी विविध उप शाखाओं वंश-धाराओं गोत्र-समूहों आदि का विवरण टाड ने प्रस्तुत किया है। राजस्थान की जागीरदारी व्यवस्था का विश्लेषण इस प्रकार किया गया है कि उसमें उन सभी परिवर्तनों एवं गतिशीलताओं की जानकारी मिलती है जो जागीरदारी व्यवस्था की निरंतरता एवं गत्यात्मकता का प्रकट करती है। जिन तथ्यों को वे वस्तुनिष्ठ तथा मूल आधारों पर प्राप्त नहीं कर सके किन्तु जिन्हें वे उचित समझ रहे थे उन्हें भाट चारणों की गाथाओं महाभारत एवं अन्य पौराणिक ग्रन्थों तथा लोक कथाओं व जनश्रुतियों का सहारा लेकर प्रकट किया।[3] यह पाठक पर छोड़ दिया है कि यदि इन आधारों की वस्तुनिष्ठ वैधता को नहीं मानते हैं तो वे जो चाहें सो अपने निष्कर्ष निकालें। टाड ने बखूबी से राजपूत जाति की उत्पत्ति उसकी निरंतरता एवं इसकी विभिन्न उप जातियों का इन्हीं आधारों पर विस्तार से स्पष्ट किया है समाजशास्त्र में अब तक हुए जाति व्यवस्था के अध्ययनों में टॉड को उद्धरित नहीं किया है। किन्तु मेरी मान्यता है कि यदि जाति विशेष की (राजपूत जाति जो राज्यों में प्रमुख सम्पन्न रही है) स्थिति एवं उसकी उत्पत्ति तथा व्यवस्था सम्बन्धी विश्लेषण देखना है तो टाड की पुस्तक के प्रथम भाग परिच्छेद[4] अधिक महत्वपूर्ण होंगे। इस भाग की सामग्री का आधार अधिकांश रूप में पौराणिक ग्रन्थों एवं चारणों की वंशावलियों को बनाया गया है। इसे इन्डोलोजीकल पद्धति के रूप में समाजशास्त्र में स्वीकारोक्ति प्राप्त है। राजस्थान में जागीर प्रथा की तुलनात्मक व्याख्या करते हुए टाड लिखते हैं राजस्थान की शासन व्यवस्था का आधार हजारों वर्षों से उसकी जमींदारी प्रथा थी और वह प्राचीनकाल से यूरोप की जागीरदारी प्रथा के समान थी। उसकी श्रेष्ठता वर्तमान समय तक कायम रही और बाहरी मराठा जातियों के लगातार अत्याचारों तक छिन्न भिन्न नहीं हो सकी। भारत का प्राचीन गौरव इस शासन व्यवस्था का ऐसा प्रमाण है जिससे कोई निष्पक्ष और बुद्धिमान इनकार नहीं कर सकता। टाड ने न केवल यूरोप की जागीरदारी प्रथा से राजस्थान की जागीरदारी प्रथा की तुलना की बल्कि भारत के अन्य क्षेत्रों में भी जो

---

3 टाड लिखित राजस्थान का इतिहास एनाल्स एण्ड एन्टिक्विटीज आफ राजस्थान का हिन्दी अनुवाद पूर्व उद्धरित पृष्ठ 79–127

4 देखिये वही पृष्ठ 37–78

जागीरदारी प्रथा प्रारम्भ से अब तक रही है उससे भी राजस्थान की जागीरदारी प्रथा से तुलना की है । राजस्थान के राजपूत वंशों का भारत के राजवंशों से भी श्रेष्ठ बताया गया है

टाड की तुलनात्मक पद्धति मात्र एकल रूप में प्रयुक्त नहीं की गई है । इसका सही उपयोग ऐतिहासिक पद्धति के साथ किया गया है । राजस्थान के विविध क्षेत्रों की सत्ता एवं शासन व्यवस्था का अलग अलग वर्णन प्रामाणिक तथ्यों के साथ किया है । मेवाड मारवाड जैसलमेर बीकानेर जयपुर कोटा बून्दी तथा मरूभूमि के एतिहासिक वर्णन में हम उन सभी घटनाओं की जानकारी मिलती है जो सदियों से इन भूतपूर्व राज्यों में सामाजिक निरन्तरता तथा परिवर्तनों (कभी तीव्र तो कभी धीमे) को स्पष्ट करते हैं । एतिहासिक वर्णन नीरस न हो जाय इसके लिये टाड ने स्थान–स्थान पर राजवंशों की उन वास्तविक घटनाओं का विस्तार से विवेचन भी किया जिनमें राजपरिवार के लोग अपने ही सदस्यों के प्रति विश्वासघात व षड्यन्त्र करते हैं और उनका मुकाबला भी किया जाता है । इस एतिहासिक विवेचन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हर राज्य के बारे में उसकी स्थापना एवं प्रारम्भिक अवस्थाओं से लेकर 1818 ई की तत्कालीन राजनैतिक व्यवस्था तक राजघराना एवं शासन व्यवस्था के बारे में सूचना दी गई है। अत विश्लेषण का काल विस्तार अधिक है तथा केवल तिथियों एवं घटनाओं को ही न देकर उनसे सम्बन्धित परिस्थितियों का भी विश्लेषण है । अत टॉड की एतिहासिक पद्धति समाजशास्त्रियों के लिये राजस्थान की प्राचीन एवं आधुनिक (सन् 1818 के पूर्व तक) संस्कृति एवं सभ्यता के शासक वर्ग में विद्यमान सभी लक्षणों के अध्ययन हेतु बहुत उपयोगी सिद्ध होगी । विविध जातियों एवं धार्मिक व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था आदि के बारे में भी वास्तविक जानकारी इस पद्धति से राजस्थान के समाज के बारे में मिलती है।

यात्रा विवरण के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न पक्षों पर विवेचन भी टॉड ने अपनी पुस्तक पश्चिमी भारत की यात्रा में किया है । यह विधि समाजशास्त्र में अधिक प्रचलन में नहीं है किन्तु टॉड ने आनुभविक आधार पर जो तथ्य लोगों से संकलित किये उन्हें तोथिवार इस प्रकार प्रस्तुत किया कि सम्पूर्ण प्रस्तुतीकरण में उन्होंने कई सामाजिक संस्थाओं प्रक्रियाओं एवं समूहों के गतिशील पहलुओं पर एक समाजवैज्ञानिक की दृष्टि से प्रकाश डाला है । विशेष रूप में धार्मिक संस्थाओं, सामाजिक संरचनाओं परम्पराओं का जैसा टॉड ने अपनी आंखों से देखा अथवा प्राचीन लेखागारों

तथा जनश्रुतियों से जैसा भी टॉड को मालुम हुग्रा उसका वर्णन सजीव ढग से किया गया है । कई प्रसगो म टाड ने वशावलिया एवं मनुस्मृति जैसे प्रामाणिक ग्रथो का सहारा लेकर सामाजिक परम्पराग्रो एवं जाति स्तर ठनों क महत्व को स्पष्ट किया है । कनल टाड की यात्रा करीब सात माह म उदयपुर स प्रारम्भ होकर बम्बई म समाप्त हुई जो जून 1 1822 का प्रारभ हुई थी ग्रौर जनवरी 1823 म सम्पूर्ण हुई तथा उसके बाद हमेशा के लिय वे इगलण्ड चले गय । यात्रा का विवरण व ग्रपन जीवन काल म प्रकाशित नही करा सके । वतमान स लगभग एक-सौ साठ वष पहले के राजस्थान म जिस प्रकार की सामाजिक परम्पराएँ रीतिरिवाज एक विदेशी प्रशासक की निगाह मे किस प्रकार विशष स्थान बना लेते हैं उसी का वस्तुनिष्ठ वणन टाड ने किया है ।

टॉड का सैद्धान्तिक योगदान मुख्य रूप स निम्न विषयो में सम्बन्धित सामग्री टाड की दोनो पुस्तका म मिलती है जिनका समाजशास्त्रीय महत्व ग्रधिक है –

1 जागीरदारी व्यवस्था
2 राजपूत जाति की उत्पत्ति तथा उसकी विविध शाखाए तथा ग्रन्य जातिया का वणन
3 सघष की प्रक्रिया के तथ्य–कारणो एवं परिणामो क ग्राधार पर युद्धों का वणन
4 शासन एवं सत्ता की स्थिरता एवं ग्रस्थिरता के ग्रायाम–काल की गहराई के ग्रन्तर्गत वास्तविक घटनाग्रों का वणन
5 द्वद्व-समूहो क कारण एव परिणाम
6 विवाह सस्था–ग्रनुलोम तथा ग्रन्तधार्मिक
7 राजस्थान की जनजातियों का सामन्तो क साथ परम्परागत सम्बन्ध
8 *नगरीय एवं धार्मिक तथ्यो का वणन*

उपयुक्त सभी विषयो का समाजशास्त्रीय महत्व है ग्रत टाड ग्रब केवल इतिहासकार ही नही बल्कि ऐसा समाजशास्त्री माना जा सकता है जिसने विषय की स्थापना तथा उसके ग्रमूल सिद्धातो का तो निर्माण नही किया किन्तु समाज विषयक वह तथ्य मूलक सामग्री ग्रवश्य प्रदान की जो समाजशास्त्रीय सिद्धान्त निर्माण म ग्रनिवार्यश्यक समझी जा सकती है यद्यपि नवीन तथ्यो क ग्राधार पर कनल टाड द्वारा दिय गय सामान्य कथन या सद्धान्तिक व्याख्याएं निरर्थक हो जाती है किन्तु विज्ञान के ग्रन्तगत उन निरर्थक

सिद्धान्तों का महत्त्व कभी भी कम नहीं होता जिनको बर्गेलन नय तथ्य सक नित करते उन्हें निरस्त किया गया। विशेष रूप से टॉड द्वारा जागीरदारी व्यवस्था में राजस्थान तथा यूरोप की सामन्ती व्यवस्था की समरूपताओं को अधिक उभारा गया जबकि दोनों में भिन्नताएं अब अधिक दिखाई देती हैं। यहां हम उक्त लिखित सभी बिन्दुओं को तो नहीं ले सकते किन्तु कतिपय पर प्रकाश डालना उचित होगा।

जागीरदारी व्यवस्था

यद्यपि टॉड के विश्लेषण का संदर्भ राजस्थान की भूमि पर सदियों से विद्यमान जागीरदारी व्यवस्था के विविध प्रतिमानों से है फिर भी उन्होंने सामन्ती सत्ता के कुछ सामान्य आधार स्पष्ट किये हैं। उनके अनुसार राजस्थान की जागीरदारी व्यवस्था का मूल स्रोत भारत भूखण्ड के उत्तरी भागों में विद्यमान सामन्ती व्यवस्था है। यहां राजस्थान में सातवीं शताब्दी में ही सामन्तशाही व्यवस्था के उभरने के स्पष्ट तथ्य मिलते हैं। विशुद्ध राजपूत वंश के लोगों में से ही सत्ता का प्रमुख या उसका सामन्त बनता आया है। राज्य सत्ता को राजपूत वंश की श्रेष्ठता से जोड़ कर देखा गया है। पैतृकता के सतत अधिकार ने भूमि पर राजपूत वंश के लोगों को ही अपना उत्तराधिकार बनाने का चिरस्थाई नियम प्रदान किया है। इसके अन्तर्गत परिवार में पिता की मृत्यु के बाद उसके सबसे बड़े लड़के का ही सम्पूर्ण भूमि पर अधिकार मिल जाता है। राजपूत जाति के लोगों ने अपने वंशों परिवारों की श्रेष्ठता के इस अधिकार के लिये बाहरी आक्रमणकारियों से युद्ध करके स्थानीय निवासियों की रक्षा की है तथा उन्हें अपने धर्म को बचाने के लिये अपनी सेवाएं भी दी हैं। इसके बदले में उन्हें भूमि पर सम्पूर्ण एकाधिकार मिला। कई सामन्तों का एक क्षेत्र या उनकी सांस्कृतिक पहचान होती है तथा उनका एक मुखिया होता है जो उनमें समायोजन स्थापित करके एक राजसत्ता का निर्धारण करता है। राजस्थान में महाराणा/राणा/राजा/महाराजा राव/महाराव/रावत आदि नाम से सामन्तों के प्रमुख पहचाने जाते थे। मेवाड़ राज्य में राणा या महाराणा का पद प्रमुख के लिये था तथा शासन का वास्तविक प्रमुख शिव या एकलिंगनाथ देवता को माना गया है। मेवाड़ का सामन्तवादी व्यवस्था सभी जागीरदारी परम्पराओं में सचालित थी जिनमें श्रेष्ठता के आधार ऊंची श्रेणी फिर उनसे नीची श्रेणी तथा उनसे भी नीची श्रेणी के जागीरदार होते थे। इन सभी के अलग—अलग अधिकार निर्धारित थे। निम्नलिखित चार श्रेणी के सामन्त मेवाड़ में सदियों से विद्यमान रहे हैं —

(घ) प्रथम श्रेणी— सोलह उमराव (सामन्त) इन्हीं में से महाराणा के मन्त्री मण्डल में सम्मिलित होते थे। इनकी वार्षिक आमद पचास हजार से एक लाख रुपये तक की होती थी। ये सत्ता के प्रमुख हिस्सेदार थे।

(ब) द्वितीय श्रेणी— बत्तीसा सामन्त जिन जागीरदारों की आमद पांच हजार से पच्चास हजार रुपये वार्षिक। इनकी नियमित उपस्थिति महाराणा की सेवा में रहती। इनके पास एक लघु सैनिक टुकड़ी भी रहती थी।

(स) ततीय श्रेणी— गोल के सरदार ये महाराणा पर निर्भर रहते थे। राज्य की विविध सेवाओं में इनको लगाया जाता था। राणा की निजी सुरक्षा में इन्हीं सरदारों में से होते। सामन्तों विद्रोह के समय राणा द्वारा इनका सामन्तों के विद्रोह का स्थान में उपयोग लिया जाता।

(द) चौथी श्रेणी— राणा के परिवार के अन्य राजकुमारों की जो राणा नहीं बनकर छुट भया रह जाने में मात्र एक जागीर के हकदार ही रहते हैं।

उपयुक्त चारों स्तरों पर सत्ता के अधिकार सर्वाधिक से कम की अवस्था में प्राप्त होते हैं जो राजपूतों को ही प्राय मिलते रहे हैं। टाड ने यह देखा है कि राजपूतों के इस विशेषाधिकार का स्थान परम्परागत है जिसे प्रमुख समाजशास्त्री मेक्स वेबर ने परम्परागत प्राधिकारी व्यवस्था के लिये एक मात्र आधार बताया है। टॉड के अनुसार राजपूतों की तीन ही विशेषताएं प्रमुख बताई गई हैं—

(1) हथियार—तलवार ढाल भाले आदि
(2) घोड़ा —घुड़सवारी के लिये
(3) शिकार —अपने आप को शारीरिक शक्ति में समर्थ रखने के लिये

मारवाड़ में सामन्तों के स्तरीकरण की दो स्तरीय व्यवस्था थी। प्रथम श्रेणी के उच्च स्तरीय सामन्त तथा द्वितीय श्रेणी के सामन्त। इसी स्तरीकृत रूप में अन्य रियासतों की सामन्ती व्यवस्था भी राजस्थान में विद्यमान रही। राजपूत सामन्तवादी व्यवस्था को यूरोपीय सामन्ती शासन व्यवस्था के साथ समरूपता को कई विद्वानों ने अस्वीकार किया है। *
डा वृन्दावन ने इस सन्दर्भ में लिखा है -

राजपूत सामन्तवाद मूल रूप म एक विशिष्ट प्रकार की सघीय राष्ट्रीय एव प्रजातान्त्रिक सस्था है " राजस्थान म भूमि और उसकी मिट्टी पर उपज के आधार पर राजस्व के अतिरिक्त राजा का कोई अधिकार नही था। युरोपीय सामन्त प्रणाली म मुख्य सिद्धात यह है कि राजा ही राज्य का सावभौम स्वामी और मूल स्वत्वाधिकारी होता है और समस्त अधिकार उसी म निहित हात थ तथा उसी स प्राप्त किय जा सकत थ। फिर युरोपीय सामन्त प्रणाली म कृषक अथवा दास कोई सम्पत्ति प्राप्त नही कर सकता था और यदि वह कोई सम्पत्ति या भूमि खरीद भी लेता था ता वह स्वामी उसम घुसकर स्वच्छा स उसका उपयोग कर सकता था। जबकि राजस्थान म रयत अथवा किसान ही भूमि का असली मालिक हाता था।"[5]

वास्तव म दखा जाय ता टाड क द्वारा किया गया सामन्ती शासन व्यवस्था का राजस्थान के सदभ म तुलनात्मक विश्लेषण एक नीव का पत्थर है और उसके बाद अन्य विद्वाना ने अपने-अपने मत प्रस्तुत करके इस विषय पर विस्तार स प्रकाश डाला है। एव विशेषा राजनयिक की दृष्टि समाज वनानिक की तरह से ऐसी सामाजिक व्यवस्था पर केन्द्रित हुई थी जिस पर उसक पहले वनानिक विधि से विश्लेषण उपलब्ध नही थ। यही उनका सबस बडा योगदान है।

टॉड न सद्धातिक तौर पर सामतशाही व्यवस्था म निम्न लिखित प्रथाओ का वणन दिया है जो इस व्यवस्था का बनाये रखने म अपना योगदान दती है—नजराना जागीर का पीढी दर पीढी हस्तांतरित होना पुत्रहीन सामत क मरने पर जागीर का राज्य म विलय अथवा विधि सम्मत तरीक स गाद लिय पुत्र को जागीर मिलना धन की सहयाता नाबालिग सामत की रक्षा, तथा विवाह की विशष रस्म। जागीरदारी में भूमि पर जागीरदार का सब सम्मत अधिकार होता था। मवाड म यह अधिकार दा प्रकार बताया गया ह—(1) ग्राम्य टाकुर—अस्थाई अधिकार तथा (2) भूमिया स्थाई अधिकार सम्पूर्ण सामतशाही व्यवस्था म सभी श्रेणिया क सामतों का टॉड ने तीन वर्गों म विभाजित किया ह।

(1) *मियादी सामन्त—निश्चित अवधि तक भूमि पर अधिकार*
(2) चिर स्थाई सामन्त
(3) वशगत सामन्त

सामन्ती व्यवस्था क अन्तगत जागीरदारी अधिकारा क आधार पर

---

5 राजस्थान के इतिहासकार पृ 49 प्रताप शोध प्रतिष्ठान

समाज मे राजपूत वंशो के कतिपय प्रमुख परिवारों को जो सर्वाधिक अधिकार प्राप्त थे और जिन्हें पतकता के आधार पर सत्ता के सभी अधिकार वंशियन में मिल गये थे उनम धीरे धीरे गिरावट आई । टाड की मान्यता एक सद्धान्तिक सामान्य कथन के रूप म भी इस प्रकार से उभर कर आई कि जिस पत्रकृता के अधिकार से सत्ता का निर्धारण हुआ उसी के कारण कालान्तर म अधिकारों की गिरावट भी आने लगी । एक प्रमुख सामन्ती मुखिया के पीढ़ी दर समयान्तर के साथ-साथ भूमि एवं सम्पत्ति का, लेकर भाईयों म लगातार बटवारे स उनकी सत्ता एवं स्तर म गिरावट आती रही और इसी कारण राजपूत रियासतों की सर्वशक्ति कमजोर पडती गई और बाहरी शक्ति को आक्रमण करके उन्हे दबा देने का अवसर मिला । टाड लिखते है —

अपनी खोज म हम इस निष्कष पर पहुंचे है कि जागीरों के विभाजन एवं लडकियों के विवाह म दहेज की प्रथा के कारण राजपूतो म शिशु हत्या की सष्टि हुई है । [6]

राजपूत जाति को कनल टाड ने अपनी भाषा भाषा म ट्राइब कहा है । किन्तु वे इस एक जनजाति के अर्थ म नहीं मानते थ । वे राजपूतो का एक ऐसी वीर-योद्धाओं वाला जाति समुदाय मानते थे जिसकी उत्पत्ति उन्होंने सिथियनों अर्थात् शको स मानी है । राजपूत जाति की उत्पत्ति के बारे म महाभारत तथा अन्य पौराणिक आधारों मनुस्मृति आदि का भी सहारा लिया गया । प्राचीन काल से मध्ययुगीन काल तक राजपूत जाति के लोगों को क्षत्रिय के नाम स सम्बोधित किया जाता था जिनके वंशो म मुख्य रूप म सूर्य वंश चन्द्रवंश तथा ब्रह्मवंश के नाम आते है । टाड ने तुलनात्मक पद्धति का सहारा लेते हुए लिखा है —

मैंने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि राजस्थान एवं प्राचीन यूरोप की वीर जातियां एक ही वंश वक्ष की शाखाए है भारतवर्ष म जो सामन्ती व्यवस्था प्रचलित है ठीक उसी प्रकार की सामन्ती व्यवस्था प्राचीन काल म यूरोप मे फली हुई थी जिसके अवशेष आज हमारे देश के शासन नियमो म विद्यमान है । हम पूर्व और पश्चिम के लोगो की उत्पत्ति एक ही वंश स होने के सम्बन्ध म अत्यन्त सशयवादी हो गये हैं । फिर भी

---

6 राजस्थान का इतिहास पृ 112

अपने प्रमाण विश्व के निष्पक्ष निर्णय के लिये प्रस्तुत करता। समानुसार जो यद्यपि इन प्रश्नों का निर्णय नहीं कर सकती इतनी महत्वपूर्ण है कि उनका अध्ययन और शोध आवश्यक है। इस प्रकार का परिश्रम निष्फल नहीं जायगा।[7]

परिच्छेद प्रथम से लेकर परिच्छेद सात तक राजपूत जातियों का विस्तार से विवेचन किया गया है। यह भाग यद्यपि जिन तथ्यों पर आधारित है वे एतिहासिक दृष्टि से प्रामाणिक नहीं माने जाते फिर भी जो मान्यताएं समाज में प्रचलित है तथा जिन धर्म ग्रंथों कथाओं पुराणों श्रुतियों स्मृतियों को भारत की जनता में आज भी वचनों एवं श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है उनको आधार मानकर एक बौद्धिक विश्लेषण करना अप्रासंगिक नहीं है। एक विदेशी विद्वान द्वारा इतना सरस तथा तुलनात्मक विवेचन राजस्थान के राजवंशों या राजपूतों के बारे में और कहीं उपलब्ध नहीं है। समाजशास्त्र में गौत्र एवं वंश को महत्वपूर्ण सामाजिक इकाई माना जाता है। महाभारत एवं रामायण की चिर प्रतिष्ठित कथाओं के आधार से राजस्थान के राजवंशों को जोड़कर उनके प्रारम्भ के सूर्यवंश तथा चन्द्रवंश तथा बाद में विकसित छत्तीस राजवंशों का विवेचन है। फिर हर वंश की विविध शाखाओं का भी वर्णन किया गया है। राजपूतों में प्रमुख गहलोत राठौड़ परमार सोलंकी आदि की विविध शाखाओं की प्रस्तुति भी टॉड ने की है। कुछ अन्य ऐसी जातियों का वर्णन भी टॉड ने किया है जो राजवंशों की राजपूत जातियों के साथ साथ समय के अन्तराल में वर्णित की गई जिनमें प्रमुख हैं—हूण जाला काठी जेठवा कटटा गोहिल सरिमरय सिलार गौड डाभी बडगूजर साहिया दाहिमा जपला मे रहने वाली जातियां तथा व्यवसायिक जातियां शामिल है। इनके मात्र नाम अथवा कुछ पहचान ही बतायी गई है।

समाजशास्त्र में सामाजिक प्रक्रियाओं का भी सद्धान्तिक विश्लेषण किया जाता है मुख्य रूप से हर समाज में दो प्रकार की प्रक्रिया होती हैं—विघटनात्मक एवं सगठनात्मक। विघटनात्मक प्रक्रियाओं में सभी प्रकार के संघर्ष विरोध तनाव आदि सम्मिलित हैं जबकि सगठनात्मक प्रक्रियाओं में सहयोग समायोजन व्यवस्थापन एकीकरण आदि है। टॉड की दोनों पुस्तकों में ऐतिहासिक सन्दर्भ के उन सभी घटनाओं एवं परिस्थितियों का वर्णन मिलता

7 टाड कृत राजस्थान भाग 1 खण्ड 1 जयपुर नगर प्रकाशन 1963 पृ 12

है जो वास्तविक रूप में राजस्थान की धरती पर सदियों पुराने समाज एवं संस्कृति की निरन्तरता में परिलक्षित हुई है। टॉड के विवरण में घटनाएं मीर रूप में समाज के शासक वर्ग एवं सामन्ती व्यवस्था के अन्तर्गत राजसत्ता तथा उसके प्रमुख दावेदारों में होने वाली लड़ाईयों उनके कारणों तथा परिणामों पर ही तथ्य दिये गये हैं। राजस्थान के सभी प्रमुख राजघराने मेवाड़ मारवाड़, जयपुर बीकानेर कोटा आदि सदियों से बाहरी आक्रमणों के शिकार रहे हैं। विशेष रूप से मुगल शासकों द्वारा समय समय पर राजस्थान के राजपूत राजाओं पर न केवल आक्रमण हुए हैं बल्कि उन्हें कई षडयन्त्रों का शिकार होना पड़ा। राजपूत राजाओं के राज्यों में आन्तरिक संघर्ष जो विविध सामन्तों या राजपूत [illegible] की प्रभुता को लेकर हुए उनको भी टाड ने तथ्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया। सभी घटनाओं को जानने के बाद एक निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जितने भी युद्ध और लड़ाईयां हुई हैं उनके पीछे सत्ता एवं शासन की वैधता एवं औचित्य का प्रश्न रहा है। सामन्ती शासन में परम्परा तथा परिपाटियों को सत्ताधिकारों की वैधता का आधार माना जाता है किन्तु इस आन्तरिक एवं बाह्य दोनों स्रोतों से चुनौती मिलने पर युद्ध एवं लड़ाईयाँ हुई तथा जिन्होंने युद्धों में जीत हासिल की और अपना वैध अधिकार स्थापित किया उन्हें फिर चुनौतियां मिलीं और इस प्रकार से यह क्रम निरन्तर चलता रहा। टाड ने अपने उपसंहार में अंग्रेजों की विशिष्ठ भूमिकाओं का जिक्र किया। अंग्रेज कम्पनी सरकार अधिकांश रूप से विविध प्रकार के संघर्षों को निपटाने में अपनी प्रभावी भूमिका कमजोर पक्ष को अपना समर्थन देकर उसे जीताकर निभाती रही है। जहां जहां कम्पनी सरकार अपना सीधा शासन *सम्भाल हुए थी वहां वहां की कानूनी व्यवस्था भारतीय जनता के हितों की* रक्षा सही मायने में नहीं कर रही थी। यह तथ्य कैनल टाड ने तब उजागर किया जब वे अपनी नौकरी से इस्तीफा देकर स्वदेश लौट रहे थे और जिसे उनकी पुस्तक पश्चिमी भारत की यात्रा में उनकी मृत्यु के बाद लोगों ने देखा। उनके शब्दों में—

ब्रिटेन के सरंक्षण में जो विभिन्न जातियां आ गई उनको सजा देते समय दया का व्यवहार बहुत कम किया जाता है न्याय का डंडा किसी न *किसी को अवश्य मार गिराता है जिससे हमारा शासन तलवार का शासन* कहा जाता है। हमारी सरकार द्वारा राजस्व तथा अन्य सम्बन्धी जो कानून बनाये जाते हैं वे प्रजाजनों की दशा सुधारने के दृष्टिकोण से नहीं वरन् हमारे (कम्पनी सरकार) पेट को भरने के लिये बनाये जाते हैं। "

76· इतिहासकार जेम्स टाड । । म न

भारतीय प्रजाजनों की गाढ़ी कमाई म लाखो रुपए गुनाह प्राप्त करक उनका कौनसा भाग उनकी भलाई के लिय खच किया जाता ह ।

इन उक्त लिखित परिस्थितियो से टाड का विश्वास था कि राजस्थान के राजपूतो को एक दिन अपना खोया हुआ गौरव पुन प्राप्त होगा। ऐतिहासिक घटनाओ का एसा सजीव वणन जिसम स्थान-स्थान पर अपने सद्धांतिक निष्कष राजस्थान के शासक वग और उसस जुडे समाज के बार म कही और उपलब्ध नही है ।

राजस्थान के विविध राज्यो का ऐतिहासिक लखा-जोखा प्रस्तुत करने म टाड न जो विद्वत्ता दिखाई है वह सराहनीय है । किस प्रकार से किसी राज्य म-चाहे वह जयपुर हो या मवाड अथवा बूदी-राजा की मृ यु क बाद उसके उत्तराधिकारी क रूप म नाबालिग या गोद लिय पुत्र का सत्ता बाद म किस प्रकार प्राप्त होती है तथा वफादार सामत एव विद्रोही सामतो म किस प्रकार सघष होता है इसका सही-सही विवरण टाड न प्रस्तुत किया है । राजपूतो क आतरिक कलह को भी घटनावार प्रस्तुत किया है । मवाड म शक्तावतो एव चूडावतों के बीच अपन-अपन अधिकारो को लेकर तनाव एव सघष चलता रहा ।

सपूण सामतशाही व्यवस्था की कमीयो पर भी टाड न प्रकाश डाला है । यह भी उनकी सद्धांतिक दष्टि ही थी । टाड के अनुसार मुख्य कमिया सामतशाही की निम्न लिखित थी —

(i) एक व्यक्ति — सामन्त या प्रमुख सामत (सामतो का मुखिया) — की स्वच्छाचारिता एव उसम शक्ति एव अधिकार के केन्द्रीकरण स सपूण समाज प्रभावित शक्ति का दुरुपयोग अधिक होन की सभावना तथा समाज क सभी लोगो को उसके परिणामो को भुगतना होता है ।

(ii) सामतो म परस्पर होड एव शक्ति प्रदशन म प्रमुख सामन्त का केन्द्रीय शक्ति कमजोर होती है तथा शासन प्रणाली द्वारा नियन्त्रण-कानून एव व्यवस्था बनाय रखन — म कमजोरी आती है । अपराध एव अस्थिरता बढ़ती है ।

---

8 पश्चिमी भारत की यात्रा प 64-67

जागीरदारों या सामंतों की आंतरिक संगठनात्मक व्यवस्था में भी समय-समय निजी स्वार्थों से गुटबन्दी विकसित होती रही। कभी कोई विजय वश या शौर्य के सामंत ने अपना एक अलग गुट बना कर उसी को सारी शक्ति जुटाई तथा उस गुट को स्वतः विरोध दूसरे समूहों से हुआ और इस प्रकार राजपूतों को द्वन्द्व-समूहों ने सम्पूर्ण रियासत या राज्य को अन्दर इतना कमजोर बनाया कि किसी बाहरी आक्रमण की दशा में वह संगठित होकर युद्ध करने की स्थिति में न रहा। फलतः युद्ध में पराजय मिली। कभी जीत तो कभी पराजय जहां के आंतरिक द्वन्द्व समूह अधिक तनाव से पाय और अन्य साधन अधिक रहे तो वह रियासत उस अवस्था में जीत जाती।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही राजस्थान की रियासतों पर अंग्रेजों की जोरदार नजर थी। 1806 में कंपनी सरकार का दूत मेवाड़ भेजा गया था तथा मराठों द्वारा मेवाड़ की लूट-पाट के प्रति सहानुभूति दर्शाई गई। सन 1817 में अंग्रेज एवं मेवाड़ के बीच संधि हुई। इसी प्रकार से जयपुर राजा तथा अंग्रेजों की कंपनी सरकार के बीच संधि 1803 में हुई थी। फिर 1818 में दुबारा संधि हुई। 1817 में मारवाड़ तथा ईस्ट इंडिया कम्पनी के बीच संधि हुई। 1818 में राजस्थान अन्य राज्यों के साथ भी कम्पनी सरकार की संधि तय हुई थी। सभी संधियों में अंग्रेज कम्पनी सरकार की बिना इजाजत के कोई रियासत किसी भी अन्य राज-शक्ति के साथ युद्ध की घोषणा नहीं कर सकती था। एक निर्धारित रकम ईस्ट इण्डिया कम्पनी को देना तय हुआ था। राजनैतिक एजेंट की निगरानी में नजर रियासत के प्रमुख महत्वपूर्ण काम सम्पन्न होने लगे। इस प्रकार से राजस्थान में जागीरदारी एवं सामंतशाही शक्ति में कमजोरी बढ़ी।

टॉड ने हिन्दुओं एवं मुसलमानों के दोनों समुदायों की अलग-अलग सामाजिक वास्तविकता बनाते हुए एक शक्तिशाली मुगल शासन व्यवस्था के द्वारा राजपूतों के अलग-अलग राज्यों एवं सामंतों को युद्ध या संघर्ष में हरा कर उनसे संधि करके तथा उनमें एक तरह वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करके (जिसमें राजपूत कन्याओं से मुगल सम्राटों ने विवाह किए मुस्लिम कन्याओं से राजपूत राजाओं ने विवाह नहीं किए) उन्हें अपने अधीन किया। उनको समय-समय सैन्य शक्ति का संचालक भी बनाया। राजपूतों को आपस में युद्ध करने के लिये प्रेरित किया। इस सम्पूर्ण वर्णन से हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धों में नए सिरे से शुरूआत हुई। अंग्रेजों ने इस नीति का अनुसरण कर और भी लाभ उठाया तथा हिन्दुओं और मुसलमानों को राष्ट्रीय परिवेश में बहुसंख्यक एवं अल्पसंख्यक की श्रेणियों में विभाजित किया तथा अपने अपने

अधिकारों के प्रति उदासीन किया। कई मुगल शासकों को टाड ने पक्षपातकारी चालाक एवं वंश का नाश करने वाला कहा है। दूसरी ओर कई राजपूत राजाओं को वीर नीडर एवं कुशल शासक बताया है।

विवाह संस्था के बारे में टाड ने कई रुचिकर तथ्य प्रस्तुत किये है। कुछ तथ्य उनके अनाल्स ग्रन्थ में दिये गये हैं जिनमें राजपूत कन्याओं का विवाह मुसलमान शासकों के साथ सम्पन्न हुआ है। विवाह का प्रकार बहुपत्नी भी रहा है विशेष रूप से उन लोगों में जो सामन्ती वर्ग के थे। बहिर्विवाह के नियमों का पालन विशेष रूप से किया जाता रहे जिसमें कई राजपूत घराने अपनी कन्याओं का गोत्र या वंश के बाहर ही विवाह कराते है। किन्तु एक सामन्त के एक से अधिक पत्नियां रखने की प्रथा विद्यमान थी तथा उनमें से सामन्त की इच्छानुसार किसी पत्नी को महारानी या पटरानी बना देता था। इसके साथ ही अवैध यौन सम्बन्धों को सामाजिक मान्यता प्रदान करने के लिये राजपूतों में रखैल रखने की प्रथा भी विद्यमान बताई गई है। रखैल वह स्त्री कहलाता है जिसे विधि-वत विवाह करके नहीं लाया जाता है किन्तु जो सामन्त या राजा के साथ यौन सम्बन्धों को बनाये रखती है।

प्राचीन राजपूत वंशों में सगोत्र बहिर्विवाह पर बहुत अधिक प्रतिबन्ध नहीं बताया गया है। ऐसा विवरण टाड ने अपनी पश्चिमी भारत की यात्रा पुस्तक में दिया है। फिर भी टॉड यह स्वीकार करते हैं कि वर्त-मान में राजपूतों में अपने ही कुल या गोत्र तथा वंश में विवाह करना पूर्णतः वर्जित है।[9] विवाह सम्पन्न कराते समय यह अवश्य देखा जाता है कि दोनों परिवार उच्च कुलीन वंश के हैं। किन्तु विवाह के समय कन्या पक्ष को और से अधिक दहेज देना पड़ता था। सामन्त या राजा की हैसियत से अधिक दहेज के कारण कई घटनाएं कन्या वध की सामन्तों में हुई हैं। सामन्त के घर लड़की का जन्म होना एक अभिशाप बन गया था। इस एक अपराध की सजा भी टॉड ने दी तथा लिखा है कि बड़े दहेज का कारण तो लड़की का विवाह बना है। युद्ध समाप्ति की एक शर्त यह भी होती थी कि जीतने वाला राजा या सामन्त को हारने वाले की कन्या का विवाह अनचाहे अवस्था में भी कराना होता था। विवाह के उपलक्ष पर धन का अपव्यय होता था।

---

9 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 469

टॉड द्वारा लिखित पश्चिमी भारत की यात्रा में उन्होंने स्वीकार किया कि जनजातियाँ विशेष रूप से भीलों के साथ सामना के सम्बन्ध गहरे थे। भीलों को सैनिक शक्ति के रूप में सामन्तों में अपने साथ जाना था ॥ –

तीसरे अध्याय में भीलों के कर्म संस्कारों विश्वासों धार्मिक क्रियाएं आदि का वर्णन भीलों की सभ्यता के पथ पर एक कदम आगे बनाया है। अन्य पिछड़ी हुई है। आदिम जनजातियाँ तथा कई पुरापाय आदिवासी लोगों में भी वे श्रेष्ठ थे।[10] टाड ने आगे लिखा है कि– भारत की पिछड़ी जातियाँ भान कानी गोंड मीणा और मेर आदि के विषय में गहरी छानबीन करने से मानव के भौतिक इतिहास का बहुत सी महत्वपूर्ण कड़ियाँ मिल जाता है परिगणित जातियाँ में भी चेष्टा भाषा और अनुकरण एवं स्थान भेद के कारण उत्पन्न हुए स्वभाव विश्वास एवं रीति रिवाजों की बड़ी बड़ी भिन्नताएं देखने में आती है। नाटे चपटी नाक वाले तातारी मुखाकृति युक्त एस्कीमो तथा प्राचीन एवं महान मानिकन में और मराठे के भाल तथा सिरगूजर के वालों में कोई बड़ा अन्तर नहीं है और प्रवश्शीय समुद्र के किनारे रहने वाले लोगों तथा ममूरा की घुमन्तू जातियों में उतनी ही भिन्नता है जितनी कि हमारे वनों के आदिवासियों और पूरे घुमक्कड़ राजपूतों में।[11]

राजस्थान की प्राचीन नगरीय संस्कृति एवं धार्मिक रीति रिवाजों की स्पष्ट व्याख्या टाड ने अपनी यात्रा पुस्तक में की है। यद्यपि इन तथ्यों से टाड ने स्वयं कोई सैद्धांतिक निष्कर्ष नहीं प्रस्तुत किया बल्कि विविध स्थानों पर जो मन्दिर एवं अन्य दर्शनीय स्थान टाड ने देखे उनका ऐतिहासिक आधार खोजने का प्रयास किया है। जो समाजशास्त्री राजस्थान की नगरीय संस्कृति या पश्चिमी भारत की धार्मिक एवं सामाजिक व्यवस्था का ऐतिहासिक गहराई से देखना चाहते उनके लिए विभिन्न तथ्य उपयोगी हैं। अनहिलवाड़ा और सौराष्ट्र का इतना अधिक विस्तार से वर्णन टाड ने प्रस्तुत किया है कि किसी भी समाजशास्त्री के लिये वह उपयोगी सिद्ध हो सकता है यदि वह समाज की व्याख्या ऐतिहासिक तथ्यों की गहराई के साथ करना चाहता है।

---

10 पश्चिमी भारत की यात्रा 36

11 वही पृ 38

उपसंहार एवं सैद्धांतिक निष्कर्ष

टाड ने जो कुछ भी तथ्य प्रस्तुत किये वे सभी एक विदेशी विद्वान की हैसियत से संग्रहित किये गये थे। उनमें कई कमियां आ जाना स्वाभाविक था। उनको जो भी प्रामाणिक रूप में जानने के इच्छुक हैं वे जान सकते हैं तथा जिन बातों की प्रामाणिकता सन्देहास्पद है उनको अस्वीकार किया जा सकता है। किन्तु यह स्वीकारना पड़ेगा कि टॉड के अधिकांश स्थान पूर्ण प्रामाणिक एवं सत्यापित किये जा चुके हैं। उन्नीसवीं सदी के प्रथम चरण तक राजस्थान एवं इसके आस-पड़ौस के क्षेत्रों में राजनैतिक उथल पुथल तथा उसके सामाजिक परिणामों का विस्तृत विवरण कर टॉड ने समाज वैज्ञानिकों के समक्ष ऐसे मूल तथ्य प्रस्तुत किये हैं जो न केवल दुर्लभ थे बल्कि उनके बिना सामाजिक राजनैतिक परिवर्तनों की दिशा एवं प्रक्रिया के बारे में सिद्धांत निर्णय करना सम्भव नहीं था। टाड की पुस्तकों से न केवल राजस्थान के इतिहासकारों को नई प्रेरणा मिली बल्कि भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने वाले कई बुद्धिजीवियों को महाराणा प्रताप तथा अन्य राजपूत वीरों की स्वतन्त्रता की रक्षा की लड़ाईयों के वर्णन से मार्ग दर्शन एवं आदर्श प्राप्त हुए।[12]

अभिजन वर्ग तथा उनमें होने वाले परिवर्तनों के विषय पर कई समाजशास्त्रियों के सैद्धांतिक निरूपण उपलब्ध हैं जिनमें विलफ्रेडो परेटो का 'अभिजन चक्र' का सिद्धांत[13] अधिक मान्य है। टाड के राजस्थान के इतिहास में जितने भी ऐतिहासिक तथ्य प्रस्तुत हैं उनमें इस सिद्धान्त की पुष्टि करने की पूरी क्षमता है। परेटो का यह कथन कि 'इतिहास कुलीनतन्त्रों का कब्रिस्तान है' टाड की रचनाओं में पूरी तरह सत्य साबित होता है। सामन्ती शासन व्यवस्था में राजस्थान की राजनैतिक – सामाजिक संरचना किस प्रकार विभिन्न राजाओं एवं सामन्तों की निजी तथा सार्वजनिक नीतियों से प्रभावित हुई तथा भिन्न भिन्न परिस्थितियों में शासकों का उत्थान अथवा पतन हुआ इनका विस्तृत एवं तथ्यपूर्ण विवेचन से परेटो के अभिजन चक्र के सिद्धान्त की पुष्टि होती है तथा यह साबित होता है कि सतत रूप से चले आ रहे इस समाज की व्यवस्था में युद्धों के द्वारा नातियों एवं

12 राजस्थान के इतिहासकार पृ 60 61 प्रताप शोध प्रतिष्ठान

13 विल्फ्रेडो परेटो : ट्रीटाइज ऑन जनरल सोशियोलोजी अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशक डोवर प्रकाशन 1963

आदर्शों में सम्पन्न हुए हैं। यहा तक कि सत्ता की बागडोर भी विदेशी शक्ति के हाथ म चली गई। पहले यह विदेशी शक्ति मुगलों की थी और बाद म अग्रेजो की। समय-समय राजस्थान के राजाओं ने राजनैतिक शक्ति को पुन प्राप्त करने के असफल या सफल प्रयास भी किये किन्तु फिर यह शक्ति उनके प्रभाव से निकलती हुई दबी गई। टॉड का विश्लेषण आज से लगभग दो शताब्दी पूर्व की सामाजिक राजस्थान व्यवस्था के बारे म है किन्तु उसकी सार्थकता किसी भी प्रकार से कम नहीं हुई है क्योंकि हर समाज म सनातनता एवं परिवर्तन के दोनो पक्ष विद्यमान हैं। कतिपय सामाजिक मूल्य व्यवस्था तथा जाति एवं धर्म व्यवस्था के केन्द्रीय आधार नहीं बदलते हैं। उनकी निरन्तरता से प्राचीनता के गौरव का सन्दर्भ सार्थक एवं प्रासंगिक हो जाता है। शायद टॉड ने तो यह कल्पना भी अपने जीवन म नहीं की होगी कि उन्नीसवी सदी के प्रथम चरण का ईस्ट इण्डिया कम्पनी सरकार का उपनिवेशक भारत अठारसौ सत्तावन की क्रांति के बाद पूर्ण रूप से अग्रेज सरकार के अधीन हो जायेगा और फिर करीब एक शताब्दी की लम्बी आजादी की लड़ाई के बाद 1947 म पुन आजादी की सास लेगा। किन्तु उन्होंने राजस्थान के राजपूतों के खोये हुए स्वाभिमान को लौटाने और उनको स्वतन्त्र अपनी सत्ता चलाने की सभावना अवश्य व्यक्त की थी।

आजादी के बाद भी चार दशकों में भारतीय सामाजिक राजनैतिक व्यवस्था के अन्तर्गत परिवर्तन आये हैं। किसी एक व्यक्ति या परिवार का सामन्ती शासन की तरह अधिकार नहीं मिले क्योंकि यह व्यवस्था जनतांत्रिक प्रणाली पर आधारित है। राजस्थान के वर्तमान राजनैतिक क्षितिज पर भूतपूर्व जमीदारों जागीरदारो एवं राजा महाराजाओं का राजनीति म पुन सक्रीय होना उसी अभीजन चक्र के सिद्धांत की पुष्टि करता है जिसे टॉड के द्वारा प्रस्तुत तथ्यों से समर्थन मिल चुका है।

—

टॉड के इतिहास लेखन मे सास्कृतिक आकलन

—डॉ विक्रमसिंह राठोड़

राजस्थान के इतिहास लेखन की परम्परा पर दृष्टिपात करें तो यह बात स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि यहा के इतिहासकारों की रुचि सामाजिक और सास्कृतिक अध्ययन के प्रति इतनी अधिक नहीं रहा जितनी राजनतिक अध्ययन के प्रति। राजनतिक क्रियाकलापो तक सीमित रहने वाला विवरण इतिहास का एकागी पक्ष ही कहलायेगा। इतिहास के समग्र स्वरूप को समझने के लिए जन समाज म प्रचलित आचार विचार, मान्यताओ, रीति रिवाजों रहन-सहन खानपान, आमोद प्रमोद उद्योग, व्यापार आदि का वणन भी आवश्यक है जिससे किसी समाज की सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिति का पता चलता है। आज इतिहास के इन अछूते या अल्पज्ञात पक्षो पर अधिक बल दिया जा रहा है तथा सामाजिक आर्थिक एव सास्कृतिक इतिहास लिखने की दिशा म अपेक्षित सुधार हुआ है।

इतिहास लेखन मे सास्कृतिक आकलन के आधार पर देखा जाय तो राजनतिक घटनाक्रम को लिपिबद्ध करने की रूढ़ परिधि का लाघकर सपूण समाज की झाकी प्रस्तुत करन का प्रारम्भिक प्रयास टाड के इतिहास लेखन मे मिलता है। टॉड ने अलग से राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास नहीं लिखा। यहा के राजनतिक इतिहास के साथ-साथ यहा की धार्मिक व्यवस्था धार्मिक एव सामाजिक उत्सव राजपूत चारण भाट आदि विभिन्न जातियो के रीति रिवाजो, राजपूत समाज में नारी की स्थिति वारागनाओं के अद्भुत उत्सग के प्रसग आदि के माध्यम से यहां की सांस्कृतिक विशषताओ का उद्घाटित करने का प्रयास किया। यही टाड के इतिहास लखन की सबसे प्रमुख विशषता है। इतिहासवेत्ताओं और इतिहास के जिज्ञासु पाठकों का मने प्राय यह कहते सुना है कि टॉड ने यहा के इतिहास का रोचक ढग से लिखा

है। टाड के इतिहास लेखन म इस रोचक तत्व का प्रादुर्भाव वास्तव म यहा की सास्कृतिक विशेषताम्रो को उद्घाटित करने से ही हुमा।

टाड के इतिहास म पूव के ऐतिहासिक वृत्तिवतों से हम प्राय किसी प्रदेश जाति या समाज की बाह्यवस्था का पता चलता था भीतरी अवस्था की जानकारी नही के बराबर होती थी। टाड ने राजनैतिक घटनाक्रम व राजनतिक क्रियाकलापो के अतिरिक्त यहा की समाजगत प्रातरिक अवस्थाम्रों को उद्घाटित करन म रुचि ली और यहा की सास्कृतिक विशेषताम्रो को अपने इतिहास लेखन म स्थान दिया। इस प्रकार राजस्थान के इतिहास लेखन म यहा के सास्कृतिक तत्वो को समाविष्ट करने का श्री गणेश किया।

टाड का यह मानना था कि – सामाजिक आचार व्यवहार ही किसी जाति के इतिवृत का अधिक प्रयोजनीय अंश है। उसकी इस मान्यता म ही उस यहा के सास्कृतिक तत्वो का अपने इतिहास लेखन में समाविष्ट करने हेतु किञ्चित् रूप से प्रेरित किया होगा। इसके साथ ही यहा के सास्कृतिक तत्वो की अनुपमता और विशिष्टता के कारण टाड का उनकी ओर बरबस आकृष्ट होना भी स्वाभाविक लगता है। कारण कुछ भी रहा हो टाड ने सप्रयास या सहजरूप से इन सास्कृतिक तत्वो को लिपिबद्ध कर दिया तब हम भी उसकी गरिमा व महत्ता को भलीभाति जान सके।

टाड के इतिहास लेखन म सांस्कृतिक आकलन को आकने की यदि कोशिश की जाय तो यह बात स्वत ही स्पष्ट हो जायगी कि उसने यहा के सास्कृतिक पक्ष को भी सहज किन्तु रोचक व प्रभावी ढग से प्रस्तुत किया है। प्रत्यक रियासत के इतिहास म सास्कृतिक विवरणो का समावेश कर टाड ने अपने इतिहास लेखन म जहा तक सभव हो सका उसे स्थान दिया। जो प्रसग उसे प्रिय एव अप्रतिम लगे उनका उसने विस्तार से वणन किया है। इन सास्कृतिक पक्षो एव तथ्यो के चयन म उसका निजी दृष्टिकोण ही प्रमुख रहा है अत जसा उसने देखा व सुना वसा ही उल्लेख किया।

युगीन परिस्थितियों के अतगत टाड जसा एक विदेशी अग्रेज इतिहासकार ही वस्तुस्थिति तथा यथार्थ विवरण को लिपिबद्ध कर सकता था क्योंकि वह निष्पक्ष भाव से इन तत्वो के प्रति अपनी राय दे सकता था।

उस पर किसी प्रकार का दबाव या अंकुश नहीं था । यही कारण है कि उसके विवरण में जहाँ यहाँ की सांस्कृतिक विशेषताओं की सराहना मिलती है वहीं कुछ ऐसे पारम्परिक रूढ़ीगत रीतियों व विचारों की भर्त्सना भी । टाड के इतिहास लेखन में सांस्कृतिक पक्षों के विवेचन में जो निष्पक्षता व तटस्थता देखने को मिलती ही है राजनैतिक घटनाक्रमों में मिले या न मिले यह दूसरी बात है । यहाँ एक बात यह भी द्रष्टव्य है कि सांस्कृतिक पक्ष की परम्पराओं के वृतांत में अपने व अन्य दूसरे देशों की ऐसी ही मिलती जुलती परम्पराओं या मिलते जुलते घटना प्रसंगों का तुलनात्मक उल्लेख भी मिलता है ।

राजपूतों के नारी विषयक शिष्टाचार का उल्लेख करते हुए टाड ने लिखा है कि – आजकल बहुत से लोग यह कहते हैं कि जो लोग स्त्री जाति के विशेष अनुरागी है वह सबसे अधिक सभ्य है । यदि इस सिद्धान्त का अनुमोदन किया जाय यदि स्त्री जाति के अनुराग और शिष्ट परिणाम के अनुसार जातीय सभ्यता की बराबरी की तुलना करनी हो तो अवश्य ही राजपूत लोगों का सभ्यता का अग्रनायक स्वीकार करना चाहिए । राजपूत लोग अपने हृदय से आराध्य देवता की भांति स्त्री की पूजा किया करते हैं यदि इस देवता का किंचित् भी अपमान हो जाय यदि उसके सम्मान या शिष्टाचार में जरा भी अन्तर पड़ जाय तो तेजस्वी राजपूतों के हृदय में आग सी जल उठती है और जब तक अपमानकारी के हृदय के रुधिर से अपनी आग नहीं बुझा लेते तब तक किसी प्रकार से उनको शांति नहीं होती ।[1]

इसके अतिरिक्त बारह वर्ष की कन्या का पचास वर्ष के महाराणा लाखा से अनमेल विवाह मांडल के समय मेवाड़ में बड़े पुत्र के उत्तराधिकार की परम्परागत रीति में परिवर्तन आदि ऐसी सामाजिक गतिविधियों का उल्लेख भी टाड ने किया है जिनसे मेवाड़ की सामाजिक व्यवस्था में ही व्यवधान नहीं हुआ बल्कि इसके राजनैतिक दुष्परिणाम का फल भी मेवाड़ को भविष्य में भोगना पड़ा । इन दो घटनाओं ने मेवाड़ और मारवाड़ के सीसोदियों और राठौड़ों के बीच वैमनस्य को जन्म दिया जिससे दोनों ही

---

1 कर्नल जेम्स टॉड कृत राजस्थान का इतिहास (अनुवादक एवं सम्पादक बलदेवप्रसाद मिश्र एवं ज्वालाप्रसाद मिश्र) भाग 1 पृ 190 (प्रकाशक यूनिक ट्रेडर्स चौड़ा रास्ता जयपुर प्रकाशन वर्ष-1987)

रियासतो को मापसी सघष में भारी मात्रा म धन और जन हानि सहनी पडी ।

महाराणा भीमसिंह की पुत्री कृष्णाकुमारी के मात्मबलिदान की मार्मिक गाथा का वणन करना भी कनल टाड नही भूला जिसकी व्याख्या का स्मरण कर माज भी पाठकों का हृदय द्रवीभूत हो उठता है। कृष्णाकुमारी की कथा से मल खाती रोम की मभागिनी वर्जिनिया तथा ग्रीस की सुन्दरी इफीजिनिया क प्राण न्यौछावर करने की समानधर्मी घटनाम्रो का उल्लेख भी टाड ने किया है–[2]

श्रीमती वर्जिनिया राम के महारथी वियूसियम वर्जिनियस की बेटी थी। कहते हैं कि एपियस क्लीडियस नामक एक दुष्ट न वर्जिनिया को माता पिता के निकट से बलपूर्वक हरण करने की चेष्टा की थी। भपनी प्यारी बेटी के सतीत्व और उसके सम्मान के बचने का कोई उपाय न देख कर वियूमियस न सबके सामने फोरम क्षेत्र म उसको भपने हाथ से मार डाला।

इफीजिनिया ग्रीस के महावीर एगमेमन की बेटी थी। जब भलिस नामक द्वीप म ग्रीसवालो का जगी जहाज रुक गया तब डियाना देवी की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए एगमेमन ने भपनी बेटी के सामने बलि दिया था।

महाराणा राजसिंह की भन्य चारित्रिक विशेषताम्रो के प्रतिरिक्त उनकी शिल्पप्रियता का उल्लेख करत हुए कनल जेम्स टॉड ने राजसमद सरोवर का विस्तार से वणन किया है। राजसमद का यह विवरण राजस्थान की स्थापत्यकला का उदाहरण प्रस्तुत करता है जो इस प्रकार है–

राजसमन्द सरोवर - जातीय महत्ती प्रतिष्ठा और राजपूतो की कीर्ति का विशाल प्रमाण क्षेत्र यह राजसमद सरोवर राजधानी से साढे बारह कोस उत्तर और मरावली की तलटी से एक कोस पर स्थित है। गोमती नाम की टेढी चलने वाली पहाडी नदी की धार को एक बड भारी बध स बाधकर इस सरोवर को बनाया गया था। महाराणा ने भपन

2 कनल जेम्स टाड कृत राजस्थान का इतिहास भाग 1 पृ 618

नाम के अनुसार ही उसका नाम राजसमद रखा था। ईशान और वायु कोण के अतिरिक्त और सभी ओर बंधा बना हुआ है। यह सरोवर[1] बड़ा गहरा है इसका घेरा प्राय छ कोस 12 मील तक होगा। यह संगमरमर का बना हुआ है इसके किनारे से नीचे तक संगमरमर की रमणीय सीढ़ियां बनी हुई हैं जिन्होंने चारों ओर से इस सरोवर को घेरे रखा है। इस सरोवर के किनारे भी इसी पत्थर के हैं इसका बंधा मिट्टी के परकोटे से घिरा हुआ। यदि राजसिंह और कुछ दिन जीते तो चारों ओर सुन्दर सुन्दर वृक्षों की लगातार इसकी शोभा बढ़ाई जाती। सरोवर के दक्षिण ओर राणा ने एक नगरी और किला बनवाया था उस नगर को अपने नाम के अनुसार ही राजनगर नाम से विख्यात किया। पूर्वोक्त बंध के ऊपरी भाग में श्री कृष्णजी का एक अत्यन्त शोभायमान मन्दिर बनवाया था जिसमें समस्त काय संगमरमर से हुआ। इस मन्दिर के भीतर नाना प्रकार के मनोहर चित्र लगे हुए है, बीच में एक स्थान पर बड़े मोटे और साफ अक्षरों में लिखा हुआ उसकी प्रतिष्ठा कराने वाले का वृतान्त पाया जाता है। इसके बनवाने में और इसकी प्रतिष्ठा करने में महाराणा ने 98 लाख रुपय खच किये थे।'[3]

कनल जेम्स टाड ने पौराणिक इतिहास की उपयोगिता के सम्बन्ध में लिखा है- धनुर्वेद आयुर्वेद स्मृतिशास्त्र राजनीति या विज्ञान चाहे जो कोई शास्त्र हो जिसके मूल में पौराणिक इतिहास नहीं है वह निश्चय ही अपूर्ण है। पौराणिक कथामाला के भीतर जो लोग केवल तेजस्विनी कल्पना की अधिकाई देख पाते हैं उन्होंने विज्ञान मूल सूत्रों को थोड़ा ही पढ़ा है। पुराण ही जाति की पहली अवस्था के विषय में साक्षी देते हैं और सकल देशों के इतिहास की जड़ केवल पुराणों पर ही लगी हुई है। संसार के और दूसरे देशों को पौराणिक इतिहास का फल चाहे जैसा मिलता हो परन्तु सभ्यता के आदि स्थान इस भारतवर्ष के लिए वह अत्यन्त उपकारी है। सनातन हिन्दूधर्म विज्ञान मूलक है विज्ञान स्वभाव से ही नीरस और कठोर होता है परन्तु पुराणों में इस रसहीन और कठोरशास्त्र को ऐसे सुन्दर ढकने से ढक रखा है कि करोड़ों वर्षों के हेरफेर से भी वह पर्दा दूर नहीं हुआ। हिन्दूलोग इन पुराणों को धर्म के समान पवित्र माना करते हैं। इन पुराणों में जिन महापुरुषों का देवभाव से पूजा गया है वह लोग

---

3 जेम्स टॉड कृत राजस्थान का इतिहास भाग 1, पृ 467

आज तक भी देवभाव से पूजित हुआ करते हैं । भगवान शिव और विष्णु आज तक भी इस विशाल भारत भूमि के करोड़ों मनुष्यों से पूजे जाते हैं । [4]

मेवाड की धार्मिक स्थिति का वर्णन करते हुए कर्नल टाड ने मेवाड की शिवपूजा भगवान एकलिंगजी का मन्दिर शैव गोस्वामी जैन नाथद्वारे मे श्री कृष्णजी का मंदिर और पूजा की रीति का उल्लेख करते हुए अन्त मे राजपूतो मे वैष्णव धर्म से उपकार की संभावना व्यक्त की है—
राजपूत लोग यदि महादेवजी के निकट धर्म को छोड कर केवल शांति मे वैष्णव धर्म का आचरण करें तो राजपूत जाति का विशेष उपकार हो सकता है । [5]

कर्नल टाड ने मेवाड प्रदेश के धार्मिक जीवन का वृत्तान्त लिखते समय जहा एक ओर मेवाड के राजवंश के प्रधान उपास्य देव एकलिंगजी का उल्लेख किया है वही मेवाड मे प्रचलित शिवपूजा जैन धर्मावलम्बी नाथद्वारे के श्री कृष्ण एवं वैष्णवधर्म का भी विवरण दिया है । इस प्रकार मेवाड मे हम हिंदू धर्म का एक आदर्श स्वरूप देखने को मिलता है जो यहा की संस्कृति की एक सनातन विशेषता है । समय समय पर मेवाड मे विभिन्न धर्मो का उत्कर्ष हुआ । यह उस प्रदेश की धर्मपरायणता की विशेषता ही थी कि जब ब्रजधाम से वैष्णव लोग श्री कृष्ण की मूर्ति लेकर औरंगजेब के भय से इधर उधर भागते फिर रहे थे उस समय मेवाड ने श्री कृष्ण जी की पवित्र मूर्ति को अपने राज्य मे आश्रय दिया । एकलिंगजी तो उनके उपास्य देव थे उनके साथ ही श्री कृष्ण की देवमूर्ति की विधर्मियो से रक्षा करना भी उनकी धर्मपरायणता का एक आवश्यक अंग था। धार्मिक उदारता एवं धार्मिक सहिष्णुता दोनो ही विशेषताओ मे युक्त इस प्रदेश का धार्मिक जीवन गौरवशाली था।

धार्मिक जीवन के साथ साथ कर्नल टाड ने मेवाड के विभिन्न पर्वोत्सवो का उल्लेख किया है जिनमे—वसन्त पचमी भानुसप्तमी शिवरात्री अहेरिया फागोत्सव, शीतलाषष्ठी राणा का जन्म दिन फूलडोल अन्नपूर्णा अशोकाष्टमी रामनवमी मदनत्रयोदशी नवगौरी पूजा सावित्री व्रत रंभातीज

---

4 जेम्स टॉड कृत राजस्थान का इतिहास द्वितीय खंड पृ 711
5 वही पृ 719

अरण्य षष्ठी रथयात्रा, पावती तीज नाग पचमी राखी पूर्णिमा जन्माष्टमी खड्गपूजा लक्ष्मीपूजा दीवाली अन्नकूट झूलनयात्रा मकर सक्रांति मित्रसप्तमी आदि प्रमुख है । इन सब पर्वोत्सव को मनाने की तिथि व विधि का पूरा वर्णन टाड ने किया है । इन पर्वो एव उत्सवों के माध्यम से मेवाड की सस्कृति का स्वरूप मुखरित होता है जो राजस्थान की सस्कृति का ही एक अग है । राजस्थान की लोक सस्कृति का ये पर्व एव उत्सव सशक्त ढग से अभिव्यक्त करते हैं तथा यहा की सस्कृति के सवाहक व जीवन्त माध्यम है ।

टॉड को राजस्थान की जाति व्यवस्था ने भी आकृष्ट किया इसलिए उन्होंने यहा की अनेक जातियों में आचार विचार की जो भिन्नता पायी जाती है उसे भी अपने इतिहास लेखन में समाविष्ट किया है। किसी जाति के आचार विचार से हम उसकी उन्नति का अनुमान लगा सकते हैं। विख्यात विद्वान गागेट का कथन है कि — जो जाति शिल्प और विज्ञान की जितनी उन्नति करे उस जाति के सामाजिक आचार विचार भी उन्नति पाकर उतने ही प्रकाशमान होते है ।

राजस्थान की विभिन्न जातियों के आचार विचार का वर्णन करते हुए स्त्रियों पर राजपूतों की भक्ति और सम्मान का उल्लेख करते हुए लिखा है— प्राचीन जर्मन और स्कन्नेवियों के समान राजपूत जाति प्रत्येक काय में स्त्रियों के साथ परामर्श करती थीं, और स्त्रियों के आचरण के ऊपर अपने शुभारम्भ का निश्चय करती थी यह भी उनका विश्वास था और वह स्त्रियों को कितना सम्मान करते थे कि उनसे स्त्रियों को गौरव की देने वाली देवि नाम की उपाधि मिली । जो मनुष्य इस बात को नहीं जानते हैं वह हिन्दू स्त्रियों को पराधीन बताकर शोक प्रकाशकर उनके अतपुर निवास को कारागार का वास बताते हैं । [6]

इसी प्रकार रनिवास की रीति और उसकी उपयोगिता राजपूतों का राजकुमारियों के गौरव को रखना, राजपूतनियों की असीम पतिभक्ति इतिहास तथा काव्यों के लक्ष राजपूत स्त्रियों की उदारता साहस प्रत्युत्पन्नमतित्व के उदाहरण सतीदाह शिशु कन्या की हत्या जुहार की रीति आदि का उल्लेख किया है । राजपूत चरित्र का सक्षिप्त विवरण करते समय शिकार व्यायाम

6 जम्स टॉड कृत राजस्थान का इतिहास द्वितीय खड पृ 759

क्रीडा युद्धशाला गाना बजाना शिक्षा घर की सजावट और वशभूषा आदि सभी कुछ लखन का वण्य विषय बने ।

हालाकि टाड के इतिहास लेखन मे राजपूत जाति के आचार विचार तथा अन्य प्रकार के विवरण प्रमुखत इस जाति से सम्बन्धित रह हैं । फिर भी केवल राजपूत जाति के सम्बन्ध म ही उल्लेख नही किया अन्य जातियो के सम्बन्ध म भी जो नवीन एव रोचक जानकारी मिली उसका वणन करने म भी वह नही चूका । माहीर जाति के आचार व्यवहार का वत्तान्त यहाँ द्रष्टव्य है ।

माहीर लोगों मे विवाह बन्धन जसे सहज उपायो से सम्पादित होता है वसे ही सहज उपायो से उस बन्धन का विच्छेद भी हो जाता है । यदि स्त्री पुरुषो म परस्पर एक दूसर का मन फट जाय अथवा और किसी विशेष कारण स परस्पर चिर विच्छेद आवश्यक हो तो स्वामी अपने दुपट्टे का कुछ हिस्सा फाडकर स्त्री के हाथ म देकर अपना स्त्री म सबध छुडा लेगा । त्यागी हुई स्त्री वह वस्त्र का टुकडा हाथ म ल शिर पर जल से भरे दो कलश तलऊ पर रखकर जिस माग म इच्छा होगी उसी म चली जायगी और जो पुरुष पहिले उस त्यागी हुई स्त्री के शिर म जल कलश उतारना स्वीकार करेगा स्त्री उसको ही अपना भावी पति सम झगी । यह स्त्री त्याग प्रथा कवल मीना लोगो मे ही प्रचलित नही है किन्तु जाट गूजर अहीर माली और अन्यान्य बनली जातियो म भलीभाति प्रचलित है । जेहर लम्रा उर निकला । अर्थात् कलश लेकर चली जाओ यह वात माहीरवारा की पहाडियों मे साधारण रीत से व्यवहार की जाता है ।[7]

कनल जेम्स टॉड न मरुभूमि के निवासियो क वृतान्त के अन्तर्गत इतिहास क साथ अन्यान्य आनव्य तथ्यों की भी जानकारी दी है जसे भिन्न जातीय अधिवासी जाट राजपूत ब्राह्मण वश्य और दास जाति । मारवाड राज्य के विस्तार क साथ साथ जनसख्या तथा यहा के शिल्पकौशल का भी उल्लेख किया है जिसस यहा क साम्स्कृतिक जीवन को समझन म मदद मिलती है ।

---

7 जेम्स टाड कृत राजस्थान का इतिहास द्वितीय खड पृ 863

बीकानेर की उत्पत्ति भटनेर की उत्पत्ति, जाट जाति का ऐतिहासिक विवरण प्राचीन नगरों की सूची जसलमेर का नामकरण, जसलमेर का भौगोलिक विवरण जसलमेर के ग्रामों नगरों की संख्या उस क्षेत्र के अधिवासी, भटिट जाति उसकी आकृति और वेशभूषा, अफीम और ताम्रकूट से भटिटयों का अनुराग पल्लीवाल जाति उसका धन परिमाण काय, विचित्र पूजा पद्धति तथा पोकरणा ब्राह्मण जाति इत्यादि प्रसगो के विवरण म यहा क सास्कृतिक जीवन की झाकी मिलती है ।

मेवाड मारवाड, बीकानेर जसलमेर ही नहीं जयपुर, कोटा बूदी झालरापाटण इत्यादि विभिन्न स्थानो के भ्रमण के समय प्रत्येक विशेष क अधिवासियों की जीवन शैली तथा उनके सास्कृतिक आयामों का भी प्रभावी उल्लेख टॉड ने अपने इतिहास लेखन में किया है । कोटा के बाडोली के जैन मंदिर हो चाहे पठार देश का मुकुन्द का मन्दिर भवानी मन्दिर बूदी के राजमहल हो चाहे चम्बल का प्राकृतिक रमणीय दृश्य इन सब के विवरण सास्कृतिक पक्ष से जुडे है ।

टाड जहा एक ओर मन्दिरों के स्थापत्य से बहुत अधिक प्रभावित हुए वही दूसरी ओर विभिन्न जातियों के आचार विचार तथा उनके पर्वों त्यौहारो आदि सांस्कृतिक परम्पराओ का भी वर्णन करने में गहरी दिलचस्पी ली । इन सांस्कृतिक विवरणो म केवल टॉड ने कोई अभाव नहीं रखा चाहे वह कोटा की होली का आयोजन हो चाहे बजारा के जोगियों का विवरण जो भी उसकी जानकारी म आया व उसे रुचिकर लगा उसका आकलन अपने इतिहास लेखन म कर यहा की सास्कृतिक विरासत को प्रकाश म लाया । टाड का यह प्रयास स्वाभाविक व सहज था । अनायास ही इन सांस्कृतिक तत्वों को उसने अपने लेखन म ला गया मुख्य उद्देश्य तो उसका यहा के रजवाडो का राजनैतिक इतिहास लिखना ही रहा ।

अत टाड के इतिहास लेखन म सांस्कृतिक पक्ष का मूल्यांकन करते समय इस तथ्य को ध्यान म रखना आवश्यक है कि यद्यपि टॉड का उद्देश्य यहा का सांस्कृतिक इतिहास लिखना नहीं रहा फिर भी यहा की सांस्कृतिक रचना म प्रभावित होकर यहा के कुछ सांस्कृतिक बिन्दुओं को उसने छुआ जो एक प्रशंसनीय काय माना जायगा । या टाड ने अपनी

पश्चिमी भारत की यात्रा म सास्कृतिक उपादानो की विस्तार स चर्चा की ह परन्तु उसका मूल्याकन अलग स करने की आवश्यकता ह । यहा तो उपयुक्त विवरण क आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस सांस्कृतिक आकलन मे टॉड क इतिहास से नवीनता एव प्रमावात्मकता का सूत्रपात हुआ । इसके साथ ही टाड का इतिहास मात्र राजनैतिक घटनाक्रम का रूखा एव नीरस लेखा जोखा न बनकर यहा के निवासियो की सास्कृतिक जीवन्तता से स्पन्दित भी हुआ ।

—

टॉड के आर्थिक आकडे

एक साख्यकीय अध्ययन

—डॉ बी एल भादानी

जम्स टॉड राजस्थान के इतिहासकारों के लिए एक सुपरिचित नाम है। वे इस्ट इण्डिया क प्रतिनिधि क रूप म राजस्थान की रियासता म आए। वे एक नितात ही भिन्न भौगोलिक सामाजिक एव सांस्कृतिक वाता वरण से आए थ एव उन्ह यहा विपरीत भौगोलिक परिस्थितिया एव सामा जिक व्यवस्थाओ का सामना करना पडा। एक तरफ तो दूर तक फली रेगिस्तान की गम हवाए थी तो दूसरी तरफ दूर तक पवत श्रखलाए जो उनका स्वागत करने को तत्पर थी। टॉड को यहा की सास्कृतिक परम्पराओ रीति रिवाजो एव वीर गाथाओ ने गहराई से प्रभावित एव प्ररित किया। इसके प्रतिफल क रूप में उनके द्वारा लिखित राजस्थान का इतिहास हमारे सम्मुख आया।

भारत के बारे म उनक विचार यूराप क आम विद्वानो के विचारो से नितात भिन्न थ। यूरोपियन इतिहासकारो का आम धारणा थी कि भारत का अपना कोई राष्ट्रीय इतिहास नहा है जब कि टॉड की मान्यता थी कि जिस देश क लोग सभ्य-सुसस्कृत हो जिन्हान विज्ञान। का परि पक्वता प्रदान की हा जिन्होन न कवल ललित कला वास्तुकला मूर्तिकला काव्य एव सगीत का सजन किया हो बल्कि गुरु का आसन ग्रहण कर लागों को सिखाया हो एव सुव्यवस्थित नियमो क तहत इन कलाओ को परिभाषित किया हो। उन्हान प्रयत्न हा काव्यात्मक शली म लिखा कि जिन्हान हस्तिनापुर एव इन्द्रप्रस्थ क शहर दिल्ली एव चित्तौड क विजय स्तम्भ आबू एव गिरनार के पवित्र स्थान एलोरा एव अजन्ता क गुफा मन्दिरो का सजन किया हो। क्या एस लोग अपन इतिहास की घटनाओ का लिपि जमी साधारण कला से अनभिज्ञ रह सकत है?[1] कदापि नही। भारतीय

1 जम्स टॉड एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान इन्ट्रोडक्शन (लन्दन 1960) पृष्ठ 14

इतिहास एव सस्कृति के बारे म य विचार ही टाड को अग्रजी इतिहासकारो की पक्ति से अलग स्तभ की तरह खडा करत हैं । इन विचारो के पृष्ठ भाग म भारत के विशेषत राजस्थान के प्रति उनके प्रेम भाव की झलक के दशन किए जा सकत हैं ।

उन्नीसवी सदी का द्वितीय दशक वह समय था जबकि अभी पूरे तौर पर राष्ट्रीय भावना स श्रोत-प्रोत इतिहास लखन की परम्परा पूणत विकसित नहा हो पाई थी । अग्रज इतिहासकार निरन्तर प्रयास कर रह थ कि भारतीयो का अपना कोई इतिहास नही रहा है । एस समय म भारतीय सस्कृति एव इतिहास के प्रशसक एव अग्रज प्रशासक न सम्पूण राजस्थान का इतिहास लिखकर राजस्थान म इतिहास लेखन की शुरुआत की । इसके लिए राजस्थान इतिहास के शोधार्थी सदैव उनके ऋणी रहेंगे।

टाड ने अपने इतिहास लखन के लिए तत्कालीन समय म उपलब्ध सम्पूर्ण सामग्री का भरपूर उपयोग किया । उन्होन पारम्परिक स्रोतो के अतिरिक्त चारणी साहित्य का उपयोग किया जिसकी मार्क ब्लाक जस फ्रासीसी इतिहासकारो ने अत्यत प्रशसा की है । टाड का मानना है कि चारणो को मानव जाति का प्राचीन इतिहासकार कहा जा सकता है । वे बिना किसी भय के अपने चरित्र नायक की प्रशसा एव उसके अवगुणो का वणन करते थ । इस साहित्य के अतिरिक्त रासो साहित्य शिलालेखो सिक्को ताम्रपत्रो ऐतिहासिक काव्यो सरकारी दस्तावजो एव शासकों द्वारा लिखित सस्मरणो आदि को अपने इतिहास लेखन म उचित स्थान दिया है । स्रोतो की खोज उन्हे जन भण्डारो एव जन मुनियो के दरवाजो तक ल गई कहने का तात्पय यह है कि मूल सामग्री के उपयोग के प्रति टाड का दृष्टिकोण आधुनिक वज्ञानिक दृष्टि का परिचायक है । उनकी दृष्टि म मौखिक साक्ष्य भी काफी महत्वपूण थे । यही कारण है कि उन्होन अपने इतिहास म स्थान स्थान पर इनका उपयोग भी किया है । यह भी कहा जा सकता है कि साक्ष्यों के प्रति उन्होंने कुछ सीमा तक आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी अपनाया है ।

वस टॉड के राजस्थान की विषय वस्तु अत्यन्त विशाल एव विस्तृत है । उन्होने इतिहास के अधिकतर पक्ष पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है । राजस्थान की विभिन्न रियासतो के उद्भव म लकर उन्नीसवी सदी के प्रथम तीन दशको तक के इतिहास को रेखांकित किया है । राज स्थान की विभिन्न सामन्ती सस्थाओं सामाजिक एव सास्कृतिक धार्मिक मान्य

मात्रा के बारे में उनकी स्थापनाएं अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उनकी ये मान्यताएं शोध का प्रवृत्ति को उकसाने वाली हैं। राज्यों की अर्थव्यवस्था का अध्ययन टाड की शोध रुचि का केन्द्रीय विषय प्रतीत होता है। उन्होंने कृषि उत्पादन, भाग एवं सिंचाई के विभिन्न साधनों, जनसंख्या एवं वाणिज्य व्यापार से सम्बन्धित असंख्य आंकड़े संकलित किए हैं जो आर्थिक इतिहास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इन आंकड़ों की महत्ता इस लिए भी और अधिक बढ़ जाती है क्योंकि इनमें से कतिपय आंकड़े उस समय से सम्बन्धित हैं जो आमतौर पर उपलब्ध नहीं होते हैं। मैंने इस आलेख में टाड के आंकड़ों का पूर्ववर्ती तथा पश्चातवर्ती आंकड़ों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने का एक प्रयास किया है। इसके साथ ही आंकड़ों की विश्वसनीयता परखने तथा इनको संकलित करने के पीछे टाड के ऐतिहासिक उद्देश्यों को पहिचानने का प्रयास भी किया है। अन्त में उनके आंकड़ों के परिप्रेक्ष्य में आर्थिक परिस्थितियों में आने वाले परिवर्तनों को भी रेखांकित करने का किंचित सा प्रयास किया है।

जनसंख्या का अनुमान

किसी भी क्षेत्र की आर्थिक स्थिति के अध्ययन के लिए उस क्षेत्र की जनसंख्या की जानकारी अत्यन्त आवश्यक है। टाड ने उन्नीसवीं सदी के दूसरे दशक से सम्बन्धित जनसंख्या के आंकड़े एकत्रित किए हैं जो अत्यन्त मूल्यवान हैं। राजस्थान की प्रथम जनगणना सन् 1881 ई. में हुई थी जो कि अपूर्ण थी। दस वर्ष पश्चात 1891 ई. में हुई जनगणना काफी मात्रा तक वैज्ञानिक एवं सही थी। उनके द्वारा प्रस्तुत सांख्यिकी विवरण जनगणना से लगभग साठ से सत्तर वर्ष पूर्व की है। उन्होंने दो तरीके से ये आंकड़े दर्शाए हैं प्रथम, पृथक पृथक राज्यों की कुलजनसंख्या के आंकड़े एवं द्वितीय, मुख्य मुख्य शहरों की अनुमानित जनसंख्या। सर्व प्रथम विभिन्न रियासतों की जनसंख्या सांख्यिकी संकलित करके निम्न सारिणी में प्रस्तुत की जा रही है –

सारिणी–1

क्रम संख्या	क्षेत्र का नाम	1820 के दशक में अनुमानित जनसंख्या	1891 ई. में कुल जनसंख्या
1	मारवाड़	20 00,000	25 28 178

2	बीकानेर	5 39 250	8 32 065
3	जसलमेर	74 400	1 15 701
4	आम्बेर	18 47 600	28 23 966

टाड ने मारवाड का जनसख्या का अनुमान लगान म पूर्ण भूमि के उपजाऊपन के आधार पर विभिन्न क्षेत्रा क लिए प्रति वग मील व्यक्तिया का अनुमान लगाया है । उन्होने नमिए पूर्वी क्षत्र के लिए प्रति वग मील अस्सी व्यक्तिया का अनुमान लगाया है जो कि सर्वाधिक उपजाऊ क्षत्र है । इसी तरह उत्तर-पूर्वी एवं उत्तर-पश्चिमी क्षत्र के लिए क्रमश प्रति वग मील तीस एवं दस व्यक्तिया का अनुमान लगाया है । इसी के आधार पर उन्होने मारवाड राज्य का बीस लाख जनसख्या अनुमानित की है ।

मैंने अपने शोध निबन्ध म 1654-65 ई के मध्य मारवाड[2] की कुल जनसख्या 19 91 995 एवं 20 86 380 क मध्य अनुमानित की है जो कि टाड क आंकडा के समतुल्य है । तब यहा यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि क्या इस दौर म जनसख्या वृद्धि म ठहराव आ गया था या फिर क्या टाड के आकडा की सत्यता पर प्रश्न चिन्ह लगाया जा सकता है ?

बीकानेर राज्य की जनसख्या निर्धारित करने के लिए अलग पद्धति लागू की है । सर्वप्रथम उन्होने स्थानीय मौखिक साक्ष्या के आधार पर बारह शहरों की जनसख्या के आकडे सकलित किए है । ये आकडे घरों की सख्या के रूप म है । इसके पश्चात उन्होने सम्पूर्ण गावा को चार समूह म विभाजित करके प्रत्येक समूह के लिए प्रति गाव घरा का अनुमान लगाकर कुल घरा के आकडे प्राप्त कर लिए हैं उदाहरणार्थ

100 गाँव	प्रति गाँव 200 घर	=	20 000 घर
100 गाँव	प्रति गाँव 150 घर	=	15 000
200 गाँव	प्रति गाँव 100 घर	=	20 000
800 ढाणिया	प्रति ढाणी 30 घर	=	24 000

2 मेरा लख पोपुलेशन ऑव मारवाड इन द मिडल ऑफ द सैवेन्टीन्थ सन्चुरी द इण्डियन इकनामिक एण्ड सोशियल हिस्ट्री रिव्यू Vol XVI न 4 पृ 415-27

इस तरीके से अनुमानित घरों की संख्या को उन्होंने शहरों के घरों की संख्या में जोड़कर सम्पूर्ण राज्य के कुल घरों का अनुमान लगाया है। अन्त पारम्परिक दर से (प्रति घर 4 5 व्यक्ति) गुणा करके जनसंख्या निकाली है जो कि 5 39 250 होती है। इसकी जांच टाड द्वारा दिए गए घुआ नामक कर के मद से होने वाली आमदनी के आकड़ों से की जा सकती है। इस कर से एक लाख की आय होती थी। इस कर की दर प्रति घर एक रुपया थी। इस रकम को पाच से गुणा करने पर पाच लाख जनसंख्या होती है जो मोटे तौर पर ऊपर के आकड़ों से मेल खाती है। इससे टाड के आकड़ों की विश्वसनीयता बढ़ जाती है। 1891 ई में यह जनसंख्या बढ़कर 8 92 065 हो जाती है।

जैसलमेर की जनसंख्या का अनुमान लगाने के लिए भी यही पद्धति लागू की है। इस क्षेत्र के लिए उन्होंने कुल जनसंख्या के आकड़े दिए हैं जिसका योग 74 400 माना है। यहा उन्होंने कुल घरों की संख्या को प्रति घर 40 व्यक्तियों की दर से गुणा करके जनसंख्या ज्ञात की है। जबकि खास जैसलमेर शहर में घरों को 5 की दर से गुणा की है। यह दो अलग अलग दरें ठीक नहीं प्रतीत होती।

आम्बेर राज्य की जनसंख्या के आकड़ों के लिए उन्होंने एक नवीन तरीका अपनाया है। उन्होंने सम्पूर्ण राज्य का कुल क्षेत्र वर्ग किया है जो 14 900 वर्ग मील आता है। दूसरी तरफ प्रति वर्ग मील जनसंख्या की प्रति है। अब दोनों को गुणा करके कुल जनसंख्या हासिल की जा सकती है।

शहरी जनसंख्या

इसी तरह टाड ने बीकानेर मारवाड जैसलमेर एव मेवाड के शहरों की जनसंख्या के आकड़े संकलित किए हैं जो अत्यन्त मूल्यवान हैं। उन्होंने ये तालिकाएँ कहीं सिर्फ घरों की गिनती के रूप में तो कहीं घरों की गणना एव कुल जनसंख्या दोनों के रूप में दिए हैं। मैंने पश्चातवर्ती आकड़ों से तुलना करने की दृष्टि से घरों की संख्या को पारम्परिक दर से कुल जनसंख्या में परिवर्तित कर दिया है। सर्वप्रथम टाड द्वारा प्रस्तुत तालिकाएँ, उसके पश्चात 1891 ई एव इन शहरों में जनसंख्या में घटोतरी अथवा बढ़ोतरी के आकड़े निम्न तालिकाओं में दिए जा रहे हैं

सारिणी-2

बीकानेर जसलमेर के शहरी आबादी म परिवतन

क्रम सख्या	शहर का नाम	टाड द्वारा प्रस्तुत आकड (लगभग 1820ई)	1891 ई की जनसख्या [3]	कुल घटोतरी/बढोतरी
1	बीकानेर	54 000	50 513	−3 487
2	नोहर	11 250	5 655	−5,595
3	भादरा	11 250	5 719	−5 531
4	रिणी	6 750	6 553	−197
5	राजगढ	13 500	4 679	−8 821
6	चूरू	13 500	14 019	+ 519
7	बागसर	4 500	4 392	−108
8	रतनगढ	4 500	10 536	− − 6 036
9	जसलमेर	35 000	10 343	−24,657

उपरोक्त सारिणी स यह दिलचस्प निष्कर्ष निकलता है कि नौ म स सात शहरों की जनसख्या म जबरदस्त गिरावट आती है। सर्वाधिक कमी जसलमेर म होती है। यहा के व्यापार म जबरदस्त पतन ही इसका कारण हो सकता है। इसके पश्चात राजगढ़ नोहर एव भादरा जस दूर दराज के क्षत्र भी अग्रजों की आर्थिक नीति के परिणाम से नहीं बच सके। रेलों के निर्माण न पुरान सारे व्यापारिक मार्गों को महत्वहीन बना दिया परिणामस्वरूप शहरी जनसख्या मे पतन स्वाभाविक था। चूरू एव रतनगढ की जनसख्या म बढोत्तरी अपवाद प्रतीत होती है।

मारवाड के कुछ शहरों का घर-गणना टॉड ने दर्ज की है। नणसी ने भी इनम स कुछ शहरों के घरों की सख्या अकित की है जिसका समय 1655 60 ई के मध्य का है।[4] टाड के आकडों की तुलना पूववर्ती एव पश्चातवर्ती आकडों स भी की जा सकती है। निम्न सारिणी म 1659 64 टाड एव 1891 के आकडे दिये गए हैं —

3 सेंसस आव इण्डिया वाल्यूम XXIV राजपुताना एण्ड अजमेर - मारवाडा भाग - 2 टेबुलस कलकत्ता, 1922

4 भुगोल नणसी मारवाड रा परगना री विगत, स नारायणसिंह भाटी दो भाग।

सारिणी-3

मारवाड़ की शहरी जनसंख्या

क्रम संख्या	शहर का नाम	1659 64 की घर गणना	1820 के आंकड़े	1891 की तालिका
1	जालोर [5]	3 049	2 891	2 341
2	भीनमाल [6]	692	1 500	1 277
3	सिवाना	188	500	775
4	साचोर [7]	1 205	750	448
5	भाग्वाजन	—	500	392
6	पोकरण	557	2 000	1 633
7	जोधपुर	—	20 00	13 513

उपरोक्त सारिणी के आंकड़े अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। जालोर एवं साचोर शहरों के घरों की संख्या 1659–64 के मध्य 1820 ई में अधिक थी। दिलचस्प बात यह है कि उन्नीसवीं सदी के दूसरे दशक एवं 1891 ई के मध्य सिर्फ सिवाना को छोड़कर सभी कस्बों के घरों की संख्या में तेजी से गिरावट होती है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि इस दौर में कुल शहरी जनसंख्या में जबरदस्त गिरावट आई। स्पष्टतः अठारहवी सदी में हुई इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रांति के कारण ईस्ट इण्डिया कम्पनी एवं भारत के व्यापारिक सम्बन्धों में पूर्णतः परिवर्तन आया था। भारत में तैयार माल की जगह कच्चा माल निर्यात होने लगा एवं इंग्लैण्ड की फैक्ट्रियों में बना माल यहां आयात होने लगा था। इसमें हिन्दुस्तान के समृद्धशाली

---

5 जोधपुर कविराजा संग्रह ग्रंथ न 59 पत्र 99 (अ)-(ब) नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ।

6 भीनमाल के आंकड़े मडारिया री पोथी में दिए हैं कविराजा संग्रह ग्रंथ न 78 नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ।

7 नगमी ख्यात में मर्दुमशुमारी मारवाड़ प्रथम भाग पृ 228–29

उद्योग धधा के उजड़ने की शुरुआत हुई[8]। इसी के साथ भारत म गर औद्योगिकरण की प्रक्रिया के सकेत स्पष्टत उजागर होने लग थे । इसी के परिणामस्वरूप शहरी जनसख्या म जबरदस्त गिरावट आई। इस दुष्परिणाम स राजस्थान भी अछूता नही रहा । चूकि टॉड स्वय इगलण्ड के प्रतिनिधि थे इसलिए उन्होने राजस्थान पर पडने वाले दुष्परिणाम को पूरे तौर पर छुपाने का प्रयास किया । इस बात की पुष्टि उनके द्वारा दिए गए मवाड[9] से सम्बन्धित आकडों स और अधिक हो जाती है जिसम उन्होने यह बताने का प्रयास किया ह कि 1818 ई को सधि के पश्चात यहा के राजस्व म वद्धि हुई । यद्यपि टॉड द्वारा सकलित सभी आकड अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं लेकिन उनकी इस परिप्रेक्ष्य म जाच पडताल अत्यन्त आवश्यक है ।

जालोर जातिवार घर गणना

टाड द्वारा सकलित आकडो म कस्बा जालोर की जातिवार घर गणना दर्ज है जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है । 1658 ई म इसी प्रकार की व्यवसायिक जातियों के घरो की गणना[10] की गई थी । तत्कालीन समय की गणना अधिक व्यापक है । उसम सभी व्यावसायिक जातियो के अलग अलग घरो की सख्या दर्ज की गई है । टाड ने कई व्यावसायिक जातियो घरो की सख्या को एक मद के अन्तर्गत दर्ज कर दिया हैं जस बनिया व्यापारी एव दुकानदार अथवा मुस्लिम व्यवसाईयो एव दस्तकारों को मुसलमान श्रेणी मे रख कर अकित किया है । इसस दोनो समय के आकडो का पृथक तुलनात्मक अध्ययन करना थोडा मुश्किल हो गया है । फिर भी मन 1658 ई के आकडो को टाड के अनुसार समायोजित करके तुलना-

---

8 उन्नीसवी सदी म गर औद्योगिकरण एव गर शहरीकरण की प्रक्रिया पर दृष्टव्य मारिस डी मौरिस ट्रेन्डस ए रिन्टरप्रिटेशन आव नाइन्टिन्थ सन्चुरी इण्डियन इकनामिक हिस्ट्री आइ ई एस एच आर वाल्यूम I नम्बर मार्च 1968 एव विपिन चन्द्र, रिइन्टर प्रिटेशन आव नाइन्टिथ सन्चुरी इण्डियन इकनामिक हिस्ट्री आइ ई एस एच आर वाल्यूम V नम्बर I 1968

9 टाड प्रथम भाग पृ 399

10 जोधपुर कविराजा सग्रह ग्रन्थ न 59 नटनागर शोध सस्थान सीतामऊ।

त्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है । निम्न सारिणी म 1658 ई एव टाड के आँकडा को दर्शाया गया है

सारिणी–4

1658 ई एव 1813 ई मे जालोर की घर-गणना सांख्यिकी

क्रम सख्या	जाति का नाम	1658 ई की घर गणना	1813 म घरों की सख्या
1	ब्राह्मण ए व श्रीमाली	24	100
2	राजपूत एव टाक राजपूत	105	5
3	छीपा	20	20
4	पचोली	1	—
5	भोजग	20	20
6	जोगी सन्यासी	10	—
7	जुलाहा	30	100
8	जाट	4	—
9	कु भार	30	60
10	गूजर	40	40
11	ढेढ़	80	—
12	भाट	10	—
13	घोमी	100	—
14	माली	30	140
15	डाढ़ी	5	—
16	नाई	15	16

17	डाकोत	5	—
18	लोहार एवं सुथार	9	14
19	कलाल	—	20
20	खटीक	13	20
21	मुसलमान	—	936
22	ठठेरा	—	30
23	तेली	—	100
24	भील	30	15
25	मीणा	200	60
26	धोरी	2	—
27	चूड़ीवाला	—	4
28	कन्दाई	—	8
29	यति	—	2
30	सिपाई	1000	—
31	बन्कस, व्यापारी एवं दुकानदार[11]	1 279	1156
	(i) महाजन 900		

11 तुलनात्मक अध्ययन के लिए मैंने ऐसा किया है कि जो जातियां दोनों समय में विद्यमान थीं उनको तो वैसे ही रहने दिया है। टाड ने बन्कस, व्यापारी एवं दुकानदारों का सिर्फ एक मद दिया है। उसमें उन्होंने इस बात का संकेत नहीं दिया है कि उन्होंने इस मद में किन किन व्यवसाय के लोगों को सम्मिलित किया है। मैंने तुलनात्मक अध्ययन के लिए तर्दस व्यावसायिक जातियों के घरों को टाड के मद के अन्तर्गत कर दिया है।

	(ii) सोनार	40	
	(iii) पिजारा	30	
	(iv) बधारा	30	
	(v) कसारा	12	
	(vi) भरावा	1	
	(vii) बेनादर	5	
	(viii) सिनावट	15	
	(ix) वारिया	50	
	(x) गुरडा	5	
	(xi) धोबी	10	
	(xii) मोची	50	
	(xiii) नाल बधारा	2	
	(xiv) साबणगर	30	
	(xv) दरजी	40	
	(xvi) लुहार	5	
	(xvii) सरगरा	6	
	(xviii) तेरवा	3	
	(xix) डबगरा	1	
	(xx) हलालखोर	25	
	(xxi) तम्बोली	2	
	(xxii) भराशी	4	
	योग	1266	
26	स्नान बुनकर	—	15
	कुल योग	3 049	2 881

उपरोक्त सारिणी से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि व कम व्यापारी एव दुकानदारो की जनसख्या मे 1658 ई की तुलना म 1813 ई म गिरावट आनी है। जुलाहा मालिया (अर्थात फल-फूल सब्जियां उगाहने वाला वर्ग एवं रेशम बुनकरो की जनसख्या म बढोत्तरी होती है जो दिलचस्प है। जुलाहा एवं रेशम बुनकरों की जनसख्या म बढोत्तरी से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कपडा उद्योग अभी भी सन्तोषजनक स्थिति म था। दूसरा कारण यह हो सकता है कि टाड के आकड़ 1813 ई वर्ष के हैं इसलिए अभी 1813 ई के चाटर एक्ट का प्रभाव पूर्णत राजस्थान तक नहीं पहुच पाया था। इन आकड़ो से यह बात उजागर होती है कि जालोर उस समय भी व्यापार का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था यद्यपि कुल घरो की सख्या म गिरावट होनी प्रारम्भ हो गई थी।

सिंचाई के साधन

अधिकाश राजस्थान म खेती मानसून की बरसात पर निर्भर करती है लकिन कुछ एस भी क्षेत्र हैं जहा कुआ से सिंचाई होती है। टॉड ने अपने वणन मे उपलब्ध विभिन्न क्षेत्रो म उपलब्ध सिंचाई के साधनो का आवश्यक रूप से दर्ज किया है। जहा सिंचाई करना सभव था। मारवाड की भौगोलिक स्थिति का वणन करते हुए उन्होंने लिखा है कि लनी नदी मारवाड के रेगिस्तानी एव उपजाऊ क्षेत्र की सीमा रेखा है। स्वभावत उन क्षेत्रो म अच्छी किस्म की फसल होती है जहा पानी कम गहरा है एवं कुओ से सिंचाई होती है। मेडता एवं नागोर म उच्च श्रेणी के अनाज उगाए जाते रहे हैं क्योकि यहा कुआ से सिंचाई होती है। मने अपने एक शोध निबन्ध म यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि सत्रहवी सदी म मेडता म मुख्यत सनी कुआ की सिंचाई के आधार पर की जाती थी।[12] इसी तरह मारवाड के दक्षिणी जिलो के लिए उनकी मान्यता है कि यद्यपि इस क्षेत्र म पानी सतह स काफी नजदीक है लेकिन कुआ की सख्या उस अनुपात म नही है जितना कि मेवाड म है। टाड के इस कथन म यह सत्यता तो हो सकती है कि मेवाड एवं मारवाड के दक्षिण क्षेत्र म कुओं का अनुपात समान नहीं है लेकिन यह कि इस क्षेत्र म कुए कम थे सही नहीं प्रतीत होता। जालोर परगना इस क्षेत्र का हिस्सा था। इस क्षेत्र के लिए मेरा यह निष्कर्ष है कि सत्रहवी

---

12 दृष्टव्य मेरा निबन्ध इकनामिक कडिशस इन परगना मेडता 1658 63 प्रासिडिंग्स आव इण्डियन हिस्ट्री काग्रस 1975 पृ 216 17

सदी म जालोर म खेती कुओ की सिचाई पर अधिक निर्भर करती थी । सम्पूण परगने म 693 कुए थे जिनका प्रति वग मील छह कुए से ऊपर आता ह । यह स्थिति तो तब ह जबकि जालोर म विगत' म कुओ की गणना अपूण ह ।[13]

लकिन दूसरी तरफ बीकानेर एव जसलमेर के बारे म टॉड का वणन स्वभावत नितान्त भिन्न है । इस क्षत्र म पानी सतह स काफी दूर है । पानी क अत्यधिक गहरा होन के कारण सिचाई के साधनों का काम म लना अत्यन्त मुश्किल है । बीकानेर के समीप देशनोक म कुओ की गहराई लगभग तीन सौ फुट है ।[14] जसलमेर क बार म उनका वणन काफी दिलचस्प है । राज्य के बारे म यह आम धारणा है कि यहां कुछ भी पदा नही होता । पीने तक का पानी उपलब्ध नही होता । लकिन टाड का वणन इस चित्र का दूसरा पहलू दिखाता ह । राज्य की राजधानी क आसपास के क्षत्र मे पानी का रोक कर बाध बनाकर अच्छी किस्म की पदावार की जाती ह । यहा बडी सख्या म गहू चना जौ एव बागो म कई प्रकार क फल पदा किए जात रहे हैं । टॉड के इस वणन की सत्यता की गवाही सत्रहवी सदी क मारवाडवेत्ता मुहणोत नैणसी देते हैं । व लिखत हैं कि इस क्षत्र म पानी का एकत्रित करके यहा गहू कपास एव सभी प्रकार के अनाज एव फल - सब्जियां पदा की जाती ह ।[15] इस गवाही स टॉड क सर्वेक्षण म हमारा विश्वास और अधिक गहरा हो जाता है । काठा भी एसा क्षत्र था जहा सिचाई द्वारा खेती होता रही है । यहा सिचित भूमि का 'पीवल' कहा जाता रहा है । कुल मिलाकर टाड का सर्वेक्षण यद्यपि इस सम्बन्ध म पूण नहीं है फिर भी अत्यन्त शोध परक है ।

कृषि उत्पादन

टॉड सवप्रथम लगभग सभी राज्यो का भौगोलिक स्थिति का वणन करन के उपरान्त उस क्षेत्र म होने वाली मुख्य पदावार का वणन करते

---

13 देखिए मेरा लेख एग्रेरियन कन्डिशन्स ऑव जालोर इन द प्रोसिडिंग्स ऑव हिस्ट्री काग्रेस 1979, पृ 73 74

14 टॉड II पृ 157

15 मुहणोत नणसी, ख्यात, द्वितीय भाग, पृ 8

हैं। बीकानेर क्षेत्र के बारे में लिखा है कि कुछ हरे भरे स्थलों को छोड़कर अधिकांश क्षत्र रेतीला है। उत्तर पूर्वी क्षेत्र में राजगढ़ में नोहर एवं रावतसर की मिट्टी उपजाऊ है। इसके साथ ही साथ भूतल का पानी भी सतह के समीप है इसलिए यहाँ सिंचाई के साधन सक्रिय हैं। इसी तरह भटनेर एवं मोहिलावाटी का क्षत्र भी अत्यन्त उपजाऊ है। यहा होने वाली बरसाती बाढ़ से भूमि के उपजाऊपन में और अधिक बढ़ोत्तरी हो जाती है।

बीकानेर क्षत्र के बारे में यह आम धारणा रही है कि रेगिस्तान में सिर्फ एक ही फसल होती है। जबकि मध्यकालीन बहियात एव दस्तावेजो से यह बात उजागर होती है कि यहा कुछ क्षत्रो में दो फसलें उगाई जाती रही थी।[16] टॉड के मर्मेनएण से यह बात प्रमाणित होती है कि उन्नीसवी सदी के दूसरे दशक तक खती में पूर्ववत स्थिति कायम रही। टाड ने न केवल खेती की पैदावार के नाम गिनाए हैं बल्कि उनकी विशेषताओं का भी वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है कि रेगिस्तान में पैदा होने वाला बाजरा मालवा की उपजाऊ भूमि से अधिक अच्छा होता है। इसी तरह कपास की भी विशेषता का वर्णन किया है।

टॉड ने इसी प्रकार से सभी क्षत्रों में पैदा होने वाले अनाजो का वर्णन किया है। उनके द्वारा दी गई सूची यत्र तत्र बिखरी हुई है। सुविधा के लिए उत्तर-पश्चिमी राजस्थान के राज्यों (बीकानेर जोधपुर एव जसलमेर) में पैदा होने वाले अनाजों को निम्न तालिका में दिया जा रहा है। इसमें मुख्यत दो कालम बनाए गए हैं। एक में सिर्फ वह फसल दी गई है जो सभी राज्यो में उपजती है एव दूसरे में प्रत्येक परगने के नाम के अन्तर्गत सिर्फ वह फसल दी गई है जो उसमें पैदा होती है अन्यत्र में नहीं।

---

16 जीएी हासल भाछ री बही, न 12 वि स 1752 राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर जी एस एल देवडा राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था 1, अध्याय 6 तथा 71

सारिणी – 5

उत्तर - पश्चिमी राज्यों में कृषि - उत्पादन

सभी राज्यों में उपजने वाली फसल	जोधपुर	जैसलमेर	बीकानेर
गेहूं जौ चना बाजरा मोठ मूंग तिल कपास जवार	चावल	गवार	गवार चावल

सत्रहवीं सदी में नैणसी भी जोधपुर राज्य की परगनावार में इन्हीं अनाजों की सूची देता है। जैसलमेर के आसपास गेहूं व अन्य चीजें पैदा होती थीं। जोधपुर सोजत एवं जैतारण में अन्य उत्पादनों के अतिरिक्त चावल बोया जाता था।

आम्बेर के बारे में टॉड का कथन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वे लिखते हैं यहां खरीफ एवं रबी दोनों फसलें होती हैं जो महत्व की दृष्टि से समतुल्य हैं। यहाँ सभी प्रकार के अनाज पैदा किए जाते हैं लेकिन ईख कपास एवं नील बड़ी तादाद में उगाई जाती है। ये सब नकद फसलें थीं जिनकी कि बाजार में मांग थी। इसका तात्पर्य यह हुआ कि किसानों का झुकाव लगातार नकद - फसलों की तरफ बढ़ता जा रहा था। इस प्रवृत्ति की शुरुआत सत्रहवीं सदी से होती है जिसकी ओर सत्यप्रकाश गुप्ता ने ध्यान दिलाया है। डा गुप्ता ने विभिन्न नकद - दरों की प्रति बीघा दर का तुलनात्मक अध्ययन अपनी पुस्तक में प्रस्तुत किया है।[17] ईख की प्रति बीघा दर रु 1 48 से 4 73 रु के मध्य थी। टॉड ने यह दर रु 4 से 6/ रु के मध्य दर्ज की है।[18] इससे यह पता चलता है कि ईख की प्रति बीघा दर में काफी वृद्धि हो गई थी। स्वभावतः यह वृद्धि कीमतों में वृद्धि का ही परिणाम रही होगी। नील की खेती में वृद्धि यह दर्शाती है कि अभी तक इंग्लैण्ड से रंगाई की आधुनिक पद्धति न अपने कदम यहां नहीं रखे थे। लेकिन यह बात नितान्त सत्य प्रतीत होता है

17 सत्यप्रकाश गुप्ता, एग्रेरियन सिस्टम ऑफ ईस्टर्न राजस्थान (दिल्ली 1986) पृ 55 73

18 टॉड II पृ 348

कि किसान खाद्यान्न उत्पादन की कीमत पर नकद फसलें अधिक उगा रहे थे। मेवाड के किसानो के इस प्रकार झुकाव से यह बात और अधिक पुख्ता होती है। इससे यह बात प्रमाणित होती है कि उन्नीसवी सदी म पेशावार के पटन म परिवतन होना प्रारम्भ हो गया था।

वाणिज्य एव व्यापार

टाड न राज्य म होन वाल वाणिज्य एव व्यापार के मात्यिकीय आकडे सकलित किए हैं जो अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। सवप्रथम उन्होने मुख्य व्यापारिक केन्द्रो का वणन किया है जहा पर सर्वाधिक व्यापारिक गतिविधिया होती थी। व्यापारी अपना माल खरीदने एव वेचन क लिए दूर दराज के क्षत्रो से आत थ। इन सब गतिविधिया से राज्य को आमदनी होती थी इसलिए शासक वग व्यापारियो को अपने राज्य की ओर आकर्षित करने के लिए विभिन्न प्रकार की रियायतें देते थ। टाड ने राज्य को सायर दाण एव मापा से होने वाली आय क आकड दज किए हैं।

टाड लिखते हैं कि हर राज्य म कुछ व्यापारिक केन्द्र होत थे जहा से व्यापारिक वस्तुए एक स्थान म दूसरे पर जाती थीं। मेवाड म भील वाडा बीकानेर म चूरू आम्बर मे मालपुरा एव जोधपुर म पाली का वह स्तर हासिल था। उन्नीसवी सदी म पाली व्यापार के एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र के रूप म विकसित हो चुका था जहा पर सम्पूण भारत कश्मीर एव चीन से माल आता था और उस माल की यूरोप अफ्रीका एशिया एव अरब देशो के माल के साथ अदला बदली होती थी। इसी तरह बीकानेर मे राजगढ एक ऐसा बाजार था जहा पर देश के विभिन्न कोनो स कारवा आत थे। पजाब एव कश्मीर का माल हासी एव हिसार होकर आता था। पूर्वी क्षेत्र के व्यापारी दिल्ली एव रेवाडी स होकर आत थे। इन क्षेत्रो स रेशम नील, चीनी एव तम्बाकू आदि सामान आता था हाडौती एव मालवा से अफीम आता था। सिंध एव मुल्तान क व्यापारी अपना माल बडी तादाद म लात थ। साथ ही मेवाड की ऊन का यह एक बडा उत्पादन का केन्द्र रहा है जो व्यापार की एक बहुत लाभ कारी वस्तु था। टाड ने भी यहा के ऊन उत्पादन की काफी प्रशसा की है।

टाड इस व्यापार म निरतर हो रही अवनति की ओर भी सकेत करत हैं लकिन इस पतन क लिए जिन कारणो का उत्तरदायी ठहराते हैं

वे पर्याप्त नहीं है। वास्तव मे जो कारण सम्भवत: मुख्य रहा होगा उसे वे अनदेखा करना चाहते थे। इस पतन का मुख्य कारण अंग्रेजी माल से भारतीय बाजारों का भर जाना है। अंग्रेजी माल की यह बाढ़ 1813 ई के चार्टर एक्ट के पश्चात और अधिक भयानक हो गई। सम्पूर्ण भारत एक बाजार मे परिवर्तित हो गया जो पहले एक निर्यातक देश था। परिणाम स्वरूप यहां का पारम्परिक व्यापार अस्त-व्यस्त एवं बर्बाद होता चला गया।

राज्य के विभिन्न क्षेत्रो म वार्षिक मेलों को आयोजित किया जाता था जहा दूर-दराज से व्यापारी माल खरीदने एव बेचने आते थे। राज्य को इन मेलो से काफी आय होती थी। कुछ मेले तो किसी विशेष वस्तु के लिए प्रसिद्ध हो जाते थे उदाहरणार्थ मारवाड मे मूडवा एव बालोतरा के मेले पशुओं के क्रय-विक्रय के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। बीकानेर मे कालायत एव गजनेर के मेलों म आसपास एव शहर के लोग एकत्रित होते थे एव बड़े स्तर पर क्रय-विक्रय होता था। कहने का तात्पर्य यह है कि मेला राज्य के लिए एक आय श्रोत था।

निम्न सारिणी मे टॉड द्वारा सकलित 'सायर' के आकडों को सयोजित किया गया है। साथ म कुल राजस्व के आंकड़े एव सायर की आमदनी का प्रतिशत भी दिया जा रहा है-

सारिणी-6

कुल राजस्व में 'सायर' का प्रतिशत

क्रम सख्या	राज्य का नाम	कुल राजस्व आय	सायर की आय	'सायर का प्रतिशत
1	मारवाड	29 45,000	4,30 000	14 60
2	बीकानेर	6 50 000	75 000	11.54
3	जैसलमेर[19]	5,00 000	3,00 000	60 00
4	आम्बेर	20 55 000	1,90,000	9.25

19 टॉड द्वारा सकलित जसलमेर क आंकड़ अपूर्ण प्रतीत होते हैं। हो सकता ह इसीलिए सायर का प्रतिशत अधिक आ रहा हो।

उपरोक्त सारिणी से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जसल मेर में सायर से होने वाली आय काफी अधिक थी। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि राज्य में होकर बड़ी तादाद में माल का आवागमन होता था इसलिए सम्भवतः सायर से होने वाली आय अधिक हो। द्वितीय चूंकि यह एक शुष्क क्षेत्र रहा है इसलिए लगान से आय अत्यन्त ही कम होती रही होगी। इसके पश्चात मारवाड़ बीकानेर एवं आम्बेर[20] का स्थान आता है। क्योंकि पूर्व एवं पश्चातवर्ती समय के आंकड़े उपलब्ध नहीं है इसलिए इनका तुलनात्मक अध्ययन नहीं किया जा सकता।

उपरोक्त विषयों के अतिरिक्त भी टॉड ने महत्त्वपूर्ण सामग्री एकत्रित की है जो आर्थिक इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। उदाहरणार्थ नमक एवं खनिज उत्पादन उद्योग धन्धा एवं विभिन्न करों के आंकड़े आदि। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनके द्वारा संकलित सामग्री अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। आवश्यकता मात्र इस बात की है कि उनके आंकड़ों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तभी हम कुछ ठोस निष्कर्ष निकाल सकते हैं। यही जेम्स टॉड जैसे इतिहासकार को सही शोधपरक श्रद्धांजलि होगी।

---

20 आम्बेर के आंकड़ों से भी यह पता लगाना मुश्किल है कि राज्य में 'खालसा' से होने वाली आय कितनी थी। इसलिए केवल राज्य द्वारा प्रबन्धित क्षेत्र के आंकड़ों से सायर निकाला है।

—

एनल्ज के आलोक मे राजस्थान राज्यो के आय-स्रोत

—डॉ हुकमसिंह भाटी

डा जेम्स टाड प्रथम इतिहासकार थे जिन्होने राजस्थान के राजनैतिक इतिहास के साथ सामाजिक धार्मिक व आर्थिक पहलुओ पर प्रकाश डालने का प्रयास किया । उन्होंने अपने ग्रन्थ एनल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान मे जहा भूमि की उवरता कृषि के तौर तरीके औद्योगिक उत्पादन और व्यापारिक मार्गों का वर्णन किया है वहा राज्य के प्रमुख आय-स्रोतों के बारे मे महत्वपूर्ण जानकारी दी है । भू-राजस्व आय का प्रमुख स्रोत रहा है । राज्य का खर्चा वहन करने के लिये भूमि का एक बड़ा भाग खालसा मे रखा जाता था और शेष भाग राज्य की सुरक्षा हेतु जागीरदारो को उनकी सैनिक सेवाओं के बदले आवंटित किया जाता था । इसके अलावा वाणिज्यकर कृषि कर अग कर, धुआ कर और अनेक प्रकार की लागतो व परम्परागत व्यवहारों से राजा को काफी आमदनी होती थी । टॉड ने इस प्रकार के आय-सूत्रों को राजकीय दस्तावेजो के आधार पर बड़ी सजगता से सजोने का यत्न किया है ।

मेवाड

राज्य के आय स्रोतो के बारे मे टाड ने काफी अध्ययन किया परन्तु उन्हें विभिन्न प्रकार के फुटकर करो से प्राप्त आय के आकडे उपलब्ध नही हुए । टाड ने निम्नलिखित आय-स्रोतो का विवेचन किया है ।

(1) कृषिकर–टाड के अनुसार राज्य की निज अधिकार वाली भूमि (खालसा) ही राजशक्ति की धमनी और मांसपेशी स्वरूप है उसकी आय से राज्य कार्य सम्पादित किये जाते हैं । दूसरी तरफ भूमि का स्वामी किसान माना गया । मेवाड मे ही नहीं समस्त राजस्थान के लोग प्राचीन काल से कहते आये है कि भाग रा धणी राजा हो, भोम रा धणी मा छो अर्थात्

भूमि का कर अधिकारी राजा है भूमि के मालिक हम है । मेवाड़ में अनाज के ऊपर दो तरह से कर लिया जाता था। एक कूंत व दूसरा भुटटई(बटाई)। गन्ना पोस्त सरसों सन तम्बाकू रूई नील और फल फूलों की खेती पर प्रति बीघा दो रुपये से 6 रुपये तक कर लेने का प्रावधान था। बटाई प्रणाली के अनुसार जौ गेहूं तथा रबी की अन्य फसलों की पैदावार का एक तिहाई या 2/5 भाग वसूल किया जाता था।[1]

2 **वाणिज्य कर**– पहले मेवाड़ राज्य का व्यापारियों के साथ उदार तापूर्ण व्यवहार रहा। व्यापारी निर्धारित कर राज्य को देकर अपना कर्तव्य निभाते थे जिससे परस्पर के सदाचरण से उनमें विश्वास बढ़ता था। परन्तु बाद में आतंक बढ़ जाने से राजनैतिक परिस्थितियां बदल गईं और अधिक धन की मांग से करों का बोझ बढ़ गया जिससे व्यापारी वर्ग विरक्त हो गया। यद्यपि टाड ने वाणिज्य सम्बन्धी दाण[2] तथा दुमाला[3] आदि करों का उल्लेख नहीं किया है परन्तु स्थानीय स्रोतों में इनकी जानकारी मिलती है।

3 **खान**– आय के स्रोत में मेवाड़ की खानें प्रमुख स्थान रखती है। परन्तु इसके बारे में टाड को कम जानकारी थी क्योंकि टाड के समय जावर इत्यादि खानें सम्भवतः बन्द पड़ी थी। जावर की खान महाराणा लाखा के समय प्रारम्भ हुई। महाराणा जगतसिंह व महाराणा राजसिंह के समय इसकी आय क्रमशः 2 50 000 रु व 1 74 994 रु थी।[4अ]

---

1 एनल्ज एण्ड एन्टीक्विटीज आफ राजस्थान टू वाल्यूम इन वन भाग 1, पृष्ठ 398

2 एनल्ज भा 1, पृ 117

3 महाराणा राजसिंह री पटटा बही (स डा हुकमसिंह भाटी) टंकित पृ 6 7 प्रताप शोध प्रतिष्ठान उदयपुर

4 महाराणा अमरसिंह का पत्र कुशलसिंह शक्तावत विजयपुर के नाम (सोमवार 6 अक्टूबर 1707 ई) अप्र थाहरा पटटा रा इतरा गाव रो दुमाला हजुर चुकीयो है । इवे इण गामा रा महाजन कसबा थी दुमाला री चानण नही करे । प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर

4 अ वही महाराणा राजसिंह री पटटा बही टंकित पृ 20 पाद टिप्पणी एव परिशिष्ट 7

4 **बरार**–कतिपय कर बरार नाम से जाने गये। टॉड ने ऐसे निम्नलिखित करो का उल्लेख किया है—

(i) गनीम बरार–युद्ध सम्बन्धी कर जो युद्ध-विग्रह के समय जनता से लिया जाता था।

(ii) घरगुती बरार–प्रति घर से लिया जाने वाला कर।

(iii) हल बरार–कृषि सम्बन्धी कर। कृषक को पैदावार के अनुसार कृषि-कर चुकाना पडता था। युद्ध कर की वसूली खेती की पैदावार के हिसाब से की जाती थी।

(v) न्योता बरार–विवाह के समय लिया जाने वाला कर।

5 **नजराना**–किसी सामन्त अथवा सरदार के नवीन अभिषेक अथवा किसी जागीरदार के पटटे परिवर्तन के समय सामन्त निर्धारित रकम महाराणा को नजर करते थे उसे नजराना कहा जाता था। इसके अलावा भोमिया सरदार निर्धारित नियमानुसार राजधन देते थे।

6 **दण्डकर**–नियम भंग करने वाले और अपराधियो से आर्थिक जुर्माना लिया जाता था।

7 **खड़लाकड**–टॉड के अनुसार काष्ठ और खड का यह कर मेवाड राज्य में बहुत पहले से लागू था। जिस समय महाराणा युद्ध अभियान के लिये प्रस्थान करते उस समय प्रत्येक व्यक्ति सेना के व्यवहार के लिये काष्ठ व खड दिया करता था। बाद में शांति के समय भी यह कर लिये जाने लगा। आगे वे लिखते हैं-खड-लाकड का अभिप्राय रसद से है। युद्ध काल में प्रत्येक नगर व गांव से सेना के लिये रसद एकत्र की जाती थी जिसमे खाद्य पदार्थों के अलावा अन्य बहुत सी वस्तुए बटोरी जाती थी।[5] टॉड ने खडलाकड कर का अर्थ देने में भूल की है। अभिलेखागार उदयपुर में संग्रहीत अभिलेखीय बहियों के अध्ययन से पता चलता है कि यह कर लकड़ी व चारे पर लगने वाला था। ग्रामीण अपने पशुओं को परत भूमि में चराते थे और ईंधन की पूर्ति भी वनों से की जाती थी इसलिये गांव का जागीरदार अथवा खालसा गांव का मुखिया ग्रामीण जनता से खड लाकड कर वसूल कर राज्य कोष में जमा करता था।[6]

---

5 एनल्स, भा 1, पृ 118

6 बही महाराणा राजसिंह री पट्टा बही सम्पादकीय भूमिका टंकित पृ 9

8 **आबकारी**—मदिरा अफीम आदि अन्य मादक पदार्थों पर कर लिया जाता था जिससे राज्य को विशेष आय होती थी।[7]

रखवाली कर का उल्लेख करते हुए टाड ने लिखा है— पचायती व्यवस्था के शिथिल होने तथा चारों ओर अशांति फैल जाने राजाओं की शासन शक्ति कमजोर पड जाने और प्रजा के धन और प्राण की रक्षा मे असमर्थ होने के कारण राजपूत राज्यों मे जिस नये कर का जन्म हुआ उसे रखवाली के नाम से प्रसिद्धि मिला। इसका अर्थ है रक्षा करना आश्रय देना। धन प्राण और भूमि सम्पत्ति की रक्षा के लिये ही प्रजा सबल सामन्तों के आश्रय को ग्रहण करके रक्षा के बदले में यह रखवाली कर देने को विवश हुई। रक्षा करने वाले लोगों को अदायगी नगद रूपये अथवा खेती की पैदावार से रकम का प्रावधान था। रखवाली के नाम पर सामन्त (भोमिया) जिस भूमि पर अधिकार पा जाते उसका वे सदा के लिये स्वामी बन जाते थे।[8]

इसके अलावा मेवाड के महाराणा अपनी पुत्रियों के विवाह खर्च के लिये प्रजा से उसकी आय का छठा हिस्सा वसूल करते थे। मराठों के आतंक के कारण मेवाड राज्य की आय काफी घट गई थी। 1818 ई मे अंग्रेजो के साथ सन्धि होने पर काफी सुधार हुआ। 1822 ई मे रबी की फसल से 9 35 640 रु और वाणिज्य कर से 2 17 000 रु की आमदनी हुई[9]।

मारवाड

टाड द्वारा महाराजा मानसिंह के समय राज्य की आय दस लाख रूपये आकी गई। पचास वर्ष पूर्व महाराजा विजयसिंह के काल मे राज्य की आय सोलह लाख रूपये वार्षिक थी। सम्भवत खुशाली के समय 29 45,000 रु आय होने का उल्लेख हुआ है।

1 **खालसा भूमि का भूमिकर**—पहले अनाज कर बटाई के आधार पर कुल उत्पादन का चौथा या दसवा हिस्सा लेने का प्रावधान था। परन्तु महाराजा मानसिंह के काल मे उत्पादन का आधा भाग लिया जाने लगा। इसके अतिरिक्त किसानों को प्रति दस मन अनाज पर दो रुपये रखवाली कर चुकाना पडता था। महाराजा के पशुओं के लिये पहले प्रत्येक किसान से एक भूसा गाडी

---

7 एनल्ज भा 1 पृ 119
8 एनल्ज भा 1 पृ 141
9 एनल्ज भा 1 पृ 399

वसूल करने के स्थान पर अब एक रुपया लिये जाने का प्रावधान रखा गया, अकाल के समय रुपये के बदले करबी लेने की व्यवस्था थी [10]।

टाड ने इस तथ्य की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट कराया है कि खालसा क्षेत्र के किसानों से जागीर क्षेत्र के किसानों की स्थिति अच्छी थी उन्हें कुल उत्पादन के पांच भागों में से दो भाग जागीरदार को देने पड़ते थे और अन्य फुटकर करों के बदले में सिंचित क्षेत्र के प्रति सौ बीघा पर बारह रुपये चुकाने पड़ते थे।

2 **नमक की झीलें**—कुल आय का आधा भाग नमक की झीलों में प्राप्त होता था। खुशहाली के समय राजकीय दस्तावेजों के अनुसार विभिन्न झीलों से इस प्रकार आमदानी होती थी। [11]

पचपदरा	—	2 00 000 रु
फलोदी	—	1 00 000 रु
डीडवाना	—	1 15,000 रु
सांभर	—	2 00,000 रु
नावा	—	1,00 000 रु
कुल		7 15,000 रु

साभर लवण नाम से प्रसिद्ध नमक सिंधु से गंगा तक बिकता था। सबसे अच्छी किस्म का लवण पचपदरा झील का माना गया।

3 **सायर अथवा वाणिज्य कर**—राजकीय अभिलेखों के अनुसार अलग अलग परगनों से इस प्रकार आमदनी होती थी। [12]

1	जोधपुर	76 000 रु	7	जालोर	25 000 रु
2	नागौर	75 000 रु	8	पाली	75 000 रु
3	डीडवाना	10 000 रु	9	जसोल व बालोतरा के मेले	41 000 रु
4	परबतसर	44 000 रु	10	भीनमाल	21,000 रु
5	मेड़ता	11 000 रु	11	साचोर	6 000 रु
6	कोलिया	5 000 रु	12	फलोदी	41 000 रु
					4,30,000 रु

10 एनल्स, भाग 2 पृ 131

11 एनल्स, भाग 2 पृ 133

12 एनल्स भाग 2 पृ 132

4 **अंगाकर**—राज्य मे रहने वाले निवासियों (स्त्री - पुरुष) से प्रति व्यक्ति एक रुपया लेने का प्रावधान था ।

5 **घासमारीकर**—घास चरने वाले पालतु पशुओं पर घासमारी कर लागू था । करीब पौने दो वर्ष के अन्तराल में घासमारी कर दर में दुगनी वृद्धि हुई । निम्नलिखित तालिका से इस तथ्य की पुष्टि होती है ।

क्रम संख्या	पशु	महाराजा गजसिंह के समय घासमारी कर रु[13]	महाराजा मानसिंह के समय घासमारी कर रु[14]
1	गाय	0 12	—
2	भैंस	0 25	0 50
3	ऊंट	1 50	3 00
4	बकरी	0 02	0 06

6 **किवाड़ी कर**—यह कर प्रत्येक घर से वसूल किया जाता था । इसे सर्वप्रथम महाराजा विजयसिंह ने लागू कर प्रति घर तीन रु लिये जाने का प्रावधान रखा । महाराजा मानसिंह ने संकट काल के दौरान इसे बढ़ाकर 10 रु कर दिया । यह कर समान दर में वसूल नहीं कर गरीबों से दो रुपया और सम्पन्न परिवारों से बीस रु लिया जाता था ।[15] इस प्रकार मालगुजारी के विभिन्न स्रोतों से राज्य को 29 45 000 रु की आय होती थी । टाड ने इसका खुलासा इस प्रकार किया है—[16]

1- खालसा क्षेत्र के 1484 गावों व नगरों की आय	15 00 000 रु
2 वाणिज्यकर या सायर	4 30 000 रु
3- नमक की झीलें	7 15 000 रु
4 हासल अर्थात् विभिन्न मदों से आय (अन्यकर)	3 00 000 रु
	29 45 000 रु

टॉड ने इन आंकड़ों पर सन्देह प्रकट किया है क्योंकि उस समय में इसका आधा भी वसूल नहीं हो पाता था । टॉड ने सामन्तों और मन्त्रियों

13 मारवाड रा परगना री विगत से डॉ नारायणसिंह भाटी भाग 1 पृ 88, राजस्थान के मेड़तिया राठौड डा हुकमसिंह भाटी पृ 201
14 एनल्ज भाग 2, पृ 131
15. एनल्ज पृ 132
16 एनल्ज पृ 133

की जागीर आय 50 लाख रु दर्शायी है । ये आंकड़े वास्तविक आय के नहीं होकर जागीरों की आंकी गई अनुमानित आय (रेख) के हो सकते हैं । इनसे उपज अथवा आय करीब आधी होती थी ।

बीकानेर

बीकानेर में निम्नलिखित 6 प्रकार के करों से राज्य को आय होती थी ।

1 **खालसा भूमिकर**—पहले राज्य को खालसा-भूमि से करीब 2 लाख रु की आय होती थी । परन्तु अनेक गांव उजड़ जाने से कृषि पर उसका बुरा असर पड़ा और आय घटकर एक लाख के करीब रह गई ।

2 **धुआकर**—यह एक प्रकार का मकान (हाउस टैक्स) है जो राजा सूरतसिंह ने प्रत्येक घर से निकलने वाले धुएं पर जारी किया था । प्रति घर से एक रुपया वसूलने का प्रावधान था । इस कर से 1 00,000 रु की आय होना इस तथ्य की ओर संकेत करता है, कि उस समय घरों की संख्या 1 00 000 के करीब थी । टॉड ने बीकानेर राज्य के घरों की संख्या 1 07 850 दी है ।

3 **अंगाकर**—अंगकर अथवा शरीर कर राजा अनूपसिंह ने लागू किया । प्रत्येक स्त्री पुरुष से चार आना वार्षिक कर लिया जाता था । इन बकरियों अथवा भेड़ों को एक अंग मानकर और एक ऊंट को चार अंग के बराबर मानकर प्रति अंग चार आने कर लिये जाने का प्रावधान था । राजा गजसिंह ने इसे दुगना कर दिया । इस कर से 2,00,000 रु की आमदनी का उल्लेख हुआ है । धुआ कर और अंग कर के आंकड़ों से हम प्रति घर परिवार के सदस्यों की औसत संख्या का अनुमान लगा सकते हैं ।

4 **सायर**—पहले यातायात अथवा वाणिज्य कर से राज्य को अच्छी आय होने के प्रमाण मिलते हैं परन्तु लुटेरों के आतंक से पंजाब के साथ सम्पर्क टूटने के कारण इसकी आय में काफी गिरावट आई । दो लाख की जगह अब 75 हजार की आय होने लगी । सौ मन अनाज के विक्रय पर चार रुपये वसूल किये जाने का प्रावधान था ।

5 **पुसेती (हलकर)**—पहले बांटा प्रणाली (हासिल) के अनुसार अनाज की पैदावार का एक-चौथाई अनाज लिया जाता था । परन्तु भ्रष्टाचार बढ़ जाने के कारण राजा रायसिंह ने इसकी जगह प्रति हल पांच रुपये कर

लागू किया। इससे किसानों को भी राहत मिली और राज्य को अच्छी आमदनी होने लगी।

6 **मलबा**—राव बीका के समय जाट-कृषकों ने जब आत्मसमर्पण किया उस समय उन्होंने राव बीका को अपना स्वामी मानते हुए भूमि कर देना स्वीकार किया जो मलबा के नाम से जाना गया। कृषि योग्य सौ बीघा भूमि पर दो रुपये मलबा कर लेने का प्रावधान था।

इसके अलावा तीन वर्ष में केवल एक बार प्रतिहल पांच रुपये के हिसाब से धांधुई कर लिया जाता था। बेनीवाल इत्यादि जाति के 120 गांव इस कर से मुक्त थे। इनसे बन्ध रखवाली जैसी दूसरी सेवाएं उनसे ली जाती थी। प्रमुख सामन्तों को भी यह कर नहीं चुकाना पड़ता था।[17]

टाड ने राज्य की कुल आमदनी का ब्यौरा इस प्रकार दिया है।[18]

1	खालसा	1,00 000 रु
2	धुआंकर	1 00 000 रु
3	अंगकर	2 00 000 रु
4	वाणिज्यकर	75 000 रु
5	पुसती कर	1 25 000 रु
6	मलबा	50 000 रु
	कुल	6,50 000 रु

इसके अतिरिक्त अपराधियों से दण्ड स्वरूप रुपये वसूले किये जाते थे। और युद्ध अभियानों के समय विजय व पराजय दोनों स्थितियों में विजय का उत्सव मनाने व पराजय के समय क्षतिपूर्ति करने हेतु आवश्यकतानुसार जनता से कर वसूल किया जाता था। टाड ने इस कर प्रणाली को बुरा बताते हुए आलोचना की है।

जैसलमेर

जैसलमेर राज्य में वर्षा कम होने और भूमि कम उपजाऊ होने के कारण यहां की आय सन्तोषजनक नहीं थी। तथापि वाणिज्य कर से राज्य को अच्छी आय होने के संकेत मिलते हैं।

---

17 एनल्ज भाग 2, पृ 159 161

18 एनल्ज भाग 2, पृ 160-61

1 **कृषिकर**—खेती की उपज का पाँचवा भाग से सातवा भाग लिये जाने का प्रावधान था । राज्य का हिस्सा 'लौटाते समय पालीवाल ब्राह्मण साथ म रहते थे उनके द्वारा वह हिस्सा खरीद लिया जाता था और ये धनराशि राजकोष मे जमा करा दी जाती थी । इस प्रकार कृषि कर से रोकड़ राशि प्राप्त हो जाती थी । कृषि कर के रूप म प्राप्त होने वाली आय के आकड़े टाड को नही मिल ।

2 *वाणिज्यकर*-हैदराबा", रोडी भक्कर, शिकारपुर और कुछ दूसरे स्थानो से वाणिज्य की वस्तुए जसलमर की ओर आती थी । इसके अलावा कोटा व मालवा का अफीम बीकानेर की मिर्चा जयपुर की बनी इस्पात की वस्तुए जसलमर के रास्ते से शिकारपुर व सिन्ध के नगरो म जाती थी । पहल वाणिज्य शुल्क से राज्य को करीब तीन लाख रुपये की आय होती थी, पर बाद म इसम भारी कमी आ गई ।

3 **धुआ अथवा थालीकर**—यह एक प्रकार का मकान कर था जो प्रत्येक परिवार से वसूल किया जाता था इसस राज्य को बीस हजार रूपये वार्षिक आय होती थी ।

4 **दण्ड कर**—पहल अपराधियो से दण्ड वसूल किये जाने का मापदण्ड था । परन्तु बाद म इसका कोई निश्चित मापदण्ड नही रहा । बजट घाटे की पूर्ति हेतु जब भी आवश्यकता होती कर वसूल कर लिया जाता । वि स 1857 और 1863 म क्रमश 60 000 रु व 80 000 रु दण्डकर के रूप म वसूल किय गये [19] ।

इस प्रकार टॉड ने विभिन्न करो म प्राप्त आय क आकड इस प्रकार

---

19 एनल्ज भा 2, पष्ठ 225 26

दिये हैं [20]।

कृषिकर	अज्ञात
वाणिज्यकर	3 00 000
दण्डकर	80 000
धुआंकर	20 000
	4 00 000

महारावल जवाहरसिंह (1914-49 ई.) के समय राज्य की आय 3 71,000 रु. होने का प्रमाण मिलता है।

---

20 टाड ने जसलमेर राजा का वार्षिक पारिवारिक व्यय का हिसाब इस प्रकार दिया है–

1	बार (राजा के निजी अनुचर अंग रक्षक गुलाम आदि एक हजार व्यक्ति)	20 000 रु
2	रोजगार सरदार	40,000 रु
3	वतनिक सेना	75 0,0 रु
4	हाथी घोड़े ऊंट	35 000 रु
5	घुड़सवार 500	60 000 रु
6	रनिवास	15,000 रु.
7	तोशाखना	5,000 रु
8	दान पुण्य	5,000 रु
9	पाकशाला	5,000 रु
10	अतिथि	5 000 रु
11	उत्सव	5,000 रु
12	ऊंट घोड़ों की खरीद	2 000 रु
		2 91 000 रु

जयपुर—टाड ने जयपुर राज्य म प्रचलित विविध करा का विवरण नही दिया है केवल विभिन्न स्रोता स प्राप्त आय क आकड दिय हैं जो इस प्रकार है[21]–

खालसा भूमि से आय	39,19 000
वाणिज्य कर	1,90 000
राजधानी की कचहरी नगर चुगी आदि स आय	2 15 000
सामन्तो से वार्षिक कर	4 00 000
अन्य कर	1,59,00
	48 83 000

इसके अलावा सामन्ता की जागीर आय, ब्राह्मणा को दी गई भूमि की आय क्रमश 17 00 0C0 व 16 00 000 रू थी। ब्रिटिश सरकार क साथ राज्य की सधि हुइ तब वार्षिक कर निर्धारण करत समय 40,00 000 रू की आय मानी गई जो राजस्थान के दूसरे रजवाडा से कही अधिक थी [22]

राज्य आय मे जागीर भूमि की आय सम्मिलित नही की गई है। जागीरदार व पटटायतों का रोकड वतन नही देकर भूमि (गांव) आवटित की जाती थी। अत राज्य की कुल आय ज्ञात करत समय शोधार्थियों को जागीर आय के आकडो पर दृष्टि डालना पडगी।

आय स्रोतों के परस्तुतीकरण की एक यह बडी विशषता रही है कि टॉड ने प्रत्येक राज्य के आय आकडा का आकलन करन समय पूववर्ती स्थिति के बारे म भी जानकारी दी है। पहल राजस्थान राज्यों का आय सतोषजनक थी परन्तु बाद म लुटेरा के आतक और कृषक व व्यापारी वर्ग क साथ राज्य-प्रशासन के व्यवहार म परिवतन आने से आय म गिरावट आई। समग्रत आयस्रोता पर दृष्टि डाले तो ज्ञात होता है कि उस समय राज्यो को सर्वाधिक आय खालसा भूमि स होती थी। इसकी तुलना म दूसरे करो से प्राप्त आकडे न्यून हैं। परिशिष्ट म मन राजस्थान राज्यों क आय-स्रोता की तालिका अकित कर दी है इसस आय विषयक पहलुओं का अध्ययन करने म आसानी रहेगी [23]।

---

21 एनल्ज, भाग 2, पृष्ठ 350 351

22 एनल्ज भाग 2 पृष्ठ 351

23 दृष्टव्य परिशिष्ट (तालिका)

परिशिष्ट

राजस्थान राज्यों के आय के आंकड़े

राज्य	खालसा भूमि कर	वाणिज्य कर	खानें/नमक की झीलें	भू आगर	आगकर	अन्य	कुल
मेवाड़	9,36 640	2 17 000	O	–	–	★	11 53 640
मारवाड़	15 00 000	4 30 000	7 15,000	–	–	3 00,000	29 45 000
बीकानेर	1 00 000	75,000	–	1 00 000	2 00,000	1,75,000	6 50,000
जसलमेर	□	3,00,000	–	20,000	*	80 000	4 00 000
जयपुर	39 19,000	1,90 000	–	–	–	7,74 000	48 83 000

O गवार अजावर आदि खानें बन्द नहीं थी ।

★ अन्य करों से प्राप्त आमदनी के आंकड़े टॉड को उपलब्ध नहीं हुए ।

* आंकड़े उपलब्ध नहीं हुए ।

□ जसलमेर में आगकर वसूल किया जाता था परन्तु उसके आंकड़े उपलब्ध नहीं हुए ।

कर्नल जेम्स टॉड का कार्यालय लेखा विवरण

—डॉ ब्रजमोहन जावलिया

पश्चिमी राजपूताना में राजनीतिक प्रतिनिधि के रूप में कार्यरत रह कर कर्नल टाड द्वारा तयार कराये गये अपने कार्यालय के लेखा विवरण जुलाई 1919 से 1 जून 1922 तक की रूपरेखा जो मुझे प्राप्त हुई है उसके आधार पर किंचित जानकारी यहाँ प्रस्तुत की जा रही है।

कर्नल जेम्स टाड के अधिकार क्षेत्र में कम्पनी की ओर से जो (पालिटीकल)एजेंट स्वयं तथा अधिकारी कर्मचारी चिकित्सक हरकारे या अन्य लोग नियुक्त थे - प्राप्त लेखा विवरण के अनुसार उनके नाम, (यत्र तत्र), पद और मासिक वेतन निम्नानुसार था—

	सनद रुपया	उदयपुरी रुपया
पालिटिकल एजेन्ट—	3500/-	4443/11/7
पालिटिकल एजेन्ट के सहायक (Assistant) प्रत्येक	400/-	507/13/8
मजन–	680/-	863/5/7
दफ्तर का अमला		
नल्लाह–1		45/-
जमादार–1		20/-
हरकारे 8 प्रत्येक को		8/-
डाक कर्मचारी		
उदयपुर से आबू के लिये		
मुंशी – 1		25/-
हरकारे 40 पांच पड़ावों(Stazes)के लिये प्रत्येक		5/-
सरबराही		10/-

उदयपुर स कोटा क लिय-

मुत्सद्दी — 1	20/-
हरकारे 27 पडावों (Stazes) के लिये प्रत्येक	ɔ/-
सरबराही — 1	10/-

कोटा स बू दी क लिये-

हरकारे — 4 ने पडावा के लिये - प्रत्येक—	5/-

उदयपुर स भीलवाडा क लिय

हरकारे 33 ग्यारह पडावा (Stazes) के लिये प्रत्येक	5/-

सिरोही राव के साथ

मुत्सद्दी—1	40/-
हरकारे 4 प्रत्येक	6/-

मवाड क सीमान्त से नीमच की छावणी में भवन निर्माण सामग्री और मजदूर आदि (Work man) भजन क लिय

हरकार 2	प्रत्येक को	7/-

चित्तौड भीलवाड़ा और अजमर की सीमा पर होन वाले झगड़ों क अवसर पर प्रषित सैनिक टुकडियों क मार्ग दर्शन और सूचना हेतु

हरकारे 4	प्रत्येक	6/-

कनल टाड के स्वय क नियन्त्रण म प्रदेश के विभिन्न भागों म विभिन्न उद्देश्यों से नियुक्त

हरकारे 16	प्रत्येक	8/-

समाचार लखक (News writes) प्रतिमास रु (उदयपुरी)

उदयपुर म एक हरकारे सहित — हरबक्तसिंह	60/-
कोटा म एक हरकारे सहित — हेमराज	60/-
बू दी म एक हरकारे सहित — चुन्नीलाल	60/-
बू दी म एक हरकारे सहित — लालजीमल्ल	60/-
जोधपुर म एक हरकारे सहित —कुरु म कुरु म [1]	60/-

सदर कार्यालय के अमल में कार्यरत व्यक्ति और उनक पद—

रहम रहमान	मु शी	225/-
महेशच द बनर्जी	इ ग्लिश राइटर	150/-
उद्धवच द्र बोम	इ ग्लिश राइटर	112/-

1 यह व्यक्ति मवध का निवासी था। घर जात समय उसको रु 60 अतिरिक्त दिया गया ।

हिम्मतराम मेवाडी	राइटर	80/–
नारायणदास दूजरार		45/–
बिनरावनदास	फारसी मुन्शी	45/–
नाथूराम	हिन्दवी राइटर	25/–
राधाकिशन	हिन्दवी राइटर	25/–
खानचन्द	दफ्तरी	17/–

खरीद फरोख्त–

कर्नल जेम्स टाड ने अपने कार्यालय के लिये जुलाई 1819 और सितम्बर 1820 में कलकत्ता स्थित फर्म **दी डोरमिका एण्ड कम्पनी गोल्डस्मिथ एण्ड ज्वेलर्स** कलकत्ता से 6720 रु आने 1 पाई मूल्य की वस्तुएं खरीदी। ये सभी वस्तुएं प्राय रजत निर्मित थी। उन क्रीत वस्तुओं के बिल की प्रतिलिपि यथावत् उध्दृत है—

Captaion games Tod Calcutta 30 th September 1820 bought of Dormica & Co Gold smith & jewellers

1819 July To 1 Octogon shape silver Hircarrah plate with silver guilt Company s coat of arms crest & Political Agent W R S embassed on ditto — 30/ /

To 1 Silver office seal with horn handle and company s coal of arms engraved for the political Agent office — 25/ /

17 To 1 Octagon shape silver Hircarrah plates with silver guilt compny s coat of arms crest and polical Agent W R S embossed on ditto at 30/ — 330/ /

To 4 Silver circular vegetable dishes with covers & receptacles for Hot watered solid Gradoon edges pawfeet & ca with workmanship and horn handle snt 897 2 — 1241/8/9

To 2 Silver oblong shape Bufstatic dishes with covers and livers to match wg 578 with work man hip and horn handles — 730/ /

To 2 silver oval curry dishes to match wg 542 b with workmanship and horn handles — 749/12/3

To 1 Handsome silver sauce or silver pan with shipline handles egg frame and stand w g 16 with workmanship and horn handles and tops — 235/6/

To	1	Silver and jant dish with gradoon edges to ma tch wg 60 with workmanship	83/2/6
To	1	Silver circular pye dish wg 47 with do	64/10/
To	2	Silver sauce coals with covers and liners wg 192 with do & horn handles	267/ /
To	2	Silver sance ladles wg 7 with workmanship	9/10/
To	4	Silver muffineers gilt inside w g 39 8 with do	67/4/
To	4	Silver salt collars w g 56 with do and gilding	87/ /
To	4	Silver salt ladles mg 4 with do do	7/8
To	12	Silver egg cups mg 70 with do do	114/4/
To	1	Silver potent shape toast racks w g 58 13 do	80 10/
To	1	Pair silver Battle stands w g 39 12 with work manship mahogony bottoms and cloth for do	58/10 6
To	1	Pair of silver gilt do w g 25 12 with workman *ship gilding mahogony bottom & cloth*	81/2/6
So	3	Silver mounted cork.	12/ /
To	3	Silver gilt do	18/ /
To	2	Pierced silver gilt oliverspoons	20/ /
To	1	Fashionble silver butterurn wg 190 with workm anship gilding lead snroy and horn handles	270/4/
To	2	Silver gravy spoons w g 24 12 with workma nship	34/ ,6
To	1	Silver salted Torch w g 6 with do	18/10/3
To	1	Silver tumbler s cover mg 90 wirh do	128/4/
To	12	Silver claret glass do 61 12 with do—	84/2/
To	12	*Silver m divera do 48 6 with do*	*66/8/3*
1819 To 17 th August		Engraving coat of arms brests and mottos	186/ /
To		Silvering for keys	90/ /
To	2	*Pounds of fine polishing alk 2 Boxes ot super* fine p ate power	6/ /-
		2 strong iron bound teek wood pl. e che ts w th lifting Trays partitions lined with green barg s spring patent Padlock and keys brass name pla tes with company s coat ot arms brest and math engraved W R S	196/ /
1820 To Jun 30	4 Sep 30	Silver Ice forms with covers Wg 37 6 with workmanship	57/6,

2 Silver of oblong shape dishes with Gradoon edges do	419/8/
Making ditto	157/5/
Horn handle wg	4/ /
2 Silver smale do wg	287/ /
Making do	85/2/
Horn handles	2/ /
1 Silver milk ladle wg	12/4/
Making do -	4/9/7
1 Silver sugar urn - wg	100/8/
Making do	87/11/
Horn handle	2/ /
1 Silver Piereed sugar ladle	12/ /
1 Silver Nutring grates	32/ /-
1 Silver butter knife	6/ /
Engraving coat of arms on ditto	31/8/
1 Silver gilt octagon shape Hircarrah plate with company s coat of arms	30/ /
Packing case	1/ /-
g Total	6720/2/9

sd

E E & content received

T dormica & co

True copy

सितम्बर 1820 म सरकार स प्राप्त स्वीकृति क आधार पर दिसम्बर 1820 म निम्नांकित खरीद की गयी।

23 ऊट — जिनम से 2 मर गय—	रु 2308/—
डबल पोलिड पर्पेट ट ट—	1158/—

कतिपय अन्य वस्तुए भेंट आदि देन क लिय खरीद कर टॉड क तोशाखान म जमा की गयी। जिनका विवरण दिसम्बर 1819 के टॉड क तोशाखान क लेखे म अंकित किया गया।

शाल का एक जोड़ा		110/–
दो दुपट्टे		110/–
एक पगड़ी		15/–
शाल क जोड़ 3	दर प्रति जोड़ा 120/-र	360/—

किनमाब के टुकड़ 3	326/11/–
गुजराती मशरूम 4 टुकड़	47/80/
पगडियाँ 6	99/12/–
साड़ी 1	108/80/–
मलमल (Muslins) 2	40/11/—
खिलमता पर टकन न्तु रेशम के मानपाश 20 बनवाय जिन्हे	
टाड के तोशखाने म जमा करवाया	140/—/—

कोटा और बूदा म राजाम्रा तथा म्रन्य व्यक्तियो क भेंट हेतु युरोप म निर्मित वस्तुए सरकारी स्वाकृति स मगवाई गई । 1475/-

पोलिटिक्ल एजन्ट न कार्यालय में देश के म्रागारा मथुरा फरुखा-बाद आदि कोषागारो पर विभिन्न व्यक्तिया के पक्ष म बिल प्रषित करके सभी राशि प्राप्त की जाती थी । उनका तथा म्रन्य माध्यमा से प्राप्त म्राय का भी उल्लेख मिलता है । November 1920 के म्राय खात म पब्लिक कटल (Public Cattle) के विक्रय स प्राप्त राशि के म्रन्तगत—

हाथी	रु 800/—
एव घाडा	रु 500/—

म बचने का भी उल्लेख है।

इन्ही बिला के प्रसगा म प्रभृति म्रनेक व्यक्तियो म्रौर सस्याम्रा क नाम प्राप्त है जिनके पक्ष म देश क विभिन्न स्थानो के कोषागारों म बिल प्रस्तुत किये गये थ । ये कोषागार वहाँ क कलक्टरा द्वारा सचालित थ।

व्ययतालिकाम्रा म कार्यालय में स्टेशनरी म्रादि पर खच दानपुण्य इनाम म्रन्धबधिर म्रादि म्रपगव्यक्तियों को सहयोग राजामहाराजा राणा राजराणा म्रादि स जीनत खिलमत म्रादि लकर म्रान वाल कमचा-रियों को इनाम म्रादि क विवरण भी लिखे गय हैं ।

यत्र-तत्र सनदी रुपये को उदयपुरी जाधपुरी म्रादि मुद्राम्रा में परि-वतन म्रथवा इन देशी सिक्कों के सनदी सिक्कों म परिवतन पर लगन वाल बट्टे की राशि का भी उल्लेख प्राप्त है जा 21 रु 8 प्रतिशत स लगा कर 30 रु प्रतिशत तक मिलती है ।

उक्त लखा तालिकाम्रों की पूर्ति म Contingent charges का विव रण तथा खर्चों को Abstracts भा प्रस्तुत किय गय हैं । यहा नवम्बर 1820 से म्रगस्त 1821 तक के खर्चों के एस Abstracts प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

Abstract charges general for the month of Nov 1820

SALARIES

Political Agent - western Rajpoot States sa	Rs 3500/	4443/11/7
Assistant to dittoo as per enclosure no 1	400/	507/13/8
Surgeon to ditto as per do no 2	680/	863/5/7
writers moonshee and lallahs as ec no 3		724/ /
News writers as end do	4	- 232/12/
contingent charges		6771/10/10
As per enclosures no 5		1122/8/3

EXTRA CHARGES

To Amount purchase of 23 camels in december laol sanctioned by government as per letter sept 1820 and with exception of 2 since di ed transfarred to the commissariate as enclosed receipt Sonat Rs 2300 or 2794 8 0

To Amount purchase of a double polid purpet te nt sanctioned by Government letter dates sept ember 1820 as enclosed accompanying voucher sont ruphees 1158 or 1406 15 6

4201 7 6

Total Oodipoor Rupees 12095 10 7

oodipoor december 1st 1820 erros excep tes(signed) James Tod west Raj States Pol Agent

Abstract of charges general for the month of December 1820

Abstract Dec 1820

Dawk chayes	812/8
Hircarreh etc	248/2/0
Atra bettle etc for visitor	10/ /
Enaum & other chasitz	52/13/
Stationery for the persian and hindveedufter	18/11/6
	1142/2/6

JUNE 1921 Sent on 1st July 1921

Salaries	6771/10/10
Stationery for the Persion & Hindvee dufters	25 /
Atr bettle etc for visitors	10/ /
Contingent charges as per enclosure no 5	1728/7/
Total ooditoor	8535/1/10

JULY 1921

Salaries	6910/15/4
Stationery for Per & Hindvee dufter	25/ /
Atr bettle for visitor	10 /-
Contingent charges	1537/7/6
Total	8383/6/10

AUG 1921

Salaries	6910/15/4
Stationery for the P & H dufter	25/
Atr bettle etc for visitors	10/ /
Contingent charges	6436 5/6
Total	13382/4/10

उक्त लेखा तालिकाओं की पूर्ति के क्रम में Contingent charges का विवरण तथा सबके अन्त में इन खर्चों के Abstracts भी प्रस्तुत किये गये है। नवम्बर 1820 से मई 1822 तक के ऐसे खर्चों के Abstracts जो लेखा विवरण में प्राप्त है का वृतांत भी मिलता है।

प्रस्तुत लेखा विवरण से यह स्पष्ट होता है कि कर्नल जेम्स टॉड की प्रवृत्ति प्रत्येक कार्य का सम्पादन सुचारु रूप से करने की थी। उसने जिस प्रकार अपने द्वारा अपनाये गये भू-सर्वेक्षण और मानचित्रीकरण के कार्य को सुसम्पादित किया निश्चित योजना और दूर दृष्टि से मार्गों के और सन्धि समझौता विषयक कार्यों को निपटाया अपने द्वारा संग्रहीत ऐतिहासिक और पुरातात्विक सामग्री का सम्पादन कर विश्वजगत के सम्मुख प्रस्तुत किया उसी प्रकार अपने कार्यालय के आय-व्यय लेखा विवरण को भी व्यवस्थित रूप देते हुए उसे लिखित रूप से भी सुरक्षित किया।

मैं अपने मित्र डॉ इन्दुशेखर के प्रति आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझता हूं जिनसे मुझे यह सामग्री प्राप्त हुई।

टॉड द्वारा वर्णित राजस्थान के दुर्भिक्ष

—डॉ कमला मालू

कर्नल टॉड के एनाल्स का मुख्य उद्देश्य राजपूताना का राजनीतिक इतिहास उजागर करना रहा है। राजस्थान के इतिहास में राजपूत नायकों की शौर्य वीरता की विस्तृत चर्चा हुई है। किन्तु साथ ही कुछ कठोर एवं कटु सत्य प्रसंगों का वर्णन करना भी था जिसके बिना राजपूताने का इतिहास पूरा नहीं हो सकता। वह विषय है राजपूताने में दुर्भिक्षों का वृतान्त।

टॉड ने अपनी ऐतिहासिक ग्रंथ एनाल्स में उन कुछ अकालों का वर्णन किया है जिन्होंने 17 वीं शताब्दी के बाद विशेषकर मेवाड़ की भूमि का विध्वंस किया। इन दुर्भिक्षों का वर्णन करते हुए टॉड ने अत्यधिक प्रभावों में रहने वाले व्यक्तियों के गहन कष्टों एवं उनकी दयनीय स्थिति का जीवन्त चित्रण किया है।

टॉड ने अकाल को राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र की एक महान प्राकृतिक बीमारी बताया है।[1] (द ग्रेट नेचुरल डिजीज ऑफ द वेस्टर्न रीजन ऑफ राजपूताना) उसने रेगिस्तान में इस समस्या के विषय में भी विस्तृत जानकारी दी है। उसके मत में इस क्षेत्र में अकाल का मुख्य कारण पानी का अभाव है। मरुस्थल में कुओं की गहराई का भी उसने वर्णन किया है।[2]

टॉड ने मेवाड़ की जलवायु का वर्णन करते हुए लिखा है कि यहाँ

---

1 टॉड, एनाल्स एण्ड एन्टिक्विटीज ऑफ राजस्थान भाग द्वितीय पृष्ठ 264

2 उपरोक्त पृष्ठ 264 मरुस्थल में कुओं की गहराई 65 से 135 फीट थी, कुछ कुएं 700 फीट गहरे भी होते थे।

पर विभिन्न प्रकार की मिट्टी है तथा इस क्षेत्र में पानी का अभाव न ही है। हम जानते हैं कि मेवाड़ की भूमि राजस्थान का मरुद्यान कहलाता है। फिर भी मेवाड़ को अनेकों बार अकाल का सामना करना पड़ा [3]।

सर्वप्रथम अकाल जिसका उल्लेख टाड ने एनाल्स में किया है वह 11 वीं शताब्दी का भयंकर दुर्भिक्ष था। यह अकाल राजस्थान के पश्चिमी मरुप्रदेश में पड़ा था और वहां की जनता बारह वर्ष तक इस अकाल के कष्टों में पीड़ित रही। चूंकि यह अकाल बारह वर्ष तक चला था और बहुत ही प्रचण्ड दुर्भिक्ष था तो अवश्यमेव इसने सम्पूर्ण राजस्थान को प्रभावित किया होगा। [3]

इसके बाद टॉड ने मेवाड़ के जिस सर्वप्रथम भयंकर दुर्भिक्ष का वर्णन किया है वह 1661–62 ई. में पड़ा था। टाड के वर्णन से पूर्व भी इस महाकाल का वर्णन हम राजप्रशस्ति द्वारा प्राप्त करते हैं। महाराणा ने काकरोली में राजसमन्द झील का निर्माण करवाया था। उस पर उत्कीर्ण लेख राजप्रशस्ति से हमें ज्ञात होता है कि 1661–62 ई. में महाराणा ने अकाल राहत कार्य के रूप में इस विशाल झील का निर्माण कराया था।

कर्नल टॉड ने मेवाड़ के इस अकाल की परिस्थितियों का सजीव चित्रण किया है। [4] टाड के अनुसार महाराणा चन्द्रमा की कृपा प्राप्त करने के लिए मन्दिर में गए क्योंकि आषाढ़ का महीना समाप्त हो गया था और आसमान से एक भी बूंद पानी नहीं बरसा। इसी प्रकार श्रावण और भाद्र के महीने भी व्यतीत हो गए। पानी के अभाव में सर्वत्र निराशा छा गई और लोग भूख से पागल हो गए थे। ऐसी सामग्री जो खाद्य के रूप में नहीं जानी जाती थी लोगों द्वारा खाई जाने लगी। पति ने पत्नी का त्याग किया और माता-पिता ने अपनी सन्तानों को बेच दिया। धीरे धीरे बुरा समय आ गया और यह अकाल दूर-दूर तक फैल गया। यहां तक कि कीट-मकोड़े भी मरने लगे क्योंकि उनके खाने के लिए भी कुछ नहीं बचा था। हजारों व्यक्ति भूख के शिकार हो गए।

---

3 अ टाड एनाल्स भाग 2 पृ 264
  ब इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया प्रोविंशियल सिरीज राजपूताना पृ 62
4 टाड एनाल्स - भाग एक पृ 310 11

जिनको खाद्य पदार्थ उपलब्ध होते थे अब वे दो बार खाते थे । पश्चिमी हवाएं चलने लगी जो घातक थी । आकाश इतना स्वच्छ था कि तारा-मण्डल रात्रि का स्पष्ट दिखाई देता था तथा दिन में भी बादल दृष्टिगत नहीं होते थे । वर्षा के लोग बादलों की गड़गड़ाहट व बिजली की चमक भूल चुके थे । इन अशुभ लक्षणों ने लोगों को भयभीत कर दिया था । नदियां झीलें और फव्वारे सूख चुके थे । पुजारी अपने कर्तव्यों को भूल गये । अब कोई जातिगत भेद दिखाई नहीं देता था । तथा शूद्र और ब्राह्मण में अन्तर करना कठिन था । शक्तिशाली बुद्धिमान उच्च जाति जन जाति के सब भेद समाप्त हो चुके थे । प्रत्येक का ध्येय केवल भोजन प्राप्त करना था । चारों वर्णों की पृथक पहचान समाप्त हो गई भूख में सब कुछ खो गया । फल-फूल तथा अन्य वनस्पति यहां तक कि वृक्ष की छाल का भी भूख की तीव्रता मिटाने के लिए उपयोग किया गया । मनुष्य-मनुष्य को खाने लगा । लोग नगरों से भागने लगे । परिवारों का समूल विनाश हो गया मछलियां समाप्त हो गई थी ।[5]

टॉड आगे वर्णन करता है कि इस भयानक एवं अनिष्टकारी महामारी से मेवाड़ मुक्ति की सांस भी नहीं ले पाया था कि इस क्षेत्र में मुगल सम्राट औरंगजेब के विनाशकारी धर्म-युद्ध प्रारम्भ हो गये । अकाल से पीड़ित किन्तु इस पवित्र मेवाड़ भूमि को औरंगजेब के विध्वंसक युद्धों ने और अधिक विनाश की ओर धकेल दिया ।

टॉड राजसमन्द झील का अकाल सहायता कार्यक्रम के रूप में विस्तार से वर्णन करता है । टॉड ने इस झील के निर्माण को एक महान राष्ट्रीय कार्य की संज्ञा दी है जो सच भी है । टॉड इस विशाल झील की सुन्दरता का विस्तृत वर्णन करते हुए प्रशंसा करता है । वह कहता है कि इस झील की मुख्य सुन्दरता इसके परोपकारी उद्देश्य में निहित है । जिसके लिए इसका निर्माण हुआ है । अर्थात जब राज्य के दैव प्रकोप दुर्भिक्ष अथवा महामारी प्रभावित हो तो राज्य द्वारा भूखी प्रजा का करुणा

5 अ टॉड एनाल्स भाग 1 पृ 310 11

ब इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, प्राविंशियल सिरीज, राजपूताना पृ 62

से बचाना तथा उनके श्रम व रोजगार का राष्ट्रीय हित में लगाना इस झील के निर्माण का मुख्य उद्देश्य था।[6]

इस झील के निर्माण में सात वर्ष लगे तथा महाराणा ने इस पर छियानवे लाख (96 लाख) रुपए खर्च किये। इससे अकालग्रस्त लोगों को कुछ राहत मिली।

टॉड द्वारा वर्णित उपरोक्त 1661—62 ई. के दुर्भिक्ष का विवरण महाराणा राजसिंह के शासन काल में रचित 'राज विलास' पर आधारित है। कर्नल जे सी ब्रुक ने अपनी सन 1870 की राजपूताना की फमीन रिपोर्ट में तथा कविराजा श्यामलदास ने भी अपने ऐतिहासिक ग्रंथ वीर विनोद में उपरोक्त दुर्भिक्ष की विभिन्न घटनाओं का वर्णन किया है जो टाड द्वारा वर्णित विवरण से बहुत मिलता जुलता है। उदाहरण के लिए जे सी ब्रुक ने महाराणा के इस परोपकारी कदम कांकरोली के संगमरमर के बांध की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि उदयपुर के महाराणा राजसिंह ने अपनी प्रजा को भयंकर विपत्तियों से बचाने के लिए दस लाख स्टर्लिंग व्यय किये थे। इस बहुमूल्य तथा अलंकृत संगमरमर के मनमोहक बांध का निर्माण पहाड़ों से बहने वाले पानी और झरनों को रोकने के लिए किया गया था। सात साल तक इस बांध के निर्माण से दुर्भिक्ष से पीड़ित व्यक्तियों को रोजगार प्रदान किया गया।[7]

सन् 1764 का दुर्भिक्ष --

सन 1764 ई का वर्ष मेवाड़ राज्य के लिए एक अत्यन्त कष्टमय प्रकार का वर्ष रहा। क्योंकि टॉड इस समय का वर्णन करते हुए लिखता है कि अन्न और रसद का एक ही भाव था और वह एक रुपये में डेढ़ पाव बिकी जा रही थी।[8]

सन् 1803–04 का दुर्भिक्ष —

1803 04 का वर्ष भी राजपूताने में सामान्यतः अभाव व अकाल का

---

6 टॉड—एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज आफ राजस्थान भाग 1 पृ 310 11

7 ब्रुक जे सी रिपोर्ट आफ दी फमिन इन राजपूताना एण्ड अजमेर मेरवाड़ा 18 10 प 17 फेमिन डिपार्टमेंट ए मार्च 1811 न 84 36

8 राजपूताना गजेटियर भाग I ए पृ 60

वर्ष था। इस अकाल का प्रभाव मेवाड़ राज्य में अधिक विकट था क्योंकि मेवाड़ भूमि इस समय मराठों की उपस्थिति से अभिशप्त थी। मराठे जयपुर जा रहे थे और इस समय मेवाड़ में ठहरे हुए थे। टॉड लिखता है कि मराठा नेता सिंधिया के सेनापतियों ने बदकिस्मत महाराणा से तीन लाख रू ऐंठ लिये। महाराणा भीमसिंह को अपनी पारिवारिक बहुमूल्य वस्तुओं तथा रनिवास की महिलाओं के जेवरात बेचकर यह राशि एकत्र करनी पड़ी थी।[9]

टॉड ने राजस्थान के दुर्भिक्षों की भयावह स्थिति का वर्णन करने के साथ अन्न संचय करने के उपाय आदि महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी है। उसने कोटा के शासक जालिमसिंह द्वारा अपनाई गई अनाज सुरक्षित रखने की पद्धति का टॉड ने विस्तृत वर्णन किया है। टॉड ने लिखा है कि जालिमसिंह ने ग्रेन पिटस या अनाज के गड्ढों में अनाज को वर्षों तक सुरक्षित रखने की परम्परागत वैज्ञानिक पद्धति को अपनाया। इसने देश के विभिन्न भागों से लगभग 50 लाख मन अनाज एकत्र किया और उसे ग्रेन पिटस में सुरक्षित कर दिया था। कुछ समय में ही ये अनाज के भण्डार प्रकाश के दर्शन कर पाते थे। या फिर पड़ोसी राज्यों में अकाल के समय ये भण्डार खोले जाते जब अनाज की कीमत 12 रुपये प्रतिमनी (12 मन) से बढ़कर 40 रुपये या अकाल भाव 60 रु प्रति मनी हो जाते।[10] ऐसे समय में ये भण्डार सोने की खानों के समान होते थे।

टॉड के अनुसार कोटा राज्य द्वारा एक ही वर्ष में ऊंची कीमतों पर 60 लाख मन अनाज बेचा गया। सन 1804 में दुर्भिक्ष में कोटा के शासक ने स्थिति का बड़ा लाभ उठाया। जब राजस्थान के रजवाड़े सन 1804 में एक तरफ तो अकाल से पीड़ित थे और दूसरी ओर भरतपुर में होल्कर तथा अंग्रेजों में युद्ध हुआ तो साधारण लोगों की स्थिति और भयावह हो गई। इस समय जालिमसिंह द्वारा सम्पूर्ण रजवाड़ा तथा घुमक्कड़ बनजारों की आवश्यकताओं की पूर्ति की गई। इस समय कोटा राज्य ने एक करोड़ रुपये का अनाज बेचा।[11] यह माना जा सकता है कि कोटा के शासक ने मराठों को भी अनाज बेचकर

---

9 टॉड एनाल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान, भाग 1 पृ 362
10 टॉड एनाल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान भाग 2 पृ 437
11 उपरोक्त—भाग 2 पृ 438

दोनों हाथों से धन बटोर कर अपने राज्य का खजाना भरा होगा क्योंकि कोटा राज्य उस समय अकाल से प्रभावित नहीं था।[12]

1812-13 का दुर्भिक्ष—

सन् 1812-13 में बम्बई गुजरात राजपूताना तथा यमुना पार के नोथ वेस्ट प्रोविन्सेज में अकाल का संकट व्याप्त था। राजपूताना में तो 1812 13 का अकाल उतना ही भयानक था जितना सन् 1661 का अकाल था।[13] मेवाड़ में फसल बिल्कुल नष्ट हो गई थी अतः वहां की स्थिति अधिक संकटमय हो गई। श्यामलदास के अनुसार मेवाड़ के महाराणा भीमसिंह ने अपने सेवकों के जीवन की रक्षा के लिए राज परिवार के व्यक्तियों के निजी आभूषणों को बेच दिया।[14] किन्तु उसमें ऐसा कोई उल्लेख नहीं है कि सामान्य प्रजा के लिए महाराणा ने कोई उल्लेखनीय काम किया हो। उस समय मेवाड़ राज्य वित्तीय दृष्टि कोण से निर्वासियापन की स्थिति में था तथा राज्य के पास लोगों को राहत पहुंचाने के वास्ते कोई सुव्यवस्थित नीति भी न थी।

यह एक अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि टॉड ने 1812-13 के इस महान दुर्भिक्ष का कहीं वर्णन नहीं किया है जो कि राजपूताने में 19 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध का सबसे गम्भीर अकाल था।[15] जब कर्नल ब्रुक ने 1868 69 के दुर्भिक्ष पर रिपोर्ट लिखी तो वृद्ध व्यक्तियों के मस्तिष्क में 1812 13 के अकाल की विभीषिका की याद तरोताजा थी।[16] हम सभी जानते हैं कि 1812 से 1817 तक कर्नल टाड राजपूताना एवं मध्य भारत के भौगोलिक एवं स्थान-वर्णन सम्बन्धी आंकड़े एकत्र करने में व्यस्त था। उसके पश्चात वह 1818 से 1822 तक अपनी एनाल्स के लिए सूचनाएं एवं आंकड़े एकत्रित करने में व्यस्त रहा था। इस अवधि में अपने भ्रमण

---

12 टॉड एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान भाग 2 पृ 438

13 एडम्स ए वेस्टन राजपूताना स्टेटेज पृ 143

14 (अ) राजपूताना गजेटियर्स भाग 2, पृ 60

(ब) श्यामलदास वीरविनोद भाग 4 पृ 1740

15 विलियम डिग्बी ब्रिटिश इण्डिया पृ 125 126

16 फॉरेन डिपार्टमेंट इन्टरनल ए मार्च 1871 नम्बर्स 34 36 ब्रुक जे सी रिपोर्ट ऑन दा फमीन इन राजपूताना एण्ड अजमेर मेरवाड़ा 1870 पृष्ठ 7

के दौरान राजपूताने के अनेक भागों में अकाल की स्थिति का भान टाड को अवश्य रहा होगा। क्योंकि उसने रेगिस्थानी इलाके में उत्पन्न प्रभावों का वर्णन कुछ शब्दों में किया है।[17] टाड के अनुसार अनाज के अभाव में यहां के लोगों को पेड़ की पत्तियां खाने, जड़ व झाड़ियां खानी पड़ी थी। सिरोही मारवाड़ में कई लोग भूख के कारण मर गये थे। इसके अतिरिक्त टॉड ने मेवाड़ में दुर्भिक्ष या अन्य स्थानों में अकाल के प्रभावों का कहीं वर्णन नहीं किया है।

जबकि एडम्स ने एक स्थान पर लिखा है कि सन 1812-13 के अकाल में मारवाड़ में अनाज की कीमत इतनी ऊंचाई पर पहुंच गई थी कि एक रु. का केवल आठ सेर अनाज मिलता था।[18]

टॉड द्वारा राजपूताने के कतिपय दुर्भिक्षों के चित्रण पर यदि हम एक नजर डालें तो पायेंगे कि सम्पूर्ण वृतान्त केवल वर्णनात्मक है।

दूसरी मुख्य बात उसके वर्णन में यह देखने को मिलती है कि उसके द्वारा अकाल की परिस्थितियों का वर्णन पूर्व वर्णित वृतान्तों पर आधारित है। क्योंकि जिन दुर्भिक्षों का टॉड ने वर्णन किया है उन अकालों को टाड ने स्वयं ने नहीं देखा था।

इसी प्रकार अकाल के कारणों पर भी टॉड ने विशद प्रकाश नहीं डाला है। अधिकतर उसने वर्षा के अभाव को ही अकाल का कारण बताया है। टॉड ने यह भी स्पष्ट कम दर्शाया है कि इन भयंकर दुर्भिक्षों के राजपूताना के रजवाड़ों पर क्या दुष्प्रभाव पड़े ?

राज्य द्वारा अपनी प्रजा को दिए गए अकाल राहत कार्य के विषय में भी टॉड ने कोई विशेष वर्णन नहीं किया है। हां अकाल राहत कार्य के रूप में कांकरोली पर राजसमन्द झील के निर्माण कार्य का विस्तृत वर्णन एक अपवाद है।

---

17 टॉड, एनाल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान, भाग 2 पृ. 264
18 एडम्स - दी वेस्टर्न राजपूताना स्टेट्स, पृ. 143

यद्यपि टाड ने सन 1661 के मेवाड के अकाल का अत्यन्त विस्तृत वर्णन किया है। किन्तु उसके पश्चात बाद में पड़ने वाले अकालों का वर्णन नहीं किया है। उदाहरणार्थ सन 1747 17५८ 1 64 1783 85 एव 1789 के अकालों [19] का वर्णन उसकी पुस्तक में नहीं मिलता है। सम्भवत इन दुर्भिक्षों का विस्तृत वर्णन टाड को उपलब्ध नहीं हुआ होगा। बाद में जो भी अकाल की फमीन रिपोर्ट में तथा राजपूताना गजटियर में इन अकालों का कुछ वर्णन हमें मिलता है।

लेकिन टाड के एनाल्स से हमें राजपूताना के कुछ भागों में अकाल सम्बन्धी जो वर्णन प्राप्त होता है उसकी कमियों को हमें नजरअन्दाज करना पड़ेगा। क्योंकि हम बात से हम भली भांति परिचित हैं कि टाड का एनाल्स लिखने का मुख्य उद्देश्य राजपूताने के विभिन्न राज्यों के राजनैतिक इतिहास का वर्णन करना तथा राजपूत जाति के शौर्य एवं वीरता के कार्यों को विशिष्टता प्रदान करना था। फिर भी जो वर्णन टाड ने राजपूताना के अकालों के विषय में किया है उसका ऐतिहासिक महत्व कम नहीं है। इसीलिए टाड के इन वर्णनों को उद्धृत हम बाद के कमान श्यामलदास के वीर विनोद ग्रन्थ तथा इम्पीरियल गजटियर में मिलता है।

---

19 अ इम्पीरियल गजटियर आफ इण्डिया प्रोविन्शियल सिरीज राजपूताना पृ 62

ब सरकार, जे एन फाल आफ दी मुगल एम्पायर भाग 1 पृ 284

स फोरेन डिपार्टमेंट जन ए, मार्च 1871 न 34 36 बक जमी रिपोर्ट आफ दी फेमीन इन राजपूताना एण्ड अजमेर मरवाडा 1870 पृ 7

द राजपूताना गजटियर भाग 2 पृ 60

—

टॉड के नाम महाराणा भीमसिंह के पत्र

—डॉ. गिरीशनाथ माथुर

जनवरी 13, 1818 ई. को ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रतिनिधि चार्ल्स थियोफिलस मेटकाफ व मेवाड़ के प्रतिनिधि ठाकुर अजीतसिंह के माध्यम से कम्पनी व महाराणा भीमसिंह के मध्य सुरक्षात्मक संधि हुई।

संधि की छठी शर्त के अनुसार यह तय किया गया कि पाँच वर्ष तक वर्तमान उदयपुर राज्य की आय का चतुर्थांश (एक चौथाई) प्रति वर्ष अंग्रेज सरकार को खिराज में दिया जायगा और इस अवधि के बाद हमेशा रुपये पीछे छः आना। खिराज के विषय में महाराणा किसी और राज्य से कोई सम्बन्ध नहीं रखेंगे और यदि कोई उस प्रकार का दावा करेगा तो अंग्रेजी सरकार उसका जवाब देने का इकरार करती है।[1]

टॉड के अनुसार मेवाड़ की राजस्व से होने वाली आय 1818 ई. से 1821 ई. तक शनैः शनैः बढ़ती रही।[2] किन्तु संधि के अनुसार खिराज की राशि नहीं चुकाई जा सकी और वह बढ़कर आठ लाख रुपये हो गई। तब महाराणा भीमसिंह ने टॉड को पत्र लिखकर बकाया खिराज चुकाने का वायदा करते हुए उन गाँवों के राजस्व को सीधे कम्पनी को देना भी तय किया जिनकी आय बकाया खिराज के बराबर थी।[3]

राजस्थान राज्य अभिलेखागार, उदयपुर में उपलब्ध महाराणा भीमसिंह

---

1 ओझा गौरीशंकर हीराचन्द, उदयपुर राज्य का इतिहास, दूसरी जिल्द, पृष्ठ 704

2 देखिये परिशिष्ट 1; टॉड जेम्स, एनल्स एण्ड एण्टिक्विटीज ऑफ राजस्थान, भाग 1, पृष्ठ 309

3 देखिये परिशिष्ट दो - गाँवों की सूचि सहित मेटकाफ का आक्टरलोनी को लिखा पत्र 27 जून 1823 नं. 20-23, रा. अभि. नई दिल्ली

द्वारा टॉड को लिखे पत्रों से ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बकाया खिराज के भुगतान के प्रति महाराणा की कटिबद्धता का पता चलता है।

प्रस्तुत प्रथम पत्र में महाराणा ने टॉड को लिखा कि राजस्व के अधिकारियों को चार वर्ष के बकाया रुपये देने हैं इसके सिवा तीन वर्ष के (आय) रुपये खर्च नहीं करेंगे। तुम्हारे माध्यम से तीन बरस (वर्ष) तक कम्पनी के रुपये देने हैं। मेरा वचन है कि वो रुपये माथे हो जमा करवा दिये जावेंगे।

महाराणा ने इस पत्र में यह भी लिखा कि वे तीन वर्ष के बाद ही जमा (राजस्व) खर्च करेंगे। क्योंकि तीन वर्ष के बाद अधिकारियों (कम्पनी अधिकारी) का उस पर कोई अधिकार नहीं होगा। आगे तीन रुपये बाकी निकले हैं उसमें से छः लाख रुपये पहुंचेंगे। उसके बाद हम खर्च करेंगे। इसमें दोनों पक्षों की ओर से किसी प्रकार की बाधा नहीं पहुंचेगी।[4]

दूसरे पत्र में महाराणा ने टॉड को लिखा कि 1879 के सावण वदि 1 से कम्पनी (रुपये का लेन देन) बकाया चढ़ रहा है। उसके बदले में जहाजपुर, भीलवाड़ा मांडली से प्राप्त आय जमा होगी। सं 1879 के पूर्व के दिन से तीन वर्ष की आय अलग लिखी। 1879 के वर्ष से ये गांव लिखे। इन गांवों के रुपयों में से एक पैसा भी खर्च नहीं करेंगे। मेरा वचन है कि वह सारा रुपया साहब लोगों (अधिकारियों) के पास पहुंचा दिया जावेगा। अधिकारियों को तो रुपये से काम है। इसमें गांव के अधिकारियों पर दावा नहीं है।[5]

तीसरे पत्र में महाराणा ने लिखा कि सरकार कम्पनी की संवत 1874 महासुद 2 से 1878 के असाढ़ सुद 15 तक की तीन बरस की बढ़ी हुई राशि को चुकाने के लिए राजस्व आय लिख दी है। वह बकाया राशि के बदले पहुंचेगी। उसमें किसी प्रकार की कमी नहीं होगी। तीन वर्ष तक हम एक भी पैसा खर्च नहीं करेंगे।[6]

---

4 टॉड के नाम महाराणा भीमसिंह का पत्र, जेठ वदी 9, बुधवार संवत 1878 राज रा अभि उदयपुर, देखें परिशिष्ट सं 3

5 टॉड के नाम महाराणा भीमसिंह का पत्र, जेठ वदि 9, बुधवार, सं 1878, राज राज्य अभि उदयपुर देखें परिशिष्ट सं 4

6 टॉड के नाम महाराणा भीमसिंह के आदेश से लिखा गया पत्र, जेठ वदि 9, बुधवार संवत 1878 रा रा अभि उदयपुर देखें परिशिष्ट सं 5

परिशिष्ट सं 1

1818 से 1821 तक मेवाड़ राज्य को करों से होने वाली आय

रबी की फसल से मन	1818 में	40 000 रु
	1819 में	4 51 281 रु
	1820 में	6 59 100 रु
	1821 में	10 18 478 रु
वाणिज्य से होने वाली आय	1818 में	नाम मात्र की
	1819 में	96,683 रु
	1820 में	1,65 108 रु
	1821 में	2,20,000 रु

परिशिष्ट सं 2

गाँवों की सूचि जिनकी आय महाराणा ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बकाया खिराज के बदले देना तय किया—

गांवों के नाम	संग्रह	खर्च	आय
1 जहाजपुर	90 000	30 000	60,000
2 सादडी वनेरा	44 000	8 000	36,000
3 मूज भरक एवं कपासन	35 000	10 000	25 000
4 पुर माण्डल	21 000	03 000	18,000
5 हुरडा आगूचा	41 000	06 000	35,000
6 सांगानेर ऊंचा	10 000	02 000	08 000
7 भीलवाड़ा से प्राप्त आय	23 000	5 000	18000
8 कुम्भलमेर	84 000	24 000	60000
9 चित्तौड़गढ़	42000	12 000	30,000
10 माण्डलगढ़	42 000	12,000	30 000
11 रायपुर	5,000	1 000	4,000
12 कल्याणा	5 300	1 300	4 000
13 मरोली उण्टाला	10 000	2,000	8 000
14 पारसोली मीमरी	75000	500	7 000
15 मेवाड़ की चुंगी	2,50 000	—	2 50 000
16 रानियों व कुंवरों की जागीर	2 00 000	—	2,00,000
रु	9 59 800	1 16 800	8,43,000

जेम्स टॉड का मेवाड सामन्तो के साथ कौलनामा

—डॉ हरिकालाल माथुर

जेम्स टॉड का राजस्थान के इतिहास लेखन परम्परा म सन्व अग्रज के रूप म जाना जाता रहगा । यह उसके 24 25 वर्षों क निरन्तर परिश्रम और सतत अन्वेषण का परिणाम ह कि इतिहास जगत का एनल्स एण्ड एण्टीक्विटीज आफ राजस्थान नामक ग्रन्थ उपलब्ध ह जिसे आधार बनाकर आधुनिक इतिहासकार शोध के क्षेत्र म आग बढन म सक्षम हुए है। टॉड जब ग्वालियर सिंधिया के यहा पालिटिकल एजेन्ट नियुक्त था तब स ही उसका राजपूताना के सभी महत्वपूर्ण राज्यो यथा जोधपुर बीकानेर, जयपुर कोटा बूदी और मेवाड स सम्पर्क बनाया हुआ था । 13 जनवरी 1818 ई को मेवाड और ईस्ट इण्डिया कम्पनी क मध्य सुरक्षात्मक संधि होन पर ब्रिटिश सरकार न उसे वहा का पालिटिकल एजेन्ट नियुक्त किया ।[1]

मेवाड दरबार म उपस्थित होने पर वहा क सभा भवन का वर्णन करत हुए टॉड ने गवनर जनरल के सचिव जे एडमस को लिखा कि राज सभा म अनेका सामन्त उपस्थित थे, उनम से कई एक एस भी थे जिन्होंने प्रथम बार महाराणा के दरबार म उपस्थिति दी ।[2] उनकी उपस्थिति का कारण बतलात हुए टॉड न लिखा कि उनम से अधिकांश जागीरदार एस थे, जिन्होंने मेवाड की अस्थिरता क समय म या तो खालसा भूमि (राजकीय भूमि) पर अनाधिकृत अधिकार कर रखा था अथवा न्य प्रमुख

---

1 फोरिन सिक्रट 6 फरवरी 1818 न 104 107 राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली

2 फोरिन - सिक्रट, 15 मई 1818 न 23 राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली

घाटों पर अधिकार कर लिया था जहाँ से व्यापारी अपना सामान लेकर निकलते थे और ये जागीरदार उनसे भारी रकम चूंगी के रूप में एकत्रित करते थे। स्पष्ट था कि ये जागीरदार न तो खालसा भू भाग से अपना अधिकार छोड़ना चाहते थे और न ही घाटों से प्राप्त आय। अतः उन्होंने अपने सभी पारस्परिक मतभेदों को कुछ समय के लिये भुला दिया और सभी महाराणा के विरुद्ध संगठित हो गये। कुछ इसी प्रकार के उदाहरण देते हुये टाड ने लिखा कि भींडर के महाराज जोरावरसिंह ने 43 खालसा कस्बा और गावों पर अधिकार कर रखा था। भैंसर के रावत हमीरसिंह के पास इस प्रकार के 20 गाँव थे। आमेट के रावत सालिमसिंह और लावा के रावत सामन्तसिंह के पास भी महाराणा के अनेकों गाँव थे। देवगढ़ के रावत गोकलदास ने मारवाड़ को जाने वाले घाटे पर अधिकार कर रखा था, जहाँ से वह प्रति वर्ष व्यापारी काफिलों से 60 हजार रूपये चूंगी के रूप में एकत्रित करता था।[3] सलूम्बर के रावत पदमसिंह के अधिकार में खालसा के अनेकों गाँव थे। इसके अतिरिक्त वह निरंतर अपने परम्परागत भाजगढ़ के अधिकार की पुनर्स्थापना की माँग कर रहा था।[4]

उपरोक्त जटिल प्रश्नों के संदर्भ में टाड के लिये महाराणा और जागीरदारों के मध्य परस्पर मधुर सम्बन्धों की स्थापना और उन दोनों के बीच समझौता करवाना अत्यंत कठिन कार्य था। इसके उपरान्त भी टॉड ने अपने प्रयास जारी रखे। उसने कूटनीति का अनुसरण करते हुए एक ओर महाराणा को आश्वस्त रखा कि वह उसके समस्त प्रदेश और राजस्व के अन्य साधन सामन्तों से दिलवा देगा दूसरी ओर उसने असन्तुष्ट जागीरदारों को भी विश्वास दिलाया कि उनके हितों की पूर्णतः रक्षा करने का प्रयास करेगा। इसके पश्चात उसने मेवाड़ की तत्कालीन परिस्थितियों का अध्ययन करते हुये एक समझौता प्रपत्र अथवा कौलनामे का प्रारूप तैयार किया और उस पर हस्ताक्षर करने के लिये समस्त जागीरदारों को मेवाड़ दरबार में आमंत्रित किया। टाड के प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि 27 अप्रेल 1818 को तीनों श्रेणियों के लगभग 145 जागीरदार उदयपुर दरबार हाल में इकट्ठा हो गये। उपरोक्त समझौते की धारायें निम्न लिखित थी—

---

3 फोरिन सिक्रेट 15 जून 1818 नं 67 राष्ट्रीय अभिलेखागार दिल्ली

4 उपरोक्त

(1) जागीरदारों द्वारा पूर्व में हस्तगत की गई समस्त राजकीय भूमि महाराणा को लौटा दी जाय। इसके अतिरिक्त जागीरदारों ने एक दूसरे के भू भागों पर भी जो अधिकार कर रखा है तो वह भी वास्तविक जागीरदार को लौटा दी जाय।

(2) जागीरदारों को रखवाली नामक कर और भोम लागत के अधिकार को त्यागना होगा।

(3) दाण, बिस्वा और चुंगी एकत्रित करना, महाराणा का अधिकार है। अतः जागीरदारों को इसे त्यागना होगा।

(4) कोई भी जागीरदार अपने जागीरों में चोरों नहीं होने देंगे। बावरी और थोरी जाति के लोग जिनका प्रमुख काम चोरी डकैती करना था, जागीरदार शरण नहीं देंगे। उनके द्वारा लूटी गई समस्त सम्पत्ति उसके वास्तविक अधिकारी को लौटा दी जावेगी।

(5) अपनी जागीर सीमा में प्रत्येक जागीरदार व्यापारियों और बनजारों के काफिलों को पूर्ण सुरक्षा प्रदान करेंगे तथा उन्हें किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचायेंगे।

(6) प्रत्येक जागीरदार को वर्ष में 3 माह के लिये मेवाड़ दरबार में चाकरी करनी होगी। वर्ष में एक बार दशहरा उत्सव पर सभी जागीरदार उदयपुर में एकत्रित होंगे।

(7) सभी पट्टायत महाराणा के सम्बन्धी और कामदार जिन्हें महाराणा का समर्थन प्राप्त है अलग अलग सेवायें करेंगे। वे न तो महाराणा के विरुद्ध षड्यन्त्र में सम्मिलित होंगे और न अन्य राज्यों में सेवा करेंगे। जागीरदारों के उप-जागीरदार अपने स्वामी जागीरदारों की यथावत सेवा करते रहेंगे।

(8) सभी जागीरदार मेवाड़-ब्रिटिश संधि का अनुमोदन करेंगे।

संधि की अन्तिम धारा में सभी जागीरदारों को मेवाड़ के ईष्ट देव एकलिंगजी की शपथ दिलवाई गई थी।[8]

---

8 पॉलि. सि. दिनांक 5 जून 1818 नं. 68-69 राष्ट्रीय अभिलेखागार दिल्ली

यदि हम उपरोक्त समझौते का विश्लेषण करें तो स्पष्ट है कि इन सभी धाराओं के माध्यम से टॉड महाराणा और सामन्तों के मध्य सौहार्द पूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना चाहता था ।

परन्तु यह स्वीकार करना होगा कि यह कौलनामा एक पक्षीय था इसमें जागीरदारों के हितों की उपेक्षा कर महाराणा के हाथ मजबूत करने का प्रयास किया गया । एक ओर जहां रखवाली और भोम लागत जमकर वसूल करने का अधिकार जागीरदारों का था समाप्त कर दिया गया वहीं दूसरी ओर उनपर दायित्व का बोझ बढ़ा दिया गया । परिणामतः यह कौलनामा पूर्णरूपेण अमल में नहीं आया और 1827 अप्रैल के महिने में कप्तान काब की अध्यक्षता में जागीरदारों के साथ नया कौलनामा हुआ । टाड के कौलनामे से एक तथ्य यह भी हमारे सामने आया है कि टाड की सहानुभूति मेवाड़ के सामन्तों से महाराणा के प्रति अधिक था । यद्यपि टाड का प्रभाव सामन्तों पर था जागीरदारों की उपस्थिति इस तथ्य को प्रमाणित करती है परन्तु आगे चलकर इसमें कोई आशातीत सफलता नहीं मिली । टाड एक सन्तुलित कौलनामा तैयार करता तो महाराणा और जागीरदारों के हितों की अधिक रक्षा होती और समस्या का कोई स्थायी हल निकलता ।

—

कर्नल टॉड एवं पुरोहित रामनाथ

—डॉ. राजेन्द्रनाथ पुरोहित

19वीं शताब्दी के पहले दशक में मेवाड़ की राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक अस्थिरता अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच चुकी थी। सीमान्त राज्यों में मेवाड़ की भूमि सुरक्षित न थी। मराठों तथा पिंडारियों के निरन्तर आक्रमण और लूट खसोट ने न केवल महाराणा अपितु प्रजा को भी दुर्दशा की स्थिति में पहुंचा दिया।[1] मेवाड़ की अधिकांश प्रजा सीमान्त राज्यों मालवा तथा हाड़ौती में जाकर निवास करने लगी।[2] महाराणा का खजाना बिलकुल खाली था। स्वयं का खर्च चलाने के लिये कोटा के झाला जालिमसिंह से रुपये उधार लेने पड़े।[3] मेरों तथा भीलों की लूटपाट से यात्री तथा व्यापारी मार्ग भी सुरक्षित न रहे।[4] मेवाड़ के कतिपय सरदारों ने खालसा की भूमि पर अपना अधिकार जमा लिया।[5] ऐसी विकट परिस्थिति में महाराणा भीमसिंह के पास ब्रिटिश-सरकार के संरक्षण के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प शेष न रहा।

1818 ई. में राजपूताना के शासकों तथा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के मध्य सन्धि सम्पन्न हुई,[6] कप्तान जेम्स टॉड उदयपुर, जोधपुर, कोटा, बूंदी तथा जैसलमेर राज्यों के पोलिटिकल एजेन्ट नियुक्त होकर उदयपुर आये। कप्तान टॉड ने मेवाड़ राज्य का प्रबन्ध अपने हाथ में लेकर महा-

---

1 गौ. ही. ओझा: उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग 2 पृ. 702
2 वही पृ. 702
3 वही पृ. 703
4 वही पृ. 710-714
5 वही पृ. 706
6 वही पृ. 704

राणा और सरदारों के मध्य कौलनामा सम्पादित करवाकर सरदारों से खालसा की भूमि को मुक्त करवाया, भींडर से जहाजपुर का क्षेत्र छुड़वाया, मेरवाड़ा में मेवाड़ की सेना भेजकर मेरों को परास्त किया, नीमच के आमिया सरदारों के विरुद्ध सैन्य अभियान कर उन्हें मेवाड़ के अधीन किया तथा मेवाड़ में स्थायी शांति व्यवस्था स्थापित की।

उक्त कार्यवाही के दौरान मेवाड़ राज्य के दरबार में प्रधानमंत्री (मास्टर ऑफ सरमनी) पुरोहित रामनाथ ने महाराणा भीमसिंह तथा कप्तान टाड के मध्य एक विश्वासपात्र मध्यस्थ एवं संदेशवाहक के रूप में राज्य को अपनी सेवाएँ अर्पित की।[8] तदनुसार पुरोहित रामनाथ कप्तान टाड को राज्य की समस्याओं के बारे में महाराणा के दृष्टिकोण से अवगत कराते तथा विमर्श के पश्चात पुनः टाड के संदेश को महाराणा तक पहुँचाने का कार्य किया करते थे।[9] इस समय पुरोहित रामनाथ की गणना मेवाड़ के प्रमुख व्यक्तियों में थी। मराठा तथा पिंडारियों के आक्रमण से मेवाड़ में अशांति फैली हुई थी तब चित्तौड़ की रक्षा हेतु राजकुंवर के साथ पुरोहित रामनाथ को भेजा गया।[10] फरवरी 1818 ई. में टाड के उदयपुर आगमन के अवसर पर अतिथि की पहुनाई हेतु एक प्रतिनिधि मण्डल टाड के निवास-स्थल पर भेजा गया जिसका नेतृत्व रामनाथ ने किया।[11] इस दिन राजमहल में महाराणा भीमसिंह ने टाड के स्वागतार्थ एक दरबार आयोजित किया जिसका संचालन दरबारी[12] कप्तान टाड के कार्यकाल 1818 ई. में अच्छी सेवा के पुरस्कार स्वरूप महाराणा भीमसिंह ने रामनाथ का निकोड गाव (कुंदवा का गुढा) जो उसके पूर्वजों के अधीन था एवं महाराणा अरिसिंह (द्वितीय) के काल में हाथ से निकल गया था, पर पुनः उसका कब्जा करवा दिया।[13] (परिशिष्ट सं 1) इस सम्बन्ध में महाराणा ने

---

7 वही पृ 706 से 716

8 पुरोहित देवनाथ की हस्तलिखित ग्रंथ पृ 16–17

9 वही, पृ 88

10 गौ-ही ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास भाग – 2 पृ 1027

11 डा राजेन्द्रनाथ पुरोहित राजस्थान के इतिहास के पिता कर्नल टाड और उदयपुर शोध-पत्रिका वर्ष 34 अंक 3 4 पृ 55

12 पुरोहित देवनाथ की हस्तलिखित ग्रंथ पृ 249

13 गौ ही ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास भाग 2 पृ 1027

कर्नल टाड की मध्यस्थता हेतु एक पत्र[14] लिखा था, तदनुसार टॉड ने उक्त जागीर पर कब्जा करवाने में सहयोग प्रदान किया (परिशिष्ट सं 2) कुंवर जवानसिंह रीवा की राजकुमारी से विवाह करना चाहते थे इस प्रकरण में ब्रिटिश सरकार की अनुमति आवश्यक थी तदनुसार पुरोहित रामनाथ ने टाड को निवेदन कर कुंवर जवानसिंह का रीवा विवाह की स्वीकृति उपलब्ध करवाई इस सेवा से प्रसन्न होकर कुंवर जवानसिंह ने रामनाथ को एक प्रशंसा-पत्र[15] प्रदान किया (परिशिष्ट सं 3)।

1821 ई. में मध्यभारत तथा मालवा के पॉलिटिकल एजेन्ट जनरल माल्कम उदयपुर आये इस अवसर पर पुरोहित रामनाथ ने कप्तान टाड एवं जनरल माल्कम के सानिध्य में रहकर उन्हें पिछोला-झील स्थित जग मन्दिर एवं जगनिवास महलों का अवलोकन करवाया।[16] कप्तान टाड ने मेवाड़ की शासन व्यवस्था के अन्तर्गत ब्राह्मणों की सेना के सन्दर्भ में पुरोहित रामनाथ के बारे में लिखा है कि इन ब्राह्मणों में वीरता एवं साहस की कमी न थी तलवार इनके लिये उतनी परिचित है जितनी माला। वर्तमान महाराणा के एक मुख्य कर्मचारी रामनाथ का पितामह जहाजपुर जिले का गवर्नर था।[17] महाराणा भीमसिंह ने उत्कृष्ट सेवा के पुरस्कार स्वरूप 1821 ई (वि सं 1878) में पुरोहित रामनाथ को ऊमड़ गांव, हाथी तथा पालकी के लवाजमे इनायत करते हुए महाराणा से निवेदन किया कि श्रीमान की मुझे हाथी व सोना प्रदान करने की जो इच्छा है तो इन दोनों पुरस्कारों के व्यय से एक सदाव्रत स्थापित करने की आज्ञा प्रदान करावें, तदनुसार महाराणा ने उदयपुर के राजमहल की बड़ीपोल बाहर 'लंगर का कोठार' कायम किया जहां से प्रतिदिन निर्धन तथा असहाय व्यक्तियों को

---

14 पुरोहित देवनाथ का हस्तलिखित ग्रन्थ प 377

15 पुरोहित देवनाथ का हस्तलिखित ग्रन्थ प 258

16 वही प 364

17 जेम्स टाड एनाल्स एण्ड एन्टिक्विटीज आफ राजस्थान, भाग प्रथम प.440 (संस्करण 1980)

मश्वरत मिलते जगा।[18] कप्तान टाड ने प्रस्तुत पत्र [13] (परिशिष्ट 4) के माध्यम से पुरोहित रामनाथ को महाराणा द्वारा प्रदत्त उपरोक्त जागीर तथा मजा की गारंटी (सुरक्षा) प्रदान की। कप्तान टाड की ओर से रामनाथ को लिखे गये इस पत्र का आशय इस प्रकार है

पुरोहित रामनाथ (मास्टर आफ सरमनी) तथा आज टिवाल गलूडिया (प्रधान) की सवाओं से प्रसन्न होकर कप्तान टाड ने लिखा है कि रियासत सम्बन्धी कार्यों में महाराणा और हमारे मध्य एक विश्वास पात्र मध्यस्थ के रूप में तुमने सेवा की है इन सवाओं के बदले महाराणा की ओर से जारी ३-4 रुक्के मे जो तुम्हें जागीर तथा सम्मान प्रदान किया है उसकी हमने बीच में रहकर जुबान दी है यदि भविष्य में कभी इस मामले में बसर पड तो यह हमारे लिये प्रतिष्ठा का प्रश्न होगा यद्यपि किसी प्रकरण में हमारी मध्यस्थता रहना ठीक नहीं किन्तु जुबान से कहा गई बात बहुत बडी है यद्यपि गारंटी (हुंडी) प्रदान करने के लिये हम बाध्य नहीं फिर भी यह गारंटी (हुंडी) भिजवा दी है। कामकाज कागज पत्र लिखावें। वि स 1878 कार्तिक वदी दशमालिखा ता 25 अक्टूबर सन 1821 ईस्वी।

इस पत्र से पुरोहित रामनाथ तथा कप्तान टाड के मध्य घनिष्ठ सम्बन्धों पर प्रकाश पडता है किन्तु साथ ही ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी सन्धि के उद्देश्यों पर सन्देह व्यक्त होता है जिसकी शर्तों के अनुसार 'उदयपुर के महाराणा हमेशा अपने राज्य के खुदमुख्तार रईस रहेंगे और उनके राज्य में अग्रेजी हुकूमत का दखल न होगा [20] का स्पष्ट उल्लंघन प्रकट होता है। कप्तान टाड द्वारा प्रदत्त इस गारंटी का दूरगामी परिणाम 1861 ई में परिलक्षित होता है जिसके अनुसार पुरोहित रामनाथ के पुत्र श्यामनाथ की जागीर महाराणा शम्भूसिंह द्वारा जब्त किये जाने पर राजपूताना के एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल ने मामले में हस्तक्षेप करते महाराणा को लिखा [21] कि इस मामले में ब्रिटिश सरकार का वचन है जिससे वह मुकर नहीं सकती जागीर बहाल रहेगा।

---

18 (1) पुरोहित देवनाथ का हस्तलिखित ग्रंथ पृ 17
(2) गौ ही ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास भाग 2 पृ 1027

19 पुरोहित-संग्रह मूल-पत्र द्वारा कप्तान टाड पुरोहित रामनाथ को 25 *अक्टूबर 1821 ई*

20 गौ ही ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास भाग 2 पृष्ठ 705

21 पुरोहित संग्रह मूल पत्र द्वारा ऐजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल राजपूताना महाराणा शम्भूसिंह को, 31 दिस 1861 ई

अन प्रस्तुत "ाघ पत्र म य" भी स्पष्ट होता है कि "म काल म मेवा" क प्रशासनिक प्रबन्ध म राज्य क अमनिक पधिकारियों (मुत्सद्दियों)की भूमिका महत्वपूर्ण रही जो ब्रिटिश अधिकारियों क प्रभाव स स्वय के तथा राज्य के पक्ष म निर्णय करवान म सफल रहत थ ।

परिशिष्ट

(1) महाराणा भीमसिंह का पत्र शाह शिवदान गन्दूरिया क नाम

श्री रामजी

श्री एकलिंगजी सही

सिध श्री उदयपुर सु थान महा श्री सीवदानजी बचनातु गाम नीराड कुदवा सममत पटल लागा जोग समाचार वाच जो अठारा समाचार भला हे थारा कहावजो अप्रच । गाम नीरोड कु दवा रा गुडा प्रोहत रामनाथजी र माथा सु ताबा पत्र है जा अराा रो अराा र साबत हे हासल अराा रा आदमी ह दीजो जमा खातर राग कमाई करजो । 1877 का वैसाख सुद 9

मुद्रिका
महाराणा
भीमसिंह

(2) महाराणा भीमसिंह का पत्र कप्तान टॉड के नाम

॥ श्री एकलिंगजी ॥

श्री बाणनाथजी श्री नाथजी

स्वस्ति श्री टाट साहब जोग अप्रच गाम कुदवा रो गुडो प्रात रामनाथ र ताबा पत्र रो ह सा मरेठा रा फन मीसोने पदमो खाता हा सा श्रा जी रो अमल कुम्भलगढ माह अमर वा जद पाछा अणी रे साबत कर दीदो सो हासल सीयाली रो रामनाथ नीनो अवार सीसाने पदमो उठ कामदारा सु मल ने हासल लीदो सो या गाम ना खालसा म है नही हीरो री साबत हे सो अठा सु रुका लीख दवाणा है ने उठा सु पण थाणो कागद लीखाय दागा मारी अतम मुरजी है, 1875 वर्षे सावण वीद 10

(3) कुवर जवानसिंह का पत्र पुरोहित रामनाथ के नाम

॥ श्रीरामजी ॥

श्री एकलिंगजी श्री नाथजी

स्वस्ति श्री कुवरजी बापजी रो हुकम प्रोहत रामनाथ जा है अप्रच । थ बादुगढ रा जाव मनन कर टाड साहब नीरा या हामल कराइ सो अणी वात सु म्हे घणा राजी कीया था रा चाकरी म्हे अतस सु जाणी, समत 1877

छप वसाप वी 10 मुत्र। थे तो दू् इ बावरी म हा जो मु जाणु पए व। दुग रा याद करायो ई बात मु म गगा राजी वोया।

(4) कप्तान जेम्स टॉड का पत्र पुरोहित रामनाथ के नाम

सीध श्री उदेपुर सुभ सथान सवपोपमा पाहतजी श्री रामनाथजी जोग्ये मुकाम कासी सीध कनार गाम रामपुरा सा राजे श्री कपतान जिमस टाट सान्व के लि राम राम वाचसा व्हा रा समाचार भला है तुमारा भला चाहीय अप्र-रच ईन दीना म पलीता श्री दरबार क नाम भजो सा पुहचसा उमसे सब समा-चार जानागा। तुम ईस बात को वीचारो साहजी न श्रीर तुमन श्री दरबार का कहा माफक कई बार इस मुकदमा म हमम कहा ओर श्री दरबार का तीन चार दफा मगाई लीया जब हम बात का वाप म हम श्राप कर जुवान दी ई श्रार अब जो इस वात म कामी वात का कसर पट तो बात वाहत हलकी दीस है सो अब साह जी को उदा आया हया ह सा इस बात कों बाबार अच्छी तरह म करोगा श्रार नहीं आगा न हम ऐसी बात का वीच म कभी आऊना का नहीं हम ना फकत जुवान दी है पस्न बात चाहत वरी श्रार हुडी का भेजना का हमार पास कायी काम ह सा उनही भज आई ह कामकाज कायन पत्र लीपादमी 1878 कातीक सुदी 11 दीपमालका ता 25 अक्तुबर सन् 1821 ईस्वी

(हस्ताक्षर जेम्स टाड)

—

रॉयल एशियाटिक सोसायटी, लदन में

कर्नल जेम्स टॉड का पाडुलिपि सग्रह

—शरद चन्द्र जावलिया
एम ए (इति रा)

रायल एशियाटिक सासायटी, लदन म भारतीय सस्कृति और सभ्यता के इतिहास पर प्रकाश डालने वाला साहित्य अनेक हस्तलिखित ग्रथो और प्रस्तरकला द्वारा मुद्रित पुस्तको के रूप म उपलब्ध है। इस सस्था को ऐसे साहित्य की भेंट समय समय पर जिन साहित्यिक रुचि सम्पन्न अग्रेज अफसरो की ओर स की गयी थी, वे सभी प्राय भारत म ईस्ट इडिया कपनी की सवाम नियुक्त रहे हैं - और अपने भारत - निवास काल म ही उन्होने इस सामग्री का सकलन किया था। कर्नल जेम्स टाड का नाम उनम सर्वोपरि है। अन्य महानुभाव है- मेजर वान्स कैनेडी कर्नल सर क्लाड मार्टिन वाड (1794 1861) मेजर जनरल जान ब्रिग्स (फरिश्ता और सियार - उल - मुतखिरीन का अनुवादक) (1785 187), डा जान म्यूर (1810 1822 ई) नथेनिएल ब्रसे (जो कालान्तर म जेम्स प्रके के नाम स प्रसिद्ध हुआ), राजा सारावाक (1803 1868 ई) सर हेनरी माथस इलियट (1808 1853 ई), सर चार्ल्स डब्ल्यू विलियम्स विन की विधवा पत्नी और सर हनरी बाटल एडवाड फरे (1815 - 1884 ई) मिस्टर डब्ल्यू एच वायन न भी प्रस्तर कला पर मुद्रित (Litho Printed) अनेक भारतीय ग्रन्थ भेंट कर इस सग्रह की श्री वृद्धि म भाग लिया था।

L. D Barnett द्वारा प्रस्तुत Catalogue of the Tod collection of Indian Manuscripts in the Posse ion of the Royal Asiatic Society से सधन्यवाद म साभार ।

कर्नल जेम्स टाड ईस्ट इण्डिया कम्पनी की भारत स्थित शाखा में सन 1799 ई से 1823 ई तक विभिन्न पदों पर नियुक्त रहा । अपने सेवाकाल के अंतिम चार वर्ष उसने पश्चिमी राजपूताना के पालिटिकल एजेन्ट के रूप में व्यतीत किये । पालिटिकल एजेन्ट के रूप में उसने अपना केन्द्रीय कार्यालय, राजपूत संस्कृति के सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थल उदयपुर में स्थापित करते हुए ऐतिहासिक और पुरातात्विक सामग्री के संकलन और लेखन में अपनी अभिरुचि की पूर्ति का लाभ उठाया । कम्पनी की सेवा मुक्ति के समय प्रचार सामग्री वह अपने साथ लंदन ले गया । रायल एशियाटिक सोसायटी में समर्पित उसके संग्रह की सामग्री में संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश राजस्थानी हिन्दी गुजराती मराठी आदि भाषाओं में निबद्ध साहित्य प्रमुख है जिनमें ख्यात बात वचनिका प्रशस्ति काव्य वंशावलियां आदि का सर्वाधिक महत्व है । यहां से सामग्री अधिगृहीत कर उसने एनाल्स एण्ड एन्टिक्विटीज आफ राजस्थान का प्रणयन किया था । इस समर्पित संग्रह में प्राकृत भाषा निबद्ध जैन धर्म ग्रन्थ और उन पर रची गयी संस्कृत टीकाएं प्राकृत अपभ्रंश तथा देश्य भाषाओं में प्रणीत सत काव्य भारतीय सभ्यता के विभिन्न कालों तथा विषयों का प्रतिनिधित्व करने वाले शास्त्र शब्दकोष व्याकरण खगोल भूगोल विषयक शास्त्र भविष्यवाणियां साहित्य आदि से संबंधित ग्रन्थ भी प्रभूत मात्रा में है । कतिपय महत्वपूर्ण ग्रंथ जिन्हें राजस्थान की संस्कृति और सभ्यता के इतिहास की दृष्टि से उपादेय कहा जा सकता है की एक लघु सूची यहां प्रस्तुत की जा रही है ।

ग्रन्थ सूची

क्र सं ग्रंथांक

(1) 1 **हकीकत** महाराजा जगतसिंह तक के (आमेर) जयपुर के राजाओं का विवरण । (राजस्थानी)

(2) 31 **कुमारपाल राजर्षिरास या कुमारपाल रास** रचनाकाल 1670 वि रचयिता रिषभदास आरम्भ मगण (राज) इसमें अणहिलपाटन के चालुक्य सम्राट कुमारपाल की विजयों का पद्यात्मक विवरण है ।

(3) 34 **कालिकाचार्य कथानक**-(जैन प्राकृत संस्कृत) रचयिता भद्रेश्वर । इस ग्रंथ में कालकाचार्य के जीवन की वार्ता है।

(4) 42 **हमीर चरित** – नयचन्द्र सूरि रणथम्भोर के महाराजा हमीर चौहान का ऐतिहासिक विवरण (संस्कृत)

(5) 64 **राठौड़ा री वंशावली** – गद्यपद्य मिश्रित (राज) राठौड़ा का वंश वर्णन ।

(6) 72 **वचनिका खींची अचलदास री**– लिखिया जगा गद्यपद्य मिश्रित (राज) ऐतिहासिक काव्य है ।

(7) 73 **भाटी वंश की ख्यात** – जसल भाटी जो (मूलत लोद्रवा का वासी था और जिसने कालान्तर म जसलमेर बसाया) से स 1744 तक का वर्णन है । (राजस्थानी)

(8) 78 **राजनिरूपण** – रचयिता न्यायनिराय महाराजा माधवसिंह के सरक्षण म लिखित पत्र लेखन पद्धति - (सस्कृत)

(9) 111 **वातजोड़यारी** - सुलतान अलाउद्दीन के काल से लगाकर राठोडा का गद्यपद्य मिश्रित ऐतिहासिक विवरण ।

(10) 125 **गुटका** – जिसम (1)जयसिंह गुण (जयसिंह स सबधित प्रशस्ति (राजस्थानी)

(2) जयसिंह का इतिवृत (राज)वर्णित

(3) राजतरंगिणी - मिश्र रघुनाथ द्वारा सस्कृत और हिन्दी गद्य म विरचित सावतर रिपमन्द के पुत्र कुछ से लगाकर अनगपाल तक के राजाओ का ऐतिहासिक विवरण ।

(11) 4 **गुहिलोतान्वय** – सवाई जयसिंह के आदेश से विरचित गुहिलोता का वशावली (राज गद्य)

(12) 5 तवारीख सिगार इ इस्कन्दरी का हिन्दी (राज ?) अनुवाद (यवनस स लिय गय अगा का)

(13) 6 सुरामानतनवारास का अशात्मक अनुवाद (राज)

(14) 7 विक्रमादित्य कथा (सस्कृत)

(15) 1?6 **गुटका** – जिसम निम्नांकित रचनाएं सकलित हैं ।—

(I) **हिन्दुस्तान की बादशाही का प्रमाण वा ओध कारखाना की किताब** (हिन्दुस्तान के बादशाहों के प्रशासनिक कार्यालयों का तालिका निबद्ध विवरण । इसके साथ सवत 1414 वि म तमूर के आगमन स लगाकर जयसिंह के शासनकाल तक का विवरण (राज गद्य)

(II) **विक्रमविलास** – मिश्र गागा द्वारा विरचित विक्रमादित्य की कथाएं (राज गद्य पद्य मिश्रित)

(16) 127 चित्तौड़ स प्राप्त दस शिलाभिलेखों की सुन्दर प्रतिलिपियों का सकलन ग्रथ । इसम सस्कृत के नौ और राजस्थानी के एक शिलालेख की प्रति सकलित है ।

(17) 129 **खुमाणरासा** – दलपति विजयकृत पद्यात्मक काव्यग्रन्थ । इसम मेवाड़ के रावल खुमाण और उसके वशजो का ऐतिहासिक आख्यान वर्णित किया गया है । (राज)

(18) 130 **विजय विलास** – जोधपुर राज्य का पद्यबद्ध एतिहासिक काव्य (राज.)

(19) 132 **सीसोदिया की वंशावली** – पद्मसिंह से लगाकर राजसिंह तक का मवाड़ के शासकों से सम्बंधित संक्षिप्त वंश वर्णन।

(20) 133 **वंशावली** – जयसलमेर के शासकों का इतिहास महारावल जसवन्तसिंह (1702 ई.) के राज्यकाल पर्यन्त (राज.)

(21) 134 **राजरूपक** (अभयसिंहजी का परमजस) रचयिता वीरभाण (राज.) महाराजा अभयसिंहजी के राजदरबारी वीरभाण द्वारा विरचित जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह (1678 1724) और उनके पुत्र अभयसिंह का जीवन चरित्र [चरित काव्य]

(22) 141 **सूरजप्रकाश** – कविया करणीदान द्वारा विरचित 7500 छन्दात्मक एतिहासिक काव्य ग्रंथ इसमें महाराजा अभयसिंह का एतिहासिक चरित्र वर्णित है।

(23) 142 **रतनरासो** – औरंगजेब के विरुद्ध धरमात में महाराजा जसवन्तसिंह द्वारा लड़े गये ऐतिहासिक युद्ध तथा रतलाम के संस्थापक राव रतनसिंह के वीरतापूर्वक स्वर्गारोहण का ऐतिहासिक वृत्त (चारणी काव्य)

(24) 143 **राजा कहावाट री वार्ता** – अनन्तराय सांखला से लगाकर आसकरण तक का गद्यपद्यात्मक वर्णन [राज.]

(25) 145 छियासी प्रशासकीय पत्रों की सुन्दर प्रतिलिपि से युक्त जिल्द [राजस्थानी अंग्रेजी]

(26) 163 **गुटका** – जिसमें निम्नलिखित रचनाएं संकलित हैं—

(I) मवाड़ के शासकों का अठारह सर्गों में विरचित एतिहासिक काव्य ग्रंथ जिसमें सर्वप्रथम जयसिंह गुणवर्णनम तथा द्वितीय अमरसिंह गुणवर्णनम काव्य ग्रंथ संकलित हैं। सम्पूर्ण काव्य जयविलास नामक रहा होगा—एसी कल्पना की गयी है। रचयिता रणछोड़ भट्ट (संस्कृत)

(II) **राज रत्नाकर** - रचयिता सदाशिवनागर (संस्कृत) महाराणा राजसिंह के समय की घटनाओं का वृतान्त।

(27) 165 **गुटका** – जिसमें निम्नलिखित रचनाएं ग्रथित हैं—

(I) केशव पुत्र महेश द्वारा विरचित प्रशस्ति काव्य जिसमें मवाड़ के महाराणा कुम्भा के आश्रित चरित्र का मय वर्णन है। [यह सम्भवतः चित्तौड़ के कीर्तिस्तम्भ की शिलांकित प्रशस्ति का प्रतिलिपि ही है]

(II) राजविलास – रचियता मानकवि । 18 विलासों में विरचित इस पिंगल काव्य में मेवाड़ के महाराणाओं का एतिहासिक वर्णन है। सूची पत्र में इसे संस्कृत और हिन्दी में विरचित कहा गया है जो विचारणीय है—

(28) 166 गुटका – इसमें निम्न दो ग्रन्थ संकलित हैं—

(I) सूर्यवर्णानर्णनम — [संस्कृत]

(II) चन्द्रवंशानुवर्णनम । [संस्कृत]

इनकी प्रतिलिपि कर्नल टॉड के गुरु और सहायक पंडित ज्ञानचन्द [यति] ने सन 1819 में उदयपुर में निवास करते समय की थी।

(29) 167 इफ्तगुल्हब (भाग I) रचियता मुहम्मद हाशी (कवाफी)–भारत का इतिहास मूल फारसी राजस्थानी भाषानुवाद ।

(30) 170 गुटका – इस गुटके में संस्कृत और राजस्थानी [हिन्दी] भाषा निबद्ध वंशावलियाँ गाथाएँ पट्टे परवाने गद्यात्मक विवरण आदि संकलित है।

—

टॉड की सिरोही यात्रा

— प्रद्युम्नसिंह चूंडावत

टाड प्रणीत पश्चिम भारत की यात्रा ग्रन्थ के लिए हम यह कह सकते हैं कि टॉड ने यात्रा के विवरण खोजने और लिखने में अपनी उस विशाल ऐतिहासिक विज्ञता का परिचय दिया जिसका अनुमान राजस्थान का इतिहास पढ़ने में नहीं होता। यात्रा के सम्पूर्ण कथानक मनोरंजन व ज्ञान वर्धक होने के साथ मौलिकता लिये हुए है। विशेषतः सिरोही की यात्रा के वृतान्त से टॉड के अगाध इतिहास के ज्ञान का परिचय मिलता है।

पता चलता है कि टाड राज्यों के बीच आपसी झगड़ा को खत्म कराने के लिये कितना प्रयत्नशील था। प्रजा के हित के लिये उसके मन में कितने उदार विचार थे। टाड की लेखनी से उसकी मनोवृत्ति और मानव हृदय का बोध होता है।

कर्नल टॉड ने अपनी सिरोही यात्रा में अपनी ही सरकार की आलोचना की है एवं अनेक स्थानों पर उसने इस बात को बतलाया है कि अंग्रेजों को भारत वर्ष में रहकर यहां की संस्कृति को समझना चाहिये और उसी प्रकार शासन करना चाहिये। टाड राजपूतों का बहुत अधिक प्रशंसक था और राजपूतों की त्रुटियों को दूर करना चाहता था। अपने यात्रा वृतान्त में उसने सिरोही के महाराव से इन त्रुटियों को दूर करने के लिए कहा था। वह सिरोही राज्य का सच्चा हितैषी था। एवं इस बात को सिरोही के महाराव ने स्वीकार किया था। इस प्रकार कर्नल टाड की सिरोही यात्रा सिरोही के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण यात्रा थी, जिससे कि सिरोही की रक्षा हो सकी एवं सिरोही में एक नये युग का शुभारम्भ हुआ जो आगे जाकर सिरोही और अंग्रेजों के मध्य सन्धि में बदल गया। कर्नल टाड सिरोही यात्रा वृतान्त इस प्रकार करता है —

यह रियासत बहुत छोटा है लेकिन इसकी प्रसिद्धि राजपूताना की किसी भी रियासत से कम नहीं है। इस रियासत को कुछ विशेष अधिकार मिले हुए है। टाड ने अपनी पूरी शक्ति लगाकर मारवाड से इसकी राजनैतिक स्वतन्त्रता की रक्षा की थी। मारवाड के नरेशों ने इसका अपर प्रधान बनाए रखने के लिए यह साबित करने की पूरी कोशिश की थी कि सिरोही मारवाड रियासत का एक अंग है। मारवाड ने अपने पुष्ट प्रमाणों के द्वारा गवर्नर जनरल-इन-कौंसिल की मंजूरी प्राप्त कर ली।

सिरोही के मामले में सारे अधिकारियों का मत एक तरफ व टॉड का निर्णय दूसरी तरफ था। वह सिरोही की समस्या को न्याय के साथ सुलझाना चाहता था अन्त में उसे सफलता मिली।[1]

सिरोही की समस्या बड़ी उलझन से भरी हुई थी। जोधपुर के महाराजा अभयसिंह के समय से सिरोही के रावों से कर और नौकरी लेने का अधिकार साबित करते थे। टाड को उन्हीं के इतिहास से इसका विपरीत प्रमाण मिले जिससे प्रमाणित होता था कि सिरोही रियासत के अधिकारियों ने जोधपुर के राजाओं की नौकरी दी है परन्तु यह मारवाड के राजा के लिए नहीं थी बल्कि साम्राज्य के प्रतिनिधि के लिए थी। इसके अलावा अहमदाबाद की चढ़ाई में जब देवड़ा राजपूत लड़ाई पर गए थे उस समय महाराजा अभयसिंह का नेतृत्व उन लोगों ने स्वीकार किया था। इस प्रकार के राजनैतिक और ऐतिहासिक प्रमाण थे जो सिरोही रियासत की स्वतन्त्रता का समर्थन करते थे।

मारवाड के अधिकारियों का यह भी कहना था कि सिरोही के प्रमुख और प्रधान सरदार नीम्बज के ठाकुर ने जोधपुर की नौकरी की थी। इस प्रमाण को काटने के लिए टॉड ने दलील दी कि सभी रियासतों में कुछ न कुछ दगाबाजी और अवसरवादी लोग रहे हैं। सिरोही में भी ऐसे लोग थे जो सिरोही की मर्यादा के विरुद्ध कार्य करते थे। और उन दिनों में सिरोही राज्य की शक्ति इतनी कमजोर पड़ गयी थी कि उसकी तरफ से ऐसे लोगों को दबाने और रोकने की व्यवस्था नहीं की जा सकती थी।

---

1 टाड पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 82 अनुवादक गोपालकुमार ठाकुर, माण्डी हिन्दी पुस्तकालय 492 भारतीय इलाहाबाद 1969

2 टॉड पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 83

इसलिए किसी सरदार के ऐसा करने से उसकी जिम्मेदारी सिरोही रियासत पर नहीं आती थी।

नीम्बज मारवाड की सीमा पर था इसलिए उनके लिए यह आवश्यक था कि उचित और अनुचित किसी भी तरीके से वह मारवाड को अप्रसन्न होने का मौका न दे। ऊंचा पद प्राप्त करने की अपनी अभिलाषा में नीम्बाज के ठाकुर के सामने एक ही रास्ता था कि वह हर तरीके से जोधपुर नरेश को प्रसन्न करने का प्रयास करें। इस हालात में जोधपुर ने जो कुछ चाहा उस अवसरवादी ठाकुर ने उसे पूरा किया।[3]

सिरोही मारवाड के अधिकार में नहीं था और न ही वह कर देता था। जबरदस्ती जो लूट मार करके वसूल किया उसकी सूची मारवाड के प्रतिनिधि ने सामने लाकर इस बात को साबित करने का प्रयास किया कि सिरोही से मारवाड कर वसूल किया करता था किन्तु कर वसूल करने में यह सूची काफी नहीं थी उसको देखकर साफ जाहिर होता था कि यह सूची कर वसूल करने की नहीं है। मारवाड के अधिकारियों के सिवा उस सूची में कहीं पर भी सिरोही की तरफ से किसी के हस्ताक्षर नहीं थे।

प्रत्येक अवस्था में यह प्रमाणित होता था कि मारवाड के हमलों का कारण सिरोही की कमजोरी थी और जो कर वसूल किया हुआ दिखाया गया था वह सिरोही में की गई लूटमार का धन था। किसी भी प्रकार यह साबित नहीं हो सकता कि सिरोही की रियासत मारवाड के अधिकार में रही है।[4]

मारवाड की ओर से एक दस्तावेज ऐसा अवश्य पेश किया गया जिसमें सिरोही के वर्तमान राव के बड़े भाई के हस्ताक्षर थे। अपनी विषम परिस्थिति और बेबसी में पड़ कर बड़े राव ने जोधपुर की अधीनता को स्वीकार करने के लिए हस्ताक्षर किये थे। बड़े राव अपने पिता की अस्थि गंगा में प्रवाहित करने के लिए जा रहे थे उसी मौके पर वे कैद कर लिए गए और उनसे अधीनता स्वीकार करने के लिए लिखावट करा ली। न्याय के सामने इसका कोई महत्व नहीं हो सकता वास्तव में अपनी इच्छा से सिरोही के अधिकारियों ने एक पैसा भी जोधपुर को कभी अदा नहीं किया।

---

3 वही पृष्ठ 83

4 टाड पश्चिमी भारत की यात्रा पृष्ठ 84

इसके बाद सिरोही के प्रतिनिधि ने प्रश्न किया यदि हमारे मीणो के हमलों से - जिनका रोक सकने की क्षमता मात्र हमम नही है जोध पुर की फौज हमारी सीमा के भीतर प्रवेश करती है और हमारी सीमा के अन्तगत अपनी चौकिया कायम करती है जसा कि किया भी गया है तो जोध पुर की पहाडी जातिया व पडौसिया को जो नुकसान लगातार पहुच रहा है उसका उत्तर मारवाड क पास क्या है ?

मारवाड की तरफ स सभी प्रमाण बडी बुद्धिमानी के साथ रख गये थ । लेकिन सच्चाई न होने के कारण उनके घराजयी होने म देर न लगी । टाड मारवाड की राजनीति का भलीभाति समझ रहा था । वह जानता था कि मारवाड क अधिकारी सिरोही की स्वाधीनता के साथ खिल वाड कर रह है । इस अन्याय समझ कर उसने सिरोही का स्वतन्त्रता को सुरक्षित बनाने म पूरी शक्ति के साथ काम किया ।

जोधपुर और सिरोही के पुराने मामले निपटाने एव दोनो राज्यो क आपस म सम्बन्ध सुधारने क लिए कर्नल टाड ने दोनों राज्यो के मध्य एक समझौता कराया। कर्नल टॉड के शब्दो म दोनो राज्यो के मध्य एक सधि की गई और एक निश्चित रकम जोधपुर को वार्षिक सिरोही स दिला कर हमेशा क लिए झगडा शान्त कर दिया गया। सिरोही अब अपने सभी मामलो म स्वतन्त्र है और उस समय स वह ब्रिटिश सरकार की अधीनता म है। उस सधि के बाद सिरोही की हालत बदलने लगी वहा के युवक राव न अपने कर्तव्यों का पालन किया। अपराध और आक्रमण करने स मीणा जाति को रोक दिया गया है । सम्पूर्ण रियासत म सुरक्षा के लिये चौकिया कायम की गई है । किसानो गृहस्थों और व्यापारियो को अभय - पत्र देकर विश्वास करा दिया गया है कि उनको अब किसी भी तरह स वचित हो जाना चाहिये । पूरी रियासत जो उजाड हो रही थी फिर स आबाद हुई। लुटेरे और आक्रमणकारियो क भय स जो किसान खेती नहा करते थ उन्होने निर्भय होकर खेती करना प्रारम्भ किया । रियासत म दुकानदारो का पता नहा था अब वहा पर दुकान खुल गयी है और जो मीणा लोग गिरोह बनाकर लूटमार किया करते थ वे सब भल आदमी बनकर सबके बीच म आते - जाते और अपना काम करते थ ।[5]

---

5 टॉड पश्चिमी भारत की यात्रा पृष्ठ 86 - 87

कर्नल टाड स्वयं अपने देश की सरकार की आलोचना करने लगता है और भारत के विषय में कहता है —

प्रजा पर जब करों का बोझ इतना बढ़ जाता है कि उससे उनकी गरीबी लगातार बढ़ती जाती है तो हम यह कहने का साहस किसी भी दिशा में नहीं कर सकते कि हमारे शासन का बोझ अधिक और असह्य नहीं है। इस दिशा में कोई कुछ करें हम तो स्पष्ट रूप से यह कह देना चाहते हैं कि हमारी सरकार द्वारा प्रजा से वसूल करने के लिए जो कर लगाये जाते हैं वे प्रजा के आर्थिक ढांचे को उठाने के लिए नहीं बल्कि सरकारी खजाने भरने के लिए लगाये जाते हैं। आज भर्में में भारत हमारी सरकार के सम्पर्क में है और इन दिनों में जो कुछ यहां पर सरकार की तरफ से किया गया है वह किसी से छिपा नहीं है। ईमानदारी के साथ यहां की पहले की परिस्थितियों का आज के जीवन के साथ मुकाबला किया जाय तो जो अन्तर सामने आता है उस पर धूल नहीं डाली जा सकती।[6]

आगे टाड लिखता है— इस देश का शासन प्राप्त करने में तलवार का महत्व दिया जाता है। उसके सम्बन्ध में यहां पर एक उदाहरण देना आवश्यक समझता हूं। इस देश की प्रजा में जो कानून हम बनाने का चेष्टा करते हैं उनकी रचना इंगलैण्ड में हुई है। वहां के रहने वाले अंग्रेजों को यहां के निवासियों का अधिक अनुभव नहीं है। जब तक इस की प्रजा का अनुभव नहीं होता उसकी आवश्यकताओं का ज्ञान नहीं होता उस समय तक कोई भी शासक प्रजा के साथ अच्छी भावना रखते हुए भी अपने इस कर्तव्यों का पालन नहीं कर सकता जिसमें राजा और प्रजा दोनों का हित हो।

सिरोही की भौगोलिक स्थिति के बारे में कर्नल टाड लिखता है यह रियासत किसी साधारण अंग्रेजी प्रांत से बड़ा नहीं है इसकी लम्बाई 70 मील और चौड़ाई 50 मील है। इसकी जमीन का एक बड़ा भाग पहाड़ों है और जो हिस्सा बराबर जमीन का है वह रेगिस्तान के किनारे पड़ता है। हो सकता है सिरोही का नाम उसकी भौगोलिक स्थिति के अनुसार पड़ा हो जिसका अर्थ है सिर अर्थात् ऊपरी भाग और रोही अर्थात्

6 टॉड पश्चिमी भारत की यात्रा पृष्ठ 88 - 89

जगत इस प्रकार बना सिरोही। रियासत के पहाड़ी हिस्से में कितनी ही उपजाऊ घाटियां हैं। खेती और समतल ज़मीन में मक्का, गेहूं और जौ अधिक पैदा होता है। इसके सभी झरने अरावली और आबू पहाड़ से निकलते हैं। इन झरनों के द्वारा रियासत कई भागों में बंट जाती है। इसकी सीमा नक्शा देखने से साफ समझ में आती है। पूर्व में अरावली पहाड़, उत्तर और पश्चिम में मारवाड़ के पश्चिमी ज़िले गोड़वाड़ और जालोर हैं। पश्चिम एवं दक्षिण की तरफ पालनपुर की रियासत है।[7]

सिरोही की रियासत विस्तार में बड़ी है और उसके मकान खूबसूरत हैं और ईंटों के बने हुए हैं। लेकिन आबादी में अब भी लगभग आधे मकान खाली पड़े हैं। पानी बीस हाथ से लेकर तीस हाथ तक नीचे पाया जाता है। राव का महल एक छोटी सी पहाड़ी की ढाल पर बना हुआ है। लेकिन इसके निर्माण में किसी प्रकार की सुन्दरता का आभास नहीं होता।

राजस्व के बारे में टाड लिखता है सिरोही की मालगुज़ारी से होने वाली आमदनी शान्ति के दिनों में सात लाख रुपये से लेकर चार लाख रुपये वार्षिक होती है। और लगभग इससे आधी आमदनी रियासत की जागीरदारों से हो जाती है। इस रियासत में 5 बड़े जागीरदार हैं— नाम्बज, लावान, पाडीव, कालन्द्री और बाम्रा या। ये पांचों जागीर राजधानी से चौदह से बीस मील की दूरी पर हैं। सिरोही को संगमरमर से अधिक व्यापारिक आमदनी होती है। यहां की तलवारें भी श्रेष्ठ मानी जाती हैं ठीक उसी प्रकार जैसे फारस एवं तुर्क लोगों में दमिश्क की तलवारें। सिरोही की तलवारें हिंदुस्तान में बड़े सम्मान के साथ रखी जाती हैं।

सिरोही के राव के बारे में टॉड लिखता है 'रावशिवसिंह 27 वर्ष का जवान लड़का है। इसका कद छोटा है। उसकी मुखाकृति से बुद्धिमत्ता का परिचय नहीं मिलता है। इसके बदन का रंग गोरा है और देखने सुनने में बुरा नहीं है लेकिन इसके शरीर में वह ओज है जिसको शासक जाति अपना वैभव मानती है। इसमें शासन के अनुभव की कमी मालूम पड़ता है। इसका भी कारण था अब तक इसने अपनी ज़िन्दगी में मीणा लोगों, कोलियों और अपने पड़ोसी जोधपुर के भयानक लोगों के हमला

---

7 पश्चिमी भारत की यात्रा पृष्ठ 90 91

का मुकाबला किया था और उसकी अपने अन्तिम दिन नाम्बज के ठाकुर के इन फरेबों में व्यतीत करने पड़े थे।

टाड सिरोही में राव से मुलाकात का वर्णन करता है। देवड़ा राजपूतों की राजधानी सिरोही में मेरा शान से अभिनन्दन किया गया। उस अभिनन्दन में सिरोही की श्रेष्ठ सुन्दरियों ने मेरे स्वागत में गीत गाये। उस समय का सुन्दर दृश्य हिन्दुस्तान को छोड़कर मैंने अन्यत्र संसार में कहीं नहीं देखा था। उनके गानों में पीतल के मजीरों की ताल बड़ी प्रिय और आकर्षक मालूम हो रही थी। वे सुन्दरियाँ गाना गाती हुई राव के आगे चल रही थीं। अभिनन्दन करने वालों का यह जुलूस मुझे अपने नगर में ले जाने के लिये आया था। मैं उनके नगर में जाता हुआ अपने उस मुकाम में पहुँच गया जो दक्षिण की तरफ लगभग आधा मील के फासले पर था।

दूसरे दिन उस रियासत में ठहरकर टाड राव से मिले। इस मौके पर राव के सभी सरदार एकत्रित थे। राजा के सम्मान में इस प्रकार महत्वपूर्ण समारोह कदाचित पहले कभी नहीं हुआ था। मानिक राव के वंशज के सम्मान में जिस प्रकार की सामग्री की कमी थी उसको समझकर टाड ने अपनी सरकार की तरफ से नजराना पेश किया। ऐसा करने में टॉड को अधिक सोच नहीं करना पड़ा। क्योंकि जवाहिरात और कीमती पोशाकें तो उसे मेवाड़ के राणा के यहाँ से भेंट में मिली थी। उसके सिवा कीमती साज से सजा हुआ एक हाथी, एक घोड़ा, जवाहिरात से जड़ी हुई मोतियों की माला, एक कीमती सिरपेच और अच्छी संख्या में ढालें, दुशालें, पारचा, मलमल के थान, अच्छी पगड़ियाँ, साफे और कितने ही यूरोप के बने हुए कपड़ों से भरा हुआ थाल नजर में दिया गया।

आबू पर्वत पर राव श्यामसिंह और उसके सरदारों से मिलकर टॉड ने इस प्रकार आलिंगन किया जैसे पिता और पुत्र एक दूसरे से मिलते हैं। सबसे मिलकर और उनका स्नेह प्राप्त करके टाड बहुत खुश हुआ। जब यह सब कुछ हो चुका तो राव ने टॉड को अपने साथ चलने और सिंहासन पर बैठने का अनुरोध किया। परन्तु टाड ने हँसकर उसके इस सम्मान को नम्रता के साथ नामंजूर कर दिया।

---

5 टाड पश्चिमी भारत की यात्रा पृष्ठ 96 97

राव के लिए म आज किसी प्रकार की घबराहट न थी और आबू के पवित्र वातावरण म स्वतन्त्रता के सुख का वह अनुभव कर रहा था। इस समय टॉड ने उसके साथ कुछ देर तक बात की। ये बातें उसके राज्य की भलाई के सम्बन्ध म थी और कुछ दूसरी बातें भी थी। टॉड ने राव को समझाया कि प्रजा का उत्थान कैसे हो सकता है बेगार की प्रथा को बन्द कर देना क्यों बहुत जरूरी है? व्यापारियों को सुविधाएं राज्य की तरफ से क्यों आवश्यक है?

इसके बाद राव के पूर्वजों के विषय म कुछ देर बातचीत होती रही। टॉड को इस बात की खुशी थी कि उनके सम्बन्ध म जितनी उसे जानकारी है उतनी राव को उसके पूर्वजों और उनके इतिहास के सम्बन्ध म नहीं है। टॉड ने राव को आग्रह करते हुए कहा कि वह अपने राज्य के प्रति और अपनी प्रजा के प्रति सदा ईमानदार और उदार रहे।

कर्नल टॉड ने केवल सिरोही की रक्षा ही न की बल्कि जोधपुर एवं सिरोही राज्यों के मध्य संधि कराकर दोनों राज्यों के परम्परागत मन मनमुटाव को कम करने का प्रयत्न किया। इसका परिणाम यह हुआ कि सिरोही एक बार पुनः आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न राज्य बनने लगा। अपराध एव आक्रमण कम होने लगे। सम्पूर्ण रियासत म सुरक्षा की भावना पैदा होने लगी जिसके परिणाम स्वरूप प्रजा को सुख एव सन्तोष मिलने लगा। किसान कृषि कार्य करने लगे व्यापारी व्यापार करने लगे रियासत भी उजाड़ हो गई थी एक बार पुनः आबाद हो गयी।

टॉड की सिरोही की यात्रा म एक लाभ यह भी हुआ कि आबू पर्वत जिसकी जानकारी लोगों को बहुत कम थी विशेष रूप से विश्व म टॉड ने उसको अमर बना दिया। परमारों की प्राचीन राजधानी चन्द्रावती जो विस्मृत हो गई थी अब लोगों को इस बात की जानकारी हुई कि मध्यकाल में इतनी वैभव पूर्ण राजधानी राजस्थान म थी। अन्त म टॉड के सद् प्रयत्नों से ही सिरोही और अंग्रेजों के मध्य 11 सितम्बर सन 1823 को एक संधि सम्पन्न हुई जिसके परिणाम स्वरूप सिरोही म एकबार पुनः शान्ति और समृद्धि का युग प्रारम्भ हुआ।

—

टॉड की बनेड़ा व बेगूं ठिकाने की यात्राएं

मेवाड़ के इतिहास में वर्ग के जागीरदारों की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही इसलिये वे मेवाड़ के स्तम्भ माने गये । टॉड यह अच्छी प्रकार जानता था कि मेवाड़ की समस्याओं का समाधान अकेले महाराणा से परामर्श करने से नहीं होगा इसलिये उसने यहां के प्रमुख उमरावों को अपने विश्वास में लेने उनसे मेल मिलाप बढ़ाने तथा उनकी निजी समस्याओं का हल ढूंढने हेतु मेवाड़ के ठिकानों की यात्राएं की जिसमें बनेड़ा व बेगूं की यात्राएं विशेष महत्व रखती है ।

बनेड़ा की यात्रा टाड मार्गशीर्ष सुदि 11 1875 (1818 ई.) को बनेड़ा पहुंचा । बनेड़ा के राजा भीमसिंह (द्वितीय) ने टाड का भव्य स्वागत किया और आदर-सत्कार कर उसका मान बढ़ाया । इसका विवरण स्वयं टाड ने कलमबद्ध किया है—

बनेड़ा का किला मेवाड़ राज्य के समस्त प्रभावशाली दुर्गों में एक है और यहां के राजा समस्त सामंतों में प्रथम है । उनको राजा की पदवी नाममात्र की नहीं है वरन एक राजा के समस्त लवाजमा में वह सुशोभित है । उदयपुर के महाराणा के वह निकटतम सम्बन्धी है ।

मेरे मित्र राजा भीमसिंह ने बनेड़ा से दो मील आकर मेरी अगवानी की । वे मुझे महलों में ले गये । मैं वहां तीन घन्टे रहा । इस अवधि में मुझे मेवाड़ राज्य के अधीनस्थ राज्यों की व्यवस्था तथा राजा का रहन सहन देखने का सुअवसर मिला । राजा राजसी ठाट बाट में रहते हैं और सुसभ्य है । उन्होंने खुले मन से तथा किंचित मात्र मदभाव न रखते हुए मुझसे बातचीत की । उनको शाही मरातिब लवाजमा तथा सम्मान मिला है ।

राजा ने मुझे गोखड़े में मखमली गद्दे पर बिठाया । उसके सामने के सभा भवन में बनेड़ा राज्य के सामन्तगण बैठे थे । वे मुझसे एक

भाई के समान घरेलू तथा राजकीय विषयों पर वार्तालाप करते रहे और मेरी राय पूछते रहे।

मेरे विदा होते समय उन्होंने मुझे उपहार देने चाहे। मैंने उन्हें स्वीकार तो किया किन्तु हमारी राजकीय नीति के अन्तर्गत उन्हें साथ ले जाना स्वीकार नहीं किया।

माननीय लार्ड बिशप जब बनेड़ा आये थे तब उनका भी राजा ने उत्तम स्वागत किया था। वह मुझे मेरे सम तक पहुंचाने आये। मैंने उन्हें एक जोड़ा पिस्तौल तथा एक दुर्बीन भेंट की। जिससे वह आसपास के प्रदेश को किले पर से ही देख सकें। मिलने के समय हम दोनों को जितना आनन्द और सन्ताप मिला, उतना ही विदा के समय हम दोनों ने दुःख का अनुभव किया।[1]

बगू की यात्रा-टाड की बगू यात्रा के दो कारण थे। एक तो महाराणा भीमसिंह और मेवाड़ के सरदारों का पारस्परिक सम्बन्ध स्थिर करने के लिए 1818 ई. में टाड द्वारा जो कौलनामा तैयार कराया उस पर बेगू के रावत मेघसिंह (द्वितीय) ने सब सरदारों में पहले हस्ताक्षर किये। इससे टॉड की श्रद्धा बगू ठिकाने के प्रति बढ़ गई थी। दूसरा बगू के कई गांव सिंधिया ने दबा लिये थे उस पर विचार किया जाना जरूरी था। अतः टाड 1822 ई. फरवरी के माह बगू गया। रावत मेघसिंह चूण्डावत ने उसका आतिथ्य कर राजबाग में उसे ठहराया। विश्राम करने के बाद टॉड ने हाथी पर आरूढ़ होकर रावत से मिलने के लिए प्रस्थान किया। बगू गढ़ का दरवाजा काली मेघ चूण्डावत ने बनवाया था वह इतना ऊंचा न था कि हौदे सहित हाथी अन्दर प्रवेश कर सके। इसलिए महावत ने दरवाजे से दूर ही हाथी को रोक दिया और टाड को हाथी से नीचे उतरने के लिए कहा। परन्तु टाड ने उस समय एक दूसरे हाथी को द्वार में प्रवेश होते देख लिया इसलिए उसने महावत को हाथी अन्दर ले जाने को कहा। लेकिन द्वार पर पहुंचते ही हाथी मस्त गया और वह महावत के काबू में नहीं रहा। हौदे के साथ टॉड नीचे गिर पड़ा जिससे वह बेहोश हो गया। तम्बू में लाकर उसे लेटाया गया। आधी रात को उसे होश आया जब तक रावत मेघसिंह उसके शिविर में ही बैठे रहे।

---

1 एन स भाग 1, पृ 829 30 बनेड़ा राज का इतिहास पृ 124 5

दूसरे दिन सूर्य उदय होते ही रावत ने गढ़ के दरवाजे को ध्वस्त करा दिया। दो दिन के बाद टाड जब बिल्कुल स्वस्थ हो गया तब वह किले में गया। उस समय गढ़ का मुख्य द्वार टूटा हुआ देख कर टाड को बड़ा दुख हुआ क्योंकि किसी प्रसिद्ध पुरुष के स्मारक को यों नष्ट करना उसे अच्छा नहीं लगता था। पूर्णरूपेण जाँच पड़ताल करके टाड ने 32 गाव रावत महासिंह को दिलाये और इसके बदले 24000 रु सिंधिया को दिलाकर झगड़ा समाप्त किया। बेगूं ठिकाने के लिये टाड की यात्रा लाभदायक सिद्ध हुई। गावों पर अधिकार हो जाने से ठिकाने की आर्थिक दशा में धीरे धीरे सुधार होने लगा।

—

राजस्थान के इतिहास के पिता कर्नल टॉड

—जसवन्तसिंह सिंघवी

भारत के समूचे ग्रन्थों में कर्नल टॉड कृत राजस्थान का इतिहास अनुपम ग्रंथ है। क्षत्रियों के परम हितैषी टॉड ने पच्चीस वर्षों के सतत परिश्रम से राजपूतों की कीर्ति से मण्डित राजस्थान का इतिहास लिखा, जो ऐतिहासिक सामग्री का एक अपूर्व भण्डार है। राजस्थान का कोई श्रृंखलाबद्ध इतिहास लिखा हुआ नहीं था ख्यातों बातों वंशावलियों में इतिहास के सूत्र बिखरे हुए थे। टॉड ने अथक परिश्रम कर स्थानीय सामग्री का संकलन किया और वैज्ञानिक ढंग से राजस्थान का इतिहास लिखकर शोध जगत में एक नई क्रांति लाने का अनुकरणीय कार्य किया। इसलिये वे राजस्थान के इतिहास के पिता के रूप में याद किये जाते हैं।

टॉड की ख्याति एक महान इतिहासकार के रूप में तो सर्व विदित है ही वे राजस्थान और उसके आस-पास के प्रदेशों के भूगोल के भी प्रथम शोधक थे। उन्होंने दिल्ली से राजस्थान और मध्य भारत के अनेक प्रमुख स्थानों के मार्गों की उत्तम रीति से पैमाइश का कार्य सम्पादन कर अपनी सूझ-बूझ और पैनी दृष्टि का परिचय दिया। टॉड ने राजस्थान और उसके आस पास के प्रदेशों का एक प्रमाणिक नक्शा तैयार करने में भी कठोरतम परिश्रम किया। इस उपयोगी काम में अपना समय लगाते हुए उन्होंने इतिहास प्राचीन ग्रन्थ पुराने सिक्के जन श्रुति और शिला लेख आदि का भी संग्रह किया। जान को जोखम में डालकर वे विकट मार्गों में होकर अपने भौगोलिक और ऐतिहासिक शोध के कार्य में अनवरत लगे रहे। अपने इस वर्ष के असाधारण श्रम से उन्होंने राजस्थान का पहली बार एक प्रामाणिक नक्शा बना लिया। सन 1715 में उन्होंने यह नक्शा हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल हास्टिंग्ज को भेंट किया जिन्होंने टॉड के इस महान कार्य की बड़ी प्रशंसा की। प्रदेश में सुधार व्यवस्था स्थापित करने में यह नक्शा अंग्रेजी सरकार के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ। टॉड ने अपने

भूगोल सम्बन्धी महत्वपूर्ण शोध के द्वारा हमारे देश के भौगोलिक ज्ञान म अनुपम वृद्धि की। सन् 1829 में जब उन्होने अपने राजस्थान इतिहास की पहली जिल्द छपवाई तो उसके आरम्भ म यह नक्शा दिया और अपने सग्रह किये हुए राजस्थान के भूगोल सम्बन्धी वृतान्त का साराश लिखा।

सन् 1815 के अक्टूबर में टॉड सधिया के दरबार के रजिडेन्ट रिचर्ड स्ट्राची के दूसरे असिस्टेन्ट नियुक्त हो गये। इसी नियुक्ति से इनका पोलिटिकल विभाग म प्रवेश हुआ। उस समय राजस्थान मे मरहठो का प्रभाव बढ़ा हुआ था। राजपूत रईसो के आपसी फूट स मरहठा स लोहा लेना आसान काम नहा था। मरहठो और पिंडारियों क उत्पात से राजस्थान वीरान होता चला गया। टॉड को राजस्थान की एसी दुर्दशा देख कर बहुत दुख हुआ। उन्होंने अपनी पुस्तक राजस्थान म इस दयनीय स्थिति का विस्तृत विवरण दिया है। सन् 1887 म गवर्नर जनरल हास्टिंग्ज ने लूटपाट एव अराजकता के हालात को समाप्त करने के लिये दृढ सकल्प कर लिया। इस काय म सरकारी फौज का टाड ने उत्तम पथ प्रदर्शन किया। पिंडारियों और मरहठो का उपद्रव समाप्त होने पर ब्रिटिश गवनमन्ट न राजस्थान के राज्यो से सधि करना आरम्भ किया।

टॉड को उदयपुर जोधपुर कोटा बूदी और जसलमर के राज्यो का पोलिटिकल एजेन्ट नियुक्त किया। सन 1818 के फरवरी महीने म वे जब उदयपुर आये उस समय मेवाड की दशा शोचनीय थी। भीलवाड़ा और कई अन्य कस्ब मरहठों क उत्पात से उजड गय थे। राज्य प्रबन्ध शिथिल हो रहा था। राज्य की आय बहुत घट गई थी। मेवाड म इस समय महाराणा भीमसिंह शासन कर रहे थे। उन्होने टाड का आदरपूवक स्वागत किया। टॉड अपन उत्तम स्वभाव क कारण कुछ ही दिनो मे महाराणा भीमसिंह के पूर्ण विश्वास पात्र और मुख्य सलाहकार हो गये। उन्होंन टॉड की सलाह से शासन प्रबन्ध म सुधार के अनेक कदम उठाये। प्रदेश म शांति रहने के कारण राज्य की आय दुगुनी बढ गई। तीन बरस म उदयपुर नगर की आबादी तिगुनी हो गई उजड गाव फिर बसने लगे। यो टाड की उपस्थिति मेवाड और राजस्थान के अन्य राज्यो क लिए वरदान सिद्ध हुई।

अपन कायकाल म टाड न अपनी सरकारी यात्रा म राजस्थान के अनक स्थानो पर पुरावशेष प्राचीन ग्रन्थ और शिलालेखो की खोज का काम किया। अपने मृदुल स्वभाव और सरल प्रकृति के कारण वे जहाँ गये

लोकप्रिय हो गये थे। इतिहास से उन्हें इतना लगाव था कि अस्वस्थता की हालत में भी गांव में खाट पर लेटे हुए वे जनता की समस्याओं और ऐतिहासिक विषयों पर लोगों से बातें करते रहते थे। वे राजपूत रईसों और उनके सामन्तों के विश्वासपात्र थे। उन्होंने मध्यस्थ बन कर राजाओं और उनके सामन्तों के अनेक विवादों का निपटारा कराया। निरन्तर कठिन परिश्रम के कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया था। डॉक्टरों ने उनके शरीर की जांच कर उनको स्वदेश लौटने की सलाह दी।

ता. 1 जून 1822 को टॉड ने उदयपुर से स्वदेश के लिये प्रस्थान किया और बम्बई में तीन सप्ताह रह कर टॉड जहाज से स्वदेश के लिए रवाना हुए जहां तक जहाज पर से भारत का तट दिखता रहा वे एक टक अपनी प्रिय कर्मस्थली को देखते रहे। स्वदेश पहुंच कर भी टॉड ने भारतीय इतिहास और प्राच्य विद्याओं में अपना शोध जारी रखा। वे लन्दन नगर की रायल एशियाटिक सोसायटी नामक संस्था के सदस्य हो गये। सन 1829 में उन्होंने अपनी विख्यात पुस्तक एनाल्स एण्ड एन्टीक्वटीज ऑफ राजस्थान की पहली जिल्द छपवाई और सन 1832 में उसकी दूसरी जिल्द प्रकट हुई। इस पुस्तक की यूरोप अमरिका और हिन्दुस्तान के इतिहास प्रेमियों ने बहुत प्रशंसा की। अपनी नई पुस्तक ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इण्डिया को छपवाने की लन्दन में व्यवस्था कर ही रहे थे कि अचानक उनको मिरगी की बीमारी हो गई। 17 नवम्बर 1835 को 53 वर्ष की अवस्था में भारतीय इतिहास और संस्कृति के इस परम उपासक और भारतवर्ष के सच्चे हितैषी का लन्दन नगर में निधन हो गया। ब्रिटिश सरकार के एक उच्च अधिकारी होते हुए भी टॉड की इतिहास दृष्टि निष्पक्ष स्वतन्त्र और सत्य पारखी थी। यही कारण है जहां विदेशी सरकार ने हमारी इतिहास कीर्ति का नाश करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी टॉड ने उसी सरकार का अंग होते हुए भी भारतीय राष्ट्र की ख्याति उजागर करने हेतु राजस्थान का इतिहास लिखा। भारत के सभी विद्वानों ने यह स्वीकार किया है कि टॉड के इतिहास ने भारतीयों में देशप्रेम और स्वाधीनता की भावना को जागृत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। राजस्थान इतिहास के पिता और इस अमर इतिहासकार को निम्न काव्यांजलि श्रद्धा सुमन के रूप में सादर अर्पित है–

पुरातन ग्रंथ और पुरालेख शोधि शोधि
नभ इतिहास चन्द्र कौन चमकावतो ।
चारण सुविप्र एवं अन्य सुधी सयनि ने
प्रबल पराक्रम की गाथा कौन गावतो ।।
कपटी लुटेरों की अराजकता नष्ट कर
कौन सुव्यवस्था और शान्ति सरसावतो ।
भारतीय गरिमा कौन करतो विश्वव्यापि
जो "राजस्थान इतिहास" टाड न रचावतो ।।

—

कर्नल टॉड - व्यक्तित्व एव कृतित्व

—डॉ गोपीनाथ शर्मा

जब मराठों की शक्ति का ह्रास हो रहा था और ब्रिटिश सत्ता क प्रभुत्व की आभा छा रही थी एव राजस्थान क नरेश अपन पूवजा क शौय को खो चुके थे तथा प्रजा साम तों तथा नरशा क शापए स कहरा रही थी उस समय कुछ एक अग्रजी शासन क अधिकारी एम थ जिह राजस्थान व भारतीय शौय ग्रार सस्कृति स कुछ लगाव हा गया था । एस व्यक्तियों म कनल टॉड एक था ।

कनल टाड के व्यक्तित्व पर दष्टि डाल ता कई मह वपूण पहलू हमारे सामने आत है । प्रथम तो उसम एक विलक्षण एव सवतामुखा प्रतिभा थी जिसमे जिस काम का वह हाथ म लता था उस वह पूरी दक्षता स पूरा करता था । जब उसका चयन वूलविच क शिक्षा स्थान म किया गया ता चयन एक प्रकार स उसकी याग्यता क आधार पर था क्योंकि इसम प्रवश इन गिने शिक्षाथिया का दिया जाता था जा सख्या क मापदण्ड क अनुकूल उतरत थ । इस परिक्षण म ठीक उतरन पर उस रेजीम ट म कमीशन दिया गया । जब वह मराइन द्वीप भेजा गया ता वहा नाविक दल क काम म भी खरा उतरा । वहाँ से आन पर वह रजाम ट का लफि न टा और दिल्ली म सर्वेक्षणी इजीनियरी आदि पद पर काम करन म सक्षम समझा गया । उसके उदीयमान गुणा स प्रसन्न होकर मिस्टर ग्रीमसर न उस अपन साथ सिधिया दरबार म ल जाना उपयुक्त समझा । यहा जान पर सात वष क अथक परिश्रम द्वारा उसन सर्वेक्षण क मानचित्र एव आकड मिन्ध म नमदा और नमदा से यमुना प्रचल क सामरिक तथा राजनतिक उपयाग क लिए तयार कर अपन ऊपरोक्त अधिकारियों क दिल म एक अपूर्व स्थान ग्रहण कर लिया । य सामग्री आग होने वाल सर्वेक्षण क लिए महत्वपूण सिद्ध हुइ ।

इस बहुमुखी प्रतिभा से चमत्कृत होकर लार्ड हेस्टिंग्ज ने अपनी विस्तारवादी नीति को सफल बनाने के लिए उसे मराठों व पिण्डारियों के दमन में लगाया जहां वह जालिमसिंह के सहयोग से शतश सफल हुआ। सिन्धिया के दरबार से स्टुअर्ट के घर जाने पर वह रेजीडेन्ट के द्वितीय सहायक और फिर उदयपुर में एजेन्ट के पद पर पदासीन हुआ। एजेन्ट पद पर रहते हुए उसने अपने अधिकार क्षेत्र में यत्र तत्र छिप व बिखर उपद्रवीयों को खदेड़कर शान्ति स्थापित की। यही नहीं आन्तरिक झगड़ा और सामाजिक जीवन के असन्तुलन को निपटाने में उसने अथक परिश्रम किया। टॉड ने नरेशों व राजस्थानीय सामन्तों के पारस्परिक विवादों का निपटारा राजपूत राजनीति की विषम विडम्बनाओं का सुलझान और अपने पद की गरीमा बनाये रखने में कोई कसर न रखा। ऐसा तभी सम्भव हो सका जब वह स्वयं हर समस्या को समझने और निष्ठा पूर्वक जटिल समस्याओं का दृढ़ता से मुकाबला करने की क्षमता रखता था। यही कारण था कि उसके शासन काल में उजड़ी हुई बस्तियां पुनर्स्थापित हो गई। असंख्य मार्ग फिर यातायात के लिए उपयोगी हो गए और बाहर से आने वाले व्यापारी राजस्थान के अनेक नगरों में अपना करोबार जमाने में लग गये। भीलवाड़ा जो बस्ती के लिहाज से उजड़ चुका था वहां पुन 3000 घरों की बस्ती हो गई। 1818 में उदयपुर में जहां 3500 की आबादी थी 1822 में 10 000 हो गई। 1818 ई का राजस्व जो 40 000 रु वार्षिक था बढ़कर दस लाख तक पहुंच गया। इस विकास और वृद्धि का श्रेय कर्नल टाड को है जिसने अपने परिश्रम और अध्यवसाय से अपने दायित्व को निभाया। इस प्रकार बुद्धि प्रशासन कूटनीति अध्यवसाय परीश्रम, कार्य कुशलता व क्षमता प्राप्ति के क्षेत्र में वह कसौटी पर हर प्रकार से ठीक उतरा।[1]

इसके जीवन का एक अन्य पहलू भी है जिसमें कुछ उसके प्रशंसकों और कुछ उसके विरोधियों के विचार है। एक अधिकारी जिसका नाम कर्नल विलियम निकोल था जिसने इसके साथ चौदहवी रेजिमेन्ट में काम किया था उसने लिखा है कि टॉड सरल प्रकृति का था और सभी सरकारी अफसर उसे प्यार करते थे तथा उसमें उस उदीयमानता के सभी लक्षण दृष्टिगत होते थे जो बाद में उसने अपनी प्रतिभा के बल पर प्राप्त की थी।[2]

---

1 टाड एनाल्स भा 1 पृ 561 585 प्रस्तावना प 29 30 35

2 टाड, ट्रवल्स, प 18

मिस्टर ग्रीममसर ने टाड को अपने साथ सिंधिया दरबार में ले जाने के लिए अपने ऊपरीय अधिकारियों को जो प्रशसात्मक पत्र लिखे थ उनम उनके सम्मान और स्वतन्त्र चरित्र की भूरि भूरि प्रशसा की गई थी। मिस्टर मसर न इसकी कार्य कुशलता और त्यागवृत्ति के सम्बन्ध म लिखा है कि जब तक म इस रजिडन्सी म रहा वह इस प्रदेश के भूगोल सम्बन्धी अपने ज्ञान को बढाने के लिए प्रत्यक सुलभ और शक्य अवसर का लाभ उठाता रहा और मेरा विश्वास है कि उसके वेतन का बहुत बडा भाग देश के विभिन्न मार्गों म कार्यकर्ताओं को भेजकर उनके द्वारा स्थानीय सूचनाए प्राप्त करने म व्यय होता था। वह स्वय भी इस उद्देश्य के लिए अथक परिश्रम करता रहता था और उसकी थकान को कम करके उसे पुन सुस्वस्थ बनाने हेतु कभी-कभी मुझे ऐसे प्रयत्न भी करने पड़त थ कि उसकी प्रवृत्तियों म रोक पदा हो जाय क्योकि गठियावाद स प्रभावित उसका स्वास्थ्य बहुधा साधारण व्यायाम करने म भी अशक्य हो जाता था। [3]

मिस्टर स्ट्रची जिनके साथ टाड न काम किया था लिखता है 'इस पूरे समय म वह मुख्यत सिन्धु और बुन्देलखण्ड तथा जमुना और नर्मदा के बीच के प्रदेशों से सम्बद्ध भौगोलिक सामग्री एकत्रित करन म व्यस्त रहा। मेरे पद स सम्बन्धित कर्तव्यों का इन प्रदेशों म निरन्तर सम्बन्ध बना रहता था और इस विस्तृत क्षेत्र के विषय म उसके भौगोलिक ज्ञान स मैंने बहुत लाभ उठाया। प्राप्त जानकारी को प्रस्तुत करन के लिए वह सदव तत्पर रहता था जो महत्त्व के अवसरो पर बहुत उपयोगी सिद्ध होती थी सरकार ने भी उसके इस कार्य की बहुत प्रशसा की है। [4]

लार्ड हेस्टिग्स तथा पिण्डारियों के विरुद्ध तनात प्रत्यक जनरल न टाड द्वारा प्रेषित मानचित्रों सफलता और मोर्चों की रचना के प्रकन और सामयिक प्राकट्य प्राप्ति के सम्बन्ध म उसकी सेवाओं के लिए अनेक बार धन्यवाद दिया। करीमखा व चीतू के विरुद्ध टॉड द्वारा की गई मोर्चाबन्दी का सम्बन्ध म लॉर्ड हेस्टिग्ज न उसकी अत्यन्त प्रशसा की और व्यक्त किया कि अभियान का भाग बढात म मार्गदर्शन सम्बन्धी आपकी सेवाओं के विषय म प्रत्यक क्षेत्रीय जनरल स प्रशसात्मक प्रमाण पत्र प्राप्त हुए हैं। [5] कोर्ट आफ डायरक्टर्स न भी सदा ही उसकी सराहना की। वह इतना स्वाभिमानी था

3 टॉड ट्रवल्स, पृ 19 22
4 टॉड ट्रवल्स पृ 22 23
5 टॉड ट्रवल्स पृ 26 27 29

कि युद्ध म जाने क लिए तो आगे आकर उसम सम्मिलित होन को उद्यत रहता था परतु सम्मान सम्बधी प्राप्य अधिकार क लिए याचना करने के लिए वह निम्नस्तर पर उतरना कभी पसन्द नही करता था।[6]

सिरोही कोटा मवाड आदि रियासतो की जनता टाड की बडी प्रशसा करती थी। इसक दो वष बाद आन वाल विशोप हैबर ने इन भावनाओ को अकित करते हुए लिखा है मेवाड के सम्पूण उच्च एव मध्यम वग म बहुत ही सौहाद और आदर से टाड का नाम लिया जाता था। डाबला और आगे मुकामो म वहाँ के कोतवाल आदि हम निरतर टाड साहिब के बारे म पूछते रहे कि इग्लण्ड लौटने पर उनका स्वास्थ्य ठीक हुआ या नहा और अब उसस फिर मिलना हो सकगा या नही इत्यादि। जब उनको कहा जाता कि ऐसी सम्भावनाए अब नहो है तो वह बहुत अफसोस प्रगट करत और कहत कि उसक आने से पहले दश म शाति का नाम भी नही था और सभी मालदार व गरीब लोग डाकुओ और पिंडा रियो के सिवाय उसस समान रूप स प्रम करत थ।[7] डा स्मिथ का भी कहना था कि वह वास्तव म इस दश क लोगों से प्रेम करता था और उनकी भाषा व रीति रिवाजो को स्वाभाविक रूप स जान गया था। भीलवाड म भी प्रत्यक व्यक्ति कप्तान टाड की भूरि भूरि प्रशसा कर रहा था। लोगो न उसके नाम पर भीलवाडा म एक बाजार का नाम टॉडगज रखवाया जिस स्वय टाड न निरस्त कर महाराणा के नाम रखवाया क्योकि वह चाहता था कि प्रत्येक लाभकारी काय का गौरव राजा को ही प्राप्त हो।[8] इन उद्धरणो व घटनाओ से सिद्ध है कि वह अपने उच्चअधिका रियो ग्रौर जनता का विश्वास भाजन बन गया था। मराठाकालीन नीति के माहौल म सरकार व जनता दोनो को सन्तुष्ट करना दो धारी तलवार पर चलना था जिसम वह हर प्रकार स सफल सिद्ध हुआ।

टाड का परोक्ष और अपरोक्ष रूप से 18 वर्ष तक पृथक पृथक पदों पर रहन क कारण उसका राजपूताना क साथ बराबर सम्बन्ध बना रहा। अपने सरल स्वभाव स उसकी लोकप्रियता भी इतनी बढ गई थी

---

6 टाड ट्रवल्स प 59
7 टाड, ट्रवल्स प 36
8 टाड ट्रवल्स प 36 37

कि उनका मन यहीं रमन का हो गया था।[9] फिर प्रश्न यह उठता है कि वह भारत छोड़कर इंगलैंड क्यों चला गया ? इसका उत्तर कई रूप में दिया जाता है। ऊपरीय तौर पर यही बतलाया जाता है कि शारीरिक अस्वस्थता के कारण उसका स्वदेश जाना आवश्यक था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अथक परिश्रम के कारण वह गठिया से पीड़ित था जिसका उपचार वह व्यायाम तथा औषधियों के सेवन द्वारा करता रहता था परन्तु 1819 से 1822 तक के सरकारी दस्तावेजों के अवलोकन से स्पष्ट हो जाता है कि उसकी लोकप्रियता से उसके साथियों में जलन की भावना उत्तरोत्तर तीव्र होती गई और कुछ स्वार्थी तत्व उसके राजपूत नरेशों के सम्पर्क का विपरीत अर्थ लगाकर उसके विरुद्ध मिथ्या प्रचार करते थे। देशी राजाओं के साथ स्नेह रखने की बात को बतंगड़ बनाया गया और गवर्नर जनरल के मन में उसके जीवन व नीति के संबंध में सन्देह उत्पन्न कर दिया गया। सरकारी दस्तावेजों की भाषा जो प्रशंसात्मक 1818 तक थी उसमें आगे चलकर कड़ाई का प्रयोग किया जाने लगा। कर्नल टॉड इस प्रकार के सन्देह से अप्रसन्न रहने लगा और उसने सरकारी सेवा छोड़ देने का संकल्प 1821 में ही कर लिया। इतना अवश्य था कि अपने कर्तव्य के निभाने में अथवा ब्रिटिश सत्ता के प्रति उसके मन या कर्म में निष्ठा और वफादारी वैसे ही बनी रही। स्वयं हैबर तथा उनकी पत्नी ने भी यह लिखा है कि राजपूतों का स्नेह भाजन बनने से सरकारी अफसर उस पर सन्देह करने लग थे और उस पर भ्रष्टाचार व घूसखोरी का आरोप लगाते थे। परन्तु इन शब्दों में स्पष्ट रूप से लिखा है कि जब हमने इन आरोपों की जाँच की तो सब मिथ्या साबित हुए। उनकी मान्यता है कि स्नेह भाजन बनना उसके उदार विचार से सम्बन्धित था। उसमें न कोई उसकी चाल थी या भ्रष्टाचार था। शोध के प्रति निष्ठा होने के कारण तथा ऐतिहासिक तथ्यों की खोज की प्रवृत्ति होने के कारण उसने राजपूतों या अन्य वर्गों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार बढ़ाकर लोकप्रियता अर्जित की थी जो उसके कतिपय साथियों को अच्छी नहीं लग रही थी।[10]

इन मिथ्या आरोपों के कुछ कारण भी थे। मारवाड़ भी टॉड के प्रशासन तंत्र था परन्तु वहाँ का वकील दिल्ली में ही रहता था। महाराजा मानसिंह स्वतन्त्र विचार का व्यक्ति था जो ब्रिटिश हुकूमत के

---

9 टॉड का पत्र महाराणा को स. से रो

10 मन आ[illegible] ग्रन्थ आर सी, भा 21, 1944, पृ 94-96

विरुद्ध था । वह तथा उसका मुसाहिब चाहते थे कि टाड को मेवाड एजेंसी पर था उसकी निगरानी मारवाड के निकटतम क्षेत्र मेवाड से होती थी और वह बार बार दौरे कर ब्रिटिश सत्ता का प्रभुत्व मारवाड के इलाके में स्थापित करता था । यहा तक कि मोरचों के हिसाब किताब की जाच एव सामन्तों के लेख ओहदे की जाच की जाती थी । महाराजा का जोधपुर किले के अधिकार से भी हटाने की माग कलकत्ते से चल रही थी । इस धारणा को लेकर टाड के प्रशासन की मारवाड मे कारिंदे अवहेलना करने लगे थे । महाराजा तथा उसका मुसाहिब अपना सीधा सम्बन्ध दिल्ली से चाहते थे ताकि मारवाड से सत्ता का दबाव मेवाड की तुलना मे दूर से बना रहे जिससे जाच पडताल एव निगरानी मे अकुश मे शिथिलता आ जाय । अतएव मारवाड के वकील ने दिल्ली मे रहते हुए *टाड के खिलाफ मिथ्या आरोपों की झडी लगा दी और आक्टरलोनी* जो टाड के मारवाड अधिकार से प्रसन्न नहीं था वह भी वकील का सहायक बन गया । इस प्रकार के षडयन्त्र से टाड की स्थिति बडी नाजुक हो गई । जब भी वह मारवाड पहुचता तो उसके साथ व्यवहार मे वहां का स्थानीय वर्ग उपेक्षा दिखाता इस आशय से कि वह तंग आकर मारवाड क्षेत्र से अलग हो जाय । अन्त मे वकील एव आक्टरलोनी की साजिश के कारण टाड से मारवाड क्षेत्र हटा लिया गया और मेवाड से दूरस्थ अजमेर का इलाका दे दिया गया जहा वह अपनी कारगुजारी प्रभावशील न प्रदर्शित कर सके और उसकी बदनामी हो [11] ।

कुछ साथियों की व्यक्तिगत दुर्भावना के अतिरिक्त कुछ एक ऐसी भी घटनाए थी जो सदेह से जुडी थी और धीरे धीरे उनका स्वरूप राजनीतिक बन गया । हाडौती मे सन्धि के अनुसार राजराणा जालिमसिह को कोटा के प्रशासन मे प्रमुखता दी गई थी परन्तु जब उम्मेदसिंह के पश्चात किशोरसिंह गद्दी पर बैठा और जालिमसिंह पक्षाघात से पीडित था तो किशोरसिंह के राज्य मे जालिमसिंह का पुत्र माधोसिंह राजराणा की हैसियत से कोटा महाराव के प्रशासन में हस्तक्षेप करने लगा । वास्तव मे ये हस्तक्षेप वाजिब नहीं था क्योंकि सन्धि के अनुसार जालिमसिंह के विशेष अधिकार का उपभोग माधोसिंह कोटा के सन्दर्भ में नहीं हो सकता था । कोटा महाराव इस बढते हुए माधोसिंह के प्रभाव को सहन नहीं कर सकता था।

---

11 फो प 19 14 अगस्त 1821 टॉड का पत्र न 60 टाड और स्पिन, न 5 1921

टॉड ने स्थानीय परिस्थिति को देखते हुए किशोरसिंह का पक्ष लिया परन्तु जब किशोरसिंह ने माधोसिंह के हस्तक्षेप के विरुद्ध गवर्नर जनरल को लिखा तो इसका कोई सन्तोषजनक उत्तर न दिया गया। बल्कि टॉड को आदेश दिया गया कि वह अपने फौजी दबाव से राजराणा के प्रभुत्व को बरकरार कायम रखावे। भय से महाराव चम्बल पार पहुँच गया और राजराणा ने कोटा पर प्रभुत्व कायम कर लिया। टॉड बिहड़ जंगल तथा दयनीय मार्ग की असुविधा के कारण समय पर कोटा न पहुँच पाया। इस बात को लेकर सरकार टॉड के आदेश से महाराव चम्बल पार कर ठाकुरों का विद्रोह करने का षड्यन्त्र कर रहा था और टाड ने सैनिक कार्यवाही में दिखाई कर महाराव को सहायता पहुँचाई थी हालांकि ब्रिटिश मत में महाराव को पुनः कोटा की गद्दी का अधिकारी बना दिया गया, जैसा टॉड मति के अनुसार चाहता था पर हाड़ौती के स्वतन्त्र अधिकारी से वंचित कर दिया गया। उसे आदेश दिये गये कि वह मालवा और राजपूताना के रेजिडेन्ट ओक्टरलोनी से आदेश प्राप्त कर कोटा एजेंसी का काम करे।[12]

अब रही मेरी मेवाड़ एजेन्सी जहाँ उसने बड़े लगन से ब्रिटिश हितों की रक्षा की और जनजाति व सामन्तों के उपद्रवों को शान्त कर राजस्व का आय बढ़ाने में सफलता दिखाई और वहाँ की प्रायः 30-40 हजार से 10 लाख के लगभग बढ़ा दी वहाँ भी उस पर आक्टरलोनी की अधीनता का अंकुश लगा दिया गया। जब मेवाड़ में शांति स्थापित हो गई सब ओर भीलों के उपद्रव शान्त हो गये तथा सामन्तों एवं महाराणा के सम्बन्धों में सुधार हो गया तो सन्धि के अनुकूल उसने महाराणा को पुनः स्वतन्त्र की छूट दे दी। इस कार्यवाही का भी सन्देह की दृष्टि से देखा जाने लगा। सरकारी प्रस्तावना में उस पर आरोप लगाये गये कि वह ब्रिटिश सत्तावादी नीति के प्रतिकूल आचरण कर रहा है और महाराणा से उसकी सांठगांठ बढ़ती जा रही है जो नई प्रभुसत्तावादी नीति और राजपूताना पर प्रभाव स्थापित करने में विडम्बना का साधन बनी। अपने 16 जुलाई 1821 के पत्र में जो उसने स्विटन को लिखा था, उसमें उसकी व्यथा का समुचित चित्रण है जिसमें स्पष्ट दर्शाया गया है कि उत्तरोत्तर

12 एचीसन भा 3 पृ 361 टॉड का पत्र मेटकाफ का फो पो न 20 1821, स्विटन का पत्र टॉड को पो प 5 1821 मेहता हेस्टिंग्स पृ 154, डॉ वशिष्ठ का लेख प 27 33,1991 पाण्डुलिपि।

मारवाड कोटा सिरोही और फिर मवाड स टाड का प्रभुत्व हटाया जाना उसके विरुद्ध षडयन्त्र मात्र है उसके जसा स्वामीभक्त तथा प्रजा सवक अधिकारी इस अपमान सूचक व्यवहार का सहन न कर सका। इसक पश्चात उसने मवाड म अपनी नई योजनाओं को क्रियान्वित करन म ढील कर दी। अपना चार्ज 1 जून 1822 को कपटिन वाघ को सुपुर्द कर वह 22 जून 1822 को यूरप यात्रा क लिए चल पड़ा। वास्तव म इस प्राणवान और निःस्वार्थ व्यक्ति पर भ्रष्टाचार तथा हिंदु मुसलमान जनता क साथ सद्व्यवहार एव राजाओ व सामन्तो स सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्ध जो ब्रिटिश सत्ता को मजबूत बनान क साधन थ उनक विपरीत प्रतिक्रिया का वातावरण बनाया गया वह उसक लिए घोर अन्याय का सूचक है। जिस नगर म उसन निष्ठा क साथ ब्रिटिश सना की सवा का शुभारम्भ किया था वहा उसको अपमानित किया जान लगा। भला एक निष्ठावान दूरदर्शी और सच्चा अधिकारी एस अपमान को कब सहन कर सकता था यदि हम स्वाभिमान का उदाहरण ढूढना है तो वह टाड क व्यक्तित्व म मिलता है।[13]

एनाल्स की समालोचना —

टाड क व्यक्तित्व म एक उज्ज्वल और सेवा भाव की भावनाओ का समन्वय था जिसस स्वदेश एव राजस्थान म उसकी लोकप्रियता हो गई। सम्भवत 19 वी शताब्दी म भान काल सत्ताधारी अधिकारियो म वह अपनी सानी का एक ही था। ऐस स्वभाव स उस ख्याति मिली परन्तु शाश्वत ख्याति उसकी कृतियो प्रमुखत 'एनाल्स' पर आधारित थी। लेखक होने का राज यह था कि उसको घूमने फिरने सर्वेक्षण करने सामग्री इकट्ठा करने की प्रवृत्ति नसर्गिक थी। अपनी राजकीय सवाओ से जो उसे फुरसत मिलती थी वह इस दिशा म लगन स जुट जाता था। इतिहास लेखन पद्धति क साधन एव इतिहासकार और समाजशास्त्री आज जानता है या उनका उपयोग वह करता है उनका समुचित उपयोग अपन समय म टाड न अपना लिया था। वसे उसने अपना दुनिया क लिए कभी इतिहास का मत्ता दने का आग्रह नहीं किया परन्तु उसक एनाल्स म पुरातत्व सामग्री स्थापत्य मुद्रा (20 हजार) शिलालेख ताम्रपत्र पट्ट पर दान ऐतिहासिक साहित्य लोक साहित्य और गाथाए एव जन सम्पर्क म जानकारी प्राप्ति इत्यादि क सभी अगों का समावेशित पान म हम उसकी कृतियों को इतिहास की सज्ञा दन म कोई आपत्ति नहीं। लगता है प्राचीन ग्राम

---

13 टाड ट्रवल्स पृ 1

के इतिहास ने उसे पूर्ण प्रभावित किया था क्योंकि स्थापत्य की वंश परम्परा व आदर्शों के अध्ययन और प्रस्तुतीकरण में टॉड ने गिबन के लेखन शैली का उपयोग किया है जो कई प्रसंगों से स्पष्ट है। यदि उसने प्राचीन भवन या मन्दिर को झांका तो उसका ध्यान स्वभावतः रोम के वैभव की ओर खिंचा और उस स्थापत्य की विशदता में भारतीय स्थापत्य का समावेश या समानता स्थापित करने के प्रयत्न में लगाया। कुम्भलगढ़ की वेदी में भी उसका यही प्रयास रहा है जो विशुद्ध वेदान्त विधि से बनाई गई थी जिसमें पाश्चात्य कला का कोई सम्बन्ध नहीं था।

इसी प्रकार जब उसने राजपूत जाति की उत्पत्ति की खोज करनी शुरू की तो सीथियनों के कुछ रस्म-रिवाजों की जानकारी उसे राजपूतों के रस्म रिवाज व मान्यताओं को सम्मान स्थिति में पाया। राजपूतों की अश्वना-पूजा घोड़ा का प्रचलन बलिदान और शौर्य को उसने इसलिए सीथियन परिपाटि से जोड़ दिया। विद्वान महोदय की भूल यह हो गई कि उसने गहराई से यह न सोचा कि भारतीय संस्कृति के विशालकाय दायरे ने सम्पूर्ण मध्य एशियाई एवं यूरोपिय संस्कृति को प्रभावित कर दिया था। इसी कारण ऊपरीय तौर से उसे समानता दिखाई दी थी और उसी समानता को विदेशी उत्पत्ति का स्रोत बतला दिया।

उसने इतिहास में वंशक्रम को सम्बद्ध करने में ख्यातों व वंशावलियों का प्रचुर उपयोग करने से समय, नाम, वंशानुक्रमानी आदि में भूलें हो गईं जिनका लिए विदेशी होने के नाते स्वाभाविक थी। स्थान का व आदि भिन्न प्रान्त होने से हल्दीघाटी की स्थिति का निराकरण उससे न हो सका अतएव उसे अरावली से सहाड़ा की पहाड़ियों में हल्दीघाटी होने का विवरण देना पड़ा जो गलत सा है।[14] परन्तु उसके द्वारा किये गये सामाजिक चित्रण में बड़ी जान दिखाई देती है क्योंकि वह स्वयं जानकारी के लिए निकट सम्पर्क में विश्वास करता था। अतएव हर तबके से मिलकर पूछताछ की और उसके बाद छानबीन द्वारा उसने अपनी धारणा बनाई। फलतः उसके वर्णन में नवजीवन का संचार हो गया। उसने आबू, कुम्भलगढ़, आदि ऐतिहासिक स्थलों के अनावा महाराणा मानसिंह, महाराणा प्रताप आदि समसामयिक व्यक्तियों का ऐसा खाका खींच कर रख दिया है कि जैसे स्थापत्य वैभव शौर्य और स्वभाव आंखों के आगे नाच रहे हों।

---

14 टॉड, एनाल्स भा 1, पृ 393

इसके इतिहास लेखन में पौराणिक एवं ख्यात प्रणाली की भी झलक प्रतिबिम्बित होती है । भौगोलिक वर्णन और वंश वर्णन में पौराणिक पद्धति का उपयोग उनके इतिहास में मिलता है । ख्यातों में दिये रोचक प्रसंगों से वह बड़ा प्रभावित हुआ जिनका समावेश उसने 'एनाल्स' में बड़ी भावुकता से किया है । जैसा ख्यातों में बड़ी-घरी घटनाओं का जिक्र रहता है टॉड महोदय ने उसका भी प्रयोग यथा साध्य किया परन्तु ख्यात लेखन प्रणाली को कुछ हद तक अपनाकर भी कभी ऐतिहासिक तथ्यों का निभाव वह नहीं कर सका । टाड की लेखक होने की ख्याति को प्रशंसा और लेखन सामग्री का उपयोग का प्रथम सोपान वारेन हेस्टिंग्स के पत्रों द्वारा दृष्टिगोचर होता है । उसकी रिपोर्टों मानचित्रों व संकेतों का वितरीकरण सभी ब्रिटिश सेनाओं व अधिकारियों में किया गया जिसके फलस्वरूप चारों ओर से उसकी प्रशंसा का ताँता लग गया जो हेस्टिंग्स के प्रलेखों से प्रमाणित है । इस प्रारम्भिक प्रयास के क्रम में इतिहास के साधन की विपुल सामग्री का मूल्यांकन 1806 से 1813 तक हो चुका था और उसकी मान्यता एक अच्छे संग्राहक के रूप में हो चुकी थी ।[15]

उसकी शोधक बुद्धि का परिचय विश्व को प्रथम बार हुआ जबकि उसने कई मार्मिक और खोजपूर्ण शोध प्रबन्ध रायल एशियाटिक सोसाइटी में पढ़े, और उन्हें तथा अन्य लेखों को पेरिस एशियाटिक सोसाइटी को भेजा। इन शोध प्रबन्धों के विषय राजपूत थे । जिनमें गुप्त मन्दिरों, राजपूत वंशों, मेवाड़ के धार्मिक संस्थानों, यूरोपियन एवं भारतीय मुद्राओं के अन्तर्गत शिलालेख थे। जिससे उसके पाण्डित्य का सौरभ देश विदेशों में प्रसारित हुआ । पुनश्च जो सामग्री वह अपने साथ लन्दन में लाया था उसका प्रकाशन राजस्थान के अधिकांश राज्यों के सन्दर्भ में एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज के नाम से पहली जिल्द 1829 में और दूसरी जिल्द 1835 में प्रकाशित हुई । उसने 1835 में अपनी पश्चिमी भारत यात्रा का ग्रन्थ समाप्त कर लिया था परन्तु जब उसे छपवाने को वह 14 नवम्बर को लन्दन आया तो 27 घण्टे मूर्छित रहने और अन्त में निधन के कारण उसका प्रकाशन देखने न पाया। 17 नवम्बर 1835 ई० को 53 वर्ष की अवस्था में वह इस संसार से विदा हो गया ।[16]

---

15 टाड ट्रवल्स पृ 47
16 टाड ट्रवल्स पृ 50 51

कनल टाड़ की ख्याति उसके 'एनाल्स' पर अधिक आधारित है। परन्तु उसका अन्वेषण प्रवृति का परिचय उन लेखों से जो यूरोपिय सभ्यताओं के सम्बन्ध में है व उसी आभा के साथ प्रस्फुटित होते हैं। तो इस प्रश्न का उठना स्वाभाविक है कि तब उसने फिर राजस्थान का इतिहास क्यों लिखा? सबसे प्रभावशील कारण यही हो सकता है कि नर्मदा से यमुना और इउस से बुन्देलखण्ड के सर्वेक्षण ने तथा एतद् सम्बन्धी क्षेत्र के जन सम्पर्क ने लोगों का स्थानीय लोक गाथाओं रस्म-रिवाजों तथा मान्यताओं से परिचित करा दिया। मध्य भारत मध्य प्रदेश राजस्थान एवं संयुक्त प्रांत के अंचलों के अतिरिक्त राजस्थान के शौर्य और बलिदान की आख्यायिकाओं से वह बड़ा प्रभावित हुआ। जब जब वह अपने परिजनों को तथा मित्रों को पत्र लिखता था उसने सदव राजस्थान के निजी ममता का काफी जिक्र किया। इसी अर्से में 1806 ई. में उन्हें मि. मर्सर के साथ दौलतराव सिंधिया तथा महाराणा भीमसिंह की श्री एकलिंगजी के मंदिर की मुलाकात तथा समझौते में सम्मिलित होना तथा कृष्णाकुमारी के अमानुषिक बलिदान की घटना को सुनकर उसका मन भर आया, उस उद्वेग से कि भारतीय बलिदान की कसौटी पर उतरने वाले राजवंश की यह दयनीय अवस्था है जिसको उभारना तथा प्रकाश में लाना उसका फर्ज है। वह स्वयं लिखता है कि पहले-पहल राजस्थान के पुरस्कार ना उदार योजना का विचार यहीं से मन में उठा और उसी के वशीभूत एनाल्स लिखने की लालसा उसमें जागृत हुई। सम्भवतः जब जब अवसर मिला उसका सर्व अभिप्राय राजस्थानी शौर्य की कहानियों के संकलन में परिणित हो गया। इस धारणा के 20 वर्ष के अन्तराल में राजस्थान की प्रथम तथा अग्रणी गाथा प्रकाशित हुई। जिसमें श्रद्धा सद्भाव, प्रेम तथा सौहार्द से ओत-प्रोत भारतीय शौर्य का विवरण है।[17]

इस देदीप्यमान टाड की कृति के कई अंग्रेजी में संस्करण प्रकाशित हुए और उनके हिन्दी अनुवाद भी प्रकाश में आये। जो भी राजस्थान के शोध प्रबन्ध इतिहास में हैं या होंगे "एनाल्स" एक उच्च कोटि का सारभूत ग्रन्थ की गरिमा बनाये हुए है। शोध संस्थाओं का यह दायित्व है कि राजपूत वंश की उत्पत्ति सामन्त प्रथा वंशक्रम राजनैतिक स्थिति, पुरातत्व रिवाज व भारतीय रिवाजों की तुलना, राजस्थान की आर्थिक दशा आदि विषयों को लेकर कुछ मान्यताओं पर प्रकाश डालने का शुभारम्भ करें।

---

17 टॉड ट्रेवल्स प 24 25

जब कुछ विचारक इस अनुपम ग्रन्थ को पढ़ते हैं तो यह शका उनके मन म उठती है कि टाड ने राजपूतों की प्रशसा कर एक हिन्दू-मुस्लिम विद्वेष की भावनाओं को बढ़ावा दिया। कुछ विचारक तो यहा तक लिखते हैं हिन्दू मुस्लिम मनवय का जन्म दाता था ऐसा करने से वह ब्रिटिश सत्ता की जड़ो को मजबूत बनाना चाहता था हम इस दलील को दो भागो म बांटते है एक तो यह कि राजपूतों की प्रशसा के गम म एक राजनीतिक चाल थी और दूसरा यह पक्ष कि वह ब्रिटिश सत्तावादी नीति का पोषक था। गूढ विचार करने पर ये दोनो दलीलें सत्य की कसौटी पर नहीं उतरती।

यदि हम एनाल्स के प्रसगो को ले तो लगता है कि टाड जाति विशेष का राजनीतिक प्रेरणा से प्रशसक नहीं था। वह तो तथ्यो का खोजक और गुण ग्राहक था। उसने राजपूतो की प्रशसा जाति विशेष के नाते न कर शौर्य साहस बलिदान त्याग आदि गुणो को लेकर की थी। जहा उसने इन म दोष देखे हैं उनकी उपेक्षा नहीं की है। वह लिखता है कि राजपूत गुण और अव गुण और दुराग्रह के सम्मिश्रण है। अफीम शराब आपसी वमनस्य और अदूर दर्शिता जो उनमे पाई उसकी उसने खुलकर निन्दा की है। वह लिखता है कि पुरानी मान्यताओ के कारण उनमे बड़ खराबिया आ गई थी। य लोग दूसरो की आखो म देखने है और दूसरो के कानों स सुनते हैं।[18] जहा प्रताप[19] के शौय का बखान है तो अपने अच्छे मित्र भीमसिंह[20] के बारे म उसे बुद्धिमान सहिष्णु और मिलनसार कहने के साथ दिखावे म विश्वास करने वाला अनियमित जीवन का प्राणी तथा उदारता म अविवेक बतलाया है। उदयसिंह की शौय की जहां दुहाई दी है उनके बहु विवाह के दुष्परिणामो को भी खूब झिड़का है।[21] अरिसिंह को तो अनिष्टकारी बुद्धिमान बतलाया है।[22] जयपुर के महाराजा माधोसिंह और ईश्वरसिंह तथा राजमाता का षड्यन्त्र और मन्त्रिपरिषद की अदूरदर्शिता का नग्न स्वरूप प्रदर्शित करने म उसने कोई कसर नहीं रखी।[23]

जहा हम मध्यकालीन नरेशों के बल और पौरुष की प्रशसा उनकी

---

18 टाड एनाल्स पृ 136 आर पी भा 2 पृ 30
19 टाड भा 1 पृ 399 400
20 टाड ट्रवल्स पृ 34
21 टाड एनाल्स भा 1 पृ 372
22 टाड एनाल्स भा 1 पृ 496
23 टाड एनाल्स भा 3 अध्याय 6 पृ 1361-1362

कृति म पाते है वहां पिछले नरेशों की एकानता, राजनैतिक लघुता प्रात रिक विरोध, चू डावत शक्तावता का वमनस्य जिसको उसने निर्दित प्रमाणित किया है।[24] साथ ही साथ उसने अजमर म खानियो की कृति चारणों व ब्राह्मणो की मांगने की प्रवृति कई नरेशो के सलाहकारों की तुच्छ नीति को अच्छे लक्षण की सज्ञा म नही लिया है। जालमसिंह की प्रशसा[5] की है ता जोधपुर के महाराजा भीमसिंह की निन्दा भी की है । इसी प्रकार महाराजा जसवतसिंह की दिलरी का बयान उसकी पुस्तक म मिलता है व₀ँ उसके औचित्य और गव को ठीक नही बतलाया है । उसन जस वन्तसिंह की कभी अपन उत्थान की प्रयत्नशीलता म ही रुचि रखना बतलाए ह यह बतलाते हुए कि यदि वह जयपुर से मिलकर औरगजब की नाति का विरोध करता ता राजस्थान का इतिहास ही दूसरा होता । विजयसिंह क बारे म वह लिखता है कि उसक नसीब म विजय लिखी ही नहीं थी। यदि मारवाड निबल हुआ तो उसम गुलाबराय पासवान का प्रभाव एव बडा कारण था ।[25] जसलमेर के बरीसाल, मूलराज और सालमसिंह के षड यन्त्रा का पर्दाफाश करने म उसन कोइ कसर नही रखी । वह लिखता है कि जयपुर की राजमाता चूडावतजी पर महावत फीवान का प्रभाव राज्य का निबल करने म एक प्रमुख बिन्दु था । पुन वह लिखता है कि जाति सिंह के समय एक दर्जी और बनिय की साजिश न जयपुर राज्य की आर्थिक स्थिति का निबल बना दिया था ।[2] जब हम उस राजपूत जाति का प्रशसक कहत है तो एक तथ्य क्या क दूसरे पहलू को नहीं देखत जिसन वस्तु स्थिति पर पर्दा डालन की कभी कोशिश नहा की ।

इस प्रशसा या निन्दा म कोई राजनीतिक चाल नही थी । वह एक सच्चे इतिहास की झलक थी जो टॉड न प्रस्तुत की थी । अतएव य कथन निराधार है कि वह राजपूता का चारण और भाट था या उनकी प्रशसा उसकी एक राजनीतिक चाल थी । या वह हिन्दू मुस्लिम विग्रह क प्रकरण का जन्मदाता था । वास्तविकता ता यह थी कि जो उसके मूल्या कन म जमा प्रमाणित हुआ उसन उस इसी ढग स प्रस्तुत किया एसी

24 टाड एनाल्स भा 1 पृ 417

25 टॉड एनाल्स भा 3 पृ 1613–1619

26 टॉड एनाल्स भा 2 पृ 986–988

27 टॉड एनाल्स भा 2 अध्याय 13, पा पा न 58, टाड का पत्र पा 1
टाड एनाल्स भा 3 पृ 1363

स्थिति म रणभेद या धम भेद भ्रान्ति की चर्चा उसके दृष्टिकोण म बतलाना सवथा असगत है ।

टाड के एक पक्ष पर प्रकाश डालना आवश्यक ह जो उसके कृतित्व तथा व्यक्तित्व से सम्बन्धित है । उसके रक्त म स्काटलण्ड जसे स्वतन्त्र प्रेमी सम्भाग की पितृ परम्परा क सस्कारों का सपुट था । इसक पिता व प्रपिता ने वहाँ के स्वतन्त्रता का आन्दोलन की घटनाओं को देखा था । इगलण्ड द्वारा अपनाई गई दमन नीति का रोष अब भी जागत था । इनक दास्तानों का सुनकर बालक टॉड म स्वतन्त्रता प्रम उत्पन्न होना स्वाभाविक था । पुनश्च इसका जन्म फ्रास की राज्य क्रान्ति के तीन वष पश्चात अर्थात 1782 ई म हुआ था । इन्हा दिनों इगलण्ड का जनमत फ्रास क्रान्ति का पक्ष धर था । फोक्स[28] क लेखो म फ्रास की क्रान्ति के समानता स्वतन्त्रता और एकता के सिद्धातों का पूरा प्रतिपादन था और इन लेखो को सवत्र बडी रुचि से पढा जाता था । वडसवथ और कालरिजी की कविताओं म भी इन भावों की स्पष्ट झलक था जिनकी इगलण्ड म बडी मान्यता थी बालक टाड इस जनमत के वातावरण म पनपा था और उसका आस्वादन किये हुए था । वह स्वय एक प्रसग म लिखता ह कि मैंने मोन्टेसक्यू ह्यूम मिलकर तथा गिब्बन क ग्रथो का अध्ययन किया ह और इस भली प्रकार समझा ह । हम जानते हैं इन महान विचारकों ने स्वाधीनता और स्वतन्त्रता क महत्व पर बहुत बल दिया ह । मलडिन पिंगर आदि इतिहासकारों न इन लखकों को स्वतन्त्रता क जागरण क अग्रदूत कहा ह । टाड को स्वतन्त्रता प्रम की यह पृष्ठ भूमि और उनकी इसक प्रति ममता को झलक उनके लखन म कई स्थलों म मिलती ह । राजपूता के स्वभाव की प्रशसा म गहराई म पहुँच कर वह लिखता ह– In domestic circle restraint is thrown aside and no authority controls the freedom of (their) expression वह फिर लिखता ह Their independence is sacred

इसी स्वतन्त्रता की उमग का प्रयोग उसने अपनी नीति म भी खूब निभाया ह यही एक प्रमुख कारण था कि उसके उपरीय अधिकारी उसक विचारों से सहमत नहीं थ । अभाग्यवश भारतीय सत्ता नीति के तीन[29] स्तम्भ उसके पूवज थ । वारेन हस्टिंग्ज सत्ताधारी नीति क पक्ष से वेरहमी का नजारा

28 टाड एनाल्स प 147

29 एचीसन ट्रीटीज भा 3 प 102 103, 137 322 आदि ।

अपनी काली करतूतें बता चुका था। वेलेजली की एलाइन्स नीति न शोषण को प्रतिक्रिया का नग्न नाच भारतीय रंगमंच पर प्रदर्शित किया जो सर्वविदित है। इसी तरह लार्ड हेस्टिंग्ज ने इसी नीति का परिवर्तन कर कई देशी राज्यों को दबाकर ब्रिटिश-चगुर के शिकार बना दिये थे। उदारवादी टाड को इस दूषित राजनीति के वातावरण म काम करना था। भला जन्म मे स्वतन्त्रता के विचारो की जन्मघूटि से पोषित टॉड इन अमानुषिक नीति का ठीक ठीक किस प्रकार परिपालन कर सकता था। वह अपने एजेन्ट पद से इस सत्तावादी नीति की आलोचना दबी जबान म करता रहा और इससे उसके विरोध की सामग्री इकट्ठी होती रही। यही कारण था कि वह केवल स्वतन्त्र अधिकार का प्रयोग केवल कुछ वर्ष ही कर पाया जिस अवधि म जोधपुर और सिरोही क्षेत्र उसके अधिकार से अलग कर दिये गये और जसलमेर और मेवाड के दायरे म भी उस पर अकुश लगा दिया गया। स्वाभिमानी टॉड को विवश होकर अपने उत्तर दायित्व से मुक्ति लेनी पडी।

अपने 'एनाल्स[30] म तो उसने 'एलाइन्स' नीति की जो भरकर निन्दा की है और अपनी सरकार को आगाह किया कि भारत म ब्रिटिश सत्ता इस नीति से स्थाई नही हो सकती। वह लिखता है—'With our presnt system of alliances so pregnant with evil from their origion would lead to fatal consequences

जब उसके एसे विचारो का खण्डन कर ऊपरीय अधिकारी उस अपनी नीति का समर्थन रियासतो के हितो म भव्ययुग की झांकी बतलाने लगे तो इसके प्रतिवाद म उसने लिखा कि जो पवित्र सतयुग की दुहाई आप देकर राजाओ को गुमराह कर रहे है वह ठीक नही। मुझे सन्देह है कि क्या ये लोग अपने भालों को खूटी पर टांक देंगे? क्या उनकी तलवारो का प्रयोग हल जोतने म किया जायगा और क्या उनकी ढालो का प्रयोग टोकरियो के लिए होगा?' ब्रिटिश सत्तावादी नीति का खण्डन करते हुए लिखते है— our glory is sumour than reality our con guest is like Alexnder is congusst वह हस्तक्षेप नीति के विरोध म साहस से लिखता है कि इन राज्यो म हस्तक्षेप करना घातक प्रमाणित होगा और इसस विवाद और झगड़े बढ़ेंगे। यदि हम इनके विरुद्ध शस्त्रों के प्रयोग से दमनीय नीति को अपनायेंगे तो वह नीति इन राज्यो के लिए धूमकेतु बनगी। यदि हम इनका विलीनीकरण करेंगे और राज्य का विस्तार करेंगे तो इसका फल यह होगा कि हम उनसे उनकी प्रसन्नता छीन लेंगे

30 टॉड एनाल्स भा। पृ 147 152

और हमसे अपना स्थाइत्व छीना जायगा। ये लोग हमारे तभी तक मित्र बने रहगे और अच्छे मित्र साबित होंगे जब तक उन्हें अपने परम्परागत अधिकार तथा सत्ता को बनाये रखने का आश्वासन न दिया जायगा और जब तक उनके आतंरिक मामलो मे जसा कि किया जा रहा है, हस्तक्षप अनुचित होगा।

वसे टाड के उच्च अधिकारियो के लिए टॉड के ये विश्वास मिथ्या एव ममता पूर्ण दिखाई दिया परन्तु उसके पीछे आने वाले लार्ड कनिंग ने भी अपने पत्रो म स्पष्ट स्वीकार किया है कि ब्रिटिश राज्य यहा के स्वतन्त्रता के विचारों का तभी मुकाबला कर सकेगा जब तक उनका जहाजो बडा मजबूत बना रहेगा अन्यथा यहा ब्रिटिश राज्य 50 वष स भी अधिक नहीं टिक पाएगा। देखिये टाड के विचारो की सगति किस प्रकार कनिंग जस मतावादी परोक्ष व अपरोक्ष रूप म समथन करते हैं। ये टॉड के इतिहास लेखन की गरिमा है जिसको पहुच पाना दुसाध्य है। रोस ने अच्छे इतिहास लखन की सज्ञा म स्पष्टवादिता सत्याकन और साहस को प्राथमिकता दी है। इस गुण का समावेश टाड की कृतित्व शक्ति म पूणत पाया जाता है। वह मानता था कि जहां हम किसी जाति के धम मान्यता व स्वतन्त्रता पर आघात पहुचाते हैं तो हमारी भी वही गति होगी जो विश्व के बड-बड राज्यो की इसी प्रवृति के फलस्वरूप हुई थी। इस प्रकार की बात अपने सत्तावादी स्वामियों को रुचिकर नही हुई जो एक कटु सत्य था।

टॉड की कृति म कई ऐस स्थल हैं जहा लखन म चित्रण का समावेश है जिसे Pen picturing कहते है इतिहास म घटनाओं की उपस्थिति का चित्रण कर उसने उसे प्राणवान बनाने म कमाल किया है। आबू के शिखर की चोटियो स प्राकृतिक छटा का वणन जिसम नदी नाले घाटिया समतल मदान हरे-भरे खेत सम्मिलित हैं एसे दर्शाये गये हैं कि व एक साथ आंखों के सामने नाचने लगते हैं। यहा तक राजस्थान के सूखे मरुस्थल के वणन म आत्मा को फूक कर छोटे घास फूस, दुष्प्राप्य ओसिस चलते फिरते रतीले टीले व बनती-बिगडती झोपडिया के दिखाव में उसने कमाल ही दिखाया है। जब उसकी कलम तक्षण व विश्लेषण में उतरती है तो हाव-भाव नाच-गाना वस्त्र और आभूषण वाला मूर्तिया का साक्षात्कार आखो के सामने उतर कर हृदयगम हो जाता है। रणकपुर बडोली कीर्तिस्तम्भ, मण्डार के नाकदेव आदि का स्पष्टीकरण जितना सुनने के द्वारा नही हो सकता वह उसकी लखनी ने चित्रित कर दिया है।[31]

---

31 टाड एनाल्स भा 1 पृ 275 277 289, 290, 515 670, 671 भा 2 756-61 टॉड ट्रवल्स, पृ 94-96

जहां सामाजिक तथा धार्मिक जीवन के इतिहास का प्रश्न है टॉड ने उसका प्रथम बार उजागर किया है। यह परिपाटी श्यामलदासजी व ओझाजी के इतिहास म नहीं देखी जाती। मेरी तो मान्यता है कि जितना राजनीतिक इतिहास उसने लिखा है उसमे भी अधिक उसने जन जीवन, जाति गत रस्म-रिवाज, धार्मिक मान्यता त्यौहार आदि के बारे म हमे जानकारी दी है। जहा-जहाँ वह गया वहा की उपज पशुधन, खनिज, आबोहवा उसकी आंखों म ओझल न हो सके जिन्हें उसने अपने लेखन मे उचित स्थान दिया। यहा तक कि शिकार कुश्ती वादित्र खाद्य व्यवस्था व औषधियों का प्रयोग आदि के वर्णन म उसने कमाल कर दिया। मेर, भील, भाट आदि के रस्म रिवाज और जन-जाति म यहा तक कि नरबली के वर्णन म जान डाल दी। जलयात्रा फाग होली दीवाली नाग पचमी बसत पचमी रक्षा बधन, गनगौर सक्रान्ति आदि धार्मिक व सामाजिक पर्वों का चित्रण बड़ा खूबी से कर डाला और उनके अन्तर्गत क्रियाओं का बयान नहीं छोड़ा। इतिहासकार म एक अच्छे समाज शास्त्री का ज्ञान होना चाहिये और उसके जरिये इतिहास म वस्तु प्राण प्रतिष्ठा हो सकती है, उसे हम टाड को पढ़ कर सीखना होगा। उन्नीसवीं सदी म इस क्षेत्र को व्यापकता से सम्मान देना टॉड की अग्रण्यता है।[32] टाड के एनल्स म एक विशिष्टता विल क्षणता लिए हुए है। क्योंकि वह रोम, ग्रीस इजिप्ट, सीरिया आदि देशों के इतिहास व लोक कथाओं और महापुरुषों के चरित्र का अच्छा ज्ञाता था और जब उसने भारतीय इतिहास पुराण लोककथाओं की जानकारी सुनकर या पढवाकर ली तो उसे कई आख्यान और महापुरुषों के चरित्र म समता दिखाई दी।[33] इस स्थिति से वह इस निश्चय पर पहुचा कि सास्कृतिक क्षेत्र म प्राकृतिक सीमाओं का कोई अवरोध नहीं ह। जीवन व सस्कृति की धारा का प्रभाव अविरल रूप से युग-युगान्तर म प्रवाहित होता रहता ह। इसका आधार मानकर उसने इस प्रवाह का वेग पश्चिम से पूर्व की ओर मोडा यद्यपि भारतीय वैदिक साहित्य की जानकारी के अभाव म उसे पाश्चात्य सस्कृति का समृद्ध ज्ञान पश्चिम से पूर्व की ओर ले गया। वास्तविकता तो यह थी कि वदिक सस्कृति का प्रभाव व्यापक रूप से यूरोप व मध्य एशिया की ओर बढ़ा इस सूक्ष्म तत्त्व की ठीक पहिचान न होने से जसा कि ऊपर लिख आए ह कि राजपूतों को सीथियन और उनके रस्म

---

32 टॉड एनाल्स भा 1, पृ 74 79 85 86-91 140 141 168 180 आदि

33 टाड, एनाल्स भा 1 अध्याय 1 2

रिवाज जस प्रस्त्र व प्रश्व पूजन स्त्रियो की स्थिति का उनम जोड दिया।[34] कुम्भलगढ की वेदी को भी पाश्चात्य सत्यता का नमूना बतलाया । फिर भी विलक्षण बात यह भी दिखाई देती ह कि टाड न सस्कृति के स्वरूप म एकता का अनुभव किया जो मानव एकता की आवाज का मूलाधार बना । यहा की जनजाति म कल्ट का समावेश राजपूतों म साथियन एव नीग्र म गया तभक से तुर्किस्तान, तोरणमार को गोथिक राम का लका यात्रा का मसोपोटामियन अभियान तथा प्राचीन यूनानी फारसी रोमन इजिप्शियन गोथ आदि नामो को Indo Gothic एव Indo sythenia की सना दी । हल्दीघाटी[35] की विशिष्ट और विशाल क्षेत्र की तुलना थर्मोपोली स कर क्षत्रफल और परिणाम की अपेक्षा भावात्मक घटना मे समानता का समावेश किया । फिर भी इन समानताओ म टाड को तुलनात्मक अध्ययन करन का दृष्टिकोण और सास्कृतिक समन्वय प्रणाली को प्रधानता दना इतिहास का एक उपान्य अग मानना समीचीन होगा ।

इतने बडे ऐतिहासिक धन सचय का पिटारा अब भी अन्वषको की और झाक रहा ह । हमारा कतव्य ह कि इसम ग्रान बाल सञ्चित घटनाओ को फिर से सजोया जाय । और जिन मान्यताओ का वतमान युग की नीति और रीति म स्थान ह उन्ह दर्शाया जाय । विश्व एकता का जो सूत्र 'एनाल्स मे निहित ह उसका छोर ढूढा जाय । वश परम्परा की कडिया व पाश्चात्य व पूर्वीय दव श्रखला क पारस्परिक सम्बन्धों का ठीक स अनुसधान अपेक्षित ह । यदि हम इन विश्रखला एव श्रखला का तारतम्य बिठा सकें तो हम उस महान आत्मा को शाश्वत शाति का भागीदार बना सकग ।

कनल टाड म एक स्वच्छ व उदार प्रशासक होन क गुण थ । वह प्रजा पर अपनी सत्ता थोपने क बजाय उनकी वेदना समझन का प्रयत्न करता था । वह मानव भावनाओ का अच्छा परखिया था । जब वह भीना क इलाका म गया और उनकी मनोवृति का अध्ययन किया तो उसन उनक उग्र स्वभाव तथा लूट कसोट की प्रवृति का विश्लषण करते हुए ठीक निरूपण किया कि भील प्रारम्भ से इस भूभाग के स्वामी थ जिनको उनस छीन लिया गया । ये बात उनको हरदम चुभ रही थी जिसका विस्फोट लूट कसोट की वृति म होता था ।

34 टाड, एनाल्स पृ 70 98

35 टाड एनाल्स, भा I पृ 393 - 394

प्रतएव एक उदार प्रशासक के रूप में वह अपनी यात्रा के वर्णन में लिखता कि उनके स्वामित्व का खजाना उनको जंगलों की सम्पत्ति को निशुल्क उपयोग करने का द्वार हो लिया जाना चाहिये। यही कारण है कि भीलो के साथ की गई सन्धियों मे इस प्रकार की व्यवस्था मे टॉड का मार्गदर्शन बड़ा सहायक बना। न्याय सम्बन्धी नियम बनाने मे भी उसका दृढ़मत था कि वह नियम या कानून नही है जिसमे समानता और सद्भावना न हो। मवाना न भी इसी प्रकार के विचार कानून के सम्बन्ध मे लिखे थे। वे लिखते है कि— We Prcrose no rich innovation we wish to give no shock to the prejudice of any part of our subject withot wounding religious or caste feelings।

टाड का हृदय द्रवित हो जाता है जब वह किसानों की स्थिति का वर्णन करता है। वह हमेशा लाग बाग बराड़ आदि के विरोधी रहा। उसने पंचवर्षीय एवं निश्चित लगान जो उसके पूर्व शासक मानते आये थे उसका विरोध किया। मेवाड़ में प्रचलित लाटा व कूता जिसे सभी ग्रामीण पसन्द करते थे वह भी उसका पक्षधर था। अपने 'एनाल्स' में किसानों की दयनीय दशा पर टिप्पणी करते हुए उसने लिखा है कि किसान राजकीय दबाव की चक्की में पीसा जाता है वह ठीक नही है। गोला प्रथा तथा साहूकारी रिवाज का भी वह कभी पक्षधर नहीं था जो उसके उच्च विचारों का प्रतीक है। इन सभी प्रथाओं की निंदा करते हुए वह लिखता कि यह सभी अव्यवस्थित समाज के पोषक तत्व है जिनका आधार लोभ और लूट की प्रवृत्ति मात्र है। एक प्रभुता के पुर्जे मे कितना साहस था और कुचले हुए व्यक्ति के प्रति कितना मौजूद[36]। आज के युग में सत्ताधारियों के लिये टॉड की नीति प्रेरणा स्रोत बन सकती है।

कर्नल टॉड और मेवाड़

कर्नल टाड 1806 में सिंधिया तथा अपने अधिकारी के साथ सर्व प्रथम मेवाड़ में आया। यहाँ महाराणा भीमसिंह से मिलन के अवसर ने उसे उक्त राणा के रहन सहन, बातचीत और व्यवहार से परिचित करा दिया। उसने महाराणा की प्रशंसा में लिखा है कि उसमें एक सभ्य और शिष्ट राजा के पूर्ण लक्षण विद्यमान हैं। सम्भवतः वह उसी समय से महाराणा का पूर्ण प्रशंसक बन गया।[37]

---

36 टॉड ट्रेवल्स, भा 1, पृ 19, 32, 208 201

37 टॉड एनाल्स, पृ 545

भाग्यवश महाराणा भीमसिंह का प्रशसक टाड मार्क्यूयस हेस्टिंग्ज के द्वारा 31 जनवरी 1818 ई के आदेश द्वारा राणा के दरबार मे उसका प्रतिनिधि नियुक्त किया गया और उसका शासकीय पद एजेट टू द वेस्टन राजपूत स्टेट निरूपित हुआ जिसका वेतन 1500/ रू मासिक था । जब जहाज पुर के मार्ग से वह नाथद्वारा पहुचा तो उसको बधाई देने के लिए एक सरदार गया और वहा से लौटने पर उसने मोतीमगरी जो उदयपुर मे 2 मील की दूरी पर ह वहा उसके स्वागत की व्यवस्था की गई । राजकुमार जवानसिंह ने टाड को बिछाये हुए कालिन पर 8 माच 1818 को अगवानी कर एक शानदार और शालीन ढग स स्वागत किया । कनल टाड राज कुमार के आचरण से इतना प्रभावित हुआ कि वह लिखता ह कि राजकु मार मे प्रताप के वशज होने के विनम्र और शालीन गुण विद्यमान थे।[38] टाड को सूरजपोल द्वार स नगर में प्रवेश कराया गया और उसके ठहरने की व्यवस्था रामप्यारी[39] बाग म की गई जो एक चाकोराकार भव्य भवन था जिसमे आवास के कई कमरे बीच म दालान जिसके तीनो ओर बरामदे थे । महाराणा ने एजेट की महमानदारी मे एक सौ थाल मिठाई मेव व फला के भेजे साथ ही एक हजार रू की थैली सेवको को बाटने के लिए भेजी गई ।

दूसरे दिन टाड को चार बजे राजप्रासाद में निमंत्रित किया गया और अगवानी म मन्त्री, मुसद्दी, सरदार और राजकीय लवाजमा भेजा गया । इसकी सवारी भटियानी चाहटे स जगदीश चोक होती हुई महला पहुचो । स्वय टॉड न राज महला तथा माग म जन समुदाय भाट गायक आदि के उल्लासो का अच्छा वणन किया ह । त्रिपोलिया और गणश डयोढी होत हुए उस ल जाया गया जहा बाजीराव के साथ महाराणा की भट हुई थी । मखमल की दरी पर गद्दी थी और उसके सामन एजन्ट को बिठाया

---

38 वही पृ 549 हकीकत बही म भीमसिंह ने टाड का औपचारिक पुन स्वागत लवाजम तथा सरदारो के साथ सूरजपोल दरवाजे पर किया। हकीकत पृ 46

39 रामप्यारी महाराणा हमीरसिंह (द्वि)की कृपा पात्र दासी थी जिसका राज दरबार के काम म बडा प्रभाव था । य बाग पुरान तापखाने के निकट स्थित है जिसमे आजकल राजकीय आयुर्वेद रसायनशाला तथा एक शोध सस्थान चलता है । मुख्यद्वार पर कनल टाड क नाम की एक प्लेट भी लगी हुइ है । भवन अब जीण सीण दशा म है ।

गया और उनके गेना और मरदार व पासवान तथा पीछे अनुचरों की पंक्ति थी। कुछ समय बातचीत के उपरान्त अतर पान की रस्म अदा की गई और उसे एक हाथी व घोड़ा मय साज-सज्जा के कण्ठी आदि उपहार में दिये गये।[40]

उस दिन महाराणा भी एजेन्ट की रेजीडेन्सी गये और औपचारिक चर्चा व भेंट में सजा युक्त हाथी, घोड़े, शाल दाशें व कीमती वस्त्र व जवाहरात से आपसी सम्मान की रस्म अदा की।[41]

कर्नल टाड के साथ इन चार वर्षों में (1818 1821) में महाराणा का सम्पर्क इतना घनिष्ट हो गया कि दशहरा, दीपावली होली आदि त्यौहारों तथा चोगान पर हाथी घोड़े भैंसे आदि की दौड़ व लड़ाइयां में टाड का आमन्त्रित किया जाता था और हर समय बड़े सम्मान के साथ विदा की रस्म अदा की जाती थी जिसका विशद वर्णन महाराणा भीमसिंह की हकीकत बहियों[42] में उपलब्ध है। इस प्रकार के सम्पर्क से दोनों के मधुर सम्बन्ध रहने और शिष्टाचार पूर्ण व्यवहार की जानकारी हमें मिलती है। कोई भी उत्सव या त्यौहार राजकीय रूप में मनाया जाता था टाड की उपस्थिति उनके मेहमानों के साथ होना अनिवार्य सा होता था।

जब टॉड मेवाड़ का एजेन्ट बनकर आया उस समय लगातार पूर्व के तीन चार महाराणाओं के बालक या अयोग्य होने और राज्य प्रबन्ध में अव्यवस्था, सरदारों में फूट और राज परिवार में गृह कलह आदि होने से मेवाड़ की आंतरिक स्थिति बहुत बिगड़ गई थी। मराठों के समय-समय पर होने वाले आक्रमणों ने जन-जीवन को अस्त व्यस्त कर दिया था। राज्य की आर्थिक व्यवस्था ऐसी खाखली हो चली थी कि राजकोष में आने वाली रकम मुकातदारों की जेबों को भरती थी। जागीरदारों ने भी खालसा भूमि का अधिकांश भाग अपनी-अपनी जागीर में सम्मिलित कर दिया था। सरकारी चुंगी की वसूली अवैध रूप से अधिकारी वर्ग हड़प लेते थे। केवल भीतरी गिर्वा के परगनों व आस पास के गाँवों से सरकारी रकम वसूल होने पाती थी। चारों ओर डाकुओं के आतंक से जन और धन की हानि होना एक स्वाभाविक घटना बन चुकी थी। चूंडावतों और

---

40 टॉड, एनाल्स, भा 1, पृ 549 550 42 वही पृ 551-55
41 वही पृ 553
42 हकीकत बही, महाराणा भीमसिंह न 25 27, 28

शक्तावतों का पारस्परिक विरोध बढ़ता जा रहा था । महाराणा का राज-काज चलाने के लिए इधर उधर से कर्ज का प्रबन्ध करना पड़ता था । छोटे - मोटे सरदार भी विरोध के मार्ग को अपनाने पर तुले हुए थे । भील भी अपनी इलाकों में लूट खसोट पर उतारू थे ।[43] यद्यपि मेवाड़ की स्थिति शोचनीय थी इसमें कोई सन्देह नहीं परन्तु इस स्थिति का चित्रण जो टाड ने किया है वह अतिरंजित अवश्य है । जब टॉड 1806 में सिन्धिया की सेवामें रहते वाल दयजा राजपूत के साथ पहले - पहल मेवाड़ में आया तो उसने जैसा कि वह लिखता है कि मेवाड़ की दशा अच्छी थी परन्तु जब एजेंट के रूप में 12 वर्ष के बाद दुबारा आता है तो वह लिखता है जहाजपुर होकर कुम्भलमेर जाते हुए मुझे एक सौ चालीस मील में दो कस्बा के सिवा और कहीं मनुष्य के पैरों के चिन्ह तक नहीं दिखाई दिये । जगह जगह बबूल के पेड़ खड़े थे और रास्तों पर घास उग रही थी । उजड़ गावों में चीते सूअर आदि वन्य पशुओं ने अपने रहने के स्थान बना रखे थे । भीलवाड़ा जो एक मशहूर कस्बा था, तथा मेवाड़ में व्यापार का केन्द्र था और जहां 6000 घरों की आबादी थी बिल्कुल उजड़ गया । महाराणा का केवल उदयपुर चित्तौड़ तथा माडल पर अधिकार रह गया था और सेना रखने के लिए उसके राज्य की आय काफी न थी । उस समय राज्य की आर्थिक दशा ऐसी थी कि महाराणा को अपने खर्च के लिए कोटे के जालमसिंह झाला से रुपये उधार लेने पड़ते थे । मेर और भील पहाड़ों से निकल कर मुसाफिरों को लूटते थे । रुपये का सात सेर गेहूं बिकता था जब कि मेवाड़ में बाजरा अठ्ठारह सेर । महाराणा के तबेले में 50 सवार भी नहीं रहते थे और कानोड़िया का सरदार जिसकी जागीर की सालाना आमदनी पहले 50 000 रुपये थी अब एक भी घोड़ा रखने की स्थिति में नहीं था ।[44]

वह फिर एक जगह लिखता है कि उदयपुर में जहां 50 हजार घर आबाद थे वहां केवल तीन हजार रह गये थे । तो आश्चर्य की बात है कि स्वयं लेखक जब रामप्यारी बाग से राजप्रसाद जा रहा था तो वह लिखता है कि हजारों नागरिक स्त्रियां बाल बच्चे कतारों में उसका जय

43 टाड, एनाल्स भा 1 पृ 553 - 555 ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास भा 2 पृ 673 703

44 टॉड एनाल्स भा 1 पृ 554 555 ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास भा 2 पृ 702 703

जयकार कर रहे थे और वंदना के मध्य गान और कविता को बड़े चाव से देखा व सुना जा रहा था। यहां तक कि लोग उसको पारितोषक देकर प्रोत्साहित कर रहे थे। महल के प्रांगण में भी बड़ी भीड़ थी इस विवरण से तो लगता है कि उदयपुर की आबादी तीन हजार पर से कई गुना अधिक थी।[45]

ऊपर के वर्णन में अनेक विरोधाभास हैं जिनको महाराणा अरिसिंह (द्वि)भीमसिंह तथा जवानसिंह की हकीकतों खतूनियों और भण्डारा के रिकार्डों से स्पष्ट किया जा सकता है। जहाजपुर से कुम्भलगढ़ के एक सौ चालीस मील में टॉड को एक भी मनुष्य के पद चिन्ह न मिलना निराधार है। क्योंकि उपरोक्त साधनों से इस भू भाग से जिसका जिक्र टॉड ने निरजन होने का लिखा है वह आबाद था और उसके अन्तर्गत सकड़ों गावों से लगान चुंगी आदि वसूल होते थे। भीलवाड़ा को भी वीरान बताया गया था और यह दावा किया गया था कि टाड के आने पर लोग हर्षोल्लास से लौट रहे थे। परन्तु तत्कालीन साधन इस बात के साक्षी है कि उस अवधि में वहां हाट और बाजार लगते थे। महाराणा के पास केवल उदयपुर, चित्तौड़ और माण्डलगढ़ रह गये थे इसमें भी सत्य कम है। हुर्डा, महाड़ा भीतरी गिर्वा, जावर आदि भागों का लगान व दाण राजकोष में जमा होते थे। यहां तक कि जावर से 50 000 का राज्य को वार्षिक आय होती थी।[46]

भीमसिंह की आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में टाड लिखता है कि जालिमसिंह (कोटा) तथा वापना से कर्ज लेकर अपना दैनिक व्यय की व्यवस्था करनी होती थी और अपने गहने जेवर भी बेचना पड़ा था। परन्तु पाड़ की ओवरी का बहियां और राज्य की आय-व्यय के लेखा की बहियां से ऐसा स्थिति नहीं लगता। रोजमर्रा की पोशाक और मान व जवाहरात भीमसिंह उपयोग में लाते थे और त्यौहार पर तो इससे भी अधिक मूल्य की पोशाक और आभूषण काम में लाये जाते थे जो कपड़द्वार भण्डार और पाड़ की ओवरी में लिए जाते थे, और उन्हें दैनिक बहियां में दर्ज किया जाता था।[47]

इसी तरह वह लिखता है कि महाराणा के पास पचास घोड़े

---

45 वही भा 1 पृ 550 वही म 25 नगीनावाड़ी वि स 1875

46 हकीकत बही अरिसिंह(द्वि) व हकीकत बही भीमसिंह 1875-1880

47 पाड़ की ओवरी व कपड़द्वार बहियां 1861 1885

नहीं थे जो अपनी सवारी के अवसर पर उपलब्ध हो । वस्तुतः स्थिति ऐसी थी कि महाराणा के तबेले में नए नए घोड़े खरीद कर दाखिल किए जाते थे उनकी सूची और उनकी नामावली पचास से कई गुना अधिक थी । तबेले भी दस के लगभग थे । जिनमें घोड़े रखे जाते थे और खास घोड़ों को लापसी रोजाना दी जाती थी । साता की पायगा नौका की पायगा सरगा की पायगा दसा की पायगा फूलणयारी पायगा और बड़ी पायगा उस समय की प्रमुख घुड़सालें था[48]। बड़ा हास्यपद लगता है कि कोठारिया के सरदार के पास महलों में जाने के लिए एक भी घोड़ा नहीं था।

कर्नल टॉड की नियुक्ति महाराणा की सत्ता को प्रभावशाली बनाने तथा उनके जागीरदारों द्वारा दबाये गये खालसा के गांवों को पुनः प्राप्त कराने मेवाड़ की आर्थिक स्थिति को सुधारने खिराज को प्रभावशाली समय पर कराने में सहायता करने के लिए की गई थी। [49] इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसके कार्यक्रम में सबसे पहले प्राथमिकता महाराणा और जागीरदारों के सम्बन्ध को दी गई । उनके दरबार में हाजिर रहने कुछ घोड़ों के साथ राजधानी में बने रहने तथा खालसे के गांवों को वापस दिलाने आदि ऐसे विवादग्रस्त प्रश्न थे जिनको लेकर महाराणा और जागीरदारों में तनाव बना रहता था। इस विवाद को सुलझाना अत्यावश्यक समझ कर कर्नल टाड ने महाराणा और जागीरदारों की बैठकों में भाग लिया और उस प्रसंग का समाधान ढूंढा गया परन्तु सरदारों को वश में करना साधारण बात नहीं थी क्योंकि वे न तो दबाये गये गांवों को ही लौटाना चाहते थे और न महाराणा की इच्छा अनुसार मय जमीयत के दरबार में लम्बे समय तक रहकर चाकरी देना चाहते थे । वे अपने प्राचीन सामन्ती अधिकारों को यथावत बनाये रखने पर बल दे रहे थे । महाराणा भीमसिंह की हकीकत बहियों[50] से लगता है कि लगभग कार्तिक बदि 1876 से कार्तिक 7 तक महलों जगनिवास भीमविलास आदि स्थानों में तीसरे प्रहर से रात तक समझौते सम्बन्धी बैठकें लगातार चलती रहीं । एक दिन तो रावत भीम

48 हकीकत बहियां 1861 1880

49 एडम का पत्र टाड को 3 फ कॉस 6 मार्च 1818 न 7 पा मा प्रा दिल्ली एडम का पत्र मन्नाफ को, 2 फ कॉस, 6 मार्च 1818 न पो सी दिल्ली

50 महाराणा भीमसिंह की हकीकत बही वि स 1876

सिंह इतना उत्तजित हो गया कि कर्नल टाड ने उसका विरोध किया और वह उठ कर चल दिया। जो सरदार विरोध कर रहे थे उन्हें स्वयं महाराणा ने रात में समझाया। अंत में 5 मई 1818 को 15 घण्टे के वाद-विवाद के बाद एक कौलनामा तयार किया गया जिस पर बेगू के सरदार ने सबसे पहले हस्ताक्षर किये और तब आमेट देवगढ़ आदि सोलह के सरदारों और अन्य सरदारों के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने हस्ताक्षर कर दिये। शक्तावतों के मुख्य सरदार ने सबसे अंत में अपने हस्ताक्षर किये।

कौलनामे की कुल दस धाराओं में सरदारों द्वारा दबाई गई खालसा भूमि के अलावा लाए विस्वा कर आदि राज्य के हक परित्यागने अपने ठिकानों में चोरी न होने देने देशी या परदेशी सौदागरों बनजारों आदि व्यापारियों की रक्षा करने महाराणा की आज्ञानुसार सेवा करने, प्रजा के साथ सद्व्यवहार करने कौलनामे का पूर्ण निर्वाह करने और कौलनामे की शर्तें नहीं मानने वाले सरदार को उचित दण्ड देने का प्रावधान था।[51]

महाराणा भीमसिंह ने इन शर्तों के अंतर्गत ठिकानों व खालसों के गावों की जांच पड़ताल शुरू की और जागीरदारों से अपने असली पट्टों को मंगवाया। पट्टा बही न 80 संवत 1877 से ज्ञात होता है कि जिनके पास पट्टे थे और उनके गावों का विवरण था उन्हें छोड़कर बाकी के गावों को वापस कर लिया गया और जिनके पट्टे नहीं पेश हुए, उदाहरणार्थ भीण्डर उनके गावों की ठिकाने के बड़े बूढ़ों की याद के अनुसार नये पट्टे कर दिये गये।

परन्तु फिर भी कौलनामें पर पूरा अमल नहीं होने पाया, जिससे सन 1827 में कप्तान कोब को दूसरा कौलनामा तयार करना पड़ा।[52] टाड के चले जाने के बाद अंग्रेज अधिकारी वर्गों ने 1853 में सारी स्थिति की पुनः जाच की और टॉड के कौलनामे की आलोचना की गई। क्योंकि उसने छटूंद के जमा कराने का दायित्व सरदारों पर डाला था और वे उसका विरोध कर रहे थे। परन्तु टाड के समर्थन में यह कहना है कि

---

51 कौलनामे की धाराओं के लिये देखें इस पुस्तक में प्रकाशित लेख जेम्स टाड का मेवाड़ सामन्तों के साथ कौलनामा पृ 142-45

52 ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास भा 2, पृ 709

पुरानी सामन्ती व्यवस्था के प्राचीन ढाच को बदल कर महाराणा की सत्ता की पुनर्स्थापना का प्रयत्न किया था क्योंकि पुरानी व्यवस्था को कायम रखने के बहाने सरदार अपन अधिकारा पर ता बल दे रह थे परन्तु महाराणा क प्रति अपने कतव्यो की उपेक्षा कर रहे थे जो सवथा मान्य नही था। उसके विचार म परम्परागत सस्थाए विकास और सुधार मे बाधाए उपस्थित कर रही थी उनके बने रहन का कोई औचित्य नही था और टाड का प्रयत्न व्यवस्था स्थापित करन का स्तुत्य प्रयास था।[53]

कनल टॉड का दूसरा महत्वपूण काम मेवाड की आर्थिक स्थिति म सुधार लाना था क्योकि उस समय 30 000 रु से अधिक राजस्व की आय न था। ब्रुक न 1818 ई की राज्य की आय 120000 बताई है जो बढकर 1821 ई म 8 77 634 रु हो गई और 1822 म 11-12 लाख रु तक अनुमान किया गया। महाराणा अमरीसिंह की हकीकत बही से केवल जावर की खान स आय 50 हजार रु थी तो ब्रुक के आकडे टाड के आंकड़ों से अधिक विश्वस्त दीख पडत है। लगता है कि कनल टाड ने आय को कम बतलाकर बढी हुइ आय बतलान म उसन अपनी उपस्थिति का ढिन्ढोरा पीटना चाहा हो। अपने समय के आर्थिक सकट की पुष्टि म जोरावरमल से कज दिलाकर महाराणा के दनिक व्यय क लिए 18 रु प्रति सकडा ब्याज दर से 1000 रु स्थिर किया। सूद के देने क लिए वह समय समय पर महाराणा को पत्र भी लिखता रहता था। एक दो पत्रों[54] म टाड ने लिखा कि आप भीम पटलन बनाकर और राज परिवार को सालसे की जमीन देकर राज्य की अथ व्यवस्था का सतुलन बिगडा रह हैं। ऐसी हालत म कजदारा के सूद की अदायगी कसे होने पायगी? इस प्रकार की चिठियों म स्पष्ट है कि टाड महाराणा के शासन म सधि के विरुद्ध हस्तक्षप करने लग गया था जिससे महाराणा तथा उसके अधिकारी वग म ब्रिटिश सत्ता की ओर असतोष की भावना पनपन लगी थी। सभवत इस स्थिति का समझकर टॉड शन शन आन्तरिक शासन प्रबन्ध से अपना हाथ खींचन लगा था जो उस समय के उसके पत्रों ध्वनित से होता है।

राज्य आय की वद्धि हेतु सुधार क लिए टाड ने कई स्थानो की

---

53 हनरी वारेन्स का पत्र सेक्रेट्री गवर्नमेन्ट का दि 21 अगस्त 1855 कान्स 4 जनवरी 1857, न 115 रो पा 51 वशिष्ठ टाड (पा लि)
54 कनल टाड के पत्र दि 1877 अ स 13, म म केन्द्र

चूंगी वसूली का काम मुकातेदारों को सुपुर्द किया और पुराने मुकातेदारों को यथावत् बनाये रखा। इन चूंगीयों के नाकों से होने वाली आय राज्य की आय का मुख्य साधन था। उसके कुछ एक पत्रों [5] से प्रमाणित होता है कि वह इस आय स्रोत से वसूली में महाराणा की सहायता करता था और उससे इस सम्बन्ध में आश्वस्त रखता था।

राजस्व वसूली में भी उसने कमादारों व अपने चपरासियों द्वारा वसूली की व्यवस्था की थी। इस दूसरे प्रबन्ध से यह आशय था कि राज्य के कामदार यदि वसूली में ढिलाई करें तो उसके चपरासी वसूली में अनियमितता पर रोक लगा सकें। आशय तो ठीक था क्योंकि अराजकता के कारण राजकीय कामदार वसूली में अपने स्वार्थ की सिद्धि करते थे जिस पर चपरासियों द्वारा उन पर अंकुश रखा जा सकता था। परन्तु इस द्वैध प्रबन्ध से कृषकों को असुविधा होती थी और अपने प्रदायगी में कभी-कभी चपरासियों का दबाव भी असहनीय हो जाता था। आगे चलकर य व्यवस्था बंद कर दी गई। [6]

ये तो ठीक है कि मराठों के आक्रमण और सरदारों के लूट-खसोट में भागीदारी के कारण कई व्यापारी मेवाड़ छोड़कर अन्यत्र चले गये थे। कर्नल टाड ने घोषणा-पत्र निकाल कर किसानों और व्यापारियों का पुनः लौटन और उनकी सुरक्षा का आश्वासन दिया। फलतः कई व्यापारी पुनः मेवाड़ लौट आए। परन्तु यह सारा श्रेय कर्नल टाड को नहीं जाता। महाराणा भीमसिंह ने भी राजस्थान मध्यप्रदेश और संयुक्त प्रांत के व्यापारियों को समय-समय पर लगने वाले हाटों में आमन्त्रित किया था। एक आदेश में महाराणा ने स्थानीय जागीरदारों को आग्रह किया कि वे अपनी अपनी अमलदारी के व्यापारियों को श्री एकलिंग जी में होने वाली एक पाक्षिक मेले में भेजें जिनकी सुरक्षा की व्यवस्था सरकार देखेगी और उनसे माल की चूंगी माफ कर दी जायगी। महाराणा ने जयपुर सीरोंज प्रयाग और पंजाब आदि प्रांतों में भी इसी आशय के घोषणा पत्र भेजे थे। इस प्रकार के घोषणा पत्रों से मेवाड़ की सुव्यवस्था पर तथा राज्य की आर्थिक

---

55 पत्र टॉड का म भीमसिंह के नाम म 1876 का वि 6 म म बेन्द्र बही म 1877, बस्ता म 14,

56 टॉड का पत्र मेटकाफ दा 26 अप्रैल काम 12 जून 1819 न 34 35 पो पो न मा दि 51 बण्डिल पा सो पृ 32

नीति पर प्रकाश पड़ता है। महाराणा ने इन्दौर से सेठ जोरावरमल को उदयपुर में बुलाकर अपनी पेढ़ी स्थापित की। नये गांव बसाने किसानों को सहायता देने चोर व लुटेरों को दण्ड दिलाने और राज्य में शान्ति स्थापित करने में अपना सहयोग दिया।[57]

टॉड के सम्बन्ध में जो आलोच्य बिन्दु है उससे लगता है कि टॉड का मानस मूलभूत रूप से मेवाड़ के साथ मधुर सम्बन्ध बनाये रखने का था परन्तु कुछ बातें व्यवस्था की बढ़ा चढ़ाकर सम्भवतः उसने इसलिए लिख दी क्योंकि प्रमुखों की नीति का औचित्य भी उसे बताना था। दोनों पक्षों में समन्वय बनाये रखना उसका चातुर्य और कार्य-कुशलता का प्रमाण है।

—

57 सहीवालों का रिकार्ड भीमसिंह के समय का रजिस्टर नं 1 स म द के; टॉड राजस्थान भा 1, पृ 555 562, ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भा 2 पृ 706 709,

कालजयी अमर इतिहासकार टॉड

--एडवोकेट रघुवीरसिंह चूंडावत

कर्नल जेम्स टाड का ग्रन्थ राजस्थान (एनल्ज) आज विश्व में एक अमर कृति बन गई है। उसमें एक साथ तीन गुणों का समावेश है। राजस्थान का वैज्ञानिक ढंग से लिखा हुआ पहला इतिहास ग्रन्थ है, साथ ही उसकी भाषा में एक महाकाव्य की भव्यता है। इन दोनों गुणों के साथ वह समाजशास्त्र का भी एक अनुपम ग्रन्थ है। इस प्रकार यह एक सागा (महाग्रंथ) है। और इसी के फलस्वरूप वह काल की सीमाओं को लांघ कर आज भी अमर है।

ओझा जी ने टाड को राजस्थान के इतिहास का पिता कहा है। पर कानूनगो ने बहुत ही ओज पूर्ण शब्दों में लिखा है कि टॉड के रूप में राजस्थान को हेरोडेटस मिल गया।

टाड की महानता लोगों ने स्वीकार न कर उसको समझने का प्रयास नहीं किया। उसने अल्पकाल में जो सेवा की है वो भुलाई नहीं जा सकती है। 1799 में वह भारत में आया व 1822 में चला गया। इस अल्प अवधि में उसने कई रूपों में विविध आयामों में जो राजस्थान की सेवा की है उतनी एक विदेशी होते हुए कोई व्यक्ति न कर सका।

सर्वप्रथम उसने इस पूरे प्रदेश का सर्वेक्षण किया व एक सही नक्शा बनाया। इसके पहले कोई मानचित्र न था व जो थे पूरे एकदम गलत थे। नक्शा बनाने के बाद वह पॉलिटिकल एजेन्ट बनकर आया और सारी व्यवस्था की। आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिये व्यापक प्रयास किये व सामन्तों के साथ कौलनामे किये। तदन्तर सारी ऐतिहासिक सामग्री को इकट्ठा कर राजस्थान का इतिहास लिखा जो एक अनुपम कृति है। इसके फलस्वरूप राजपूत जाति की कीर्ति जो भारत में सीमाबद्ध थी वह भूमण्डल में फैल गई। टॉड ने ग्रीस के इतिहास से वीरों के उदाहरण देकर यह सिद्ध किया कि जिन वीरों पर यूरोप गर्व करता है उनसे राजस्थान में तो कहीं अधिक वीर योद्धा हुए हैं।

1931 म द्वितीय गोलमेज सम्मेलन म जब अंग्रेजो ने कहा कि यदि भारत को स्वराज्य दिया गया तो वह अपनी स्वाधीनता की रक्षा न कर सकेगे तब उत्तर म गाधी जी न टाड का उदाहरण देकर कहा कि राजस्थान म कोई गाव ऐसा नही है जिसम लानीडास जैसा वीर व कोई रण शूर एसा न हो जो थरमापाली म कम हो । अत रक्षा करन म हम सक्षम है । अंग्रेज निरुत्तर हो गये क्योकि ऐसा कहने वाला स्वय एक अंग्रेज था ।

एनाल्ज की महाभारत स तुलना की जा सकती है । जो भारतीय वाङ्मय म महाभारत का स्थान है वही स्थान राजस्थान म टाड के एनल्स का है ।

इस ग्रथ के प्रकाशन के बाद भारत मे मुख्यत बगाल म जिस प्रकार महाभारत की कथाग्रो मे कालीदास माघ व्यास प्रमता सस्कृत के साहित्य महारथियो न नाटक चपू, काव्य उपन्यासो की रचना की उसी प्रकार इस आधुनिक महाभारत स बकिमचन्द्र चटर्जी द्विजेन्द्रलाल राय प्रभति विद्वानो न नाटको व उपन्यासो की रचनायें की है । समूचे भारतीय वाङ्मय को एक नया दृष्टिकोण मिला है । पहले भारतीय वाङ्मय म केवल पौराणिक कथाग्रो की व यात्रा की भरमार थी पर टाड के इन ग्रथो के प्रकाशन के बाद ऐतिहासिक ग्रथो की बाढ आ गई । हम यह अधिकार पूर्वक कह सकते है कि साहित्य या राजनीति म जो 19 वी शताब्दी म पुनर्जागरण हुआ है वह टाड की देन है ।

भारत को पहली बार महसूस हुआ कि उसके पास भी प्रताप दुर्गादास चूडा कुम्भा सागा जैसे अप्रतिम वीर हैं जिन्होने मध्य काल म अपनी अमिट छाप छोडी ऐसे चरित्रवान व्यक्ति किसी भी राष्ट्र के लिए गौरव की बात है और जिनके आदर्श मूल्य अधकार म प्रकाश दिखा सकते हैं ।

इस प्रकार टाड राजस्थान के निर्माण के लिए एक अवतारी पुरुष सिद्ध हुआ । उस व्यक्ति की महानता व उच्चता इसी स प्रकट होती है कि उसने जो सम्राट जॉर्ज चतुर्थ को समर्पण किया है उसम प्रार्थना की है कि जो महान जाति जिसने पूरे एक सहस्र वर्ष सघर्ष कर युद्ध अकाल अराजकता को पराजित किया है वो आपके सरक्षण म आई है । आपका कर्त्तव्य होगा कि इस महान जाति को शीघ्र ही पुन स्वाधीनता प्रदान करें जो महान ब्रिटिश जाति के लिए एक गौरवपूर्ण कृत्य होगा । और इसी को उद्धत करते हुए 1947 के जुलाई म जब भारत मंत्री लार्ड पथिक लारेस न ससद म कहा कि हम जो स्वाधीनता भारत को दे रहे हैं उसकी नीव तो दूरदर्शी अंग्रेज विद्वानों न पहले ही डाल दी थी ।

हम मूल रूप में टाड की देन को निम्नलिखित बिन्दुओं में अंकित कर सकते हैं—

1 सर्वप्रथम टॉड ने राजस्थान का मानचित्र बनाया।
2 संधि के बाद शासक के रूप में वह केवल 4 वर्ष रहा, पर शासन को सुदृढ़ कर दिया।
3 अर्थ प्रबन्ध सुचारु रूप में इस प्रकार किया कि पूरा उजड़ा हुआ परगना फिर बस गया और 4 वर्ष में आय 4 गुनी हो गई।
4 सामंतों के साथ बिना विवाद के कौलनामा कर उनको सन्तुष्ट कर दिया व सब तरह की शिकायतें व उपद्रव खत्म कर दिए।
5 इतिहास जो भाटों की बहियों व ख्यातों तक सीमित था उसको पहली बार वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया फलतः उसका रचा इतिहास इतिहास की सीमाओं को लांघ कर एक सागा (महाग्रंथ) बन गया। जिस प्रकार महाभारत पंचम वेद बन गया उसी प्रकार टॉड राजस्थान (एनल्ज) ग्रंथ केवल इतिहास ग्रंथ न रहकर एक विश्व कोष बन गया है। इसमें वीरों के चरित्र भूगोल समाजशास्त्र सामंती प्रथा की विवेचना यात्राएँ कृषि व खनिजों का विवरण राजपूतों की गौरव गाथाओं के साथ उनकी सामाजिक कुरीतियाँ इत्यादि सभी का समावेश है। जैसे महाभारत के लिए कहा गया है जो उसमें है व अन्यत्र भी है और जो इसमें नहीं है वह और कहीं नहीं मिलता।
6 इसके उपरान्त जिस शैली में लिखा गया है उसके बारे में कहा गया है कि उसमें होमर व्यास व वर्जिल का समन्वय है। ऐसी भव्य शैली के दर्शन दूसरे ग्रंथों में नहीं मानते हैं। इसमें महाकाव्य की भव्यता दिखती है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है टाड ने 'राजस्थान' लिखकर भारत भूमि को गौरवान्वित किया स्वराज्य का मार्ग प्रशस्त किया व राजपूत जाति की कीर्ति को विश्वव्यापी बना दिया। ऐसे महापुरुष का ऐसा ही स्मारक बना कर राजस्थान को उऋण होना चाहिए। पर चाहे राजस्थान इस कालजयी इतिहासविद का स्मारक बनावे या नहीं टाड प्रत्येक राजस्थानवासी के हृदय में अमर बना रहेगा।

जब तक हल्दीघाटी व दिवेर के रण स्थल पर [illegible] रहेंगे जब तक प्रत्येक राजपूत अपने घरों में जुझार की पूजा करता रहेगा और जब तक सारे संसार के पाठक प्रत्येक पुस्तक भण्डार पर टॉड राजस्थान क्रय करता रहेगा उस काल तक टॉड बिना स्मारक के ही अमर बना रहेगा। टाड ने अपनी अमर कृति से काल व देश की सीमाओं को लांघ कर उन महान बलिदानियों को वर पुत्रों में स्थान बना लिया है जिनको मानवता कभी भी नहीं भुला सकेगी।